ये ग्रन्थ श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासीके वास्ते अमूल्य भेट दि गई है और
अन्य मतपंथवालोंके वास्ते किम्मत रु. १ रखी गई है, मगर अन्य म-
तवाला कोइभी महाशय किसी तरहे धोका देकर यह
अमूल्य मंगा लेवेगा और हमारी इस बातकी खातरी
हो जावे तो, उसके उपर कायदशीर कार
वाई कि जावेगी

इस बातकी निगराणी हमारे वर्गके श्री संघम रक्षक हमको
इत्तला देनेकी अवश्य कृपा किजीये

इस ग्रंथके पहीला और दुसरा भाग बालमची बापुजी पठान
इन्होने अपने "गौरीशंकर छापखाना"
हिंगणघाटमें छापा

विज्ञापन

सुज्ञ पाठक गण ! इस "मिथ्यात्व निकन्दन भास्कर" ग्रंथको जो म म मिनश्च देवाधिदेव वीतरागके फरमाये हुवे, असली और प्राचिन सिद्धांतों की सहायतासे और कितनेक ग्रंथोंकी और विद्वानोंकी सम्मतीसे तय्यार किया है और इसमे जो कुछ मगर दोषके जरिये न्युन्याधिक होवे तो एक बाजु रख कर उसमेका सदुपदेश हंसवत गुणानुरागी होके ग्रहण कर अपनी आत्माको ज्ञानका लाभ पहोंचाना चाहिये, ऐसी मेरी प्रार्थना है क्योंकि मध्य जिवोंको ज्ञानका लाभ पहोंचानेके लिये, और मुर्तीपूजकोंकि और हमार आय समाद्वारा निर्णय होके, पुक्ष्तो सुलह (संप) होके दोनो पक्षको आस्यानन्द होना चाहिये, ये महान लाभका काम समज करके, मन य तकलिफ उठाइ है, मगर मे खुद ऐसा नही समझता हु के मे विद्वान हुं परंतु परोपकारकी इच्छासे ये ग्रंथ निर्माण किया है, मगर य ग्रंथ दो छाप खानेमे छप रहा था उस वख्त प्रतिपक्षी पुरुषोंकी तर्फसे मेरेको अतिशय परिसह होनेसे फिर और भी अनेक कारणोके प्रसगसे ये ग्रंथ कोइ भी कसेस मे संसोधन नहीं कर सका हुं, इस लिये इस ग्रंथम मेर को पुर्ण शक है के न्युन्याधिक लिखे होगया, किया काना मात्रा वगैरे मगर दोष रहे गये होवे गा, मर सिर्फ आशामपर ग्रही लेकर वाचों की क्षमा किजाये, और य ग्रंथ मुयकत मकाराम आके तत्ववेत्ता बनमकी मरी लास आपको विनंती है

मुनि कुन्दनमल

विज्ञापन

इसलिये ! हमारे प्यारे पाठक गणा की सेवामे नम विनंती निवेदन करनेमे आती है के " मिथ्यात्व निकंदन भास्कर " ये ग्रंथ हिंदी भाषाम शुद्ध लिखनेके वास्ते किंवा संसाधन करनेके वास्ते हमको वैयाकरणीक पंडित का योग नहीं मिलनेसे, ये काम हमने श्री सितारामजी देशमुख के सुपरत किया था, मगर उक्त माहाशय पूर्ण वैयाकरणिक नहीं होनेके सबबसे, ये ग्रंथ पुर्ण संसाधन नहीं हो सका और विरोध पक्षीयोंकि तर्फे कितनेक कारण भयानक सबबसे इस ग्रंथका पुनरपी जन्म हुवा, और विरोध पक्षीयोंके तर्फसे मुनि माहाराजको अतिशय श्रमका कारण होनेसे मुनि माहाराज भी पुफका संसाधन नहीं कर सके और दानु प्रेसके म्यानेजर की गलती के सबबसे प्रुफ पूर्ण संसाधन नहीं हो सका इत्यादि कारणोंके सबबसे इस प्रथम उभय दोर्ष असर काना मात्रा वगैरेकी अशुद्धियां ज्यादातर रह गइ है और हमको पुर्ण शक है के इस ग्रंथम न्युन्याधिक निश्चय होवेगा इस लिये हमारे प्यारे पाठक गणाम गुणानुरागी होके साथ माफि के सुधारके साथ पठन (वाचन) की कृपा करेंगे, एसी हमको पूर्ण आशा है

आपका शुभचिंतक

श्री संघ– वरोरा और वरार

— ! —

---

* ये माहाशय आगे पाठशाला सब-इनस्पेक्टर थे, इस वास्ते इनकी पुर्ण निगरानिके लिये ये काम इनको सुपरत किया गया, और इनोकी मदतसे ये काम बहुत जल्दी तैयार हुवा इस वास्ते इन माहाशयको हम कोटीस धन्य वाद देते है

धन्य पाठ

देखिये! हमारे प्यारे पाठकगणोंकी सेवामें एक अर्ज निवेदन करने में आती है के, श्रीयुत हिरालालजी बोरा तथा मुलचन्दजी समाति का कोटीस धन्यवाद देता है के इन पुरुषोंने अतिशय परिश्रम उठाके इस ग्रंथ का कार्य प्रारंभ किया और बरोरा किया मगर भी सब तर्फे खर्च का सहा ता कारन दिलवाइ मगर किणी निवासी श्रीयुत जुगराजजी कांकरिया का बारंबार कोटीस धन्यवाद देता हूं के इन महाशयने खास आपने घरका व्यापार वगेरे सर्व काम बंध करके, ये पुस्तकको छपवाके तैयार करवाके श्री संघकी सेवामें हाजर किया है और ये कार्य करनेमें धर्मकी पूर्ण उन्नती हुइ ऐसे उत्तम पुरुष ऐसे सर्वोत्तम कार्योंपे हमेशा ध्यान रखे तो श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी धर्मकी वृद्धि क्यों न होवे सदा सर्वदा होती रहे बलिहारी है उक्त पुरुषोंकी के धर्मकी वृद्धिके कार्योंकी हमेस तन मन धन से सेवा बजाते है,

आपका शुभचिंतक.

जैनी मोतीलाल मोहनलाल

गुरु भक्तिपर स्तवन

ज्ञान रत्न महाराज कृपा निधि कुन्दन मुनि जग उपकारी
सर्वज्ञ वाणी कहैं धारक, मिथ्या वानी परिहारी ॥१॥ज्ञान०॥
किनि विनती संघ अमरावती वर्षे प्यार मेहनत भारी,
स्वीकारा कीनी मुनि वरजी, हर्ष है सहु नरनारी ॥२॥ज्ञान॥
सुरधरसे खानदेश पधार, फेर वऱ्हाड पावन किना,
अज्ञानीको ज्ञान बताये दयाधर्म उपदेश दिनो ॥३॥ज्ञान०॥
मिथ्या अंधकारकी करि नास्ति, ज्ञान मोक्ष मग्न किना,
श्री जिनवानी तारक जाणी अमृतरस प्यासे पीना ॥४॥ज्ञा०॥
पाखंड मतका खंडन करके, जैन धर्म मंडन किनो,
भूमंडलमे फेली किर्ती, पूर्ण यश मुनिवर लिनो ॥५॥ज्ञा०॥
रामलालजी महाराज कहिये, मुनिवरके है सहु भ्राता,
आज्ञाकारी विनेवंत है, ते कहीये पुरण ज्ञाता ॥६॥ज्ञा०॥
हिंसाधर्मी मारा कुकर्मी, कंवर बांध सनमुख आये,
मारा भयंकर दिया परिसा, क्षेत्र बाहेर कारण ध्याये ॥७॥ज्ञा०॥
समपरिणामे सहा परिसा मुल्क मध्याह सर किनो,
धर्म सुभटके समाने, मुनिवरके दरशन लिना ॥८॥ज्ञा ॥
हिरालाल बोरा कहेता हैं, मुकचंद संचेति सुनो,
छगराज कांकरियाने वो, मुनि धर्ममे वो चित दिनो ॥९॥ज्ञा॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९	१४	य	या
२९	२१	मनमस्थित	मनकस्थित
३०	२१	अफसाेस	अफसोस
३१	१०	क्षेमानुसार	क्षेमानुसार
३२	६	निर्मोणा	निर्माण
३३	१८	ममनक	समनकर
४४	१	कार	अधिकार
४९	१०	मरणातिक	मरणान्तिक
४९	१९	अधिकार	अधिकार
५०	५	होता	हाती
५३	९	मस	जैस
५४	११	सग	साथ
५४	१४	धमकी	धर्मकी
५९	८	धर्मी	धर्मी
५९	२०	सज्जम	सज्जन
६१	११	दुमिया	दुनियां
६१	१७	साल	साथ
६६	१	पदाथकी	पदार्थका
६६	२	कौर	और
६९	७	सब विमा	सब बिना
७२	९	क्षेम	शाक
७३	१३	भावे	भाव
८२	११	भत्ति	भक्ति
८२	१७	मौर	और
८३	१३	शरिमे	शरिम
८४	५	किर्तिकोक	तिर्यंकराकी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९	१४	य	या
२९	२१	मनस्वित	मनस्विन
३०	२१	अफसोष	अफसोस
३१	१०	लेखानुसार	लेखानुसार
३२	१	निर्माणा	निर्माण
३३	१९	समजक	समजकर
४४	१	कार	अधिकार
४९	१	मरणातिक	मरणान्तिक
४९	१५	अधिकार	अधिकार
५०	५	होता	होती
५३	९	मस	मैस
५४	११	साग	साग
५४	१४	धर्मकी	धर्मकी
५९	९	धर्मी	धर्मी
५९	२०	सज्म	सज्जन
६१	११	दुनिया	दुनियां
६१	१७	साथ	साथ
६६	१	पदार्थकी	पदार्थकी
६६	२	और	और
६९	७	जब बिगा	जब बिना
७१	७	शेम	शान्न
७१	१३	भावे	भावे
८२	११	भक्ति	भक्ति
८२	१७	और	और
८३	१३	शरीरमे	शरीरमें
८४	५	निर्मयोक	निर्भयताकी

[अनुक्रमणिका]

शंका—क्योंजी ! जैनके असली और प्राचीन सिद्धांत तो मुर्तिपूजकोंके हस्तगत हैं। यह कैसे हुआ मत्स्र।

समाधान—चरम तिर्थंकर श्रीमान महावीर परमात्माके निर्वाण बाद, बारहवर्षी महादुष्काल पडनेसे भी जैनके कितनेक असली मुनि आर्य संघको छोडकर अन्य संघोंमें उतर गये और कितनेक मुनि पश्चात आर्य संघमें रह गये उन मुनियोंसे संयम कष्ट सहन न होनेसे मेरामत प्राप्त होकर मुर्तिपूजाका नवीन और नकली श्री जैनके असली सिद्धांतोंके विरुद्ध मजहब उन्होंने कायम किया इस हा सबबसे असली मुनियोंके सब सिद्धांत उन नकली मुनियोंके पास रह गये श्री जैनके असली सिद्धांत मुर्तिपूजकोंके हस्तगत हो जानेका यह हा प्रयोजन समझ लेवें।

इस लिये जो नवीन पंथ निकालते हैं वेसा अपने निकाले हुए मतका पुष्टी तोरसे निर्वाह करते हैं; और नवीन तथा मन कल्पित शास्त्रोंकी रचना करते हैं एसा होते भी अन्तमें श्री जैनके असली सिद्धांतोंका चरण शरण ग्रहण करना पडता है तब जैनाभास जैन मतावलंबी अन्तमें जैनके असली सिद्धांतोंको मानते हैं तो फिर नवीन ग्रंथ—पुस्तक बनाना और पंथ निकालनेका क्या प्रयोजन है ? मगर नवीन और मनकल्पित ग्रंथ बनाकर तथा पंथ निकाल कर जैनियोंका फजिता करना है।

शंका—क्योंजी ! क्या तुमारे आचार्योंने नवीन नवीन ग्रंथका रचना नहीं करा है ?

समाधान—अव्वल तो यह कार्रवाई मुर्तिपूजकों के समय हुई है दूसरा हमारे वक्तमें यह कार्रवाई हुई है क्यों कि बहुत पंथोंके न्यारे न्यारे नवीन नवीन (ग्रंथ) पुस्तक अवलोकन करनेसे तथा बा-

चनेसे लोगोंकी धर्मसे श्रद्धा भ्रष्ट हो जाती हैं। और वे लोग कह ते हैं कि हम किसको सच्चा और किसको झूठा माने? इसका समा धान ऐसा है कि श्री जैन धर्मके असली सिद्धांत आचारंगादिकका ऐसा फरमान है कि इस जगतमें अनादि कालसे मिथ्यात्व और अज्ञान फैल रहा है, श्री जैनके असली सिद्धांतोंके लेख पुर्ण सत्य है ऐसा सब ही जैनवर्गने समझना चाहिये, श्री जैन सिद्धांतोंके लेख पुरी तौरसे सिद्ध और सत्य है, ऐसा समजनेका कारण प्र त्यक्ष प्रमाणोंसे सिद्ध होता है इस बातका पुरी तौरसे पुरा पुरा विचार करोंगे तो सत्यासत्यका निर्णय हो जायगा निर्णय नहीं होने का सबब सच्च तो यह है कि अज्ञान तथा मिथ्यात्वका पुरा विना श न होनेसे कींचित मात्र मिथ्यात्वका संचय बाकी रह गया है जिस जगहपर अज्ञान है उस जगहपर मिथ्यात्व हैं यह दोनों एक दूसरको आधार भूत हैं मिथ्यात्वका सबब जो अज्ञान है; उसको ह ान दूर करनेकी जरूरत है अपने आत्माकी सिद्धि करनेवाला जो धर्म है, उसका यह अज्ञान विरोधि [दुश्मन] है इस लिये अज्ञानका और मिथ्यात्वका विनाश करनेकी जरूरत है मोक्षसाद साधन करनेवाले जीवोंको यह अज्ञान अंतराय जैसा है अज्ञान और मिथ्यात्व यह पापका मुल हैं इन दोनोंका विनाश करनेसे शंका कंक्षा, वितिगिच्छा वगेरहका विनाश होकर देव, गुरु, और धर्म की शुद्ध पहिचान होती हैं यह भी बात याद रखना चाहिये कि जब मुणिपुजकोंका जोर सोर अतिशय बढ गया था तब जैनके बस्ती मुनियाका ह्रस उनोंने ज्यादह त्रास देना शुरु किया और एस द्वारा तथा भाषाद्वारा अतिशय निंदा करना शुरु किया यह बात स्मरणमें रखना चाहिये कि पुण सत्यकी नास्ति किसी दगासे नहीं होती है हम गवर्नमेन्टी राजको धन्यवाद देते हैं कि जिसक राज्यमे न्याय–नीतिसें चलने वाले महाशयोंका कोई खौफ नहीं है

मिथ्यात्वके धारक, मुहपंथके चलनेवाले, परवस्तुके अभिलाषी, हिंसा, झुठ, चोरी अब्रम्ह और परिग्रहके धारक, मंत्र, यंत्र तंत्र जड़ी, बुटी, ज्योतीष, निमित्त, वेदाग इत्यादिकके धारक, सत्यदेव सत्य साधु, सत्यधर्म और सत्यशास्त्र के द्वेषी (वैरी), हठकदाग्रही, इत्यादिक अनेक सावद्य अवगुण करके युक्त है, वह प्रत्यक्ष राक्षस समान है अथात जैनी नहीं है। और उपरोक्त दुर्गुण करके विरक्त-रहित है, अठारह दोष करके रहित देवोंको मानते है, दयामें धर्म समजते है, संयमी पुरुषोंको साधु मानते है, करुणा हृदय है, विषय भोगोंके त्यागी है, संसारसे उदासीन है, इत्यादिक अनेक निर्वद्य शुभगुण संयुक्त होवे वह जैनी है।

अब बुद्धिवान न्यायसंपन्न पुरुष आपही विचार कर लेवेंगे कि कौन जैनी है और कौन जैनी नहीं है।

मसलन-मानि सजूर मिठी और औरोंकि सजूर खटनी यह तो अपने अपने स्वार्थ-मतमत्वके वास्ते सर्व मतावलंबी कहते है। अर्थात् सचे देव-गुरु-धर्म और शास्त्रका निर्णय करना बहुत कठिन है। मगर जो जो मतानुयायी जिस जिस धर्मका अवलंबन करनेवाले है, वह सब अपने ग्रहण किये हुए दर्शनोंको सचे कहते है और मानते है; उन पुरुषोंको सचे देव-गुरु-और धर्मका तथा शास्त्रका असली सुधा स्वाद नहीं आता जो पुरुष सत्यासत्यके परीक्षक है और सत्य वस्तुके ग्रहण करनेवाले है; उन पुरुषोंके लिये इस ग्रंथकी रचना कि गई है इससे जो मध्यस्थ शुद्ध हृदयी और पक्षपात रहित पुरुष है, उनोंको शुद्ध देव-गुरु-धर्म-तथा शास्त्र और ज्ञान-दर्शन-चारित्रकी प्राप्ति होती है।

इस ग्रंथका प्रयोजन

इस ग्रंथके बनानेका प्रयोजन तो यह है कि, वर्तमान समयमें

इस आर्य खंडमें जो ७४ दरा चल रहे हैं इनमेंसे एक भी जैन श्वेतांबर साधुमार्गी स्थानकवासी दर्जकर, सर्व मतवाले उनकि मतवर्योने बनाये हुए ग्रंथोंको रखे शास्त्र करके मानते हैं; उनामें क्या क्या लिखा है और किस किस प्रकार तीर्थंकर देवोंकी सावद्य पूजा, भक्ति, प्रसिग, यज्ञ होम लिखे हैं, और वो शास्त्र किस किसके बनाये हुए हैं, और वे किस समयमें बने हुए हैं, और जैनी लोकों तथा दस क्या है और जैनके असल्मी सिद्धांत कानसी भाषामें हैं; और जैनके असली तीर्थंकर महाराज कौनसी भाषामें शास्त्र फर मात थे, जैनके असली सिद्धांतोंका असल्यी अर्थ जैनसे विपरीत दसनेवाले नहीं कर सक्ते हैं इसलिये ' यह हकीकत बहुत लोग नहीं जानते हैं उन सर्व महाशयोंको पूर्वोक्त सर्व हकीकत मालुम होना चाहिये बस, यह ही इस ग्रंथका मुख्य प्रयोजन समझना चाहिये

प्रवेशिका

देखिये ! हिंसाधर्मी मुर्तीपुजक पितांबरी अमरविजयने दोनों कान्फरन्सको किई हुई सुचना नीचे मुजब— पृ० प० ३६

दोनों कान्फरन्सोको सुचना

" पाठक गण ! यह जैनांजन नामक पुस्तक तीर्थंकरोंके मूल वाक्योंको सत्यपणे प्रगट करनेके लिये प्रेसमें (छापखानामें) छप रहा था, जब ढंढ़क कारागेंके वास्ते, सेंरकी हिमायतो करता हुई ढुंढक कान्फरन्स मुर्तीपुजक कान्फरन्सको अति प्रेरणा कर रही थी और दोनों कान्फरन्सोंके अनेक खत-पत्र हमारे पर आते रहते थे और उनका योग्य उत्तर हम देते रहते थे और जैन समाचार ढुंढक पत्रभी सेंरकी हिमायती करता हुआ वारंवार पुकार उठाता रहा था। सो बहुत लोगोंको मालुम होनेसे सब लेख हम दरज नहीं करते है परंतु सत्य सेंरकी हिमायत करनेवाली दोनों कान्फरन्सको हमारी यह सुचना है कि ढुंढकोंके पुस्तकों और हमारी तरफसे बाहेर पडे हुवे दोनों पुस्तकका मुकाबलेके साथ दो दो मध्यस्थ पंडितोंका विचारक निष्पक्षपातसे निर्णय करा लेवे और तीर्थंकर गणधरादि सर्व आचार्योंकी झुंठी निंदा करने वालोंको योग्य शासन करे अगर जो एसा न करेंगे तो कान्फरन्स है सो सत्य सत्यकी हिमायती करनेवाली हैं एसा कोईभी न मानेंगे किन्तु तीर्थंकर गणधरादि सर्व महा पुरुषोंकी निंदा करनेवालोंकी ही हिमायत करने वाला है एसा खटका सबके दिलमें बनाही रहेगा। "

इत्यलम् । विस्तरेण ॥

पितांबरी अमरविजयने दोनो कान्फरन्सोंको जो सुचना

करी है उसमें लिखा है कि 'हमारे और ढूंढकोंके पुस्तकों का निःपक्षपातसे पंडितोंके मध्यस्थपणे निर्णय करवा लेना और तीर्थंकर गणधरादि सर्व आचार्योंकी निंदा करने वालोंको शासन करना चाहिये' अमरविजयका यह कथन बहोत ठीक है; इस लिये हमने 'मिथ्यात्व विकंदन भास्कर' में जो जो लेख निर्णय करनेके वास्ते दाखल किये हैं, उन लेखोंका हमारे निम्न लिखित लेखानुसार आम सभामें विजय अमरविजय वगेरह सब मुर्तीपुजकोंने करना चाहिये, इसकी सुचना हम लिख देते हैं।

हिंसाधर्मी मुर्तीपुजक आम गच्छवासियोंको

सुचना

विदीत हो श्री जैन आम लगको, की जैन मार्गमें हिंसाधर्मी श्वेतांबर तथा संवेगी तथा पीतांबरी मंदिरवर्गी (मुर्तीपुजक) वर्गमें ८४ गच्छ हैं; उन गच्छोंके अमरविजय–वल्लभविजय–हंसविजय–शान्तिविजय– वगेरह मुर्तीपुजकोंके आचार्य–उपाध्याय–यति–संवेगी पीतांबरी–सुरा–सागर–विजय तथा इनोंके श्रावक पालनपुर निवासी रिखबचंद उजमचंद–व–पंजाब निवासी बन्सीराम वगेरह आम गच्छवासियोंकी तर्फसे सम्यक्त्व शल्योद्धार, ढुंढक नाटक, ढुंढक हृदय नेत्रांजन हिमाल्य म्यादय ढुंढिये–गप्पदीपिका मदार साधु मार्गीनी कल्पना उपर प्रकाश–वगेरह अनेक ग्रंथोंमें श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी वगेरह आचार्य–उपाध्याय–मुनी तथा श्रावक वगेरह हमारे आम लोगोंको स्यात्धर्मी ढुंढक–लौकमार्गी वगेरह नामोंसे मरान पुकार करके गप्पवाजी लेख करते हैं, कि ढुंढिये

फिरते हैं—निन्दव हैं, मीथ हैं। जैना नहीं है इत्यादि पुरी तौरस मत्सरोंस भर हुए, मिथ्याकलंकित—हानिकारक—इमलेकी तौरस अनेक ग्रंथोंमें हमारे धर्मके उपर लेख दर्ज किये हैं—व मुद्दते भी करते है मगर कितनेक ग्रंथ छापाद्वारा पब्लीकमें जाहिर करके हमार आचार्य तथा उपाध्याय मुनि, श्रावक वगरह लोगोंके उपर तथा हमार मजहब (धर्म) के उपर महान जुल्म मचा दिया है; इस वास्ते हमारे वाल्मित्र गच्छवासियोंको विदीत करते हैं कि देखिये ' सिवाय ढुंढीयोंके तुमारे आम स्वर्गोंका पवित्रपणा कदापि नहीं शावगा ढुंढीयाके श्रावकवर्गको सुशमस करके तथा फुसलाकर बहकाकर धर्मके नामसे लक्षों रुपैये मगकर, तुमार खुदका, व तुमारे दरो का, व तुम्हार तीर्थोका, व तुमार मंदिरोंका तथा तुमारा मतिमा ओंको परम पवित्र किये हो; तो फिर तुम लोगोंका आशक्ष फास्त को, व बयास करतेको क्या कुछमी धर्म नहीं आता है; लेकिन अन्यायमें तुम लोगोंकी बराबरी करना यह हमारा कर्तव्य नहा है; क्यों कि हम लोग त्यागी है; फिरमी देखिये ' बल्ल भविजय—ममरविजय वगेरहने महासतीजी पार्वतीजीका सामना किया था सभा द्वारा सेनाथा, वो चंद राज यहां गिरी सो र,वी मगर वेश्याकी ओपमा देकर मस्करी करना, यह कुछ पतिव्रता, सधर्मोका, न्यायकोंका व मरदोंका काम नहीं है। लेकिन फिरभ देखिये ' हमार गच्छवासी बालमित्रोंने भिक्षुकीनाथ शासनाधिपती श्री वीर परमात्माके हुक्म विरुद्ध श्री जैनके असली सिद्धांतों क लेख विरुद्ध व जैन धर्मविरुद्ध जिससे जैनधम नष्ट हो जावे एस लेख छापा कर (१उिक्रमें आदिर किये है, हम हमार बालमित्र गच्छवासियोंके—आचार्य—उपाध्याय—यति—संवेगी व यीतां-दरी तथा श्रावक वगेरह अन्य लोगोंको विदीत करते है कि, जिसम

चाहिये; अहो गच्छवासियों ! यदि तुमारे जबोपासक सावद्याचार्य वगेरह हुए हैं, उनोंके बनाये हुए टीका, चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ति ,ग्रंथ प्रकरण, ढाल; चौपाई चोढालिया, स्तवन, सज्झाय, दोहा, सवैया, कुंडलिया, गीत, छन्द, श्लोक, काव्य वगेरहकी साखी देवो तो वे खोटी साखी हमलोग कदापि मंजुर करेंगे नहीं;

पूर्वपक्षी–क्योंजी ! मूल, टीका चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ति, वगेरह पांच अंग हैं; सो मूलके सिवाय चार अंग आप नहीं मानते हो क्या ?

उत्तर पक्षी–अगले समयमें जो उत्तमोत्तम निर्वद्याचार्य वगेरह हो गये है; उन उत्तम पुरुषोंके बनाये हुए मागधि भाषामें जो चार अंग था जैनके एकादश अंगादि प्राचीन और असली सिद्धांतोंके अनुकूल थे वे चार अंग वमाने हालमें विच्छेद हैं; और इस समय–जमाने हालमें मूर्तीपूजकोंके सावद्याचार्य वगेरहके संस्कृत भाषामें नवीन और मनकल्पित जो चार अंग भी जैनके एकादस अंगादि प्राचीन व असली सिद्धांतोंसे प्रतिकूल बनाये है; इस लिये हम लोग नहीं मानते है

पूर्वपक्षी–क्योंजी ! वे चार अंग विच्छेद है यह आपने कायसे निश्चित किया है !

उत्तरपक्षी–जिस वक्त बारह वर्षका महादुष्काल पड़ाया, उस वक्त कितनेक उत्तम मुनी अन्य देशावरोंमें उतर गये, और पश्चातम रहे हुए मुनियोंके हस्तगत सब पांचाही अंग हो गये, फेर [illegible] कारणसे उन मुनियोंसे संयमका निर्वाह न होनेके सब [illegible] भ्रष्ट होकर भी जैनके प्राचीन और असली सिद्धांतोंके वि[illegible] मूर्तीपूजाका मत कल्पित और नवीन मत (मजहब) निकाला;

परन्तु प्राचीन असली चारों अंगोंसे मुर्तीपुजाका मत प्रचलित न होनेसे नास्ति हानेका समय आ गया था, तब मुर्तीपुजकोंने साचा के मूलके सिवाय चारोंही अंगोंकी नास्ति करके नविन बनाये सिवाय अपना मत चलेगा ही नहीं, इस समय मुर्तिपुजकोंने मूल छोडकर बाकी के चारोंही अंगोंको निर्मूल कर डाले, ऐसा सुना है की दक्षिण देशमें अन्य मतमें तुकाराम भक्त हुआ है, उसके बनाये हुये कितनेक ग्रंथ ब्राम्हणोंने नदीमें डूबवा दिये, इस तरह मुर्तीपुजकोंने प्राचीन चारों अंगोंकी नास्ती करके अपने मनकल्पित नवीन चारा अंगोंकी रचना रचाली है; और यह चारों मनकल्पित नवीन अंग भी जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोसे प्रतिकुल है, इस वास्ते यह मनकल्पित और नवीन चारा अंग माननेमें नहीं आते है।

पुर्वपक्षी—क्योंजी ! मुर्तीपुजकोंके आचार्य उपराके बनाये हुए चारा अंगोंका भाव भी जैनके एकादश अंगादिक असली सिद्धांतोंसे प्रतिकुल मानते हो, सो कुछ सबूत बतलाओगे (देवोगे)

उत्तरपक्षी—हांजी ? सबूत देवेंगे।

पुर्वपक्षी—मेहरबान साहब ! आप मेहरबानीसे बतानेकी कृपा किजीये,

उत्तरपक्षी—देखिये ! मुर्तीपुजकोंके आचार्य उन्होंने टीकादिक चार अंग, तथा ग्रंथ-प्रकरणादिककी रचना करी है, लेकिन श्री जैनके एकादश अंगादि प्राचिन और असली सिद्धांतोंमें कितनेक अधिकार नहीं है, ऐसे विपरीत अधिकार टीकादि ग्रंथ प्रकरणोंमें मनकल्पित मुजे (साफ) दाखल किये है, वह अधिकार इस जगह हम किंचित मात्र दिखाते हैं,

सुयमी-जंबुद्वीपपन्नती नामक सूत्रादिमें ऐसा अधिकार नहीं है कि भरत चक्रवर्तीने अष्टापद पर्वतके उपर जिनमंदिर बनवाये हैं, (नियं भरवाये है) लेकिन आवश्यक नियुक्तिके अध्ययन पहलेमें भरत चक्रवर्तीने अष्टापद पर्वतके उपर जिनमन्दिर बनवाये हैं, ऐसा अधिकार दाखल किया है, वह पाठ निचे देखिये—

(गाथा)

थुभ सयमाउगाण चउविस जिणघरे काकी
सव जिणाण पडिमा वन्नपमाणेहिं नियएहि॥

सूत्र श्री सुयगडायंग वगैरह सिद्धांतोंमें ऐसा अधिकार नहीं है कि, अभयकुमारने आर्द्रकुमारके वास्ते जिनमूर्ती भेजी, वा जिनमूर्तिको देखकर आर्द्रकुमारने प्रतिबोध पाया, लेकिन सूयगडांग सूत्र गणधरकी निर्युक्तिमें ऐसा अधिकार दाखल किया है कि अभयकुमारकी भेजी हुई जिनमूर्तिको देखकर आर्द्रकुमारने प्रतिबोध पाया, वो भी निचे दर्ज करा है देखिये।।।

[गाथा]

पासिय टोम्ह ठुओ पुछण मभयस्स पछवे सोओ॥
तेणावि सम्मदिठिति होज्जो पडिमा रहम्मिगया॥१०॥
दठु सबुद्धो रक्खिओ आसण वाहण पलातो॥
पव्वयनो भारितो गम न करोति को अन्नो॥११॥

सूत्र-श्री आचारांगजी वगैरह सिद्धांतोंमें तीर्थ [यात्रा] —

बरसते में जैन मुनिको गोचरी जाना साफ मनाई है; लेकिन कल्पसूत्र तथा टीका वगेरह में कम [थोडी] बारिशमें जैन मुनिको गोचरी जाना कहा है यह पाठ निच देखलो।

(मूलपाट)

कप्पसे अप्पुठी कायसिं ॥

[टीका]

प्रवृत्तस्य अल्पवृष्टौ गतु कल्पते ॥

सूत्र श्री आचारांगजी वगेरह सिद्धांतोंमें जैन मुनियोंको अस्रमान्न का नहीं ग्रहण करना कहा है लेकिन प्रवचन सारोद्धारमें अस्रमान्न वस्त्र जैन मुनिको ग्रहण [लेना] करना कहा है, यह भी पाठ निच दरज है

[गाथा]

मुल्लजुअ पुणातिविह जहन्नय मझिमच उक्कोस ॥
जहनण अठारसग सय सहस्सच उक्कोस ॥८०४॥

सूत्र श्री निशीथ वगेरह सिद्धांतोंमें जैन मुनियों को स्वास्तस कागद (खत) लिखनेकी साफ मनाई है लेकिन वगरामाण्य रहित जैन मुनियाको स्वास्तस कागद लिखना कहा है यह भी पाठ निच दरज है।

[पाठ]

जथ्यविय गलु काम तथ्य विकारे तितोर्सि नायगु आरास्त्रियाइं तेविय तेणेव कमेण पुछाति ॥

(वृति) यद्यापि रावये गत्तुकास्तथापि ये साधयो यतंये तेषां लेख प्रेषणेन संदेश प्रेषणेन-सचिह्नात् कुर्वेति यथाचर्यं इतराज्यास् तथागंतु कामा भवो भवद्भिस्त्वत्रारक्षकान् तत पृच्छति यदाह तेरनुज्ञातं भवति तान् सर्वान् ज्ञापयन्ति आरक्षिकादिभिरनुज्ञातमित भवद्भिरत्र मार्गव्यं " एप निर्गमने यत्नश्च विधिरुक्तः " ॥

देखिये ! उपर हमने किंचित् मात्र अधिकार दिखलाया है, ऐसे अनेक विपरित (खोटे) अधिकार निकादि चारों अंग तथा ग्रंथ प्रकरण वगेरहमें मुर्तीपुजकाक आचार्य वगेरोने दाखल किये हैं, तो अब कहिये श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंके सिवाय कहासे आये ! क्या जमीन मे गडे हुए थे सो खोदके निकाले क्या आकाशमें लटक थे सो गिरे उतारे, क्या आरक्षिकी पकडमें जमी नमें पाक आया था सो उठाकर चारों अंग तथा ग्रंथ-प्रकरण वगेरहमें दाखल किया ? और जो जिनपरमात्मा तो केवली थे, मगर उनोंसेभी ज्यादह महाकवली मूर्तीपुजकोंके आचार्य वगेरह थे सो एस वगहु मनकल्पित खोटे खोटे अधिकार दाखल कर दिये है अब कहिये, निकादि चारों अंग तथा ग्रंथ-प्रकरण वगेरह खोटे खोटे शास्त्रोंको कौन सत्य और प्रमाणिक शास्त्र मानेगा ?

पूर्वपक्षी—आपका कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि आप महानुभावने हमारी शंकाका समाधान किया,

मगर फिर भी देखिये ! ... गच्छवासियों ! तुम लोग हम सो

गोंको श्री जैन के प्राचीन असली सिद्धांतोंके अधिकारोंमेंसे, सिद्धायतन, कयवलीकम्मा, चेईय शब्द, जंघाचारण, स्थापना निक्षेप, द्रौपदी सुरियाम, विजेपोल्पिया, वगेरा इस नमुनेक अनेक अधिकार बतमावोग तो हम लोग कदापी मंजुर नही करेंगे. सबब की कितनेक अधिकारों क तुम लोग खोटे खोटे अर्थ करते हो, ईस वास्ते ना मंजूर करना पडता है;

पूर्वपक्षी—क्योंजी ? श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोंके अधि कारोंमेंसे कितनेक अधिकार आप लोग ना मजूर क्यों करते हो ? इसका क्या सबब है ?

उत्तर पक्षी—मुर्तीपुजक लोक श्री जैनक प्राचीन असली सिद्धांतो के कितनेक अधिकारोंके साक खोटे खोटे अर्थ करते है, इस वास्ते,

पूर्वपक्षी—महरबानीके साथ बतलानेकी कृपा किजीये,

उत्तरपक्षी—हमारे साक्षी के ऊपर पुरापुरा ख्याल किजीये, देखिये ! मुर्तीपुजक लोग श्री जैनके असली प्राचीन सिद्धांतोंके मूलपाठो क क अर्थ खोटे करते है, उसका दाखला निचे मुजब है,

सम्यक्त्व शल्योद्धार नामक पुस्तकमें पृष्ठ ९१ पर वितांबरी आत्मारामनें श्री आचारांगजीके दुसरे श्रुत स्कंधके दुसर अध्यायन के तिसर उदेशेके पाठका अर्थ खोटा किया है, वह पाठ निचे देखा !

(गद्यपाठ)

से भिक्खुवा भिक्खूणीया उसासमाणवा निसास माणेवा कासमणेवा छीयमाणेवा जंभायमाणेवा

भूमिका शुद्ध धर्मका निमित्त है। ”

देखिये! आत्मारामनें जो खोटा अर्थ उपरके पाठका किया है; परन्तु एसे खाटे अर्थ करनेसे पर्वतादिक धर्मतिर्थ सिद्ध नहीं हो सकते है; “ जाव रिषये सिद्धा ” ईस पाठका अर्थ—तात्पर्य इतना ही है का शत्रुंजय पर्वतके उपर केई मुनि सथारा करके सिद्ध हुए है; लेकिन एसा नहीं कहा है के शत्रुंजय पर्वत धर्म तिर्थ है अगर इस पाठसे शत्रुंजय पर्वत धर्मतीर्थ सिद्ध हो जावेगा तो ढाइद्वीपमे बिना सि- द्ध हुएकी कौनसी जगह बाकी रह गइ है ? सो एसे जैनके असली मार्गिन सिद्धांतोंका पाठ मिलना चाहिये, अगर ढाईद्वीपमें बिना सि- ध्ध हुएकी किंचित् मात्र—बालाग्र भी जगह खाली नहीं रही होवे तो मुर्तीपुजक स्वर्गोने ढाईद्वीपकी जमिन और जमिनके कंकर कंकर समेत पुजना चाहिये, मुर्तीपुजक लोग ढाईद्वीपकी सब जमीनके कंकर समेतकी पुजा नहीं करते तो, मुर्तीपुजकोंके लेखोंसे मुर्तीपुजक लोग श्रद्धासे भ्रष्ट समझे जावेंगे।

सम्यक्त्वशल्योद्धार पृष्ट ६६मे श्वेताम्बरी आत्मारामनें “ सिध्धाय तन ” का अर्थ साफ खोटा किया है; वह लेख निचे मुताबीक—

क्यों की “ सिध्धायतन ” यह गुण निष्पन्न नाम है; सिध्ध कहिये शाश्वती अरिहंतकी प्रतिमा तिसका आयतन कहिये घर सो सिध्धायतन, यह इसका अर्थ यथार्थ है; ”

आत्मारामनें जो ‘ सिध्धायतन ’ शब्दका अर्थ साफ खोटा किया है, उसका खुलासा—

अरिहंत महाराज तथा सिध्ध महाराजको घर नहीं है, सबब कि अरिहंत महाराजनें बाह्य और अभ्यंतर परिग्रहका सर्वथा प्रकारसे त्याग किया है; और सिध्ध महाराज आठ कर्मका क्षय करके तिन लोकसे अलग होकर तिन लोकके उपर और अलोकके निचे लोकके अग्र भागपर

विराजमान है; सर्व आवागमनसे निवर्तमान हो गये है; अत एव अरिहंत—सिध्धकों पर नहीं है;

फिर सिध्ध शब्दका अर्थ अरिहंतकी शाश्वती प्रतिमा करते है; यह भी अर्थ साफ खोटा है; क्यों की सिध्ध शब्दका अर्थ कदापि प्रतिमा नहीं होता है; शाश्वती प्रतिमा जो ये लोग कहते हैं, यह भी इनोंका कथन साफ खोटा है; क्यों की शाश्वती प्रतिमा होती तो उसका अधिकार सब जैन सिद्धांतोंमें आ जाता; लेकिन कोइभी सिद्धांतमें शाश्वती जिनप्रतिमाका अधिकार नहीं है; अगर यह लोग कहेंगे कि चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार शास्त्रमें चला है; लेकिन शाश्वती प्रतिमा का पाठ मूर्तीपुजकोनें मनकल्पित और नवीन, शास्त्रमें दाखल किया है, इसका खुलासा आगें करेंगे।

इत्यादि भी जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोंके एसे अनेक अधिकारोंका अर्थ-मुर्तीपुजक लोग वैयाकरणका घमंडके जोर जोरमें खोटा खोटा करते है; भोले लोगोंका धर्म कुपमें डालनेका ईरादा करते हैं; ईस वास्ते भी जैनके प्राचिन असली सिद्धांतोंके कितनेक अधिकार मुर्तीपुजकोंके मार्फत माननेमें नहीं आते हैं।

पृच्छक—हम आपको कोटिशः धन्यवाद देते है की आपने हमारा अंधार हुवेहुव दुर कर डाला; लेकिन पंडितोंके पास अर्थ करवाना चाहिये पंडितोंके पास अर्थ करवानेमें आपका किसी भी बातका हर्ज ता नहीं है?

उत्तरदाता!—महानुभाव! कई पंडित लोग रुपया—स्वार्थ का पक्षपातसे अर्थका अनर्थ कर डाल्ते है; इस वास्ते पंडितोंके पास अर्थ करवाने की कोई जरुरत नहीं है; सबब नाभा आदि स्थानोंमें और कई जगहपर आगपर बनाव बन गये है; मगर असली सुत्र मात्र

दिसस्रने चार्लोको पंडितकी कुछ परवाह नही रहा करती है;

पूर्वपक्षी—आपका फरमान सत्य है;

अहो हमारे बालमित्र गच्छवासीयों! तुम लोगोंने ऐसा निपक्ष अधिकार रखना चाहिये की "जैसा सुत्र श्री उत्तराध्ययनजीमें विहारदर बोल्की पृच्छा और सुत्र श्री भगवतीजीमें गौतम स्वामीजीनें श्री महावीर परमात्माको ३६००० छत्तीस हजार प्रश्न पुछे है; ईसके अथवा और भी साधु—श्रावकोंने अनेक प्रश्न पुछे हैं; श्री विर परमात्मानें भी उन प्रश्नोंका पुरा खुलासा किया है; फेर श्री वीर परमात्माने लोकालोक—व—जीवाजीव अनेक बातोंका पुरा खुलासा किया हैं; इस वजहसे हमारे निम्नलिखित लेखानुसार निःपक्षपातसे श्री जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंमें लिखित प्राचीन असली सिद्धांतोंके मुल-पाठसे, आम सभामें सिद्ध करनेसे आम लोगोंको जाहिर हो जावगा की सच्चा कौन है।

अहो हमारे बालमित्र! गच्छवासीयों! तुम लोगों का भंडार जो जेसलमेरमें है, उस भंडारमे श्री जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंद लिखित प्राचीन असली सिद्धान्त है; उन सिद्धांतोंके जरिये चर्चा कर सको जरूर है; मगर तुम लोग कहोगे की जेसलमेरके भंडार के सिवाय बाहर नहीं निकल सकते है।

तो हम तुमसे पुछते है की अगर वे बाहर नहीं निकल सकते है, तो फेर वह सिद्धांत क्या काम के है? देखिये! तुमारे लेख भिन्न होकर तुमारा मजहब पुष्ट होता है; मगर ऐसे वक्त उपर यदि तुमारे भंडारके असली सिद्धांत तुमारे काम न आवेगे तो फिर वो सिद्धांतों का क्या पक्वान बनाकर भोजन करोगे या चटनी बनाकर स्वाद लेओगे?!! तथा तुमारा पोलके ढोल खुल जाए इस बारेसे तुम लोग

तुमार हाथमें रद होते हो; अगर इस जगह तुम कहांगे की साधुमार्गी अपने भंडारमें प्राचीन असली सिध्धान्त क्यों नहीं निकालते है? देखिये! प्रथम तो तुम लोग साधु मार्गी को नवीन ह एसा कहते हो, दोयम कदापि हम लोग प्राचीन असली सिध्धान्त निकालेंगे तो फिर तुम लोग कहोंगे की इन सिध्धान्तोंमेंसे पाठ निकल गये है; अतःएव यह झगडा कदापि नष्ट होनेवाला नहीं है अहो गच्छवासीयों! इस वास्ते तुमार ही जेसलमेर के भंडारके भी जनके एकादस अंगादि शास्त्रोंमें लिखित प्राचीन असली सिध्धांतोंमें चर्चा करो, और तुम लोगोंके पास से भाग मगावें हमारा निम्नलिखित लेखानुसार सर्व लेख सिद्ध करवा लेंगे; मगर फजुल बकवाद कदापि मंजूर नहीं करेंगे, अहो गच्छवासीयों! अगर तुम लोग जो हमारा प्रथमका जवाब जेसलमेर भंडारके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिध्धांतोंके नामसे कल्पित छापाद्वारा पब्लिकमें जाहिर करोंगे तो हम लोग कदापि मंजूर नहीं करेंगे, सबब की, जेसलमेरमें हमारे धर्मके मुनिराज पधार जावेंगे, बाकि रहैन तुमार लोगोंके श्रावक लोग हमारे धर्मके मुनिराजोंको भी जैनके एकादस अंगादि शास्त्रोंमें लिखित प्राचीन असली सिध्धांतोंका भंडार खोलकर कदापि नहीं दिखलावेंगे, सबब की आगे यह बनाव कइ वक्त बन गया है; तो हे गच्छवासीयों! तुम ही कहो की सत्यासत्यका निर्णय कैसा होवेगा!

पूर्वपक्षी—स्वामीजी आप तो बडे हठ दिखाई देते हो, हर बख्त कहते हो यह हम लोग अमुक बात नहीं मानेंगे तो क्या मूर्तिपूजक लोग शास्त्रमें नवीन पाठ दाखल करते है; और छन्दोंका फेरफार करते है क्या! जिससे की आप हरवक्त तकरार उठाते हो!

उत्तरपक्षी—हांजी! तुमारे कहने मुताबीक कार्रवाई मूर्तिपूजक लोग करते है। इस वास्ते हरवक्त तकरार करनी पडती है।

और माथिन सिद्धांतोके अनुकुल (बराबर) सर्व अधिकार होना चाहिये किंचत मात्र फेर फार होनेकी काइ जरूरत नहीं है जैसाक मालुकार म्योकाक—राजनामा राकड नकल धर्मरोंम जो जो लेख हाथ या ही अधिकार रखतेमे आव मगर राजनामे वगैराक विरुद्ध मेरव खातेमे कदापि नहीं आवेगे ईसी बजेसे जो जो ग्रथाको किंवा मक रणाका भी जैनक असल्मी और माथिन सिद्धांत स्विकार करेंगे या या ग्रंथोंमे किंवा मकरणोंमे भी जैनक असल्मी और माथिन सिद्धांतोंके अनुकुल अधिकार होवेंगे, तब या ग्रंथ किंवा मकरण पुर्ण सत्य मान जावेंगे, ईसके बारेमें हमनें तारिख ७ जुलाई १९१४ को–मिथ्या भ्रम नास्ति– इस सिर नामे की जाहिर खबरमें लेख दे चुके है, वो ले ख निचे दाखल किये मुजब:—

४ देखिये ! ईसके अलावा शांतिविजयजी निर्युक्ती मानने के वास्ते कोशीस करते है मगर निर्युक्तिमे जो जो अधिकार साम्याचार्यनें दर्ज किये है वह सर्व अधिकार भी जैनके एकदशांगादी ताड पत्रोमे लिखी त माथिन असल्मी सिद्धांत अंगिकार करेंगे वह निर्युक्ती माननेमे आवे गी मगर निर्युक्ति के सर्व अधिकार भी जैनके ताड पत्र में लिखीत माथिन असल्मी सिद्धांत स्विकार नहीं करेंगे तो निर्युक्ति कदापी नहीं मंजुर करनेमें आवेगी किंतु निर्युक्ति मंजुर करने के बारेमे शांतिविज-यजीने भगवती सुत्र, अनुयोगद्वारजी सुत्र, समवायंगजी सुत्र, नंदी जी सुत्र, यह चारो सुत्रकि, जो उक्त किताबमें पाठ दाखल किये हैं वो सब पाठ मुर्तीपुजकोके आचारीयोनें अपने बनाये हुवे ग्रंथोंको पुर्ण सहायताक वास्ते थी जैनके असल्मी सिद्धांतो (सुत्र) में नविन बनाक दाखल किये है एसा निश्चय होवेगा फेर निर्युक्ति निर्युक्ति का कर्ता और निर्युक्ति कि साक्षी देनेवाला यह सर्व खोटे ठहरेंगे अतएव शांतिविजयजीने निर्युक्ति क सर्व अधिकार भी जैनक एकदशांगादी

गाद पत्रोंमे म्म्सिलित माचिन असमी सिद्धांता (सुत्र) स ख्तु (सुत्र सम्म) आम समामें करक दिखम्म्यना चाहिये अगर शांतिविजयजी आम सभामें निर्युक्तिके सर्व अधिकार भी जनके एकदशांगानी ताद पत्रोमें म्मिलित माचिन असमी सिद्धातास मुकाबल्य करक नहीं दिख लावेंगे सो उपराक्त चारों सिद्धांतोंके जा पाठ निर्युक्ति माननेके वास्त उक्त किताबमे दाखल किये गये है वह पाठ निश्चय मुर्तीपुजकोंके आधारयाके बनाये हुए है ऐसा निश्चय होवेगा मगर तिर्थकरोंके फरमाये हुये है ऐसा कदापि निश्चय होवेगा नहीं इस उपर से निर्युक्ति मगर ग्रंथप्रकरण और इनके कर्ता यह सर्वस निश्चय होवेंगे

अगर निर्युक्ति वगैर ग्रंथ प्रकरणाके अधिकार पुर्ण सत्य होते तो शांतिविजयजी वगैर यति संवेगी पितांबरी त्याग आम सभाके मध्य में भी उनके असमी और माचिन ताड पत्रोंमें लिखित सिद्धांतासे सब अधिकार का मुकाबल्य करके दिखलाते

श्री मगधुल्या सुत्रमें दाखल किया हुआ नकिल पाठ— यत—

" तिहि नक्खत्त मुहुत्त रविजोगाइय पसत्थ दिवसे अप्पा वोसिरामि जिण भवणाइ पहाण खित्ते गुरू वंदित्ता भणइ इच्छकारि तुम्हे अम्ह पंच महव्वयाइ राइ भोयण वेरमण छट्ठाइ आरोवावणिया '

यह पाठ सम्यक्त्वशल्योद्धारके पृष्ट २६ में है, इस पाठका तात्पर्य दाखल करता लिखता है कि श्री मगधुल्या सुत्रमें कहा है कि इस तपा दिखा जिन मंदिरमें देनी,

श्री निशीथ सुत्रके मोम्यान उदेमें दाखल किया हुआ पाठ— यत—

" साहे दिसिभाग ममणुता—चाल्बुढ्ढ गच्छस्स रक्खणट्ठा वणेदवयाण काउसग्ग करति—सा आकंपि आ दिसिभाग पय कहेज्जा इत्यादि यावत एथ सुधोचयत्तत्थी पायच्छित ॥ "

यह पाठ भिन्नुति पगमजके पृष्ठ ६१ में है,

इस पाठका तात्पर्य दाखल करता के (अभिप्रायसे) ऐसा म्मा मालुम पडता है कि रस्ता भूल जानेसे मुनिने वनदेवीका ध्यान करना; श्री निशीथ सुत्रके अठारमाये उद्देशेमें दाखल किया हुआ नविन पाठ इस प्रकार है यथा

" जे भिक्खूण वयमे वध्ये लद्दे तिकट्ट बहू ठिव सिपण लोधणवा ककेणवा पउम चुन्नेणवा वन्नेणवा उरेलेलव्वा उघदेज्जवा उल्लोतया उवदसवा साइ अह्र "

यह पाठ मानवधम संहिता के पृष्ठ ८०° में दाखल किया है इस पाठका तात्पर्य ऐसा है कि जैन मुनिने पिले वस्त्र रखना चार शास्वता प्रतिमाका सिध्धांत मे दाखल किया हुआ नविन अधिकार देखिये ! श्री जैनके चकारम अंगादि माधिन अपनी सिध्धांतोंमें जा चार शास्वती प्रतिमाका अधिकार स्थल है, यो केवल नाम मात्रका है, विस्तार पुर्वक नहीं है, यह अधिकार या मुर्तीपुजकोंने मनकल्पित नविन माधिन सिध्धांतोंमें दाखल कर दिया है, अगर तिर्थंकरोंका फरमाया हुआ च्यार शास्वती प्रतिमाओंका अधिकार प्राचीन समस्त सिध्धांतोंमें दाखल था, मुर्तीपुजकोंके कहने मुताबिक शेष

सर्व प्रतिमाओंका अधिकार विस्तारपुर्वक चलना, मगर जिन प्रतिमा-का अधिकार भी जैनके एकादस अगादि प्राचिन असली सिध्धांतोंमें किसी स्थानपर नजर नहीं आता है, ईसके उपरसे निश्चित होता हैं की चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार भी तीर्थंकर भगवन्तोंका फरमाया हुवा नहीं है, मगर मुर्तीपुजकोंने अपना मत पुष्ट करन के लिये तथा प्रतिमा सिध्ध करने के वास्ते, श्री जैनके एकादस अगादि प्राचीन असली सिध्धांतोंमें चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार नवीन मनकल्पि त दाखल किया हैं, लेकिन उपर कहा हुवा अधिकार श्री तिर्थंकर भगवन्तोंका फरमाया हुवा नहीं है यह अधिकार वास्तविक रीतिसे देखते-यह सत्य हैं की मुर्तीपुजकोंका दाखल किया हुवा हैं; देखिये ! मुर्तीपुजकोंने निश्चय वगरह सिध्धांतोंमे मनकल्पित नवीन पाठ दाखल करके भंडारोंमें वह सिध्धांत दाखल कर दिये हैं; मगर पांच पचास वर्षोंके बाद मन कल्पित नवीन अधिकारोंको पश्चात पिछेके लोग प्रमाण करके असत्य मार्ग ग्रहण करेंगे; लकिन प्राचीन हैं य नहीं ऐसा न समजकर निर्णय न कर सकेंगे, यह बात सत्य किसी प्रयोग प्रतित नहीं होती है;

फिरभी देखीये ! श्री जैनके एकादस अगादि प्राचीन असली सि ध्धांतोंस जो जो विपरीत पाठ हैं; वह सब के सब मुर्तीपुजकोंके दाखल किये हुए हैं; सिद्धांतोंमें विपरीत पाठ दाखल करनेका सबब यह हैं की–इस भार्य क्षेत्रमे बारह वर्षका महा दुष्काल पडा था, उस वक्त कितनेक उत्तम मुनि आर्यक्षेत्रोंको छोडकर अन्यक्षेत्रोंमें उतर गय, पीछे जो मुनि बाकी रह गये थे, वह मुनि संयमसे भ्रष्ट होकर; श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंस विरुद्ध मुर्तीपुजाका नवीन मत निकाल्य तथा प्राचिन मागधिभाष्याम जो टीका, चुर्णी भाष्य नियुक्ति थी व निमुल करके अपने मन मान मनकल्पित नविन टीका, चुर्णी, भाष्या, नियुक्ती, ग्रंथ और प्रकरण बनाना शुरु किया

और टीकादि ग्रंथ तथा प्रकरण वगेरहमे श्री जैनके एकादस अंगादि प्रधान असली सिद्धांतोंसे विपरीत कितनेक अधिकार दाखल करके पूर्वाचार्योंके नाम जाहीर करके, भोले-भद्रिक जीवोंको भ्रमीष्ट कर डाले है; अब मुर्तीपुजकोंके बनाये हुए टीकादि ग्रंथ तथा प्रकरण वग रहम श्री जैनके एकादस अंगादी प्राचीन असली सिद्धांतोंसे जो जो विरुद्ध अधिकार दाखल किये है—उन सब अधिकारों की सहायताके लिवा पुष्टिके लिये श्री जैनके एकादस अंगादी प्राचीन असली सिद्धांतोंका फिरसे वापीस लिखवाकर मनकल्पित और नवीन पाठ दाखल कर दिये है; जैसा की महानिशीथ सूत्रका जीर्णउद्धार श्री हरिभद्राचार्योंने किया है, उसमें मन कल्पित पाठ दाखल करके फिर मिथ्यादुष्कृत्य दिया है; और इस वक्त भी मुर्तीपुजक लोग श्री जैन के एकादस अंगादी प्राचीन असली सिद्धांतोंमे मनकल्पित नवीन पाठ दाखल करते है; और शब्दोंका भी फरफार करते है; इस उपरसे निःसंदेह पुरी तोरसे सिद्ध (निश्चित) होता है की श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिध्धांतोंमें जो जो विपरीत पाठ है, वे सर्व मुर्तीपुजकोंके दाखल किये हुए है; लेकिन श्री तीर्थंकरोंके फरमाये हुवे नहीं है;

अब और देखिये! मुर्तीपुजक लोग कहते है की श्री जैनके एकादश अंगादि प्राचिन असली सिध्धांतोंका एक कानां मात्रा वगेरहकी कमीजादी (हानी-वृद्धि) कर तो वह करनेवाला अनंत संसारी होता है अतःएव श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिध्धांतोंमें मन कल्पित और नविन पाठ दाखल करनेवालोंका कितने अनंत संसारी कहना? यह कोई कह सकता है क्या? हाय! अफसोस!! एसे मिथ्यात्वियोंको जैनी कौन कहेगा?!! ख्याल किजीये! उपर हम जो अनेक सबब बतलाये उन सबोंमे मुर्तीपुजकोंका छपा हुवा फ-

लिस जबाब हम लोग कदापी मंजूर नहीं करते हैं,

पूर्वेभी–इस बातकी कहांतक वार्तेज करं ' आपका फरमाना मालुम हैं; अहो गच्छवासीयों ' तुमार तरफसे अखबार द्वारा रजिष्टर्से हम का खबर मिलेगी की हम गच्छवासी मोग (नामका खुल्लासा करना गुम रखना नहीं) तुमार निम्नलिखित लेखानुसार तुमार प्रश्नका उत्तर देनेको हम मोग तैयार हैं, वह दुतर्फा सम्मति से यथा स्थान नियत किया जावेगा, बाद दोनों तरफ के ? । आप लोग जेसलमेर में हाजर होकर भी जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंमें लिखीत प्राचिन असली सिध्धांतोंकी मता साथ लेकर यथा स्थानपर हाजर होवेंगे तब हमार निम्न लिखित लेखानुसार, आम सभामें अहो गच्छवासीयों' तुम लोगोंसे हमार प्रश्नका उत्तर लेनेमें आवेगा, अहो हिंसा धर्मी गच्छवासीयों ' तुम लोग हमेशां पुकार करते थे की ढुंढीयोंका किसी वक्त विजय नहीं हुवा हैं। सो अब हमने तुमारा विजय करनेके वास्ते हमार इस ग्रंथमें नवीन नमुना रुप अति सरल और मागधीभाषाका पाठ दाखल कर हैं, सो हमार उपर लिखे हुए लेखानुसार भी जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंमें लिखीत प्राचिन असली सिध्धांतोंके मूल पाठसे हमार लेखोंका जाहिर र्पेटीवाई न मरदुमी व हिम्मत के साथ जोरसे आम सभामें फोरन जबाब देना चाहिये, अहो हमार धर्म्मेमित्र गच्छवासीयों ! देखिये ' कैसा उमदा वक्त आया हैं, यह अमूल्य वक्त वृथा गुफतमें गमानेका नहीं हैं; मगर मरदुमी छोडकर गाडर्की तरह पुठ दिखलाय कर लम्ब कर्ण भाष्यके पुम (पुंछ) की पदवी लेकर भागना मत. वाह ' भाई, वाह ' हमे उम्मेद हैं की बराबर फौरन हमार अगले पिछले लेखोंका जबब दोगे

॥ इत्यलम् ॥ श्री शान्ती: ॥

अथ प्रवेशीका

वलिये ' " मिथ्यात्व निकंदन भास्कर " ये ग्रंथ हमने हमारे या पवित्र जैन मुर्तीपुजकोंके उपर कोई भी तरेकी द्वेष बुद्धि करके इस ग्रन्थकी रच नही करी हैं मगर हमारे परम स्नेही जैन मुर्तीपुजकोंने थोनु कन्फरन्स को सूचना द्वारा दुतर्फा ग्रंथोंका मुकाबल्ला (मिलाप) करके इनसाफ (न्याय) की मागणी करी थी, वास्ते ये ग्रथ निर्माणा किया गया हैं सो अब थोतु कान्फरन्स की तर्फे से इन्साफ करवाना ये करवाई ख्वाशीसक साथ हमारे मुर्तीपुजक भाई अवश्य ही करेंगे तथापि ये ग्रंथ पुर्ण दया धर्म की शुद्धिका कर्ता हैं इस लिये सुत्र श्री उत्तारा ध्येनजीके पाचवे अ घ्यनकी तिसवी गाथाके मुताबिक इन्साफ हाके धर्मा धर्मका निर्णय अवश्य ही होना चाहिये और ये करवाई सामने पक्ष वाल्योंने अवश्य ही करना चाहिये

(गाथा)

तुलिया विसेस मादाय, दया धम्मस्स खतिए
विप्प सिइज्ज मेहावि, तहा भुएण अपणो ॥३०॥

भावार्थ—जैसा जव्हरी, जव्हारातको पुर्ण रितिसे परिक्षा करके फर उस जवाहरात का कदि मे दामके खामता है मगर उक्त करवाई करनेमें किंचित मात्र फर्क नही रखता हैं इसही तरेंसे मनुष्योंने अन क बुध्दियों लगाके पुरा तौरसे धम की परिक्षा करके फर धर्मको ग्रान न्य करिये दामके तौरसे फर पुर्ण पवित्र और उत्तमोत्तम प्रधान धम धनसा हैं ये निश्चय कर इस परस भा न्याय नहीं पोहचे सो बुध्दि व, दुर्दर्शित, पक्षपात रहित, न्याय पक्षी, मधावि पंडित (परिक्षाके

गुण) वैराग्यत्व १ पादित्व २ कवित्व ३ आयामत्व ४ गमत्व ५ इत्यादि ज्ञान प्रबोध १ दर्शन प्रबोध २ चरित्र प्रबोध ३ धर्म प्रबोध ४ मैत्रा प्रबोध ५ मान प्रबोध ६ शास्त्र प्रबोध ७ तत्व निश्चय प्रबोध ८ इत्यादि ज्ञान शक्ति १ दर्शन शक्ति २ चारित्र शक्ति ३ धर्म शक्ति ४ दान शक्ति ५ इत्यादिक सुभ गुणा लंकृत होवे, ऐसे पंडित और ज्ञानी पुरुषोंसे अनक प्रकारके प्रश्न पुछके पुरी तोरसे धर्मका निश्चय कर, राजा परदेशीवत तिनों तत्वोंका निश्चय होनेसे (श्लोक) षेपेसु देवस्तु निरजैनोमे गुरु गुरस्तुद मिसमिमें धर्मसुधर्मस्तु दया परमे, प्रणेव-तत्वानि भव भवमे ॥१॥ जो गये (भुतकाल) कालमें, जो अशुद्ध, नीच और मलिन कुगुणों करके संयुक्त जो हिंस्या धर्म है उस धर्मसे पुर्ण प्रेम (स्नेह) था, परंतु अब उक्त धर्मसे स्नेह (मोह) को पुरी तोरसे दुर [अलग] करके अपणी आत्मा शुद्ध परम पवित्र निर्मल सर्वोत्तम शुभगुणालंकृत क्षमा संयुक्त जो दया धर्म है उसमें अपणे चिदानंद (आत्म) को प्रवेश करे अर्थात दया धर्म अंगीकार करे, उपरोक्त रितीसे धर्मकी निश्चय करनेवाले पुरुष ईस भवका (तात्पर्य) समजके सम्यक्त्वी बने (होवें) गे

त० उसको न० नमस्कार करते है। भ० ऐसे परम पवित्र धर्मके विराय म० सदाकाल (हमेश) म० शुद्ध मनसे अंगीकार कर। उ० उन पुण्यों की तीन लोगमें यशकिर्ति होती है।

दोहा

पंच परमेष्ठी प्रणमी करी, करुं कसौटी सार;
कंचनवत धर्मकी, निर्णय करो भवि सार ॥१॥
वर्धमान शुद्धिकरण, अशरण शरण है जास;
शुभ दृष्टि शुभ दृष्टिका, प्रभु मुज पुरो आस ॥२॥
विघ्न हरण, मंगल करण, कल्पवृक्ष कामधेन;
चिंतामणी रत्नसम, प्रभु समरण है ऐन ॥३॥
अतिशय विमल चोतिस है, वाणी गुण पंतीस ;
सप्त हस्त कंचन वरण, इंद्रा इंद्र जगीस ॥४॥
रसनारस अमृतरसन, भवि भ्रमर गुंजार;
मद्भूत सोरम लुब्धीयो, लोभ न तृप्त थाय ॥५॥
गगन मंडल गगनमां, अमराडाम् गाजेत ;
श्रीमुख वाणी मेघाजवां, पाखंडी भाजत ; ॥६॥
वन वजीर गौतम (गुण) नीलय, लब्धीतणा भंडार;
अघ रखु हो साहेबा, आपो बुध्दीसार ॥७॥
गुरी इन्द्र नरीन्द्र है, गुरु सेवनके सेम ;
गुरु ज्ञानमानमाल हो नित् भविसाय सेव ॥८॥
सारा जमन सारसा, आश्म नियर समद
मेस्म माती धन है रवि ज्योति आमद ॥९॥
गुरु सेवा नपति मिले, सिद्धे समस्य काज ;

कष्ट विकष्ट दुरे टले, पामे शिवपुर राज ॥१०॥
गुरु ध्याता गुण है निखे, कहेता लहुन पार;
किरीस कुंजर कियो, भवरणमे आधार ॥११॥
रस्नाग्निंदु अधिपति, पंडित प्राणआधार;
पुर मांगु हूं शारदा, अक्षर आपो सार ॥१२॥

सवैया इकतीसा

त्रिलोकी के नाथ आप त्रिहु काल भाव जाणि,
द्वादश अंगवाणी, भी मुख प्रकाशी हैं ॥
धारण हो भव्य जीव, सिद्धारण अशुभ कर्म;
अभारण पद्मसम (जीव,) निर्वाण स्वामी हैं ॥
ताहिमे जनक मेरु, धार लिये मुख मति;
टीका चूर्ण भाष्य ग्रंथ, सायणके भाषा है ॥
संस्कृत देववाणी, सिद्धांत है आर्षेकृत;
मात्र मोसो ढुंढक न, मिथ्या (मारी) दृष्टि भासि है ॥

मनस्वी प्रकर्षता न, तरंगकी कसोसहुंमें,
सांटे२ ग्रंथ रचे,
पंच विषय भोगकुं, धर्मके विरुद्ध और,
सिद्धांत की साख नहीं,
ऐसे अधिकार घरे, कष्ट मरन भोगकुं,
भोळावो भरमाय डारे,
मिथ्यामतकी कथनामांय, परदको वस्त्रयो मुख,
दुर्मति लगाकुं, दया शत्रु हिंसा प्यारी;

छवकायके अरे बैरी, कुंदन फरेत थाने,
भ्रष्ट किये लोगकु ॥१॥

चंद्रायण

पढित पढियो खूब, वैयाकरण छंद कोष है ॥
वेद पूराण कुराण कस्समे जोस है,
जाण्यो है सर्व दिन पिंगल और फारसी ॥
मुनि हा कुंदनेश धर्म मर्म नही जाण,
अंध हस्त आरसी ॥

दोहा

भ्रग अनेक अक्षर हैं, ज्यामे भेद अनेक ॥
अर्थका अनरथ किया, लीजो सोंजि देख ॥१॥
अमृत रस वतम्मयके, प्रमिश्रित कियो जहेर ॥
यांको पान क्रिया धर्का पडे चौरासी फेर ॥२॥
यांकी रास्ते चालसा निश्चे दुर्गति जाय ॥
श्रीवरागकी वाणीसे, उलट पंथ चलाय ॥३॥
नकली तो तारे नहीं, निश्चे डुबावण हार ॥
नकलीकी सेवा कियां, भवजल कूप मंझार ॥४॥

सवैया छत्रीसा,

अनंत संसार वृद्धि, एक काना मात्र शून्य,
अधिक हीण जो करे, सिद्धांतके मांयरे,
ममक करित पाठ, सिद्धांतमें चाल्या देखो ॥

टीकादिमें अधीकार, विमीत देगायरे,
सोय नाम पूर्वाचार्य, महाराजाकव लेवस हैं।
केता अनत संसार, इम्दि को पार नास्र॥
कंदन करैव पशु, मोकं ईयमें मारी,
एसा तो नर अविवहारमें सिद्धायर॥१॥

दोहा

निर्विष वाणी वागरे, पुर्वाचार्य कहेवाय।
सावद्य वाणी वागरे, पुर्वाचार्य ते नाय॥१॥
उल्लु तो वेखे नहीं, रति किरणको रूप।
जिनवाणी परखे नहीं, क्या वाणीमें चूक॥२॥
दृष्टि होवे अविजणी, जावे पत्ता सूक।
जिन वाणी परखे नही, क्या वाणीमें चूक॥३॥
चक्षुहीण पेम्वे नहीं, दरपणमांही मुख।
जिन वाणी परखे नही, क्या वाणीमें चूक॥४॥
जिन वाणीका परखकर, हृदयमें लेवो धार।
सिद्धपद पावो सही, यामें फेर न सार॥५॥

वर्ग १ ला

श्री दया वर्ग

दोहा

दया रणासिंगा बज रहा चेतो चेतो नरनार—
मोक्ष गढ कायम करो, सिघ्र होवो तैयार ॥१॥

॥ दया धर्मस्य जननी ॥

सज्जन जन ! दया धर्मकी माता है !!

देखिये ! यह भी एक बडे ताज्जुबकी बात है की हमने कित नेक पुस्तकोंमें अवलोकन किया है, यति, संवेगी और पीताम्बरी दिगाम्बरी वगेरहके मुखसे भी सुना है कि श्री जैन साधु मार्गी (ढुंढिया लोग) केवल दया दया मात्रका मुंख्य पुकार करते है, ढुंढ म० १८ ईस वास्ते इस ग्रथमे अनेक याने जैनी—जैन मतक मानने वाले वेदांती—वेदके मानने वाले पुराणी—पुराणक मानने वाल कुरानी—कुरान शरीफके मानने वाले (मुसल्मीन लोग) किरानी—बाईबल के मानने वाले (इंग्रेज लोग) जरथोस्ती—जरथोस्ती शास्त्रके मानने वाले (पारसी लोग) इत्यादि मजहबोंसे दया सिध्द करने की जरूरत पडी है ।

जिस वक्त तिर्थंकर महाराजको केवलज्ञान और केवल दर्शन (ब्रह्म ज्ञान तथा ब्रह्मदर्शन) की उत्पत्ति होती है—उस वक्त प्रथम सूत्र श्री आचारांगजी फरमाते है, उसमें दया संयुक्त धर्म फरमाया है उसे परम पवित्र और शाश्वत तथा सनातन फरमाया है।

—श्री आचारांगजी का पाठ—

सेबेमि–जेय, अतीता, जेय पडुपन्ना, जेय आगमिस्सा भगवंतो, से सव्वेवि, एव माईक्खति, एवभासंति, एव पण्णवंति, एव परुवेति, सव्वेपाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा ण अज्जोवयव्वाण परिघातव्वा,ण परितावयेव्वाण उद्दवेव्वाएस, धम्मे सुध्ध, णितिए, सासए, मसेच्च लोय, खेयणेहिं पवेतितें, तजहा–उट्टिएसुवा, अणुट्टिएसुवा, उवरय दंडेसुवा, अणुवरेय दंडेसुवा, सोवाहिएसुवा, अणोवाहिएसुवा सजोगयरएसुवा असजोगरसुवा आ० अ ४० उ० १-०

भावार्थ–मैं कहता–हुं–के जो तिर्थंकर गये कालमें हो गये है, और वर्तमान कालमें जयवंता (हाजर) विचरते है, और आवते भविष्यकालमें होवेगा, व सर्व तीनकालके तीर्थंकर ऐसा फरमाते है–ऐसा बोलते है–एसी साक्षी भरते है। तथा ऐसा वर्णन करते है। सर्व प्राण (बेइंद्रिय–तेइंद्रिय–चौरेंद्रिय), सर्व भूत (वनस्पति), सर्व जीव (पचेंद्रिय) सब सत्व [पृथ्वी कायो–तेउ–वायु–], इन सबको मारना नहीं, इनोके उपर हुकम करना

नहीं, इनोंको कनजे करना नहीं, इनोंको मानस मारना नहीं,—एसा धर्म पवित्र नित्य [शाश्वता—सनातन), लोगोंके दुःखोंको जाननेवाले श्रिलो कीनाथ भगवानने फरमाया है। भाषण करनेको तैयार होनेवालोंको, नहीं तैयार होनेवालोंको, मुनिजनोंको, गृहस्थोंको, रागियोंको, मार्गके चलनेवालोंको, नागियोंको और भोगी वगेरह सर्वोंको एसा दयामय सनातन और पवित्र धर्म बतलाया है इनके सवाया और भी प्रश्न व्याकरण सूत्र तथा दशवैकालिक सूत्र वगेरह अनेक अनेक असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें दयामय धर्म श्री जैनके असली श्रीमान अनादिकालके तीर्थंकरोंने फरमाया-बतलाया है

वास्ते ' श्री जिनराज (तीर्थंकर देवनें) किसी भी मजहबवाले धर्म प्रहण न करने साफ साफ एसा फरमाया हैं कि—छकाय जिवोंका हनवाले छकाय जिवोंके मारनेको उपदेश देनवाले तथा हिंसामें धर्म बतलाने (कहाने) वाले इन सर्वोंको अनार्यमार्गके पालनेवाले फरमाये है। वास्ते वीतराग देवका कैसा अद्भुत ज्ञान हैं

॥ आचारांगजीके इसही अध्यायनका पाठ ॥

" आवंती कयावंती ल्यायंसी समणाय माहणाय पुढो विवाद वदंति से दिठ—चणे सुयंचणे मयचणे विण्णायं चणे उड्ढ अहतिरिय दिसासु सब्बओ सुपडिलेहियं चणे सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वेसत्ता हंतव्वा अज्जावेतव्वा परिघातव्वा परितावयव्वा उद्देवयव्वा एत्थावि जाणह णत्थित्थदोसा अणारिय वयणमयं "

भावार्थः—इस जगतमें जो कोई साधु तथा ब्राह्मण वगेरह धर्मके विरुद्ध बकवाद करते है। जैसा की हमने देखा, हमने सुना, हमने माना, हमने निश्चय कर समझा, हमने सर्वादिशाओंकी तलाश करके, सब प्राण सब भूत, सब जीव, सर्व सत्व—को मारना, दबा देना, पकडना, दुःखी करना (तकलीफ

देना) तथा जाबस मार डालना, ऐसा कार्य करनेसे किंचित मात्र भी दोष की प्राप्ति नहीं होता है–पाप नहीं लगता है। इत्यादिक बकवाद जो हैं सो पाप की वृद्धि करनेवाली हैं। इस वास्ते ज्ञानी पुरुषोंने फरमाया हैं कि धर्मके विरुद्ध बकवाद करनेवाले लोगोंके वचन हैं सो अनार्य वचन है।

देखिये ! अगर यहपर कोई कुतर्क कर की यह अधिकार जैनियोंके वास्ते ज्ञानीने नहीं फरमाया है। तो ऐसा कुतर्क करने वालेको हम कहते है की, जैनियोंका धर्मनिमित्त छकायकी हिंसा करना–कराना करतेको भला जानना ऐसा ज्ञानी पुरुषोंने भी जैनके आचारांगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंमें कहा फरमाया है ! सो खुलासा मय पाठ फोरन दिखलाना चाहिये।

देखिये ! दया धर्मके द्वेषियोंको सिद्धांतोंमें ज्ञानीने क्या फरमाये हैं! और उनोंके वचनोंको अनार्य कहे हैं।

सुत्र श्री सुयगडांगजी स्कंध अध्ययन ६ आर्द्रकुमारके अधिकारमें–

(गाथा)

दयावर धम्मदुगछमाणा, वाहू वह धम्म पससमाणा
एगपिजेमायेयती असीलणायोणि सजातीकउ सुरेहु

भावार्थ –दयारूपी प्रधान और पवित्र धर्मकी दुगंछा करनेवाले–अर्थात् दयाकर धर्मका मलीन मनसहत निंदा करनेवाले, और हिंसा धर्मकी प्रशंसा करनेवाले तथा उनोंका भोजन वगेरह से पुनमोंको उत्तम गतिकी प्राप्ति नहीं होगी।

महाशयों ! महाशयोंका ध्यान है कि बिना विचार किये केवल

देनेवालोंका देखो कैसा भग्न फर्माया होता है। हिंसात्म चंडिकाको मनानेवाले तथा हिंसात्म चंडिकाकी पुजा प्रतिष्ठा तथा भक्ति करनेवा र्लोको उत्तम गति नहीं मिलती है। इन लोगोंको भोजन वगरहकी महायता देनेवालोंका ज्ञानी पुरुषोंने उत्तम उंच्च गतिकी नास्ति फरमाई है। देखिये! इतनी बडी भारी बातोंपर भी इनोंका ख्याल नहीं पहुचता है तो दुसरी बात क्या जानते होवेंगे? और ऐसा होते भी पंडित कहलाते हैं। हाय, अफसोस मुर्खोंके शिरोमणियोंको कैसे समझावें?

देखिये! दिगंबर आम्नायके शास्त्रमें भी धर्म निमित्त पञ्चकाय जीवोंकी हिंसा करना नहीं ऐसा साफ फरमाया है।

"पद्मपुराणके अध्याय १०८ एक सौ आठमें लिखा है की सकल भूषण केवली रामचंद्रजीसें कहते हैं की, जहां दया-क्षमा-वैराग्य-तप-सत्य य-नहीं-तहां धर्म नहीं। जहां शम-दम-संवर नहीं-तहां चारित्र नहीं। जो पापी हिंसा करि-झुट बोले-चोरी करे-स्त्री सेवे-महा आरंभी हैं-महापरी ग्रही है, तिनके धर्म नहीं। धर्मके निमित्त हिंसा करे है, व अधर्मी अधमगतिके-दुर्गतिके पात्र है। जो मूढ दीक्षा लेकर आरंभ करे हैं, सो य ति नहीं। यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है। परिग्रह धारकका मुक्ति नहीं। जो हिंसा विषे धर्म जाने, षट्काय जीवनकी हिंसा विषे धर्म नहीं। हिंसकको इसभव तथा परभवमें सुख नहीं, मुक्ति नहीं। जे सुखअर्थी धर्मकअर्थी जीव घात करे सो वृथा है। इत्यादि अधि कार। यह ग्रंथ इस वक्त हमारे पास हाजर नहीं होनेसे मूल पाठ संयुक्त अधिकार नहीं दाखल किया है।

मुसिये! एवं अन्य मतके पुराणादिकमें कैसा दयाका महत्वन

कार फरमाया है की जिसका अवलोकन कर्ताको पुर्ण आनंद आता है।

भारत अधिकार

श्लोक

अहिंसा लक्षणो धर्मो, अधर्मः प्राणिना वधः ॥
तस्मात धर्मार्थीभिर्लोक, कर्तव्या प्राणिनां दया ॥१॥

भावार्थ—देखिये! धर्मका लक्षण क्या है की, सब जीवोंका रक्षण करना। और अधर्मका लक्षण क्या हैं की सर्व जीवोंका प्राणघात करना। (जीवोको मार डालना) इस वास्ते अहो धर्मार्थी (धर्मके करनवाले) पुरुषों सब प्राणि-भूतके उपर दयाभाव रखो। सर्व जीवोंको मरणांत कष्टसे बचावो।

महाहास पुराणका अधिकार

श्लोक

अहिंसा परमो धर्म, अहिंसा परम तप ॥
अहिंसा परमं ज्ञानं, अहिंसा परमं पद ॥ ॥

भावार्थ—दया है सो उत्कृष्ट धर्म है दया है सो उत्कृष्ट तप है दया है सो उत्कृष्ट ज्ञान है और दया है सो उत्कृष्ट पद (मोक्ष) है ॥१॥

श्लोक

अहिंसा परमं दानं, अहिंसा परमो दम ॥
अहिंसा परमा यज्ञ, अहिंसा परम शुभम् ॥२॥

करेगा, यह साधु सर्व प्राणिमात्रको दयाका उपदेश करेगा और उना का हृदय कमलभी करुणा रससे भरा हुआ होता है। ऐसे धर्मसे और सद्गुरुसे कल्याण कारक कार्यकी सिद्धि होती है। लेकिन जो साधु हिंसाधर्ममें सदाकाल रमत (तल्लीन) रहते हैं, उनोंसे कदापि सर्वत्र प्रकार दयाका उपदेश दिया नहीं जाता है। सबब की उनोंके हृदय कमल महा कठोर होते हैं। एस धर्म गुरुओंसे कल्याण कारक कार्य कदापि सिद्ध नहीं होता है। इस वास्ते सर्व महाशयोंने दयायुक्त धर्म अंगिकार करना चाहिये।

देखिये! सर्व जीव जीवन धारण करनेकी इच्छा करते हैं; लेकिन मृत्युको कोईभी जीव नहीं चाहते है।

॥ मार्कंड पुराणका अधिकार ॥

श्लोक

अमेध्य मध्ये कीटस्य, सुरेंद्रस्य सुरालये ॥
समाना जीविताकांक्षा, तंस्य मृत्युभयंद्वया ॥१॥

भावार्थ—अशुचेमें उत्पन्न किडा तथा सुर देवता का मालिक जो इंद्र वो यहां रहेता है सुरालय (सुरलोकमें रहता है) लेकिन दोनोंको जीवनकि इच्छा बराबर है और मरनेका भय दोनोंको बराबर है मगर कम ज्यादा नहीं है इस वास्ते सब प्राणिमात्रको मरणादिक भयसे बचाना चाहिये (सब जीवोंपर दया रखना चाहिये) यह धर्म पवित्र और सनातन है इस धर्मसे ही इस आत्माका कल्याण होवेगा।

भारतका अधिकार

श्लोक

यदि प्राणि वधे धर्म स्वर्गस्य खलु जायते,
यदि प्राणि रक्षणे धर्म कस्य सयोनि जायते ॥१॥

भावार्थ—हरिप्रिय ! जीवोंका मारनसे यदि धर्मकी प्राप्ति होकर प्राणि वध करनेवाले स्वर्ग [सुर लोक] को जावेंगे तो जीवोंकी रक्षा अर्थात दया धर्म पालन करनेवाले प्राणि कौनसी गतिमें (ठिकाणे) जावेंगे, याने उनको अधोगति (नरक) मिलेगा ! कदापि नहीं ! अतएव जीवोंको मारण करने वाले तथा हिंसामें धर्म स्थापन (अंगीकार करने) वालोंको अधोगति मिलेगी.

वेदवाक्य

॥ अहिंसा परमो धर्म इतिवचनात ॥

भावार्थ—हरिप्रिय ! वदमें भी कहाहै दया है सो उत्कृष्ट धर्म है लेकिन हिंसामें धर्म वदमी सिद्धकर नहीं करता है सो अब दयाम धर्म सिद्ध हुवा

महा भारतका शांति पर्वके २६२ वे अध्यायमें कहा है

श्लोक

अद्रोह सर्व भूतेषु कर्मणा मनसागिरा ।
अनुग्रहश्च दानंच सतां धर्म सनातनः ॥

अर्थ—मन वचन [वाणी] और काया ये तिनोंके कर्म अर्थात मनवचन कायासे सूक्ष्म किंवा स्थूल— छोटे अगर बडे [एकेंद्रिसे लगाके पचेंद्रिय] सब प्राणि [जीव] मात्रसे द्रोह [इर्षाका बुरा मनसेभी द्रोह एसी इच्छा नहीं करना] नहीं करना चाहिए, सब प्राणि मात्रपे कृपा [मित्र भाव]

रखना चाहिये, फेर सब प्राणी मात्रको अभयदान देना चाहिये, अर्थात मरणादिक महा भयंकर कष्टसे बचाना चाहिये इनोपे उपकार करना चाहिये (देखो फेर भी शास्त्रकार क्या फरमाता है) " पर उपकारये पुन्याए पर पिडाय पापाए " इति वचनात्, मरणादिक महा भयंकर कष्टसे प्राणी मात्रा का बचाना यही पुण्यका काम है, और मरणादिक महा भयंकर कष्ट प्राणी (जीव) मात्राका देना यही पापका काम है) यही परम प्रधान सत्य पु रुषोंका सनातन [प्राचीन-अनादि] धर्म है

श्रीमद् भगवद् गीताका सत्तरमा अध्यायमें १८ में श्लोकमें कहा है

श्लोक

देव द्विज गुरु प्राज्ञ, पूजनं शौच माजनम ।
ब्रह्मचर्यम हिंसाच, शारीरं तप उच्यते ॥

अर्थ—उनकी अर्थात परम्पर ब्राह्मणकी यहांपे ब्राह्मणके गुण दिख-लाते है

श्लोक

क्षमा दया तपा ध्यानं, सत्य शील धृति घृणा ।
विद्या विज्ञान मास्तिक्य, मेतेत ब्राह्मण लक्षणं ॥
अहिंसा सत्य मस्तेयं, ब्रह्मचर्या परिग्रह ः
काम क्रोध निवृतस्य ब्राह्मणस्य युधिष्ठिर ॥

इत्यादि गुणो करके संयुक्त होवे उसे ब्राह्मण कहना चाहिये, और इस गुणोंके धारक ब्राह्मणोंको दान देना अयोग्य नहीं समझा जायगा मगर नित दासत्व किये हुए दुर्गुणों करक सयुक्त ब्राह्मणों

का श्रान देनेसे निश्चय दुर्गति प्राप्त होवे उसमें कुछ लाजम नहीं है यह निश्चय समजना

श्लोक

सत्य नास्ति तपो नास्ति, नास्ति चेंद्रिय निग्रह'
सर्व भूत दया नास्ति, मसेत् चंडाल लक्षण ॥

(महा भारत शांति पर्व)

गुरुकी और ज्ञानी पुरुषोंकी पवित्रता, सरलता, पुजा और प्रविष्टा किस तौरसे करना चाहिये, ब्रह्मचर्य अर्थात इन्द्रियाके विकारोंकि नास्ति करना—(स्त्री सेवन करना नहीं) और अहिंसा अर्थात सर्व जीवों का मरणांतिक महा भयंकर कष्टसे बचाना—यह ही दया—यही सर्व प्राणि मात्रके अहिंसा परम पवित्र तप है, देखिये ' अब हिंसाका धर्म कहां रहा

इसलिये ' प्राणिके प्राण लूटनेसे (आत्माको जानसे मारनेसे) कैसा जरूर दुःख चढ़ना होता है ये हम कुछ बयान नहीं कर सकते है, मगर अन्य मतके शास्त्रोंमें भी इसके बारेमें कैसा ॰ उत्तम अधिकार फरमाया है सो सुननेसे भव्योंको पुर्ण आनंद प्राप्त होता है

— महा भारताधिकार —

श्लोक

कर्म नापि विद्धम्य, मांस पदना मक्ष ।
धर्म कुमा दिव्य प्राप्ते, मांसं मांसस्य किं पुनः ॥

भावार्थः—साथिये ! सूक्ष्म अगर स्थूल सर्व जीव मात्रके शरीरमें कांटा लगे अर्थात (दबा वा चुभा देव) तो कैसी जबर दस्त वेदना [दुःख] होता है, इसका पुण बयान कोइभी नहीं कर सकता हैं इसिये ! कांटाके प्रयोगसे इतना जबर दस्त दुःख प्राप्त होता हैं, तो फर बम, भाला, छुरी, कटारी, तलवार, चक्कु, सांगा, गुप्ति, सुई, सोय लकडी, वगैरह शस्त्रोंस मारते हुये प्राणी (जीव) का कितना जबर दस्त (महा भयंकर) दुःख होता होवगा ? इसका बयान मनुष्य मात्र नहीं कर सकता है, सिर्फ समा भुगतने वाले प्राणीका प्राण अर्थात जान जाता है अगर ज्ञानी पुरुष जान ते हैं इसोंके शिवाय दुसरा कोइभी नहीं जान सकता है

साथिये ! इस दुनियामें सूक्ष्म अगर स्थूल सर्व प्राणी मात्रको मरणे सरिखा महा भयंकर दुःख एक भी नहीं हैं इत्यादि भयंकर दुःखोंको दूर (नास्ति) करणेके वास्ते ये चिदानंद कैसा जबर दस्त उपाय करता है के हर तरेसे प्राण (जीव) का बचाव होनाही चाहिये

श्लोक

दिसे मार्य माणस्य कोटी, जीवितमे धन धन कोटी।
परित्यज्य जीवा, जिर्वातु मिच्छति॥

भावार्थः—इसिये ! कोई मनुष्यका प्राण लेनेके वास्ते (मानस मारनेके वास्ते) हत्यार लेके आवे, और कहे के मै तेरेको जानसे मार डालूंगा अर्थात वध करूंगा तब वो मनुष्य उस घातक मनुष्यको करोडन रुपियोंका द्रव्य देकर अपनो प्राण बचाना चाहता है ? मगर इतने परभी अपनी जानका बचाव नहीं होता देखे तो करोडन रुपैयोंका माल अर्थात छोड प्राणके अपनी जान रखे (बीचको) छोडे वेपरवा माल भाव मगर अपनी जानकी मास्ति अर्थात मृत्यु कदापि नहीं होन देवे और सिवा स्वगमका इलाम करे इसही तरेसे सूक्ष्म और स्थूल सब प्राणी मात्र (जीव मात्र) अपनी जिंदगी सुखका

रहनेमें परमानन्द मानते हैं किन्तु मरणा कोइमी जीव नहीं इच्छिता है

सोचिये ! सर्व प्राणी मात्रका वध करनेसे इस जीवको कोनसी गति मिलती हैं सो देखो !

श्लोक

यथात्मन प्रिया प्राणा, तथा तस्यापि देहिन
इति मत्वान कर्तव्या, घोर प्राण वधो बुधैः ॥

(विष्णु पुराण)

भावार्थः—सोचिये ! अपना जीव अपनेको कितना वल्लभ अर्थात प्यारा है क इदसे ज्यादा इन वचनसे सूक्ष्म किंवा स्थूल सब प्राणी मात्रका अपना जीव वल्लभ अर्थात प्यारा हैं जैसे अपने अपनी जिंदगी सुखमते रहनेमें परमानंद मानते हैं वैसे ही सूक्ष्म और स्थूल सब प्राणी मात्र अपनी जिंदगी सुखमते रहनेम परमानंद मानते हैं, ऐसा प्रभु (भक्त) के फरमानपे ख्याल रखके, महा भयंकर और दुर्गति (नर्क) अर्थात दोजखका देनेवाला जो सूक्ष्म किंवा स्थूल सब प्राणी (जीव) मात्र वध अर्थात जीवका मारना है सो ऐसा महा भयंकर स्वाद्य कर्तव्य चतुर अकलमंद और ज्ञानी पुरुषोंने कदापि नहीं करना चाहिये

सोचिये ! मनुष्यने कोनसा दान देना चाहिये

श्लोक

यो दद्यात कांचन मेरुं, कृत्स्ना चैवा वसुंधरा ।
एकस्य जीवितं दद्यात, नैव तुल्य युधिष्ठिर ॥

भावार्थ—युधिष्ठिर ! एक दिनके समस्त मानव मात्री मोना करें एक

वगैरे अनेक प्रकारका दान युधिष्टिर दे रहा था, इतनेमें श्री कृष्ण भगवानका यहांपि अचानक आना हो गया तब युधिष्टिरसे श्री कृष्ण भगवान पुछने लगे अहो युधिष्टिर क्या हो रहा है, तब युधिष्टिरने हात जोडके श्री कृष्ण भगवानसे अर्ज गुजारिके अहो भगवान मै सोना पृथ्वी वगैरेका दान देता हुं तब श्री कृष्ण भगवान फरमाने लगेके, अहो युधिष्टिर मेरु पर्वत इतना मान का हिरण्य लिया पृथ्वी वगैरे जो हमेशा दान देता रहे तो भी सरेका कुछ भी फलकी प्राप्ति नहीं होवेगी तद् पश्चात युधिष्टिरने पुछाके अहो भगवान अब मेरेको कौनसा दान देना चाहिये, तब श्री कृष्ण भगवानने फरमायाके हे युधिष्टिर अगर एकभी जीवका मरणांतिक महा भयंकर दुःखसे बचाना इस तुल्य दुसरा सर्वोत्तम दान इस जगतमें नहीं है और यही दान कल्याणका इच्छा है,

बन्धिय ! इस जगतमें सर्वोत्तम दान देनेवाले कितने है

श्लोक

> हेम, धेनु, धरादीनां, दातार सुलभा, भुवी, दुर्लभा।
> पुरुषा लोक ये प्राणीष्वऽभय प्रद ॥

भावार्थ—बन्धिय ! इस दुनियामें सोना चांदी माणक मोती हिरा पन्ना वस्त्र पात्र अन्न बगर गाय भेस घोडा हस्ति बकरी वगैरे, पृथ्वी प्रमुखका दान देनेवाले बहोत है और उपरोक्त दान देना उन लोगोंका बहोत सुगम है और इस जगतमें बहुत पुरुषोंके सन्मुख नाणा खर्च करते है मगर इस दुनियामें बहोत गरिब (दिनदिन गरिब) है प्राणी (जीव) का मरणांतिक महा भयंकर दुःखसे बचानेवाले और ये अभय दान देना महा (बडा) कठिन है ऐसा सर्वो त्तम परम कठिन कार्य करनेवाले इस जगतमें बिलकुल अल्प है धन्य है उन पुरुषोंको ! ऐसा सर्वोत्तम कार्य सिद्ध करते है

श्लोक

न ध्यात जीवस्य, अभयदानम् जे नरा ।
ते नरानि नर्कयांति, स्वर्ग मोक्ष विवर्जयेतः

भावार्थः—क्षत्रिय ! इस जगतके अन्दर सूक्ष्म किंवा स्थूल जो सब प्राणी मात्र हैं उन जीवोंको मरणान्तीक माहा भयंकर कष्टोंसे नहीं बचावे अर्थात अभय दान नहीं देवे व आदमी नर्कादिक खारे स्थान अर्थात निची [खारी] गतिमें जावे, मगर उनोंको स्वर्ग (देवलोक) किंवा मोक्ष की नास्ति है अर्थात स्वर्ग किंवा मोक्ष कदापि नही मिलेगा और जो प्राणी जिस प्राणी का जिस कदर मारेगा उसके हजार दरजे ज्यादा तकलिफ देके उस प्राणी का परभव में वो प्राणी मारेगा अर्थात कोई प्राणीको सुईकी मार देके मा रेगा तो उस वापिस पर भवमें वो प्राणी स्वर्ग किंवा मोक्ष बगैर मारस मारेगा ये निश्चय समजना ये बात जैन शास्त्रोंमें तो है मगर किसीको शक होव तो अन्य मतक " नाम कत " ग्रंथमें देख लेवे

भारत अधिकार

श्लोक

स्थूल जीव रक्षते धर्म, सूक्ष्म प्राणी वध्यते ।
तस्य हृदय दया नास्ति, यावद् चंद्र दिवाकर ॥१॥

भावार्थः—स्थूल अर्थात बडे जीव– गाय भैंस हाथी घोडा बन्दर बगैर जीवोंका मरणान्तीक माहा भयंकर कष्टस बचानेसे धर्म मानते हैं मगर सूक्ष्म अर्थात छोटे जीव पृथ्वी–(मट्टी पत्थर बगैर) अप [पाणी बगैर] तेऊ (अग्नी बगैर) वायु [हवा बगैर] बनस्पती [फल-फूल-पत्र-छाल मूल बगैर]

इत्यादि सूक्ष्म अर्थात छोटे निर्बल जीवोंको मारके धर्मकी उत्पति अथात श्रम करना चाहते है, किंतु जिवोंका मारनेसे धम प्राप्त होवेगा तो जीवोंके बचानेसे पाप अवश्य प्राप्त होना चाहिये जीवोंकी हाणी करनेसे अर्थात मारनेसे धर्मकी प्राप्ती कदापि नहीं हो सकती है. इस लिये धर्मके वास्ते सब जीवोंको अभयदान देना चाहिये अर्थात मरणान्तिक महा भयंकर कष्टोंसे अवश्य बचाना चाहिये

(दोहा)

दया धर्मका मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुल्सी दया न छांडीये, जब लग घटमें प्राण ॥१॥
दयामें तो धर्म हैं, हिंसामें हैं पाप।
याते हिंसा छांडीये, मिटे नर्क कि याप ॥२॥
देखन प्रत्यक्ष देखिये, धर्म दयाके बीज।
हिंसा धर्म सेवे तिका, जावे दुर्गत बीच ॥३॥

दयासे ही धर्मकी प्राप्ती होवेगी, किंतु जो इसम (मनुष्य) स्थुल अर्थात बडे जिवोंका मरणान्तीक कष्टोंसे बचानेमें धर्म समजते है और सुक्ष्म अर्थात छोटे जीवोंको मारनेमें पाप नहीं समजते हैं उन पुरुषोंके हृदय कमलमेंसे दयाकी नास्ती अर्थात दया दुर हो जाती हैं किंतु उन पुरुषोंका हृदय कमल करुणा रससे हीण हो जाता हैं अर्थात वज्रसे भी कठोर उन पुरुषोंका हृदय कमल हो जाता हैं और ऐसे पुरुष सदां सर्वदां दया माताके शत्रु अथात दुष्मन बने रहते है और हिंसारूप चंडिका देवीके भक्त बने रहेते है मगर हिंसाके मंत्रसे कोई भी धर्मकी कार्य सिद्धि नहीं हो सकती है और हिंसाके मंत्रको कोई भी नर आदर सत्कार [मान] नहीं देते हैं इसही कारणसे हिंसा धर्म-जीवोंकि अपसे किंवा मारनेसे धर्म समजते है अर्थात हिंसा सिवाय धर्मकी प्राप्ती

नहीं होती है, ऐसे नीच [खोटे] तात्पर्य युक्त धर्मसे आत्मा सिद्धि काई भी प्रकारसे नहीं होती है एसा मलीन और निरर्थक अधोगति दाता धर्म अंगिकार करनेसे तथा ऐसे धर्मका आदर मान देनेसे निश्चय चौर्‍याशी लक्ष (लाख) जीवा जोनीमें परिभ्रमण करणा पड़ता है, इस लिये दया युक्त धर्मको अवश्य अंगिकार करना चाहिये

देखिये ! जरथोस्त शास्त्र भी दया माताको अंगिकार कर रहा है यह कैसी उत्तम और पवित्र बात है के अंतस्करन कर्ताको पुर्ण आनंद प्राप्त होता है

जरथोस्त नामामें क्या उत्तम अधिकार लिखा है इसकी हम क्या तारिफ करें—

—लेख—

बकु शकन नीयारद कसकरा ॥
न भागुस फंदाके बासद बरद ॥

भावार्थः—हे इनसान ! छोटे अगर बड़े (सुक्ष्म किंवा स्थूल) कोईभी जीवोंका [जीव प्राणीका] कोईभी प्रकारसे किसी भी वक्त मारना मत

देखिये ! पारसि लोगोंके धर्म शास्त्रमें भी धर्म निमित्त कोई जीवोंका कोई प्रकारसे कोईभी वक्त मारना नहीं फरमाया है, तो अब कहीये ! साहेबान ! इससे ज्यादा दया क्या चिज है, कादीम धम्पशाए है के दया माताके नगार चारोंही खुटमें बज रहे है और सर्व मतवाले दया माताको स्विकार कर रहे है, मगर हिंसा धर्मीयोंको यह बात प्यारी नहीं लगती है, सबब उक्त लोगोंका हृदय कमल हिंसारुप चंडिकाके प्रभावसे सारा मलीन हो रहा है, इस लिये

देखिये ! मुसल्मानी शास्त्रभी दया स्विकार करता है सो भी कैसी उत्तम बात है अंतस्करन कर्ताको पुर्ण आनंद आता है।

वेदकुराण परीक्षामें

॥ अजामुस्सक ॥

भावार्थ —काइमी जानको मारना नही अगर किसी जानको खून करोंग तो खुदाकी दरगामें तुम्हारे इस गुन्हे की माफी नहीं मिलेगी यान गुनाह करना नहीं चाहिये। मुसल्मान लोगभी सब जीवकी दया मंजुर करते है ता जैनी सब जीव की हिंसा मंजुर कैसे करेंगे, सो अब दयामें धर्म सिद्ध हुवा

॥ कवेदुमसजर ॥

भावार्थः—हरा झाड काटना नहीं यान वनस्पतीका विनास करना नहीं मुसल्मान लोग वनस्पती की हिंसा नहीं करना स्विकार करते है तो जैनी लोग किस वास्ते वनस्पती की हिंसा अंगिकार करेंगे कदापि नहीं

महाशयजी ! देखिये ! दया माताका कैसा अलौकीक प्रभाव है कि कोईभी पुर्ण वर्णन नहीं कर सकता है, और दया माताको सब मथा नुयाई स्वग अंगिकार करते है, अतएव खिस्ती लोगोंके शास्त्रसे दया सिद्ध करके दिखलाते है (बायबल) "गुनाहगार" निर्गम अ २० आयत १३ में "खून न करना" (Do Not Kill)

॥ डु नॉट किल ॥

भावार्थः—हिंसा मत करो परंतु इसका अर्थ खिस्ती लोग इतना ही करते है की 'खून मत करो' सोचिये! खून मत करो इसका असली मा यना है के काइमी जीवोंका जान (प्राण) मत लेवो अर्थात काइमी जीवोंका जानसे मत मारो, कहो इससे ज्यादा दया क्या चिज होती है, ऐसो पुर्ण दया हो चुकि, देखिये! खिस्ती लोगभी पुर्ण रीतिसे दयाको मंजुर करते है तो फर जैनी लोग दयाका त्याग करके हिंसा मंजुर करेंग

कदापि नहीं, तब जैनी दया आगिकार करे उसमें क्या नुकसान है, कुछ नहीं!
श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी (ढुंढियोंका) दया दयाका सत्य प्रकार
अनेक शास्त्रोंसे सिद्ध हुवा; श्री दया माताकी जय विजय सदा हो जो
कित्ती प्रेम दयाको स्विकार करते है तो जैनी लोग पक्षपातरहितपना
करे जिसमे क्या नुकसान है वसो दयामें धर्म सिद्ध हुवा

देखिये! जैन मुनियोंका दया संयुक्त उपदेश श्री जैन धर्मका सुत्र
श्री उत्तराध्ययनका अठरमा अध्ययनकी ११ मी गाथामें गर्दभाल मोटा
मुनिने संजति राजाकुं फरमाया है

॥ गाथा ॥

अभय पत्थिव आतुम्भ, अभय दायाभवा हिय।
अणिच्चे जीवलोगंमि कि हिंसा रायसज्जसी ॥११॥

भावार्थः—हे राजन हमारे तर्फसे तुमको अभय दान दिया है; लेकिन
जैसा हमने तुमको अभय दान दिया है वैसाही राजन तुं सर्व प्राणियोंको
अभय दान दे इस दुनियामें आके हिंसादिक खोटे कर्तव्यसे ये तेरी अमूल्य
आत्माकों अधोगतिमें डालनेके वास्ते क्यों तैयार होता है इसि कनेसे भी
जैनके सर्वे मुनि वर्गने सुखकारी रसायन उपदेश देना चाहिये, जैनके असली
सिद्धांतोंका दया, जिन वचनोंका सार यही है

देखिये! श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोंमें ज्ञानी पुरुषोंने ज्ञान
का सार किस तरह बतलाया है सुत्र श्री सुयडांगका प्रथम अध्ययनका
चोथा उद्देसेकी दसमी गाथा,

॥ गाथा ॥

एवंखु नाणिणो सारं, जन हिंस किंचणं।

अहिंसा समर्थचेव, एतान तंविंयाणिया ॥१०

भावार्थ—ज्ञानी पुरुषोंके ज्ञानका सार ये है के कोई जीव मारना मारना नहा मरवाना नही मारतेको भला जाणना नहीं यही ज्ञानका सार हैं प्रधान विचक्षण ज्ञानि पुरुष होवेगा वाही जीव दयाको न भेगा माहाशयजी! वखो! जीव दयाको ज्ञानसार ज्ञानी पुरुषोंने फरमाया है लेकिन जीव हिंसा को ज्ञानका सार ज्ञानी पुरुषोंने नहीं फरमाया हैं ज्ञानी पुरुषोंने ज्ञानका सार जीव दया फरमाया हैं तो फर धर्मका सार जीव हिंसा किस तरेसे होवेगा यह हमारे प्यारे बंधुओंने जैनके असली सिद्धांतासे समाजे सिद्ध करके बत-लाना चाहिये अब हिंसा धर्मी जैन मुर्तीपूजकको को ज्ञानी कहना के अज्ञानी कहना ये विचार हमारे प्यारे पाठक वर्ग इस उपरसे कर लेवेंगे

देखिये ! ममत्व भावमें शुभाशुभ कार्य कोईभी नजर नहीं आता है, और इसवाही ममत्वी पुरुष शुभाशुभ कार्यको परिक्षामी नहीं करता हैं, शुभाशुभ कार्यकी परिक्षा नहीं करने के वजे इस भव पर भवमें दुख भैलता हैं और जन्म भी बिगाडता हैं, मगर इससे असत्य और कम-सत्य कि परिक्षा कदापि नहीं हो सकि है

श्लोक

पुत्रोमें भ्रातोमें हिंसादि धर्मोमें, स्वजनोमें प्रत्यक्षम वर्गोमें।
इति कृत्ये मेवर्ध, पशु दिव मृत्युर्भेन हरति ॥१॥

भवार्थः—अहो प्राणी तु रातको और दिनको हमेशा ऐसा विचार करता है के ये मेरा पुत्र, ये मेरा भाइ; ये मेरे सजन, ये मेरा घर, ये मेरी स्त्री, वगैर मेरे पूर्ण प्रेमी है, ऐसा तु हमेशा स्नहमे निमग्न हो रहा हैं और मरा मेरा कर रहा है जैसा कसाई बेचे हरव बकरेको मार डालता है, इसही

भावार्थ—देखिये ! कमलका स्रोरम रसस पिनेके वास्ते कमलके उपर बैठा हुवा भमरा (भमरा) अपन दिलमें विचार करता है के अब सोम (सन्ध्याकाल) पडनको आइ है, सा ये कमल अब वापिस बंद हो जायगा इस लिये मुझ यांस उड जाना ठिक है, एसा विचार करत करत निमास्याम (दिन अस्त) हो गई, और कमलने अपना मुख बंद कर डाला कमलका मुख बद हानस भमरा कमलमें बंद हो गया कमलके अन्दर बैठा हुवा भमरा विचार करने लगाके रात्री निकलके बाद और सुय उदयकी वखत, फिर कमल प्रफुल्लित होवगा उस वखतमें उडके बाहर निकल जाउंगा इतनेमें उस सरोवरके उपर एक हस्ति पाणी पिनेके वास्ते आया, और उस हथीने उस कमलका मुखमें लेके उस भमरे संयुक्त खान लगा ॥१॥ उस वखत उक्त भमरा मरता मरता अपन दिलमें विचार करने लगा कि इस दुनियां (जगत)में अनेक प्रकारके प्रतिबंध है, मगर प्रेम सर्वोत्त म्नेह सरीखा प्रतिबंध इस जगतमें दुसरा कोइभी नहीं है देखो। चाहे जैसा मजबुत लकडा हस्त मजबुत हो, परतु भमर उस लकडेके आर पार छीद्र गिरानेका समथ होता है भमर म ता स्नेहके वसमें होके कमलके दारुको कठरके बाहर निकलनेके वास्ते असमथ हुवा इस लिये, मुझे हाथी मारके खाता है, वास्ते। मो पुन्य भव्या ह दाक्ष पुण परिग्रहक साथ निष्कलंकित उत्तमात्तम धर्मका अंगिकार नही करता है वो इसम हिंसा, चोरी, झुट, स्त्री सवन, और परि ग्रह तथा कुटुंबादिकके वास्ते महा कठोर कम बंधके इस भव और पर भवमें दुखी होते हैं, सबब ऐसा कोइभी जीवकी रक्षा नही है के तुम मग मारा घात करो सो तुमको धर्म होवेगा और इस हिंसा धमके जरीये तुमारा आत्माका कल्याण होवगा, जब जीवोंका दमी रक्षा नही है तब मगर दुखिया जीवोंके प्राण घात करते है उसका असरको जितना जन्म दम्त धार रखना है और इस पापके प्रभावसे कैसे माहा भयंकर कठोर अशुभ कम बंधन है के केवली भगवान सिवाय दुसरा कोइ बयान नहीं कर सकता है

और अशुभ कर्मोंके वसमें ये जीव होके कैसा कैसा दुःख भुक्ता है सो भवलाकन करो

(गाथा)

निवासइ सायरमझ्झे, निवसइ गिरि गुहर कंदरामज्झे ॥
कम्म सहाय जीवाणं, कम्म विनइणे विलम्मंतु ॥१॥
मार्यगा घरे हरिचंद राईणो, पंड पाण वणवासा ॥
मंजस्स भिक्ख भमण, किर इंज कम्मुणासव्वं ॥२॥
राउ करे इरंको, रंको पुण कर ईरायसारित्यो ॥
गंन पर जड़ीमए, कीर इयं कम्म जीवाणं ॥३॥

भावार्थ—सुनिये। ये जीव कर्मोंके भयसे समुद्रमें निवास करे किंवा पवनकी माहा भयंकर बड़िस भरी गुफामें जाके वास करे तो पण जीवोंकी अमकी क्रांतीका होकके जीवोंके साथ जो कर्म लगे हैं वा कर्म काइभी प्रकारसे नाश नहीं हो सके इ अर्थात निकाचित (मजबुत) कर्म भुक्त बिना नहीं छुट्ते (दुर होत) है ॥१॥ फेरभी सुनिये! कर्म के वसमें दा क. हरिचंद्र राजा चंडालके घरका रहा तथा पांच पांडवोंने वनवास सेवन किया तथा सुंजम राजा घर घर भिक्षा मांगी, इस लिये कर्म करे सो दुःख काइभी नहीं कर सक्ता हैं सांचो। कर्म चक्रवर्ती, वासुदेव, राजा माहाराजा वगैरे बड बड समथवानोंका नहीं छोडता है ॥२॥ फेरभी सुनिये। कर्मोंका कैसा भयकर स्वरूप है वा दिखलाता है एक भवमें राजाका रंक बनाके दिखला देता है, और रंकको भवमें रंकका राजा बनाकर दिखला देता है, और काइभी हिताअहित कि बाता स्वप्नांतरमें भी नहीं आणमेंभी आती हैं, वा बातां कर्मोंके प्रतापसे समायांतरमें सन्मुख आकर हाजर हो जाती हैं और ऐसे कर्मोंमें जीवोंका क्या क्या दुःख सुख भी भिवत्ती आके पडति है

अंदर जो परम पवित्र चिद्गानद (जीव) में वाक वास किया है मगर ये जीव कर्मोके वसमें डाक भव भ्रमणरूप असार समुद्रमें गुरूम की साक इधर के उधर परि भ्रमण करता हैं और रागद्वेष रूप दावा नलमें मग्न रहा है और जन्म मरण रुप माहा भयंकर दु खोमें पच रहा है, एसे अनेक माहा भयंकर कष्टोंसे बचानेके वास्ते भी वीतराग देवाधिदेव तिर्थंकर माहाराजने फरमाया हुवा निःकलंकित परम पवित्र सर्वोत्तम दया मय फरमाया हुआ श्री जैन धर्मको कोण नहीं ग्रहण करगा अपनी आत्मा निर्मळके वास्ते दया मय (जैन) सर्व सज्जन अगिकार करगे

इसही वजेसे हमनें दया धर्मकी वृद्धि करनेके वास्ते "मिथ्यात्व निकंदन भास्कर" ईस नामका ये ग्रंथ निर्माण किया है इसे काम नहीं अंगिकार करेगा, दया धर्मी अवश्य अगिकार करेग, मगर ये उपदेश किसके वास्ते हैं सा लिख पढा—

श्लोक

उपदेशो ही मुर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ॥
पय; पानं भुजंग नाना, केवलं विष वर्द्धनम् ॥१॥

भावार्थ—वसिये ! मुर्ख अर्थात अज्ञानी मिथ्यात्वी जीवोंको हर वर्गेस हितोपदेश दनेसे वा उपदेश हर तरहेस नुकसानका देनेवाला है, सबब खलि त पुरुषोंका उपदेश वनस वो दुर्बुद्धि लोक गुरूसे काबातुर होके, सत्य उपदेश देनवाले ज्ञानी पुरुषोंके दुष्मन बन जात है जैसाके सर्पको दुध पि लानेस दुध पिवेगा वैसा वैसा जहेर बढता जायगा

इसही वजेसे मुर्ख—अज्ञानी—मिथ्यात्वी—हिंसा धर्मी—अशुध धर्मी हट ग्राही कदाग्राही—मूढ—कुव्यसनी—स्वार्थांध—दुपसके सेवन करनेवाले कुजियोंके माननेवाले काष्ट, मृतिका, पाषाणादिक मूर्तीको सत्य ईश्वर

इस दुषम कालमें नकली और असार पदार्थकी मान्यता बहोत हैं किंतु नकली और असार पदार्थको प्रेम पुर्वक अंगिकारभी बहोत करते हैं, किस वजेसे (दृष्टांत) देखो ! दुध ये उत्तम और सार पदार्थ हैं सो घर घर और गली गली बिकता भटकता है, मगर दारु ये निच और असार पदार्थ है सो एक स्थानपे बिकता है, ईस वजे समजलेना लेकिन नकली और असार पदार्थमें माहान आडंबर रुप भूत भरा हुवा हैं, इस आडंबरके जरीये महान पुरुष भ्रमिष्ट होके ,पुगलव जालमें फसते हैं

श्लोक

असारे हि पदार्थेही मायया डंबरो महान्,
नहिवा दृग ध्वनि स्वर्णे याहकांस्ये प्रजायते ॥२॥

भावार्थ—देखिये ! नकली और असार पदार्थमें माहान आडंबर भरा हुवा है जैसा कांसिका निचे पटकनेसे कैसा मधुर शब्द आवाज होता है मगर सुवर्ण (सोना) को निचे पटकनेसे बिलकुल बारिकमा आवाज होता है परंतु कांसी तुल्य आवाज नहीं होता है मगर सुवर्ण है सो महंत गुण अर्थात भारी गुणोसे भरा हुवा है इस वजेसे मर्यादा माफिक आवाज मुक्त कदापि नहीं कर सकता है ॥२॥

समीक्षाः—माहाशयजी ! सोचिये ! इसही वजेसे असली अर्थात सर्वोत्तम गुणान्वित देव, गुरु, और धर्म इनकी पुजा, प्रतिष्टा, मान्यता कर्ता बहोत कम रह गये हैं और नकली अर्थात पाषाणादिकक देव और आडंबरी और असंजमी गुरु तथा हिंसामें धर्म इनोकी पुजा, प्रतिष्टा, और मान्यता कर्ता बहोत बड़ गये है, देखो ! जमाने हालमें अपनी आत्माका अहीत बंछते हूवे भी दुर्गुणयुक्त वस्तुको अंगिका

कामिनी बिना कंथ, कंथ बिना कामिनी
काम विहुणो पुरुष किशो ॥
तुरी बिना वेग, जल बिना सरोवर,
प्राण विहुणो पिंड किशो ॥१॥

इम उत्तम नर आचार बिसारो जीव दया बिना धर्म किशो टेर।
फल बिणा वृक्ष, वृक्ष बिना पक्षी, प्रहगण बिना गगन किशो ॥
पुत्र बिना प्राण, गुण बिणा संवयन, गुण बिन गुण पात्र किशो॥
गुरु बिना ग्यान, अक्षर बिना पुस्तक कंठ विहुणो ग्यान
किशो ॥२॥ ॥इम ॥

साग बिना साक, पास बिना स्वण, घृत पाखे भोजन किशो,
शुदरी बिना सेज, सेज बिना सुदरी, पाणी बिना मुख कमल किशो,
पक्षबिना मानस, पक्षबिना शूरा, हाथबिना हथीयार किशो ॥३॥इम०

धर्मबिना सुख, कर्मबिना तस्करी प्रीत बिना व्यापार किशो,
मत बीना मर्मी; आयुध बिना क्षत्री, शूर बिना संग्राम किशो,
विद्या बिना सद्गुरु, सभा बिना पंडित, सैन्या बिना साहेब किशो
॥४॥इम०॥

सुगंधबिना कुसुम, कुसुमबिना वाडी, अंगबीना आभरण किशो,
स्वस्त्री बिना भोग याग बिना यागी, प्राणबिना अधिकार किशो,
सत्या बिना वाच, गत्य बिना गायन, अर्थबिना गुण ग्रंथ किशो॥५॥
॥इम०॥

सुरा बीना पंथ, बिसहर बिना मंत्र, सोवर्ण बिना श्रृंगार किशो
देवबीना देवल, प्रजाबीना राजा, सैन्याबीना राजेन्द किशो,
वस्त्रबिना हाट, हाटबिना पट्टन, धानक पाखे घर किशो॥६॥इम०॥

पयवीना धेनू, मेघवीना महील, मनजित्यावीना मुनी किशो,
रंग वीना चोम, गज बिना कापर, शास्त्र बिना अभ्यास किशो,
तपवीना सिद्धि, रती वीना सुखी, अरिहंत बिना श्रीजो जाप किशो
॥७॥ईम०॥

वासबिना ग्राम, डाकवीना ठाकुर छंदबिहूणो कवित्त किशो,
तेलबिना दीप, दीपवीना मंदीर, लक्ष्मी वीना जीम गृह किशो,
दर्शणबिना मुख, रसवीना वाणी, आप्या बिना उपकार किशो
॥८॥ईम०॥

जलबिना कमल, कमलबिना काया, उत्तम बिना आधार किशो,
कुंकुमवीना कामनी, धनबिना दामनी, मदबिना मारंग किशो,
धर्मबिना सविका, गुणबिना गुर्णीका, दान बिना दातार किशो,
॥९॥ईम०॥

मायावीना मात्या, मातावीना बालक, पुत्रबिना परपाण किशो,
संयमबिना शिक्षा, गुरुबिना दिक्षा, अन्नबिना आयतन किशो,
प्रजाबिन करमण, पुष्पवीना पंचम्पू, मल बिना दर्शण किशो,
॥१०॥ईम०॥

(कलश) जीव दयावीन धर्म, दिवस जीम दिनीयर पाखे,
जीव दयावीन धर्म, प्राणबिन पिन्डन राखे, जीव दयाबिन धर्म,
नाव पंगु तर बिहूणा, जीव दयाबिन धर्म, सूर पर ससी माहूणा
जीव दयावीन धर्म, धर्म मर्म चाल नहीं, जीव चरण धाम सुंदर
कहे मा वीतराग वाणी रूह ॥११॥ईम०॥

! ॥ इति जीव दया छंद संपूर्ण ॥

नासिप ' हिंसा धर्मा जैन मुर्तीपुजक, दयाधर्मी साधुमार्गी, वर्गको

कहते है के दुढक दया दयाका स्तोत्र पुकार करते है, लेकिन मुर्तीपु
क्योंकि थोते पोथोंमें भी जीव दयाका अधिकार चलता है लेकिन ई
लागोंके द्रव्यनेत्रोंसे छकाय जीवोंपे दयाका गौर नहीं हो सक्ता है
यथा इन लोगोंके भाव नेम गुम हो गये है सो छकाय जीवोंकी दया
ऊपर इन लोगोंसे गौर नहीं हो सक्ता हैं हिंसा धर्मी जैन मुर्तीपुजकों
तर्फसे "जैन समदाय शिक्षा" ईस नामका ग्रंथ प्रगठ हुवा हैं
ग्रंथके प्र० ६०८ में रत्न प्रभु सुरीका अधिकार चला है उसमेंक
किंचित अधिकार दिखलाते है जैन मुर्तीपुजक संमदायमें जो रत
प्रभु सूरी हुये हैं जिनोंने रजपुतोंको मिथ्यात छुडाकर जैनी बनाये
और रत्न प्रभु सूरीने रजपुतोंको देविकी पुजाका त्याग करवाया है
लेकिन जिन प्रतिमा की पुजाका उपदेश दिया नहीं दयामें धर्म
परुपना करि हैं [लेख निचे मुजब] प्र० ६०८ दया मूल ध
को अंगिकार करोंगे तो जिन धर्मका उद्योत होगा प्र० ६११ दय
मूल धर्मको ग्रहण करो प्र० ६१५ धर्मकी चौथी परिक्षा दयाके द्वा
की जाती है अर्थात जिसमें एकेन्द्रिय जीवसे लेकर पंचेन्द्रीय तक
वों पर दया करनेका उपदेश हो वाही धर्म माननीय हैं प्र० ६१
उनमेंसे प्रथम महाव्रत यह हैं के सब प्रकारके अर्थात् सूक्ष्म और स्थू
किसी जीवका एकेन्द्रीयसे लेकर पचेन्द्रीय तक किसी जीवको
मन वचन कायासे न मार न मरावे और मारतेका मत्य न जाणे

ममीक्षा:—हमारे प्यारे सज्जनोंने विचार करनाके खुद हिंसा धर्
मुर्ती पुजक छकाय की दया स्वीकार करते है लेकिन दुसरोंका लो
नाम रखते है हिंदु मुसल्मान क्रिस्ती पारसी वगेरे मजहब वाले
अच्छी तरहस दयाका स्विकार करते है तो जैनी सर्वथा प्रकारसे
अंगिकार कर जिसमें कुछ ताज्जुब नहीं है श्री जैनके भसम्मी तिर्थक
वीतराग देवाधिदेव महाराजमें दयाका पुकार उठाया हैं उसमें कोई

नही हैं जैन मुर्तीपुजक लोग साधु मार्गी वर्गको कहते हैं के केवल दया दयाका लोग्य पुकार उठाते है, सो अब जैन मुर्तीपुजकोंने भि जैनके एकादस अगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंके मूल पाठसे सर्प्पी दयाका खुलासा आम सभामें हम लोगोंको करके दिखलाना चाहिय तब हमारे प्यारे मुर्तीपुजकोंको सत्यवादि समजेंगे

इत्यलम् ! श्री शान्ति ३

वर्ग २ रा.

—फोटू विषय—

देखिये ! हमने कितनेक ग्रंथ प्रकर्ण वगैरामें अवलोकन किया है तथा यति, संवेगी, पितामबरी, वगैरेकि मुख से भी सुना है की श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी (साधु मार्गी) वर्ग, अमुक्रिर वगैरेकि नकास मारकी वगैरेकि चित्र और उनाके गुरु वगैरेकि फाटू मगर मानते है, तो जिनराजकि प्रतिमा माननेमें क्या हर्ज है, ऐसा हमसे अज्ञान करते रहते है, ऐसा बोल बोलके बिचार भामे प्राणियाको मिथ्यातस्प भर्म जाल्में डाल्ती है मगर ईस बातका असली तात्पर्य [मतलब] खुद मूर्तीपुजक लोग भी नहीं जानते है, तो बिचारे भोले लोगोंको मिथ्यातकी भर्म जाल्में डाले उसमें क्या ताज्जुब है, मगर आपे हम उक्त बातका किंचित मात्र खुलासा करणा चाहते है, देखिये ! स्थापना दो प्रकारकी होती है एक तो सदरुप, और दुसरी असदरुप, जब सदरुप और असदरुप इसका असली परमार्थ नहीं जानेगा वो इसम उलट राग सुर्ही ही अंगिकार कर लेवेगा इसमे कुछ आश्चर्य नहीं है, अब्बल असदरुप स्थापनाका स्वरुप दिखलाते है,

देखिये ! श्री वीर परमात्माने सुत्र श्री सुगडायंगजी वगैर जैतक अमर्मी सिद्धांतोंमें श्री मुखसे नारकिका बडा भयंकर स्वरुप फरमाया है श्रवण करतेके साथ सुर्गिंग कंपायमान हो जाता है मगर आपे किंचित

सत्यका खुल्लासा करेंगे, नारकिमें दस मकारकी सेत्र वेदना (दु ख) फरमाया है, जिसमे फेर ज्ञानी पुरूषोंने फरमाया है, के नारकि की किंचित मात्र मट्टी इस मृत लोकमे कोई देव वगैरे लाके डाले तो कि तनेक कोसो तक मनुष्य तिर्यच और वनस्पति वगैरेका नास हो जावे और नारकि क नेरियोंको [अर्थात] नारकिमे उत्पन हुवे हुवे जीवों को अगर कोइ हातमे उठा लेवे तो उस नारकिक नरियोंका शरीर पार सरिखा विखर (क्षीण क्षीण हो जावे) जाय मगर हाथमे नही आता है सामर्थ्य उसक पते जो शरीरपे गिरि अगर उक्त वृक्षका शरिरको स्प र्श हाथ तो शरिरक टुकडे हो जाते है इत्यादि अनेक मकारकी भयकर नारकि की वाते ज्ञानिनें फरमाइ हैं, अब सोचिये ' इस मृत लोक में नारकीके हजारों किंवा लाखों चित्र [फोटु] होवेंगे मगर उपरोक्त वार्तामेसे एक भी बात नहीं मिलती हैं तद असदरुप स्थापनाको तद्रुप स्थापना किस तोरसे मानि जावे, ये तो एक वाल अज्ञानीयोंका ख्या- ल है, जैसा अल्प वयका बालक निरर्थक ख्याल करता हैं वैसा य भी एक ख्याल हे देखा ' अब असदरुप स्थापना माननेसे आत्म सिद्धि मयात फायदा नहीं होती हैं और असद्रुप स्थापना नही मानन स कुछ नुकसान नहीं होता हैं, तो फेर धाकधड (साठी) दलिल करना ये भी एक मुख मरी बात है,

देखिये ' श्री वीर प्रभुने सुत्र श्री जंबुद्विप पन्नति वगैर जैनके प्रसिद्ध सिद्धांतोंमें, जबुंद्विप वगैरे द्विपसमुदोका वर्णण श्री मुखस फरमाया ह इसके अनुसार किंचित मात्र वर्णण जंबुद्विप वगैरेक नका सेम छपा गया है, मगर उसमें परवत (पहाड) वन, नदी, समुद्र, की

धमैरोंका स्पर्श दिखलाये गये है, तो अब सोचिये ! श्री जैनके मुनि राजतो कचा पाणी (ठंडा जल) किंवा वनस्पती किंवा स्त्री वगैरोंका स्पर्श नही (छीते नहीं) करते हैं तो फेर मुर्तीपुजकोंके साधु लोग जैन साधु कहलाते है, तब ये लोग जंबुद्विप वगैरोंके नकासेका स्पर्श करते होंगे अर्थात छीते होंगे तब कचा पाणी, वनस्पती, स्त्री वगैरोंका स्पर्श होता है तो इसका प्रायश्चित (दंड) जरूर लेते होंगे, इसमें कोई भी तरेका फर्क नहीं होवेगा, कदापि नहीं लेते होवेंगे तो मुर्तीपुजकोंका कहेना साफ खोटा है, और भोले लोगोंको भरमानेका ही है एसा निश्चे हुवा तब तो ये बात ऐसी हुईकी मुर्तीपुजकोंका कहेना ओर, रहेना ओर, किंवा चलना ओर, ये कुछ जैनीयोंका लक्षन नही है, तब असद्रूप स्थापना माननेके वास्ते खोटी बकवाद करना ये कुछ ज्ञानी पुरुषोंका काम नहीं है.

देखिये ! श्री जैनके असली और प्रमाणि मुनि किंवा श्रावक लोग अपने गुरुका किंवा अपना फोटू निकलावे और उस फोटूको मुनि तरिके किंवा गुरु तरिके माने किंवा श्रावक तरिके माने और वंदना नमस्कार करे, तो उन मुनियोंको किंवा उन श्रावकोंको श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंके आधारसे एकांत मिथ्या द्रष्टी कहेना चाहिये, अर्थात मुनिपदसे किंवा श्रावक पदसे भ्रष्ट कहेना चाहिये, कारण फोटूमें असद्रूप स्थापना है, अर्थात उस फोटूमें मुनिपणेके किंवा श्रावकपणेके किंचित मात्र गुण नहीं है, इस वास्ते, मगर मुर्ती पुजक लोग इस बातके वास्ते एसा अद्भुत द्रष्टांत देते है के कुछ अकलका काम नही करते है लेकिन उक्त द्रष्टांतका किंचित खुलासा करना चाहाते है, मुर्तीपुजकोंके तरफका द्रष्टांत सुनिये द्रष्टांत० क्यों जी ! तुमारे बाप वगेरेके फोटूको तुम लत्ता मगर जुते मारोगे के नहीं,

देखो ! कैसा नाफि दृष्टांत है, पर शोक ! है के ये दृष्टांत देनेवाले पुरुष इस दृष्टांतके परमार्थ के अजाण हैं और अजाण पुरुषोंको ही एसि बात पुछते हे, मगर आपे ईसका किंचित खुलासा करना चाइते हैं, अर भाई थोडा सोचोतो सही, अगर किसीके बाप वगैरेका फोटु (तसवीर) निकाला हुवा होवे और उसे कोई मुर्ख कहेके भाई साहेब ये आपके बापका फोटु हैं सो आप इसे पाव जुते मारो, तब वो कहे गाके मे ईस फोटुको जुते नही मारुंगा, क्योंकि इस दुनियामें परमार्थके अजाण पुरुष मुर्ख और वे अकले बहोत हे तब मुर्ख लोग मुर्खही वो योग्य पुरुष कि हासी करनको लग जावे वास्तें वो कदापि उस फोटु को जुते नहीं मारेगा, मगर जुते मारनेसे भी हम आपे ज्यादा हिसाब बताते हैं सो थोडा ज्यादा फिकीये वो सही, फोटु तो दुर रहा मगर फोटु निकालने वालेके माता पिताका मृत्यु हो जाता है तब उस मृतक शरीरको स्मशानमें ले जाके अंगारमें जलाते ह और पुर्ण जलके नहीं जस ईसकी तलास करणेके वास्ते खास पुत्र बंधु वगैरे लोग वांसदासे कभी तरस खास उन माता पिता वगैरेके शरीरको ठोकते ह और उसकी दुर्दशा करते हे, सोचो ! अगर फोटु को जुते मारनेसे दोसा पचि होवे तो फेर खास माता पिताके शरीरपे ल्कडीया बजानेसे कितने भारी मायश्चितकी ज्यादा होवी होयेगी, फेरभी देखो ! मुर्तीपुजकोंके साधु वगैरोका अंतकाल हो जाता हे तब वो लोग साधु वगैरेके मृतक शरीरको स्मशानमें ले जाके अग्नि संसकार करते हैं तब साधु श्रावक दोनु ज्यांपे हाजर रहते हैं, और वो मृतक साधु वगैरोंके खास शरीर को पुर्ववत दासडोसे ठोकते हैं अगर गुरु वगैरोंके फोटुको ल्यत अगर जुता लगनेसे असातना मर्यात दोष लगता होय तो गुरु वगैरोंके खास मृतक शरिरपे लकडीया बजाके दुर्दशा करनेस कितना भारी मायश्चितके

प्रभावसे तो आम मुर्तीपुजकोंको तो उत्तम गति की नास्ती होना चाहिये, मगर दुसरो कि तो दुर रही, अब आप खास मुर्तीपुजकोंके तर्फकी अद्भुत वार्ता श्रवण किजीये, देखिये। मुर्तीपुजकोंके खास आचार्य, उपाध्याय, साधु, अगर ईनोंके देवोंके फोड्र अर्थात चिन्ह निकल आते हैं और उक्त फोड्रको स्वत अगर जुता स्पर्श आवे तो वे लोग दोस लगता हैं ऐसा कहते हैं ये कहना इनोका साफ खोटा है सबब उक्त फोड्र फट जावे तब मुर्तीपुजक लोग उसे बाहेर फेंक देते है तब वो फोड्रके तुकडे रस्तेमें रसडते है और वो फटे हुये फोड्रके तुकडोंपे खास जुते पहनके मुर्तीपुजक लोग चलते है चलत पर लघु निति (पेसाब) भी करते है और जाय जरुरत [झाडे] भी जाते है और वो फटे हुये फोड्रके तुकडे हवासे उडके कचरे की पेटीमे भी पडते हैं, और पैखाने वगैर खराब ठिकानेमें भी गिरते है, तद उनकी असा तना नहीं होती होवेगी तद इस असातनासे तो मुर्तीपुजकोंको उत्तम गतिकि नास्ती होके अधोगति मिलना चाहिये, मुर्तीपुजकोंकि न्यायसे ये तो एक बडा भारी खेदाश्चर्य का स्थान है की ईन पागलोंका पागलपना दुर कब होयगा, मगर फेर भी देखा ' ब्राम्हण वगैरे कितनीक जातोंमें अगर कोई जुता मार देवे तो ख्याल पडता हैं, अर्थात दाग लगता हैं और वो दाग निवारण करणेके वास्ते उनको पुर्ण तकलीफ भी उठाना पडती है, मगर उन लोगोंकि फोड्रको कोइ जुत्ता मार देवे तो उनोका ख्याल नहीं पडता है, सोचो ये क्या बात हुइ भला—

और भी देखो ! अभी पाणी वगैरेके जरिये कोइ आदमी दुसरेको मार डाले तो उसे फांसी अगर कालापाणी मिलता हैं मगर अभी पाणी वगैरके जरिये फोड्रका विनास कर डाले तो उसे आदमी मारे

जितनी सजा नहीं मिलती हैं, ये ही फोटु की तारीफ, इसके अलावा फर भी देखो ! मुर्तीपुजकोंके तिर्थकरोंकी रदी कि हुई प्रतिमा, अनच घर वगैर अनेक ठिकाणे रसडती पडी है, और उनोंके उपर कई जनावर चढते हैं, हगते हैं, मुतते हैं, कई आदमी जुते पहनकर उनों क उपर पाव धरके कइ तरसे उनोंकि हाल करते हैं, देखिये ! मुर्ती पुजकोंकि, अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय, और साधु वगैरोंके फोटु, चित्र, और प्रतिमाकी कैसी कैसी जाहिरमें दुर्दशा हाके फजीते होते हैं, क हम कुछ बयान नहीं कर सके है, ओर ये दुर्दशा और फजिते देख के हम स्थेनोंको भी पुर्ण तरे शर्म मालुम होती है क्योंकि नाव जैन धरवाते हैं इस वास्ते ओर इसके अल्पवे मुर्तीपुजकोंके अरिहंत वगैरोंक फोटु बजारमें बिकते हुये, उसमें लगाकर निच कोम आराम मकानम भी जा पहोंचते है, इस बातकी मुर्तीपुजक लोग किंचित मात्रभी पर्वा करती नहीं करते हैं, अपसोसका स्थान है के इस असातनासे मुर्तीपुजकोंके कितने नबर दस्त कर्म बधते होवेंगे के इस बातका ज्ञानी पुरुष भी बयान नहीं कर सकते हैं, अगर जो उत्तम पुरुषोंके माता पिता वगैर अंधे, लुले, अंगहीन हो जाते तो घरके बाहेर निकाले जाते हैं कदापि नहीं मगर मुर्तीपुजकोंके अरिहंत आचार्य, उपाध्याय, साधु वगैरोंके फटु चित्र, प्रतिमा, अंगहिण अर्थात खंडन हो जाते तो तुरत उनकी सवा पुजा बंद करके स्थानके बाहर निकाल देते हैं, देखिये ! कैसा सच्चा और उमदा धर्म हैं के जिसमें किंचित मात्र भी सत्यता परिचय नहीं है, फेरभी अरिहंत वगैरके फोटु चित्र विकार सेवन करनेके मकाने भी रख्ते हैं ऐसी उमदा बात है ये भी बडे आश्चर्यकी बात है,

यांपे सहज सवाल होनेकी जगह हैं के जो फोटु किंवा चित्र वगैरे को लाथ वगैरे लगने से किंवा फाडने तोडनेसे अगर कर्म बंधते होवे तो, खास मुर्तीपुजक लोग अनेक प्रकारके फोटू किंवा चित्रके सयुक्त कपडे पहेनते हैं, और उनोमें उनोके तिर्थंकर वगैरोंके चित्र (फोटू) भी आते है और वा लोग उनोंको लाते और जुते वगैरे भी लगाते हैं और उन कपडोके सयुक्त शुभाशुभ अनेक प्रकारके कर्मभी करते है, इस न्यायसे तो मुर्तीपुजकोंको महान कठोर कर्म बंधते है और इनोके मान्यवर आचार्योंके बनाये हुये शास्त्रोंके आधारसे इन मुर्तीपुजकोंकी निश्चे उत्तम गति नहीं होना चाहिये और इनोके न्यायसेही इनाका निच गति मिलना चाहिये इसमे कोई भी तरेका शक नहीं समझना

फेर भी देखिये। कितनेक मुर्तीपुजकोंको प्रतिमा की पुजा किये शिवाय अन्न जल मुखमें डालना नहीं ऐसा पक्का नेम रहेतो उन लोगो के पास छोटी प्रतिमा किंवा चित्र किंवा नव पदका गट्टा हमेशा पास रहेता है जब उन लोगोको गामांतर जानेका काम पडता है तब वा लोग प्रतिमा वगैर सर्व पुजाका सामान एक झोलनेमें बांधके अपने साथमें लेने की गठडी किंवा पटीमें वा प्रतिमा सहित पुजाका झालना धर लेवे है और गामांतर रवाना हो जावे है मगर वखत पडता है तब उस गठडी किंवा पेटीपे बैठ जाते है, जुते सहित पावभी उपर धर देवे हैं और बगलमें लेके पेशाब [लघुनी-मुतने को-लघुनित] करनेका बैठ जावे है और बगल में किंवा शिरपर लेके टटी (दिसा-झाडा) भी फिर आते है, अब कहिये साहेब सात दुर्बुधके कितनी बडी भारी अशातना करते है और दुसरो को कहते हेके तुम लोग प्रतिमाको पर्ज मा पशु करोगे मगर स्वयंसे तो लाथा और जूतीयां मारनेमें कुछ बाकी नहीं रखते है और दुसरेको उपदेश देते है (मिसल्ल) आप गुरांजी बेंगन खावे और दुसरेको उपदेश सुनावे या की वा ' पोपजी आपकी

क्यांतक तारीफ कर के आपके सर्व मान्य वस्तुकी रातास ये दुर्दशा करते हो तो दुसर मान्य कैसे कर सकेगे क्वापि नहीं एसे कपट युक्त धर्म माननेवालोंको धिक्कार ! धिक्कार !! कोटीश धिक्कार है !!!

देखिये ! अरिहंत धर्मरोंके फोटु किंवा चित्र किंवा प्रतिमा सेवन कर नेम जो आत्म सिद्धि होती होवे तो फोटु किंवा प्रतिमा किंवा चित्र वगैर की स्पर्शना करनेमें जो जो वस्तु अगर आदर्श काम आते है उन सबोंकि सेवा पुजा भक्ति किंवा वदना नमस्कार करना चाहिये तब तो उक्त बाते सचि मानि जावगी नहीं तो उक्त सब बाते मनकल्पित और गप्प मानी जावेगी ये निश्चे समज लेना–

फरमी देखिये ! हमार साधु मार्गी [स्थानक वासी] कितनेक भाई किंवा बाया, समायक पोसा वगैरोंमें तिर्थकरोंके फोटु किंवा रंगित चित्र किंवा नव पदके गठे वगैरोंके दर्शन करते है ये इनोंकि बडी भारी भूल है, सबब फोटु किंवा चित्र किंवा प्रतिमा किंवा नव पदका गठा ये सब अटती है, और समायक पासावाले मुनि होत है इस वास्ते फोटु वगैरका दर्शन करना नहीं, और नमस्कार भी करना नहीं अगर करोगे तो मिथ्यात्व लगता है, कारण, "देव नहीं ने देव कर सो' गुरु नहीं ने गुरु कर सो' धर्म नहीं मे धर्म करे सो' मिथ्यात्व लगता है किंवा भारी मोहनी कर्म बंधता है, सुय भीमसयांयंगजी देखा। वास्ते फोटु किंवा चित्र किंवा तसवीर किंवा प्रतिमा वगैरोंको वदना नमस्कार कर जिनाज्ञा भी जैनके परमदम भगवंदि भाषित अस- म्य सिद्धांतक आधारसे समष्टितामे रिक्ता हुसम किंवा पथ स्तामे छुट मनके कारण करण असदृश्य गदका मानता है, इस लिये

वर्ग ३ रा

–अक्षरोंकी स्थापना विषय–

देखिये ! मुर्तीपूजक लोग कहते हे के तुम लोग अक्षरोंकी स्थापना मानते हो तो फर जिनराजके प्रतिमाकी स्थापना माननेमें क्या हर्ज है, मुर्तीपुजकों का कथन सत्य हे, मगर इसमे इतना फर्क है, स्थापनाके दोय भेद है, एक तो तदरुप स्थापना और दुसरी असदरुप स्थापना इस मतलब असली मतलब हमारे भाइ बिना समझते नहीं हैं, देखिये। स्वर १६ सोल्ह, अ आ इ ई उ ऊ " वगैरे है, और व्यंजन ३४।३६। चौतिस छत्तिस "क ख ग घ ङ" वगैरे हैं, ख्याल करो, जिस स्थानपे जिस अक्षरका उच्चार करते हैं, उस स्थानपे वो ही अक्षर लिखा जाता है, परन्तु दुसरा अक्षर नहीं लिखा जाता हैं

पुर्वपक्षी–अजी साहेब आप थोडा सोचो तो सही, अक्षरोंमेंसे अक्षरों की प्राप्ती होती हे और अनुस्वार और विसर्गसे भी अक्षरका उच्चार होता हे और अक्षरोंको अक्षरोंकी व्यापकता भी लागु होती है, बस ~

उत्तरपक्षी– आपका कहना सत्य हे मगर ये भी एक व्याकरणका स्थान हैं जैसा किसी एक पुस्तकमें लिखा " आध्यातम " और दुसरे पुस्तकमें लिखा " मध्यातम " मगर आंप मकारका लोप होके अकार की प्राप्ति होती हे अक्षर की प्राप्ति हुए के बाद, मध्यातम का पारिस अध्यातम सिद्ध

होता है, इस ही बनेसे अक्षरोंसे अक्षर की प्राप्ति होती है और अनुस्वार से अक्षर एसा बोला जाता है, देखो! श्वेतांबर इसही शब्दके 'ता' अक्षरके उपर अनुस्वार हे मगर बो अनुस्वार निचे उतारनेम, अर्थ, मकार की प्राप्ति होती हे कैसा, श्वेताम्बर, ये तो हुवा, फर भी देखो! पांडवो की माता कुंति ऐसा नाम हे मगर बहोत पांडवोकी माता कुती एसा नहीं लिखा जावेगा इसही बनेस अनुस्वार और विसर्ग युक्त अक्षर बोलाये जाते है और अक्षरोंका अपेक्षा इस बनसे लागु होती हे जेसा व्याकरणमे "सर" धातु हे मगर सर ये शब्दको, क, की अपेक्षा लगानसे "कर' एसा शब्द बनता है न की अपेक्षा नर व की अपेक्षा वर ब की अपेक्षा तर ह की अपेक्षा हर म की अपेक्षा सर, प की अपेक्षा पर, म की अपेक्षा मर, देखो! जैसी जैसी अपेक्षा लागु होवेगी वैसे वैसे शब्द बनते चले जावेंगे, लेकिन इस वाक्यका सारा थोडा इतना ही है, के जिस स्थानप जो अक्षरका उच्चार होता हे उस स्थानप वो ही अक्षर लिखा जाता हे मगर अन्यथा लिखनसे, विरोध साध्य होता हे, वाक्य माहात्म्यकी ! यथा योग्य वस्तुको नही मानना य भी अयोग्य हे

पूर्वपक्षी—आपका फरमाना सत्य है।

साधनका स्थान है, अक्षरोंमें आकारों कि मुख स्थापना (अक्षर) गुण लक्षण गुण हे, मगर किंचित मात्र फर्क नहीं है, इस लिये गुणलक्षण, तद्रूप मुख स्थापना माननेमें कोइ भी हर्ज नहीं हे, इसही बनेस मुर्तीपुजक लोग, जिन प्रतिमामें जिन रामको मुख स्थापना, गुण, लक्षण, गुण पन दिखलावेंगे तो हम खास प्रेम युक्त मंजुर करेंगे मगर एसा न होके एक कविने कहा हे

दोहा

दस योगा दस योगर्थो, दस भागडके पथा ।

उत्तरपक्षी:—वर्तमान समयमें जो तिर्थंकरोंकी स्थापना है सो तद्रूप नही है

पुर्वपक्षी—क्योंजी उसमें क्या फर्क है जो फरमाईये भला—

उत्तरपक्षी:—माहात्मयजी। जरा सोचिये तो सही वर्तमान समयमें जो तिर्थंकरोंकी जो स्थापना है, वो स्थापना तिर्थंकरोंके गुणात्मक तो स्वप्नांतर मे भी नहीं है, मगर जो सिद्धांतोंमें तिर्थंकरोंके शरीरका वर्णन क्या है, उससे भी बहोत फर्क है

पूर्वपक्षी:—अच्छा क्या क्या फर्क है सो थोडा खुलासा तो किजीये

उत्तरपक्षी:—देखिये! प्रथम तो तिर्थंकरोंके बाल सदैव बिपे (छिपे) हुवे नहीं रहते है, और प्रतिमाके है दुसरा तिर्थंकरोंके कक्षेके उपर खिसर नहीं रहेता है और प्रतिमाके है तिसरा जैसा मनुष्योंके सी चिन्ह संयुक्त आकार है, वैसा तिर्थंकरोंके नहीं होता है

मगर प्रतिमाके है, इत्यादि अनेक बोतोंका तिर्थंकरोंके शरिरसे और प्रतिमाके आकारसे फर्क है, कहांतक वर्णनकरे देखो! तिर्थंकरोंके शरीरका एसा अद्भुत आकार है उसका आकार (फोटू) इंद्रभी नहीं उतार सकते, ता मनुष्यकि तो क्या ताकद है कि तिर्थंकरोंके शरीरका आकार उतारेंगे, वर्तमान कालकी जो तिर्थंकरोंकि प्रतिमा है वो केवल एक मनुष्याकार है, इसवास्ते तद्रूप स्थापना नहीं मानी जाती है

पूर्वपक्षी आपका फरमान सत्य है, मगर प्रतिमाके समक्ष जानेसे तिर्थंकर माहाराजका नाम तो लेनेमें आता है

उत्तरपक्षी तिर्थंकरोंके नामके अनेक आदमी होते है मगर ऐसा अर्थ शुन्य नाम लेनेसे कार्य सिद्ध नहीं होता है

नें सिद्धांतोंमें फरमाया हे सो द्रव्य और भाव ये दोनु मार्गो का पुण खुब करके वस्तनमें साफ साफा खुल्ला मालुम दुता हे इसम किंचित मात्र फर्क नही हे सा अब पुण ध्यानातके साथ अवलोकन किजीये सुत्र श्री भगवती भाग्य सतक २रा उदसा ५वा तरुरु साधुमनो की सेवा, भक्ति, पुजा, प्रतिष्ठा और संगतकरणसे, दस १ गुणाकी प्राप्ति होती ह एसा श्री विर प्रमात्माने साप्त खुबको घोरसे फरमाया हे या पाठ निच दरज करत है

[गद्य पाठ]

तहा, रुवेण, भंते, समर्णवा, माहार्णवा, पजूवा समाणस्सं,
किंफला पजुवासणा, पन्नंते तंजा गोयमा, सवणफला,
सेर्णभंते, सवणेकी, फले, णाणफले, सणभंते, णाणकिंफले,
निणाणफले, सेणभंते, विणाणेकिंफले, पच्चरकाण फले,
सर्णमंते, पच्चरकाणे किंफले, संयमफले, सेर्णभंते
संयमेर्ण किंफले, अणाण्हयफले, रूव अणाण्हय किंफले,
तवफले, तवेर्ण मंतेकिंफले, वो दाणफले, वो दाणेर्ण भंते
किंफले, अकिरियाफले, सेर्णभंते, अकिरियाकिंफले,
सिध्धी पज्जवसाणफल्य पर्णत्ता,

अर्थः—गौतम स्वाम महाराज हात जोड पंच अंगनमा के श्री वीर परमात्माको पुछाकरी के अहो भगवान त साक्षात साधु गुण और लक्षण करके संयुक्त में अहो भगवान० स तप करके संयुक्त, अथात आत्मा, सोधन करता हुवा मा प्रत्ययके अर्थात इस जगतमें सर्व चराचर प्राणि मात्रका त्मातासे मारु नही और (दुसर) के पाससे मरवावे नही जो कोइ मारता हो त उसे भला (अच्छा) समजे नही,॰ पसू ऐसे मुनि महाराज की सेवा

भक्ति करनेसे० कि क्या फल (क्रम) की प्राप्ति होती है, इति प्रश्न
र्व० उत्तर० हे वो कहता हु गो० हे गौतम तुम चित्त लगाकर सुनो
स० सि द्वांत सुननका अर्थात ज्ञान सुननेका योग (प्रसग) बनता है॥१॥
स० जो ज्ञानीकि वाणि सुनता अवश्यही ज्ञानकी प्राप्ति होएगा ।२। णा
आर ज्ञान प्राप्त होनेसे विज्ञान (विशेष) ज्ञानका प्रग्रस (उद्योत-प्रकाश)
होता है ।३। वि विज्ञानसे सुकृत दुष्कृतके फलोंका मालूमकार होता है,
फर दुष्कृतका त्यागन करता ह ।४। प० और जो दुष्कृतके पच्चरकाण
(त्यागन) किये सो ही प्रथम (कर्मोंका रुधन-रोकटे कर्मोंको आते का
रोके) हुवा०॥५॥ स और जो आश्रवका रुधन (रोका) किया था हा
तिर्थंकरोंके अज्ञाका अराधन किया ॥६॥ अ आश्रवका रुधन और वीतरा
गकी अज्ञाका अराधन (पालन) है सो ही तप है, ॥७॥ त और तपक
प्रयोगसे सकल कर्मोंका क्षय होता ह ।८। वा कर्म क्षयनसे-मक्रिया
स्थिर जोगी-सर्व पाप रहित होत ह ।९। अ और जो सर्व पापसे रहित
होते है उसको निरञ्जन निराकार-मातिम रुपि, अजर-अमर-अचल, पदवी
की प्राप्ति होती है, अर्थात मोक्षकी प्राप्ति होति है, मोक्ष उस कहते ह
क वा जीव फिर काइ भी वक्त ससारमे मोक्षसे आवे नहीं, दखो साधु
की सेवा भक्ति करनेसे कैसी अमुल्य और अलोकीक वस्तुकी प्राप्ति होता
है ये ज्ञानि सिवाय दुसरा इस बातका वर्णण नहीं कर सक्ता है—वसा।
इसकी अभिप्रायको श्री वीर परमात्माने इसही स्थानपे सुत्र फरमाया ह
सो वो भी निचे दाखल करता हु.

॥ गाथा ॥

सवणे नाणे विन्नाणे, पच्चरकाणेय संजम ॥
अण्हए तवयव, वो दाणे अकिरिया सिध्दि ॥१॥

भावार्थ—इसलिये ! साधुके दर्शनसे तथा संगतसे, तथा सेवा भक्तिके प्रभावसे ज्ञान सुननेका योग [प्रसंग] बनता है, ॥१॥ जो माहात्मा ज्ञानी पुरुषोंकी साधुके मुखा निकले वाणि सुनेगा उसको अवश्यही ज्ञान प्राप्त होवेगा,॥२॥ और ज्ञान प्राप्त होनेसे विज्ञान [विशेष] ज्ञानका प्रकाश [उद्योत—प्रकाश] होता है, ॥३॥ विज्ञानसे सुकृत दुष्कृतके फलोंका जानकार होता है, जानकार होके फर दुष्कृतका त्याग करता है, ॥४॥ और जो दुष्कृतके पचखाण किये सो ही संजम [आश्रव रूंदन—रोकना] हुवा,॥५॥ और आश्रवका रूंदन किया था ही तिर्थंकरोंकि आज्ञाका आराधन [पालन] किया, ॥६॥ आश्रवका रूंधन और वितरागकी आज्ञाका आराधन है सो ही तप है, ॥७॥ और तपके प्रयोगसे प्राचीन शुभाशुभ सब कर्मोंका नाश [कटना] होता है, ॥८॥ कर्म कटनेसे अक्रिया—स्थिर जोगा—सब पापसे रहित (निर्मल) होवे है ॥९॥ और जो सब पापसे रहित होवे है, उस अक्षय, अमर, अविनाशी पदको प्राप्ति होती है, अर्थात मोक्षकी प्राप्ति होती है, ॥१० ॥

समिक्षा—इसलिये ' माहाशयजी ' साधुके दर्शन करनेसे और सेवा भक्ति करनेसे तिर्थंकरोंने भी जैनके असली सिद्धांतोंमें कैसे उत्तमोत्तम अमाप्य गुणाकी प्राप्ति होती है, ऐसा अनेकोंक अधिकार वारंवार फरमाया है० मगर जिन प्रतिमाके, दर्शन करनेसे तथा सेवा भक्ति करनेसे तथा पुजा प्रतिष्ठा करनेसे उपरोक्त गुणोंमेंसे एक भी गुणो की प्राप्ति होता है एसा तिर्थंकरोंने जैनके असली सिद्धांतोंमे किंचित मात्र भी अधिकार कहीं भी नहीं फरमाया है, मगर यांप सहज सवाल होने की जगे है क्या जिन प्रतिमाका भी जैनके असली सिद्धांतोंमे अधिकार फरमाने करति वखत क्या तिर्थंकरोंका ज्ञान गुम होगयाथा, क्या किंचितकेमे उतरगयाथा, क्या ' जिन प्रतिमासे डरके [लोपके]

ये अधिकार फरमाना भूल गये क्या ! तिर्थंकरोंने नसारियाया सा न मेकि छाकर्म जिन प्रतिमांका अधिकार फरमाना भूल गये—मगर येबात कदापि नहीं हानेवाली है स्वरण ये यात असंजतिकि पूजाका अछेरा [अनोस्ति बात] क्या हुवा सर्वमिक कारणसे ये जिन मतिमाकि पूजाका (ईस असमति की पुज कही जाती है) प बारा कालीसे चली है मगर अनादिसे ये बात नहीं है इस वास्ते ज्ञानी पुरुषोंने [तिर्थंकरोंन] भी जैनक अनेर्थी सिद्धांतोंमें जिन मतिमाका अधिकार फरमाया नहीं है, इस परसे साफ साफ सुस्य निर्णे होता है के, मुर्तीपुजकोंका कथन (कहेना) साफ नव्य (खोय्य) है, अगर मुर्तीपुजकोंका कथन असली और सत्य हावे तो, इसके निर्णयके वास्ते मदिन और मकस्मी नमुना रुप असिल रस मागधि भाषामें पाठ ईस ग्रंथमें दाखल किये हैं, के जिनको वाचके परेन्यासे सबोंभी समज सकते हैं, अतएव मुर्तीपुजकोंन हमारे मकली पाठोंके अनुकूल भी जैनक पक्राकम अंगादि असली और माचिन चार पत्नोंने लिखित सिद्धांतोंके मूल पाठोंस आम सभामे दिखलाना चाहिये, मगर एस सुसात्तकार असली सिद्धांतोंके पाठ दिखलावेंगे तो हम सत्य वास्ते कभी इनकार नहीं करेंगे मगर जद चपामक मुर्तीपुजकोंके जो मावव्या चाये वगैरोंके बनाये हुव टिका चुर्णि भाष्य, निर्युक्ति ग्रंथ प्रकर्ण वगैरोंकी साली दवेंग तो हम लाग मंजुर कदापि नहीं करेंग

पुर्वपक्षी –क्योंजा ! मुर्तीपुजकोंके आचार्य वगैरोंके पुण सत्य लेख क्यों नहीं मंजुर करते हो

उत्तरपक्षी–साम मुर्तीपुजकोंकु इनोके साम आचाय वगैरोंके लखों का पुर्ण संदेह दुर नहीं हुवा तद हम लाग वा उन लेखोंको कैसे मंजुर करेंगे.

पुर्वपक्षीः—मेहेरबानी करके हमे दिखलाना चाहिये

उत्तरपक्षी—हाजी अच्छी तरह देखिये,

श्रीस्तुति परामर्श पृष्ट ९ ओली १७मी (जवाब) क्या? तिर्थंकर गण धरोंके वसनोंसे भी भी पुर्वोंकी भलाई हुई आचरण नही हो गई! हरगिज नहीं! इसही ग्रंथके पृष्ट १७ ओली १७मी, (जबाब) अगर उस आचार्यका हुकम-मुवाफीक शास्त्रके हो तो-उसको बसिरोचश्म कुबुलकर मगर जर खिलाफ हुकम शास्त्रके कोई बात आचार्य फरमावे तो चेलेको फर्ज है उसको न-माने, साधुपणा अपनी क्रयाकी शुद्धि के लिये है-नकी-झुठी-हां-में-हां-मिलानेके लिये

देखिये मुर्तीपुजकोंके लेखसे पुर्ण सिद्ध हुवाके जो बात भी जैनक एकादस अंगादि माचिन और असली सिद्धांतोंमे होवे सो बात टिकादि ग्रंथ प्रकरण बगैरेमे होवे तो प्रमाण की जाती ह लेकिन असली सिद्धांतोंके विरुद्ध जो कोइ बात टिकादि ग्रंथ प्रकर्ण वगैरेमे होवे तो कदापि मंजुर नही की जावेगी इस वास्ते हम लोग मुर्तीजकोंके लेख मंजुर नहीं करते हे.

पुर्वपक्षीः—आपका फरमाना माकुल है

देखिये! हमार प्यारे पाठक गणको हुवे हुव स्याहम आव इसलिये एक दृष्टांत देके पिछे पाठ लिखेंगे, दृष्टांत निचे मुजबः—

(दृष्टांत) देखिये! हिंदका बादशाह विलायतमें निवास करता रहता व उसके खास वजीर हे, और हिंदि वजीर हे, पार्लामेन्ट सभा हे, हिंदका राज्य कारभार चलानेके वास्ते वाईसराय-वगैरे बडे बडे हुदेदार ह सिरस्तेदार वगैरे अहेलेकार हे, वकील बारिस्टर वगैरे हे, ज्युरी (पंच) ह, कायदे किताबे हे, दुधका दुध और पानीका पानी इंसाफ

कायदे सर कोर्ट इन्साफ करते है, मगर जिस वख्त कोर्ट ईन्साफ करणेके वास्ते इजलासपे दाखल होते है उस वक्त कोई मनुष्यने विचाराके कोर्टको ईजलासप दाखल नहीं होन देना, और कोर्टके बदल्ल कोर्टका फोटु [प्रतिमा] ईजलासपे दाखल कर देना सो वो फोटु (प्रतिमा), कायदे सर इन्साफ करके जज्जमेंट सुना देवेगा, अगर किसी मनुष्यने मोंचे सर कोर्टको अर्ज करके कोर्टका फोटु कोर्टके बेठन की खुरशी उपर दाखल [धर दिया] कर दिया था वो कोर्टका फोटु अर्थात प्रतिमा कायदेसर इन्साफ करके जज्जमेंट सुना सक्ता है, यदापि नहीं, देखो ! द्रव्य कार्यमी फोटु अर्थात प्रतिमासे सिद्ध नहीं होता है, तो भाव कार्य तो कहांसे सिद्ध होवेगा

गोर करनेका स्थान है, कोर्ट हाजर है, वकिल बारिष्टर हाजर है पच हाजर हैं कायदकि किताबें हाजर हैं वादि प्रतिवादी हाजर हैं, कोर्ट कायदे सर ईसाफ करके मजमेंट सुनाति है इतनि बातें प्रत्यक्ष समागम हाजर होतेहु सातु दापि फोटु अर्थात प्रतिमाकि क्या जरूरत है आप प्रतिमाका किंचित मात्र समज नही आना चाहीये इसका बगस, भाव दृष्टांत मिलता है

दृष्टिय ! श्री जैनक चक्रवृति बादशाह त्रिलोकिनाथ वीतराग देवाधि देव श्री श्री श्री श्री श्री श्री मंदिर स्वामि माहाराज नगर तिथंकर रूप, माहाविदह क्षेत्रोंमें विद्यमान विचरते हैं, गणधर माहाराज मुख्य वजिर हैं, हिंदक अर्थात मन सेवक वजिर सामान्य वकिल हैं पारस्पर अर्थात धर्म सभा हैं इस सभाके मत ज्ञानी सुत ज्ञानी अवध ज्ञानी मन पजव ज्ञानी वगैर सम्य है

हिंदक अर्थात मन सेवक समागमका दरबार भजन बाठ धन बादशाह आचाय उपाध्याय बगर धर धर दुरदार (अमलदार) है

सामान्य साधु सिरस्तेदार और अहेलेकार हे, बहु मुर्ति पंडित राम वकिल पालिढर वगैरे हे श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असलि सिद्धांत हैं सो कायदेकि किताबें हैं, संवर निर्जरा रूप मुरी (पंच) हैं अब कर्म सो वादि हैं चिदानंद [जीव] प्रतिवादी हैं, तिर्थंकर माहाराजके इन्साफ रूप इजलासपे कोर्ट दाखल होके, ग्यान, दर्शन, चारीत्रके अनुकुल कायदे सर इन्साफ करके कोर्ट जजमेंट सुनावि हे

देखो ! ध्यानतका स्थान हे के, इस मर्त क्षेत्रमें आचार्य उपाध्यायरूप कोर्ट हाजर हे, समान्य साधु रूप अहेलेकार हाजर हे, बहु मुर्ती पंडित रामरूप वकिल पालिढर हाजर है, श्री जैनके असली सिद्धांतरुप कायदे की किताबे हाजर हे, संवर निर्जरारुप पंच हाजर हे, कर्मरुप वादी, और जीवरुप प्रतिवादी, हाजर हे, कोट कायदेसर इन्साफ करके जजमेंट सुनाती हे इतनि बाते प्रत्यक्ष प्रमाणमें हाजर होतेहे साथ, फोटु अर्थात प्रतिमाकी क्या जरुरत है आपे प्रतिमाका किंचित मात्र संबंध नही होना चाहिये अगर प्रतिमा संबंधी सब बार्ता सत्य होवे तो हम हमारे मुर्तीपुजक भाइ मित्रोंको पुछते है के आपके आचार्य वगैरोने टिकादि ग्रंथ प्रकर्ण वगैरेमें प्रतिमा संबंधी जो जो अधिकार विस्तार पुर्वक दाखल किये है उसका सु साम्य हमारे निम्न लिखित लेखानुसार श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन ताड पत्राम लिखित असली सिद्धांतोंकि मुल पाठस आम सभाम सिद्ध करके दिखलाना चाहिये

नवीन और नकली नमुना रुप भवि सरल मागधि भाष्यमें पाठ दाखल किये हे, सो निचे मुजब हेः—

—मंदिरकी आदि विषय—

अर्थः-अहो भगवानजी जिन मंदिर बनावना है या नहीं

पाठ-किंमत्त जिन मंदिरेण सासे मार्थ हवइ,

—प्रतिमाकी आदि विषय—

अर्थ-अहो भगवानजी जिन प्रतिमा सासवती है या नहीं,

पाठः-किंमंते जिन पडिमाण सास मार्थ हवइ,

भावार्थ-अहो विनदयाल जिन लोकमें जिन मंदिर जिन प्रतिमा अनादि कालसे सासवती है क्या नहीं है,

—जिन गुण आरोपण विषय—

अर्थः- अहो भगवानजी जिनराजके गुण जिनराजसे अनरि व स्तुमे डालनेसें समावेस होवके नहीं,

पाठः-किंमत्त जिन गुणाण जिन प्रतिकुल्याण दवार्ण मध्य आरापर्ण हवइ,

अर्थ-अहो भगवानजी जिनराजके गुण जिन प्रतिमामें डालनेसे प्रवेस होय या नहीं,

पाठ-किंमत्त जिन गुणाण जिन पडिमाणं मध्य आरोपणं हवइ

अर्थ- अहो भगवानजी जिनराजके गुण जिन प्रतिमामें डालने से वो प्रतिमा जिन तुल्य होय या नहीं

पाठ किंमत्त जिन गुणार्ण जिन पडिमाण मध्य आरोपर्ण करइ २त्ता जि न पडिमाण जिन तुल्यण हवइ

अर्थ-अहो भगवानजी जिन प्रतिमामें जिनराजके गुण डालनेसे क्या फल की प्राप्ति होती है,

पाठ-जिन पडिमार्ण मध्य जिन गुणाण आरोपणं करइ२त्ता भवे किस्से

सुरिमंत्र विषय

अथ अहो भगवानजी जिनप्रतिमा सुरिमंत्रको सुणति है या नहीं

पाठ किंमते जिन पडिमाणं सुरिमंत्रेणं सुणइ२त्ता,

अर्थः-अहो भगवानजी जिन प्रतिमा सुरिमंत्रको अंगिकार करती है या नहीं.

पाठ-किंमंते जिन पडिमाण सुरिमंत्रेणं सद्दइ२त्ता

अर्थ अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका सुरि मंत्र सुणानसे जिन राम तुल्य होती है या नही

पाठ-किंमंते जिन पडिमाण सुरि मंत्रेणं भणावइ२त्ता जिन तुल्लाण हवइ

अर्थः-अहो भगवानजी सुरि मंत्रकी फोणस तिर्थंकरन परुपणा करीहे

पाठ किंमंते सुरि मंत्रेण केवल तिर्थंकरणे वागरइ२त्ता

अर्थ-अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको सुरि मत्र सुनानेवाला मनुष्य जिन प्रतिमाका धर्मा चार्य [गुरु] होता है, सुरिमंत्र सुणाणाये वी एक गाथाकी शिक्षा समझना चाहिये ।

पाठ किंमंते सुरिमंत्रेणं जिन पडिमाणं भणावइ२त्ता तेनसस जिन पडिमा णं धम आयरियाणं हवइ

अर्थ अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको सुरि मंत्र सुनानसें क्या फल की प्राप्ति होती है

पाठ-जिन पडिमाणं सुरि मंत्रेणं भणावइ२त्ता भंते किंफल

भावार्थ -दखिये ! जैनके एकादस अंगादि प्राचिन आगमकी सिद्धांतोंमें कोइ भी ठिकाण सुरि मंत्रका अधिकार नही है

सम्यक्त्व वगैरे आठ विषय

अर्थः-अहो भगवानजी ज्ञान भ्रष्ट (ज्ञानसे भ्रष्ट) को वंदना न-मस्कार करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे,

पाठ-नाणं भट्ठाणं वंदइ२त्ता नमंसइ२त्ता भंते किंफले,

अर्थः-अहो भगवानजी समकित भ्रष्टको वंदना नमस्कार करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ-दंसणेणं भट्ठाणं वंदइ२त्ता नमंसइ२त्ता भंते किंफले,

अर्थः-अहो भगवानजी संजमसे भ्रष्टको वन्दना नमस्कार करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ-संजमेण भट्ठाण वंदइ२त्ता नमंसइ२त्ता भंते किंफले,

अर्थः-अहो भगवानजी धर्मसे भ्रष्टको वंदना नमस्कार करे तो क्या फल की प्राप्ति होती है,

पाठ-धमेणं भट्ठाणं वंदइ२त्ता नमंसइ२त्ता भंते किंफले,

भावार्थ-देखिये! ज्ञान दरसन (समकित) चारित्र और धर्म से जो कोई भ्रष्ट हो जाय तो उस मनुष्यको पांच गतिमेंसे कोणसी ग-ति मिले और चराचर अंत करे के नही,

मिलाप विषय

अर्थ- अहो भगवानजी तिर्थंकर तिर्थंकरके मिलाप होवके नहीं

पाठ-किंभंते तिर्थंकरण तिर्थंकरण समागमणं हवइ,

भावार्थः-देखिये! तिर्थंकरसे तिर्थंकर भये कालमें मिल नहीं

वरतमान कालमें मिल्वे नही, और अवते कालमें मिलन नहीं फर तिर्थंकर तिर्थंकर की वंध निच मैठक हाती नहीं है, ऐकिन मुर्तीपुजक लोग तिथकरोंका अनेक प्रतिमाका एक मंदिरमें मिलाप कराते ए, और वंचे निचे आसणस प्रतिमा की मैठक भी करते है, ये सम-र्थी सिद्धांतोंसे विरुद्ध है,

कैद विषय

अथ-अव भगवानजी तिर्थंकर देवको कोई बंदिखानमें देवे या नहीं,

पाठ-किमंवे तिर्थंकरेणं बंदिखाणेणं हवर,

भावार्थ-देखिये ! तिर्थंकर महराज कोई कालमें किसीक प्रति बंधनें नही रहते है, मगर मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाको जिन राज तुल्य कर करके तालेमे बंध करते है, य भी एक वातकी कैद समझना चाहिये

जिन मंदिर करण करावण अनुमोदन विषय,

अथ अब भगवानजी सानेक चांदीक रत्नोंमे पाषाणादिक जिन मंदिर जिन प्रतिमा कर कराये करतेका अथ्य जाणे और सावज उत्पन्न देव ता वता फल की प्राप्ति होवे,

पाठ-पुढ विना हिरण्णमइ सावनमइ रयणमइ जिन मंदिराणं जिन पडिमाण करावणा करावेइ वा अनुमोदइ वा मावज पाणि बागरणा भम किम्मे,

भावार्थ-देखिये ! जिन मंदिर जिन प्रतिमा करवानेके वडे मारी धर्मिक पुण्य की साती मुर्तीपुजक लोग देते है ऐकिन माता न

ग्रिय सुत्रका जिर्म उधार मुर्तीपुजकोंकि आठ आचार्योने किया है, मगर इसही सुत्रमे मदिर प्रतिमा करवाना कहा है और इसही सुत्रके पांचवे अध्येनमें मदिर प्रतिमा करवानेका निषध भी किया है सो पाठक वर्ग ने ख्याल रखना

उपाश्रा वगेरे करण करावण अनुमोदन

-विषय-

अर्थः-अहो भगवानजी आचार्य उपाध्याय साधु यति संवेगी वगेरोके वास्ते स्थानक पोषध शाल उपाश्रा धर्म शाला वगेरे करे करावे करतेको भला जाणे तथा सावज उपदेश देवे तो क्या फल की प्राप्ति होवे,

पाठ-आयरियाणं उवझायाणं समणाण यतियाणं संवेगीयाण पितामरि याणं कजण पानकण पाशाय शाल्म उवासयणं धमशाल्ण करइ ता कराषइ २ता अनुमोदइ२त्ता सावर्ज वाणी वागरइ२त्ता भंते किफले

भावार्थ-देखिये ! मुनिको तथा श्रावक लोगोंको भी इत्यादि कारणोंके वास्ते, छकायकी हिंसा होवे ऐसी सावज भाष्या बोलने की मनाइ है,

सावज उपदेश विषय

अर्थ-अहो भगवानजी आचार्य उपाध्याय साधु श्रावक यति संवेगी पितामरी दिगाम्बरी वगेरे सब जीव धर्म कायज वास्ते अनेक प्रकारसे अनेक उपदेश प्रदान अमुक काम करो इस अदेश वचन कहते है और अमुक काम करणेसे अमुक फायदा होवेगा एस उपदेश सब

न कोहेते है करति मलत सावद्य वाणी अर्थात जिन वचन कोनेसे छकाय जीवोंकी हाणी होवे उसे सावद्य वचन कहते है बोले मलस कर तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ-आयरियाण उवझायाणं समणाणं समणोपासकाण यतियाण संवेगी याणं पितम्बरीयाण दिगाम्बरीयाण भवजीवाणं धम्मकम्मेण अणगारिहेणं भा वगाणं उपदेशण निमित्तेण सावजं वाणि वागरइ२त्ता भव किंफले

भावार्थ-देखिये ! धर्मके वास्ते छकाय जीवोंको दुःख होवे तथा छकाय जीवोंकि प्राणकी हाणी होवे ऐसी भाषा मुनि धर्मको तथा भा वक धर्मको बोलना नहा दुसरक पाससे बुलवाना नहीं बोलतेको अच्छा भी समजना नहीं एसा भी वीर परमात्माका सक्त हुकम है,

स्नान विषय

अर्थः-अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको कच्चे पाणीसे तथा पक्के पाणीसे स्नान करावे करातेको भला जाणे तो क्या फल की प्राप्ति होवे

पाठ-जिन पडिमाणं सचित्तणं अचित्तेण अचुणं पखालेणं कराबइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भव किंफले

अर्थः-अहो भगवानजी सूरज कुंडमें तथा शेत्रुंजी नदीमें स्नान करे करावे करतेको भला (अच्छा) समजे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ-सूरज कुंडेणं सेत्रुंजी नदीणं स्नानेणं करइ२त्ता कराबइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भव किंफले

अर्थः-अहो भगवानजी आचार्य उपाध्याय साधु यति संवेगी पितम्बरी स्नान करे करावे करतेको भला जाणे (अच्छा) समजे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ:-आयरियाणं टकायाणं समणाणं यतियाण संवेगीयाण पितामरि याणं स्नानम करइ२त्ता कराव२त्ता अनुमोदइ२त्ता भव किमत्त

अर्थ:-अहो भगवानजी अन्य मतिक गंगादि अनेक तिर्थ हे उन तिर्थोका सम प्रटी स्नान यात्रा कर करावे करतेको भला समजे [जाणे] तो भया फल की प्राप्ति होती है

पाठ:-गंगाण यमुनाणं जावमपेग विहेणं मालतिपर्ण समदिठीणं स्नानण करइ२त्ता करायइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंव किञ्चे

भावार्थ-देखिये ! तिर्थंकर माहाराज तो सदासर्वदा निर्मल और पवित्र हे, तो फेर उन सर्वोत्तम पुरुषोंको स्नान करनेकी क्या जरूरत ह, और वो सर्वोत्तम पुरुष तिन कालमें भी कदापि स्नान नहीं करत ह तो फेर उनाकी मतिमाको स्नान करवाना ये भी गैर मुनासिब भी बात हे और जैन मुनिजनोंको जैनके असली सिद्धांतोंमे स्नान करने की माफ (सक्त) मनाई ह और यति संवेगी पितामरि तिर्थंकरोंका हुकम तोडके स्नान करते हे और सूरज कुंड वगैरोंमें स्नान करनेसे कल्याण होता ह, एसा लेख जैनके असली सिद्धांतोंमें कहाँ भी ठिकाणे दाखल किया हुवा नहीं ह, मगर इनाके सादजा चार्योंने जैनके असली सिद्धांतोंके विरुद्ध अपनी मनाई हुई टिकादी ग्रंथ मकरण वगैरों में ये अधिकार दाखल किया ह, और अन्य मतके गंगादि तिर्थोका जैनियान मान्य करना एसा जैनके असली सिद्धांतोंमें नहीं कहा ह, मगर मुर्तीपुजकोंने मान्य किया ह, इसका खुलासा पहलेहम हम कर आये ह, ये बात पाठक वर्गने अवश्य ध्यानमे रखना चाहिये दखिये मुर्तीपुजकोंके जट उपासक सादज्याचार्य [ढूंढे य पुवाचार्य कहते ह] वगैरोंने आपने इस मतके स्थापक वास्ते सर्वोत्तम केवली पुरुषोंका बडा भारी लांछन लगाया है, एस सर्वोत्तम महा पवित्र पुरुषोंका लांछन

लगाये सिवाय इस मवका स्वार्थी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है, तब परम पवित्र पुरुषोंको लांछन अवश्य लगाना पडता है, देखो ! सेत्रुंज य माहा तमके प्रथम उध्धार की गाथा निचे मुजब,

॥ गाथा ॥

केवलीयाके स्नान निमत, इसान इंद्र आनीसु पवित्र ॥
नदी शेत्रुंजी सुसमणी, मवें दीठी कौतुक मणी ॥४॥

दखिये ! केवली भगवानतो कभे मलका संस्ट भी (छीत) नहीं करत है, अगर कोइ समान साधु भी कभे मलको सम्प (छीना) किया हो तो उस वक्त वत है वो फेर आप खुद शत्रुंजे नदीमें आके स्नान कैसे करत होवेंगे जब एसी बात हो जाब तब तो एक स्याम की बात हुई (यत) प्र उपवासे झुसम्म, दूसरे मधुते मरा, भभावे मनुधुनम, सभे मुधुसम ॥१॥ परन्तु एसी बात केवली भगवान कदापि स्विकार करेंगे नहीं, अगर स्नानके जरिये केवली भगवान पवित्र होवेंगे तब तो केवली भगवान् अपवित्र हे, एसी पदवी मिलेगी ये बात तो कदापि होने वाली नहीं है, उन सर्वोत्तम पुरुषोंका यो स्नान करनकी काइ भी बगस मतलत नही है स्नान कों तो अपवित्र मलीन और अधम (नापाक) पुरुष अगिकार करेगा केवली भगवानतो सदासर्वदा परम पवित्र और निर्मल और पाक है तब वे पुरुष स्नानका द्वारा कैसे पवित्र अथवा कहलावेगे य तो ख्याल करो तुमार अज्ञानियोंकि सबबसे केवली भगवानको अपवित्र की पदवी मिलती है मगर तुमारे कु हेतु वगेरोंसे केवली भगवान अपवित्र कदापि नही ठेरेंगे खुब ख्याल करो और केवली भगवानक स्नानार्थ (स्नानके वास्त) ,इंद्रादिकने काई भी नदी वहांसे भी लाइ नही है, मा तुमारे शेत्रुंजय माहात्म वगेरोंमें केवली भगवानके स्नानका अधिकार धरा है और नदी लानका अभि-

कार घरा है, जो सर्व साफ अज्ञान पुरुषोंने स्नोय भग ह किंचित मात्र सत्य नही ह, साफ मोच्य है तुमरे साबथ्या चार्योंके गयोंके सात (पंडित) पुरुष कदापि मजुर नही करेंगे, इसिये ! ब्रम्हचारि पुरुषोंका अन्य मतम भी स्नान करन की मनाई है

श्लोक

मूपमसेया नोवस्त्रं, तांबोल स्नानस मंदर्न ॥
काष्टदंत सुगंधंच, ब्रम्हचान्र दोषणं ॥ ? ॥

भावार्थ-देभिय ! सुसाम (नरम) बिछामण सोना नहीं, ऐसे भारी वस्त्र नहीं पहेननाके जिसस अपन शरिरकी साभा पुण हो के पुरुषको मध्य पडावे (शरिरको आरामि होके इंद्रीयाका विकार पडके इतका पक्ष पहेच एसे नरम बिछान तथा एस भारि वस्त्र ब्रम्हचारी पुरुषोंने अगिकार करना नही) मुखकि पुष्टाइ तथा शोभा निमित पान सुपारी वगर मुखवास खाना नही स्नान करना नही तिलक छापा करना नहीं, निंब वगैरे की स कष्टीस दातण (मुख धोना नही) करना नही, सुगंधकी (अतर वगैरे) कोई भी वस्तु सवन करना नही, इत्यादि दोषोंस निवृत्तमान [दुर] होव उस ब्रम्हचारी पुरुष रहना चाहिये, अन्यथा पुरुषोंका ब्रम्हचारी नहीं कहना चाहिये

समीसा-देभिय ! अन्य मतक शास्त्रकारोने भी ब्रम्हचारी पुरुषोंका स्नान करना निषेध किया है, तो फर जैन कैसा स्विकार करेगा, तो क्या फर केवली पुरुष विचारी थ, सा सखुनय नदीमें स्नान करके पवित्र हो ते थ, कदापि नहीं जो पुरुष अभ्यक्ष शरिर पवित्र होना चाहता है, ता फर उन पुरुषोंने सदासवदा (हमेश) अपने अंदरकी निवाम [मलीन] करके निर्मल रहना चाहिये तो उनाका कल्याण शुलदी हा सकता ता

धर्म अपराधि मारण विषय-

अर्थः—अहो भगवानजी धर्म अपराधीको मारे मरावे मारतेको भला (अच्छा) समझे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठः—धम्म अपराधिण, हणइरसा, हणावइरसा, अनुमोदइरसा मंते किफले

दखिये ' मुर्तीपुजक लोग कहते है क धर्म अपराधीको मारणमें किंचित मात्रभी दोष नहीं है और इन मुर्तीपुजकोंके जो पुर्वाचार्य और हुवे है, उनाकी मनाइ हुइ "पुस्तकनिपुस्तकी टिका और संथारा की टिका" मे भी लिखा है के धर्म अपराधिको मारना सो पाठ निच मुजब.

(गाथा)

सच्चइपाण कजे, मुनिजाप चक्कट्टिसेनें ॥
पीक्रमिउ मुणी महण्या, पुयायलध्धी संपन्नो ॥

तात्पर्य—देखिये ' धर्मकी तथा संघकी नास्ति होती होवे ता चक्रवतिकी सेन्या) चौरासी लाख हस्ती, चौरासी लाख घोडा चौरासी लाख रथ, छिन्नुं करोड पायदल सर्व इतनी फोज चक्रवतिक मासुमें रहती थीं) ईतनी जबर दस्त फौजका चुरा कर डाल्ना, और विष्णु कुमारकी घोरसे धर्म अपराधीको मारनेमें किंचित मात्र भी दोष नहीं हैं, [धमनिमित्त विष्णु कुमारने नमुचि ब्राम्हणको मारा ये लेख भी जैनके मसल्के सिद्धांतोंमे नहीं है,]

फेर भी देखिये ' मुर्तीपुजकोंके महा धर्मत्मा जो पुर्वाचार्य वगेर हुवे है उन महात पुरुषोंने चनदासो चमालीस १४४४ बोधियोंका

होम डाले है, साधो मनुष्य मारणे सरिखा पुर्ण धर्म काम तो एक कि कसाई भी अंगिकार नहीं करेगा परंतु मुर्तीपुजकोंके जो पुर्ण पक्ष स्मा पुर्वाचार्य हुवे है उन अज्ञात पुरुषोंने तो तन मन और विचार बलसे पुर्ण हर्षके साथ मनुष्य मारनेका दया धर्म आदिरमें स्विकार कि या है, धन्यवाद है उन पुरुषोंकोके अधोगतिके दरवाजे स्वताके वा स्ते खुल किये इससे फेर ज्यादा बहादुरिका काम ईस दुनियामें क्या होवा होयगा

समीक्षा:—देखिये! हमारे प्यारे मुर्तीपुजक लोग कैसे सच्चे दया धर्मी हैं और सब जानि है के हम लोग इन मुर्तीपुजकोंकी कहांतक तारीफ करें, फेर भी मुर्तीपुजक लोग अस्य कपाल कल्पीत धर्मके कायम रखनेके वास्ते मा दिरमें सत्य शिरोमणिपना दिखलानेके वास्ते खाली गाल बजाके पुकार करते है, के ढुंढक (श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी वर्ग) लोग कैसा दया दया मात्रका शुन्य पुकार करते है, अहो हमारे बाल मित्रो तुमारी सच्ची दयाका किंचित मात्र स्वरुप उपरोक्त खुलासा कर आये है, सो ख्याल कर लेना अहो अज्ञात पुरुषों तुमारी सच्ची दयाका सत्य कैसा प्रम- माण है के श्री जैनके असली और प्राचीन तिर्थंकरोंके खास फरमाये हुय सिद्धांतों की भी ताकद नहीं है के तुमारी मनुष्य मारण सरिखि सच्ची दयाका किंचित मात्र भी अभिमुख अंगिकार कर सके, अहो हमारे बालमित्रो मुर्तीपुजकों तुमारी मनुष्य मारणे सरिखि सच्ची दया की नास्ति करने की तो श्री वीर परमात्माके फरमाये हुवे असलि सिद्धांतों की तो पुर्ण बलवान ताकद है के अहो हमारे बालमित्रो मुर्तीपुजक लोग तुमारे जो पुर्ण सत्य वादि पुर्वाचार्य हुवे है उनार्कि ठहराइ हुइ मनुष्य मारण सरिखि सच्ची दयाको पुर्ण रितिसे तिर्थंकरोंके वचनोंसे विरोधी (खोटी) साफ साफ तोरसे खुलासेवार ठहरा सके है, इस बातमें किंचित मात्र शक समजना नहीं फेर

भी देखिये ! गौसाल्ला खास श्री वीर प्रभुका खुब जोरसे अपराधि था फेर समोसर्णमे दो दोय मुनियोकी वेजुलेश्यासे प्रभुके समक्ष [सामने] घात कर डाली था श्री प्रभुने गौसाल्लाको मारा नहो और दुसरेके पाससे हुक्म देके मरवाया नही तो क्या प्रभु असमर्थ थे.

पुर्वपक्षी—भजी भाई वीर प्रभु तो वितरागी पुरुष थे इस वास्ते उनोने गौसाल्लाको मारा नहीं और दुसरेको भी मारनेका हुक्म दिया नहीं है

उत्तरपक्षी—माहाशयजी ! श्री वीर प्रभुने धर्म अपराधि को मार डालना ऐसा छद्मस्तको कोई भी श्री ैनके मसला और प्राचिन सिद्धांतोंमे हुक्म फरमाया होवे तो कृपाके साथ दिखलाना चाहिये

अगर जो धर्म अपराधिको मारनेमे दोष नहीं होता तो श्री वीर प्रभु बेशक गौसाल्लाको मारते अगर दुसरेके पाससे मरवाते मगर प्राणि मात्रकी घात अथात जानसे मारनेसे दुर्गति (खोटी गति—दोजक) मिलति है, इस वास्ते प्रभुने गौसाल्लापे दया भाव रखा

तात्पर्य—देखिये ! धर्म निमित्त (धर्मके वास्ते) कोई भी जीव ह किया धर्म अपराधिको मारना नहीं दुसरेके पाससे मरवाना नही का; दुसरा मारता होवे उसे अच्छा (भला) समजना नहीं ये असली जैन धर्मका रहस्य [मतलब] है सो हमारे पाठक वर्गने पुर्ण ध्यानमें रख ना चाहिये, ऐसो ढुंढीयोंका दया दयाका सचा पुकार भी जैनके असली प्राचिन सिद्धांतोंके आधारसे खुब जोरसे सिद्ध हुवा

—अंगिया विषय—

अर्थ—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके सचित फुलकी अंगिया रचे

तो क्या फलकी प्राप्ति होवी, १

पाठ—जिन पडिमार्ण सचित्त कुसुम मइ अंगियार्ण रजइरत्ता भंते किफले ?

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके केशरकी अगीया रचे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे २

पाठ—जिन पडिमार्ण केसरमइ अंगीयार्ण रचइरत्ता भंते किफले २

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके कस्तुरि की अंगिया रचे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ३

पाठ—जिन पडिमार्ण कस्तुरिमइ अंगियार्ण रचइरत्ता भंते किफले३

अर्थ—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके सुवर्ण कि अंगिया रचे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ४

पाठ—जिन पडिमार्ण सोवणमइ अंगियार्ण रचइरत्ता भंते किफले ४

अर्थ—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके कि, अंगिया रचे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ५

मिसेण दवाणं अनेगविहेणं अंगियाणं रपइ२न्ना रखावई२ना अनुमोदइ २ता भंते किफले ७

भावार्थः—देसिय । इत्यादिक देवोंने तथा चक्रवृति वासुदेव प्रति वासु देव राम (बलदेव) राजा महाराजा किंवा और भी दुसरे श्रावक वगेरेंनो तिर्थंकरोंके अंगीया रचि नहीं दुसरेक पाससे रचवाई नही और रचवाका भला पण समना नहीं सबब इस दुनियामें एसी वस्तु कोइमी नहीं हे के विर्थंक रोंके शरिरकि प्रभावरोंति का ढांकके अमनि प्रभा कांतिका वम आगे बढावे नव ऐसी वस्तु इस दुनियामें हेबि नहीं ता फेर अंगीया रचनकि कोई नरुरत भी रही नहीं हे, मगर मुर्तीपुजक लोग जिनराजकि प्रतिमांको जिनराज तुल्य समजते है और इस दुनियामें जिनराजकि प्रतिमाको अछाविक की आपमा देते है ता फेर जिन प्रतिमाके अंगीया रचके जिन प्रतिमाका सुसा भित करते है, सानो अंगियाके जरिये जिन प्रतिमाका साभित करते है, तब ता जिन प्रतिमा जिनराज तुल्य कहां रही जब जिनराज तुल्य जिन प्रतिमा नहीं रही तो फेर जिन प्रतिमा वंद था पूजा वा याग नहीं है अर्थात जिन प्रतिमा अवंदनिक अपुजनिक हे, देखो । सिद्धांतोंके न्यायसे जिन प्रतिमा अवंदनीक है, ऐसा खुब तारसे सिद्ध हुवा

—पुजा प्रतिष्टा विषय—

अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी पांच प्रकारकि नव प्रकारकि, सतरा प्रकारकी सतावीस प्रकारकि नव अनक प्रकार कि पूजा प्रतिष्टा कर करावे करतको भला जाण ता क्या फल कि प्राप्ति हावे ?

पाठः—जिन पडिमाण पचविहेण नवविहेण सतरविहेण सतावीस वि- हेणं जाव अनक विहेणं पुयाणं पतिट्ठाणं करइ२त्ता कराबइ२त्ता अनुमा दइ२त्ता भंते किंफले ?

अर्थः—अहो भगवानजी जिन पुगकी पादुकाकी ईंद्रध्वजाकि इद्यायक देवतासानकी तिर्थके परवक्की ज्ञानकि मैन सिद्धातोंकी इनाकि अकन प्रकारसे पूजा प्रतिष्ठा करे करावे करतेको भला समजे वो क्या फलकी प्राप्ति होवे २

पाठः—जिनपुगेण पादुकाणं ईदधयेणं इद्यायक देवाणं वियगिरेणं नायेणं सिद्धाताण अणेगविहेणं पूयाणं पतिष्ठाण करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता मंत्त किंफले ?

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी भाव सिद्धांतोंकी देवता ईंद्रि चारु तिर्थ तथा भवमी संसारसे निकल मान होनेके वास्ते पुजा प्रतिष्ठा कर करावे करतेको भला (अच्छा) माण ३

पाठ—जिन पडिमाण जाव सिद्धांताणं संसार परत भटेणं देवाणं इद्राण चवारि सिधाणं भवजिवाण पुयाणं पतिष्ठाणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते ?

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी सचित द्रव्यसे अचित द्रव्य से मिश्र द्रव्यसे पुजा प्रतिष्ठा करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ४

वासुदेव राम (बलदेव) वगैरे राजा माहाराजाने किंवा अन्य दुसरे अनेक श्रावकोने तिर्थकरों की किंवा तिर्थकरोंकी प्रतिमाकी सचित अचित मिश्र द्रव्योंसे पुजा प्रतिष्ठा स्वत करि नही करवाइ नही करते को भवी भी समथे नही सनम तिर्थकरोंने जातीअभिमान कुळअभिमान बर्ल अभिमान रूप अभिमान पद अभिमान वगैरे के जिससे कर्म बंधनेका काम होवे ऐसे सर्व कार्योका नास करके त्यागी हो गये हे, और उन सर्वोत्तम पुरुषोंने कर्मोका क्षय करके वीतराग हो गये हे यो सर्वोतम पुरुष ऐसे अलोकीक पदवीके धारक होके वो सर्वोत्तम पुरुष मन वचन कायासे भी किंचित मात्र भी द्रव्य पुजा प्रतिष्ठा की स्वतःसे वांछा नहीं करते हे और दुसरेको करनेका उपदेश देते भी नहीं हे, और जो कोई द्रव्य पुजा की वांछा करते है उस अछा भी नहीं समझते हैं यांपे गौर करनेका स्थान हैं क ऐसे माहा त्यागी वैरागी सर्वोत्तम पुरुषोंको ऐसा कोन माहा कर्म चढाता हे, सो द्रव्य पुजा प्रतिष्ठाका कलंक लगावेगा, अतःएव तिर्थकरोंकी द्रव्य पुजा करना एभा एक माहा त्यागी वैरागी पुरुषोंको भोगी करनेका स्थान हे, एसे कुमत्य करने वालो की अखिरमें गति कैसी सुधरेगी देखो ! ऐसी साफ साफ जैन सिध्दांतोंमे खुले अधिकार होते हुवे भी मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमा को जिनराज तुल्य समज करके सचितादि द्रव्योंसे द्रव्य पुजा कैसे करते है, जिन प्रतिमाकी सचितादि द्रव्योंसे पुजा करना ये भी एक अयोग्य बात है द्रव्य पुजाके बारेमें यांपे एक छोटासा दृष्टांत देक यांछे अधिकार खतम करेंगे

दृष्टांतः—देखिये ! एक वक्तके विषय एक समयकी बात हे के एक ब्राम्हण देव पुजा करनेके वास्ते तुलसी पत्र तोडने लगा तब तो तुलसीका छाड धुजने लगा इतनेमें एक देवता यांपे आ पहोचा, तुलसी दल तोडता

वक्त तुलछीका छाड धुवन लगा उक्त भाइ धुवतके साथ वो ब्राम्हण तुल-छीके माइस कहने लगा

(दोहा)

तुलछी मत धुजे मत थरहरे, मतको रहे उदास ।
तेरा पत्र हरको चढे, पेरी पेंडुआ वास ॥१॥

ये बात सुनतके साथ वो देवताको बडा भारी हरखके साथ आश्चर्य प्राप्त हुवा और देवता निजमें विचार करन लगा के ये मुर्ख अग्यानी क्या अन्याय युक्त भाषण करता है, मगर खैर, इतना विचार करके उस वक्त उक्त देवता अन्तर्धान हुवा अपात वापीस गया, दुसर रोज पुजाके वक्त पर-उक्त-पा देवता आकर हाजर हुवा, दुसरे रोज पुजाकी वक्त वो ब्राम्हण तुलछी दल तोडती वक्त उस तुलछीका पुर्वोक्त वचन सुनाम लगा तब उक्त देवताने ब्राम्हणके पुर्वोक्त वचन सुनके दिलमे सोचा के ये सुगका भक्ति है क आत्मा भक्ति है, इसका निर्णय अवश्य करना चाहिये एसा विचार करके उक्त ब्राम्हणके पांव पकडके व वैसेके वैसे यथा योग्य पांव पकडकोनेर वैठकेरस लैया र करके प्रतिमाके आगे कान्धे धराने लगा तब वो ब्राम्हण अतिसय दुःखि होके आत्पोद्गुध्यान वस होके आक्रंद शद्बके साथ रोता रोता कहन लगा के अरे मुर्ख, अर दुष्ट, अरे चांडाल, अरे पीसाच, ऐसा काम ये राक्षस मेरे मंदिरमे आके मेरे पुजाको मारता है, इस मंदिरमे क्या उक्त कार्य करता है, अरे नालायक अर निच मेरे मंदिरके बाहेर ना सुगनै मेरा मंदिरको अ पवित्र कर डाला ऐसे उस ब्राम्हणने अनेक अयोग्य वचनासे उक्त देवताका पुण अपमान किया और पकड धुम करके देवताका मंदिरके बाहर निकासन लगा तब वो देवता ब्राम्हणसे कहन लगा अहो मेरे बाल्यात एक मन व चन सुन ह फेर दुसरी बात करना,

तरसेमी असम भाग वृक्षोंका मादा दुःख होता है, जैसा तेरे पुत्रोंका मृत्यु हुवेसे तुमने कहाके तुमको और मेरे पुत्रोंको वैकुंठ नही होना वैसे वृक्षोंके पत्र फल फुल वगैर तोडनेसे वृक्षोंको या उनोके पत्र फल फुल वगेरेकोमी वैकुंठ नही होना जैसे पाषाण वगैरे प्रतिमा तेरेको वैकुंठ नही द सक्ती है वैसेही वृक्षोंका या वृक्षोंके पत्र फल फुल वगैरोंको भी वैकुंठ नही दे सक्ती है जैसा तेरे वास्ते प्रतिमाके कारण वैकुंठ नही है, तैसे ही वृक्षोंको या वृक्षोंके पत्र फल फुल वगेरेके वास्ते प्रतिमाके कारणमें वैकुंठ नही है, देख और तु तुलसी वगैरे वृक्षोंके पत्र फल फुल वगेरे तोडके प्रतिमा वगैरेको चढाता है, और इस शिवाय अनेक प्राणीयोंके प्राण पुजा प्रतिष्ठाके वास्ते हरन (लेता) करता है, ये सब कार्य इस मतके उदरपूर्णाके वास्ते करता है, मगर इत्यादि कार्योंसे तुमको वैकुंठ या मोक्ष कदापि नही मिलनेवाली है सबन वृक्ष वगेरोंके जीवोंने सरका ऐसी रजा नही दिनी है के धर्मके या मोक्षके या तेरी आत्मा शुद्धि के वास्ते हमारे प्राण लेना अर्थात हमको मार डालना, ऐसी तेरेको रजा नही होनेसे तु ये कार्य करता है, तो तुमको बेशक अधोगति अर्थात खोटी गति मिलेगी, देख! तेरे पुत्र तेरेको प्यारे है वैसेही इस जगतमें बेशिन चराचर प्राणी मात्र है वो ईश्वरके पुत्र है जैसा तेरे पुत्रोंका दुःख तुझे लगा वैसाही ईश्वरके पुत्रोंका दुःख ईश्वरको होता है, इस वास्ते तुलसी वगैरे वृक्षोंके पत्र फल फुल वगैरे जीवोंके प्राण लेनेसे निश्चे तुझे नीची (नारकी) गति मिलेगा, इस लिये अरे मेरे प्यारे बंधु धर्मनिमित्त कोई भी जीवोंका प्राण घात करना मत इत्यादि देवताका उपदेश ब्राम्हणने सुनके अति आनंदके साथ देवताको ब्राम्हण अर्ज करन लगाके अहो दयाल आपके कृपाप्रसादसे आज मुझे ज्ञानकी प्राप्ति हुई है सो आजसे मे धर्म निमित्त कोईभी जीवोंको दुःख देउंगा नही या कोईमी

मीवोका प्राण छुटेगा नहीं ये आपन निश्च समम लेना

देखिये ! देवताका उपदेश ब्राम्हणको लागु हुवा मगर श्री वीत राग देवाधिदेव तिर्थंकरोंके निर्विघ दया संयुक्त अमोघ धारारूप वस्ना-मृतका उपदेश हमारे बालभ्रात गण मुर्तीपुजकोंको लागु अर्थात असर नही करता है ये भी एक खेदाश्चर्यका स्थान है, मगर यांपे सहज अयाम्य होनेकी जगह है, क अतःएव हमारे प्यारे मुर्तीपुजक लोग अनेक प्रकारकी वनसपतीक पत्र फल फुल वगैरे तोडके जिन प्रतिमाक्ष चढाते है और इससे अपनी आत्म सिद्धि और आत्माका कल्याण भी मानते है, तो फेर इसोंके पत्र फल फुल वगैरोंके बदले अपने लडका लडकी (बेटा बेटी) क्यों नही चढाते है अगर इसोंके पत्र फल फुल व गैरोंके बदले अपने अंग जात पुत्र पुत्री चढा देवे तो उनोंको इसही भवमें मोक्षकी प्राप्ति हो जाय (मिन्नमावे) इस बातमें किंचित मात्र फर्क समजना नही, मगर उनाके बेटा बेटी उनोंको पुर्ण प्यार है, इस वास्ते अपने बेटा बेटी का बचाके विचार वनसपती वगैरे गरीब जीवों क प्राण घात करके बडे भारी आनंदके साथ चढाते है, लेकिन ये बात भी जैनके ममर्म्म और माथिन सिद्धांतोंसे माफ बरसलमप (किन्छ) है ये निश्च समजना चाहिये और मुर्तीपुजकोंका ये कार्य करना भी पुर्ण अयाम्य है,

अगलुहण विषय

अर्थ—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका अंग लुहण कर करावे करने को भला जान तो क्या फल की प्राप्ति होय,

पाठ—जिन पडिमाणं अंग लुहेणं करइ वा करावई वा अनुमोदइ वा भंते किंफले,

भावार्थ—जिस वस्त्र प्रतिमाको स्नान करावे हे फर कपडेसे प्रतिमाको पुछके साफ करते हे उस अंग लुहण कहते है, तिर्थंकर स्वतास अग लुहण करते नही हे, दुसरके पाससे करावे नही हे तो फर जिन प्रतिमाका अग लुहण करना ये भी एक अयोग्य बात है.

प्रतिमाकी सोभा विषय,

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा की अनके प्रकारसे सोभा करे कराव करतको भला माण ता क्या फलकी प्राप्ति होवी है

पाठ— जिन पडिमार्ण अणेगविहेण सीमुसार्ण कराइ२त्ता करामइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले,

भावार्थ— वस्थिय । तिर्थंकर महाराज जिस कालम भी अपने शरीर की सामा करत नही है तो तिर्थंकरकी प्रतिमाको सोभा करवाना ये कैसा याग्य समझा भाकथा कदापि नही, मगर मुर्तीपुजक लोग प्रतिमाकी सामा करत है ये पुण अयोग्य बात है

आभुषण विषय,

अर्थ—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनक प्रकारके आभरण (गेणा] चडाव चडावे चडातको भला माण ता क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ—जिन पडिमाण अणेगविहेर्म आभरणं चडावइ२त्ता चडवावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफल,

भावार्थः— देखिये । तिर्थंकर दक्को इन्द्रादिक कोराग आभरण चडाय नही है और ना तिर्थंकर सब आभरण पहेनते भी है परंतु मुर्तीपुजक

माग जिन प्रतिमाका आमरण म्गाव है ये अयाग्य है और दिगम्बरी मि न प्रतिमाका आभरण नही न्गाव है तो अब सब क्रियका समझना इस पस्स दोटको मुझे समझना चाहिये

जल यात्रा विषय

अथः— महा भगवानकी जल यात्रा कर कराव दख पा मन्हा नाण तो क्या फलकी प्राप्ति होती है ।१।

पाठ— जल यात्राणं करइ रा करावइ रा अनुमोदइ रा भमे किंफले ।२।

भावार्थ— वन्निये ! पयुसग वगैरामें चार आठमी वगड़ा पन्द्र सन है उस कर्मवेके निच यति, संवगी, पिताम्बरी बगर साथ गान बाजंस सहरमे फिरनको मात है इस मुर्तीपुमक माग जल यात्रा कहत है (जल यात्राके मंत्र) वीरार्थद सवेगी कृत, 'स्याद्वा दानुभव रत्नाकर' किताबमें चतुर्थ प्रश्नका उत्तर—जैन मत—धर्मेमें सए २७ वा में देख है

अवाल—जलका मंत्र कहते है [मंत्र] ॐ आपो, अप काया, एकेन्द्रीया, जीव, निरवद्या, ॥ अर्हत्पुजायां निव्यथा, संतुनिप्पापा सतु सन्दतय सतु, नमास्तु सघट्टनहिंसापा, पमई, दर्शनेः—इस मंत्र से पाणी मंत्रके निप्पाप करना चाहिये,—

पुष्पम—पुष्प, फल, पात्रका मंत्र कहत है—(मंत्र) ॐ वन-स्पतयो वनस्पति काया, एकेन्द्रीया, जीवा निरवद्या, अर्हत्पुजायां निव्यथा सतु निप्पापा संतु, सन्दसय संतु, नमास्तु संघट्टन, हिंसा पापमई दर्शन ॥ इस प्रकार पुष्प, फल, पत्र मंत्रके निप्पाप किये,

सर्वः— प्रकार एकेन्द्री—जल जीव—अर्हत्पुजायांके निनाराकी

पुजामें—निर्व्यथा संतुके तुमव्याधि करके रहित हो—अर्थात मिथ्यात्व रोग तुमारा दुर होय निष्पाप संतुके० निष्पाप हो अर्थात पाप रहीत हो—सम्गता य संतुके तुम्हारिसद्गति हो इस लिये तुम्हारा जो संघट्टन, हिंसा पाप जा है सो अर्हतकी—अर्चनके० पुजनमें ममोस्तुके मेरेको मत हो—

भावार्थः— अहो ! एकेन्द्री (एक इंद्रि होवे उसे ऐकेन्द्री जीव कहते है—थावर) जल वगैरोके सर्व जीवो, जिन राजकी पुजामें तुम दुःख (व्याधि) करके दुर होवो अर्थात मिथ्यात्व रोग तुम्हारा दुर होना चाहिये, तुम निष्पाप होवो, तुम्हारि सद्गति होवो, इस लिये तुम्हारा जो हमारेका स्पर्श होनसे जो हमको तुमारा हिंसा पाप लगता है (होता है) मा अर्हतार्कोमें जा पुजा करता हु, इस वास्ते जिनराजकी पुजामें तुम सब जीवोका दुःख—या—तुमारा प्राण घात होता है इसका पाप मेरेको मत होवो,

समीक्षाः—अजब गजब ! अजब गजब !! महान अजब गजब!!! ये मारुपा (बात) सुनके कसी भगवानभी हयरत होवे इसमें कुछ ताजब नहीं है.

देखिये ! महाशयजी ! मुर्तीपुजकोंके महान, पंडित क्या लिख ते है, सो थोडा ध्यान दिजीये; वा ! भाई— वा !! इम कहां लग तुमारी तारीफ कर तुमारि विर्थकरोंसेमी अनंत गुण अधिक समर्थो है सकपाल मन कल्पित मंत्रोका पढके विचारे गरिब अनाथ असमर्थ एकन्द्री जीवोंकी सद्गति करते हो, उक्त जीवोंको पुर्ण मेहरबानीक साथ सद्गति (उत्तमगति) पोंहोंचाते हो, और पुर्ण अनुग्र कृपाके साथ उक्त जीवोंका इतना जबर दस्त हित चंछते हो तो फेर उक्त मंत्रोसे स्वतःका हित भछके अपनी सद्गति क्यों नही कर सके हो, क्या स्वताका हित चछना ये गैर बात है, कदापि नही इस लिये अपनी सद्

ति उक्त मंत्रोंसे फोरन कर दिजीये उक्त बात किस तोरसे बनी है सा ख्याल कीजीये

(मिसाल) जैस यवन लोग—कुम्मां पढ़के बकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते है के, 'ये बहिस्तमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके बकरा वगैरः हवनमे होमके कहते है क ये वैकुंठमे गया, एसे करनेसे वैकुंठ—या—बहिशत मिल जावेगा, ता दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये बाते सारी सिल्याप ह, इसही मजेस हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मंत्र बना करके गरिब बिचार अनाथ जीवोकी सम्हति करते है, ये कैसी आम्मयकी वार्ता है सा ज्ञात पुरुषोंने विचार कर लेना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फेसे जलका—या—वनस्पति निष्पार करनेके मंत्र छपके जाहिर हुये है, उन मंत्रोको श्री जैनक एकदम अगोक साथ मुकाबला सभामें करके दिखाना चाहिये, तद उक्त मंत्र सत्य है, एसा समजनेमें आवेगा

—वारवार जन्म विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी दरसन तिर्थकर भगवानका जन्म करे करावे करताका भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठः— भवगमेरेण सवम्मरेण तिर्थकराणं जमण करइ २ वा करावइ २ वा अनुमोदइ २ वा भंते किफले

भावार्थः—दरिया ! तिर्थकर माहाराज मोक्ष पधार गय है मगर मु र्तीपुजक लोग हमेशा प्रतुमाका फिर प्रभुका जन्म कराते हैं, लेकिन भीर

प्रमुक्त जन्म चैत्र शुद्ध १३ ससत्य था, और य लोग भाद्रवेम जन्म कर बात ह, अन्यायका रस्ता न्यायहि हे, अन्य मार्गे ता भी कुछ न्याय मि ल्या हे, रामनवमा गोकल आष्टमा वोरे आमकी मास दिनको करते हे परतु य लोग न्याय पहलाका अन्यायका रस्ता ग्रहण करते हे, और वीर प्रमुका दूसराक मासमे लेयके पापिस लावे है, इस वास्ते विकरके साथ इन लोगो को फाग्गेम धन्यवाद बना पडता हे कारण सिद्ध माहाराजसे भी मुर्तीपुजक मना ज्यादा जबर दस्त है, जो सिद्ध माहाराजको लेयके पापिस संसारमें पटकते है,

—आगरण विषय—

अर्थ— महो भगवानजी धर्मके वास्ते अनक प्रकारका आर्रम सम्मा रम करके रात्रीका जागरण करे कराय करतेको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ— धम्मकज्जेणं अणेगविहेणं आरंभेण रयणियं जागरेणं करइ या करवाइरत्ता अनुमोदइ ता भंते किफले

भावार्थ – वलिया मुर्तीपुजक लोग पयुसणमे पोथा निकालते हे उस वखत तथा इस वखेस अनक वस्त अनक प्रकारकी हिंस्या करके तथा गाजे बाजेके साथ रात्रीके विषेषे जागरण करते है, य भी अयोग्य है,

बाजा विषय

अर्थ:—महो भगवानजी जिन मंदिरमे अनक प्रकारके बाजे बजावे बजावे बजातेको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होव,

पाठ— जिन मंदिरणं अणेगविहेणं वाजिंत्रणं बजावइरत्ता बजावायइर त्ता अनुमोदइत्ता भंते किफले,

भावार्थ— वलिय ! मुर्तीपुजक लोग जिन मंदिरमे ढोल नगारा सुर्न ग झांम वगेरे अनेक प्रकारके बाज बजाते है ये भी जैनक अमली शास्त्रस विरुद्ध है,

नगरमे फेरण विषय

प्रश्न— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक मोछक माय नम में फर फिरावे फरतको भला जाने तो क्या फलकी प्राप्ति हावे

पाठ— जिन पडिमाण अणेगविहेण आडंबरणं नगरमइ अडमाणेकर इरत्ता करामई ता अनुमोदइरत्ता भंते किंफले

अर्थ— अहो भगवानजी श्री जैन सिद्धांतोष्क अने मोछवक साथ नग्रमें फेरे फिरावे फेरव को भला माणे तो क्या फलकी प्राप्ति हावे

पाठ— जिन सिद्धांताण अणेगविहेण आडंबरण नगरमइ अडमाण करइरत्ता करावइरता अनुमोदइरता भंते किंफले

अर्थ— अहो भगवानजी तिर्थंकर माहाराज गणधर आचाय उपाध्य य साधु यति संवेगी पितांम्बरी वगैरेको अनेक मोछवके साथ गाम गाम वगैरसे नग्रमें फेरे फिरावे फेरवको भला माण तो क्या फलकी प्राप्ति हावे

पाठ—तिर्थंकरोणं गणधरेणं आयरियाण उवज्झायाण समणाण यतियाण संवेगीयाण पितांम्बरीयाणं जाव अणेगेणं आडंबरेण नगरमइ अडमाण करइरता करावइरता अनुमोदइरता भंते किंफले,

हिंस्यामे धर्म विषय

अर्थ— अहो भगवानजी हिंस्या शिवाय धम होवे नही एसा ज्ञान हिंस्या धमकी परुपणा कर अर्थात हिंस्यामे धम होवे ऐसा आपण कर कर

समा करे अथात हिंस्या संयुक्त धर्म करे करावे करते को भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ;— हिंस्याभए धम्मसद्दहरता पस्यहरता फरसहरणा भंते किफले

भरत विषय

अर्थ;— अहो भगवानजी श्रावकको जो भारा भरत है उसमेसे कोण से भरतपे जिन प्रतिमाकी पुजा प्रतिष्टा है

पाठ— किंभंते जिन पडिमाणं पुयं पतिठाणं समणापासकाणं दुवाद सेणं भरताणं कवइ भरतेणं मइ हवइ—

गुण लाछण विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिनराजके पुण गुण जिन प्रतिमामे है
पाठ;— किंभंते पडिमा मइ जिन गुणसम्पन्न,

अर्थ;— अहो भगवानजी जिनराजके पुर्ण संपन्न जिनराजकी प्रतिमा पाव

पाठ;— किंभंते जिन पडिमा मइ जिन संपन्न समइ,

—नाटक विषय—

अर्थ।— अहा भगवानजी जिन मंदिरमे अनेक प्रकारक नाटक कर करावे करतको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होय,

पाठ।— जिन मंदिरेणं मइ अणेगविहणं नाडकणं करइरता करावइ भम अनुमोदइरता भंते किफले,

—शिखर विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी जिन मंदिरके शिखर उपर भंडा-दंडा-धजा करावे करवावे कराते को भला माने तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठः— जिन मदिरणं, शिखरेणं, झाईंडेणंवा, दंडेणवा, धजेणवा, करावइ॰वा करवावइ॰वा अनुमोदइ॰वा भंते किंफले,

असातना विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन मंदिरकी चौऱ्यासी असातना करणसे तिर्थंकरने फरमाइ हे,

पाठ— किमते जिन मंदिरेण चौर्यासिर्मं असाणाए के वग्ण तिर्थकरणं वागरइ॰वा,

तप विषय

अर्थ— अहो भगवानजी नंदिश्वर तप करनसे क्या फलकी प्राप्ति होती हे

पाठः— नंदिसरेणं तपेणं करइ॰वा भंते किंफले,

भावार्थः— देखिये ! मुर्तीपुजकोंकी तर्फसे नंदिश्वर तपका विस्तार "नंदिश्वर द्वीप संबंधी ग प्रमाद कर पट उपर कलिन नंदिश्वर पनी पुजा पुर्वक पोतानि शक्ति माफक तप करवुं वगेर, उजमणा नंदिश्वर द्विपनो मण्डल बनावे पुजा करावे स्नान पुजा करे गुरु भक्ति कर मडल्नी पुजा करे बावन बावन फल नारियेल पुगी फलादिक वस्तु ढोके वगेर" और भी य लोग सत्रुंजय गिरनार समेत शिखर वगेरके प निकालके पुजा प्रतिष्टा करते है

अर्थः— अहो भगवानजी प्रासि पदवे तप करणसे क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठः— प्रासि पदवे तवेणं करइ२त्त भंते किंफले,

भावार्थः— देखिये। मुर्तीपुजकों की तरफसे तपकी विधि "श्री वृद्ध मानना शिष्य गौतमजु उपवासादिके करि अराधन करवुं वगैरे, उमग्गाम्य, भालामाणा पांच अनपाखिवे, तथामगरू एक अन पाखिये, मतस् एक उपर पलिये, भाद्दमाणा पांच जवार माणाक, गोपुमंसक्ते, वोसमसत्रण, कोत्र वाम्माणात्रण, शक्ता (कवणा) यथा शक्ति दान पुजा वगैरे करवा

अर्थ— अहो भगवानजी अहक्कदसमितपः करनेसे क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठः— अहक्कदसमि तवेणं करइ२त्ता भंते किंफले,

भावार्थ— देखिये! मुर्तीपुजकोंकी तर्फसे तपकी विधि "प्रत्येक वर्षाणी भादवा शुदि दसमीना दिवसे यथा शक्तिए उपवासादि करिने अक्ष वदी पास सगीतादिक थी रात्री जागरण करवुं मारिक केरि मोदकादि क अयाबी पास थेकवा विगे दिवसे साधर्मीकन जमाडि साधुन दाम आपी पारणु कर अेमा दवीन कुकानी पिछ करवी भमन करवुं तम पातान्नेपण भमन करवु अनरे देशभि नारणिया वर्कलो तथा साधु दविन वधाविये, दिक करवा तप करवु वगैरे तेमापटक्षु विशेष जे फलादिक पाक वर्ष वधाविय त करतां भिम वर्षेमा, विमवर्षे त्रिगुणा, एमया मत दसमे वर्षे दस गुण गोकवा"

अर्थः— अहो भगवानजी अभिक्ष तप करणसे क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ— अभिक्ष तवेणं करइ२त्ता भंते किंफले,

भावार्थ— देखिये, मुर्तीपुजकोंके तर्फसे तप की विधि "पोष कृष्ण

पंचमी ये भी नमिश्वर पुमा पुवक अभिक्रानि पुमा करि तथा शक्ति ये एकासनादिक तप करवुं, नैवेद्य तथा फल ढोकवा उजमण साधुम नवा वस्त्र अन्न पान आपी प्रतिलाभवा अथानि मुर्तिने पुम सहित तथा आम्र मूल सहित कराववी, पछीवत् पुजन करवुं "—

अर्थ — अहो भगवानजी वृद्ध संसार तारण तप करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ — वृद्ध समार तारण तपेण करइ श्या भते किम्से,

भावार्थ — इसिये। मुर्तीपुमकोंकी तफ्स तप की विधि—" उपवास प्रण करिन पारण आयंबिल करिये एम निरन्तर भणवार करीये, वारे नव उपवास अम प्रण पारण भाव सत्र मलिने भार दिवसे तप पुर्ण थाय, उन मण रुपामय पाहण थीर समुद्रमांतर सु सुवर्णमय रत्न सुवर्णमांतर सु सुवर्ण माह मोती विद्रुम भण्या " देखो अब भार्मी पुरुषोंने भी जैनके असली सिद्धांतके विरुद्ध एस अनेक तप बनवाये हैं धिक्कार है इन समकित भ्रष्ट पुरुषों कारक आप डुबते हैं और दुसरोंका डुबाते हैं, उपरोक्त रितिके तप देखन की इच्छा होवे तो शाहामीमसिंह माणकका छपाया हुवा "जैन प्रबोध पुस्तक" में देखो,

जात्रा विषय,

अर्थ — अहो भगवानजी सत्रुंजय, गिरनार, समत शिखर, अष्टापद नंदिश्वर वगेरे अनेक तिर्थ कर करावे करतको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे।१।

पाठ — सत्रुंजेणं गिरनारणं समत शिखरणं अष्टापदण नंदिसरणं गाव अनेग तिर्थ अनेगतिर्थेणं यात्रागं करइ वा करावइ वा अनुमोदइ श्या भंते किफले,।१।

अर्थः– अहो भगवानजी संघ करके यात्रा करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे, ।२।

पाठः– संघकडेमं यात्राणं करइरधा करावइरधा अनुमोदइरधा भंते किंफले ।२।

अर्थ—अहो भगवानजी एक तिर्थकी एक वख्त यात्रा कर करावे करतेको भला माण तो क्या फल की प्राप्ति होती, है ।३।

पाठ— एगतियेणं एकविहेणं यात्राणं करइरधा करावइर-धा अनुमोदइरधा भंते किंफले, ।३।

अर्थः— अहो भगवानजी एक तिर्थ की अनेक वख्त यात्रा करे करावे करत को भला माण तो क्या फलकी प्राप्ति होती है, ।४।

पाठ— एगतियेणं अणेगविहेण यात्राणं करइरधा करावइरधा अनु मोदइरधा भंते किंफले ।४।

अर्थ— अहो भगवानजी अनेक तिर्थो की एक वख्त यात्रा करे करावे करतेको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ।५।

पाठ— अणेगतियेणं एगविहेणं यात्राणं करइरधा करावइरधा अनु मोदइरधा भंते किंफले ।५।

अर्थः— अहो भगवानजी अनेक तिर्थोकी अनेक वख्त यात्रा कर करावे करतेको भला माने तो क्या फलकी प्राप्ति होती है ।६।

पाठ— अणेगतियेण अणेगविहेणं यात्राणं करइरधा करावइरधा अनुमोदइरधा भंते किंफले ।६।

अर्थ— अहो भगवानजी शेत्रुंजा आदि मेरी दिखलाइन सर्वोको धर्म तिर्थ है ऐसा समज तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ।७।

पाठ— शेत्रुंजेणं जावनंदिसर तिर्थेणं धम्मतियेणं सदइरधा भंते

किफले ॥७॥

अर्थ – अहो भगवानजी शत्रुंजसे लगाके नदिसर दिप तक ये सब धर्म तिर्थ हे ॥८॥,

पाठः– किंभते शेत्रुंजेण गामनंदिसर दिवेण धम्मतिथेण हवइ ॥८॥

अर्थः– अहो भगवानजी शेत्रुंजा तिर्थ आदि लेने अनेक तिथ सासता हे ॥९॥

पाठः– किंभंते शेत्रुंजेण आव अणेगतियेण्य सासइ भाव हवइ ॥९॥

अर्थः– अहो भगवानजी जिन मंदिर जिन प्रतिमां जिन तिर्थ का नस तिर्थंकरोंने फरमाया है ॥१०॥

पाठः– किंभते जिन मदिरेणं जिन पडिमाए जिन तियेण केवइ तिर्थकरणं वागरइ२चा ॥१ ॥

अर्थ– अहो भगवानजी कोणस तिर्थंकरोंने पुजा प्रतिष्टा धर्म तिर्थ विधि फरमाइ हे ॥११॥

पाठ– किंभते केवइ तिर्थंकरेण पूयाणं परतिठाण धम्मतियाणं विधिणं वागरइ२त्ता ॥१२॥

भावाय – हंमिय ! उपरोक्त जो तिथ कहे हे, वो सब श्री जैन के आगमो सिद्धांतोंस विपरत हे कारण सत्रुंजा पर्वत वगरके उपर तिर्थंकर तथा मुनि संथारा करके मोक्ष गये हे, तब तिर्थंकर महाराज तथा मुनिराज वंदनिक पुजनिक हे, मगर पर्वत पहाड़का शास्त्रमें धर्म तिर्थ तथ वंदनिक पुजनिक नहीं कहे हे, परतु मुर्तीपुजक लोग सत्रुंजा वगैरको धर्म तिथ मानते हे ये बात सब मिथ्या है देखो । सुन श्री भगवतीजीका सतक अठारमां उदसा दसमांम भी माहा वीर परमात्माका सोमल ब्राम्हणन पुछ के अहो दयाल आपको यात्रा कोनसी हे तब सोमलको श्री वीर प्रभुन एसा उत्तर दिया हे पाठ लिख मुजब

(मथ पाठ)

सोमिस्स, धंमे, तव, नियम, संजम, सभाए, झाण्ण,
मसग, मादिपसु, जयणासे, सं जता, तप, १२, नियम
अभिग्रह, संयम १७, सझायर, ध्यान, धरम, शुक्ल ॥

अर्थ— बारा प्रकारकी तपस्या कठण अभिग्रह सत्तरा प्रकारका संयम पांच प्रकारकी स्झाय ध्यान का योत्सर्ग (कायग्गग) बयावच छ आवस्सग और प्रमुख मोक्षाकी परम प्रकृतिसे यात्रा अहो सामन्त इत्यादि संवर निजराकी करणा करत ह, सा हमारे यात्रा है कैसी माहा वीर स्वामीन सामन्तका यात्रा फरमाइ है, वैसे तिन कालके तिर्थंकर यात्रा कहाते है कारण तिन कालके तिर्थंकरोंका ज्ञान बरावर है इस लिये देखो ! सिद्ध हुवा क सर्भुञा वगेरे पहाड परवतोकी यात्रा करना नही चाहिये

देखा ! मुर्तीपुजकोंके पुवाचार्य वगैरोंने ग्रंथ प्रकरण वगैरोंमें कैसे कैसे आश्चर्यमुक्त गपोड मार ह क ज्ञाता पुरुषोंको हांसी पात्र वाता होय सो कुच ताजन नही ह, मगर बाल बुद्धिवाले बच्चोका भी हांसी पात्र वात ह, जैसा मघुजा माहात्म ग्रंथके सात्म उचार है उनमे पहेल उपारका अधिकार.

[गाथा]

गिरधरन अप ध्यापुरी, ममामत्या स्वामा शील धरी ॥
भव गया संन्दन बाज पि उपदेश दिया जिनराज ॥१॥
उगमा हे मार्ग अरिहन्त देव, बाह इन्द्रे असुसेव ॥
तेमि मार्ग संघ भराय, प्रन मुझे जिनवरराय ॥२॥

तेहथी मोटो सघवी कयो, भर्त मुनिने मनगह गयो ॥
भर्त कहेते किमय मिये, प्रभु कह सत्रुंजय यात्रा किये॥३॥

सोचिये। सिद्ध माहाराज शिवाय दुसर किसीका र्तिथंकर देव नम स्कार नहीं करते है, मगर मुर्तीपुजक लोग कहते है के "तिथार्ण नमा किया" र्तिथंकर महाराज तिर्थोको नमस्कार करते है, मगर ये कहना मुर्तीपुजकोंका मात्र बोल्य है दखो। श्री जैनके माथिन असत्य सिद्धांतोमे तो एसा साफ साफ फरमाया है सिद्धाण नमो किच्चा" र्तिथंकर माहाराज हमेस सिद्ध महाराजको नमस्कार करते है मगर दुसरोंको कदापि नही करते कारण त्रिकाली भावसे इस मगतस कान बड है बगैर शिवाय दुसरेका नमस्कार कैसा हो सकता है कदापि नहीं, ये तो अन्य मतवाली कहावत हुइ के मालक भक्ति इश्वर" मगर वितराग देव किसीके भक्ति नहीं रहते है सुज्ञ न्याय करो

देखो! मुर्तीपुजक लोग र्तिथंकरोंसे भी बडकर संघवी (संघ निकालके र्तिथ यात्रा करे से संघवी) का बतलाते है, अगर र्तिथंकरो से बडके जो संघवि होय तो र्तिथंकर खुदने संघवी की यात्रा (जातरा) करनेको आना चाहिये, और जिन प्रतिमाने भी संघवीके चर्ण करना चाहिये, तो ये दोनु भी बाते नजर नहीं आती है, न तो जैनके प्रमाणी सिद्धांतोमे आप प्रमुन फरमाया है, मगर खेर, जो संघवी र्तिथंकरोंसे बडकर है, तो सेत्रुंजादि परबतोंपे तो संघविमय ले करके तिसकी यात्रा करनेको जाते है, अगर वक्त लोग कहेगा के जिन प्रति माको यात्रा करणेको जाते है, तो हम पुछेंगे के जिन प्रतिमा मंजविम निचे दरजेम है, तब तो संघवी यात्रा किसका कहा है, तब निज पार्श्वो हुवे, एक कवित्त सुना है—

" झुठ दोड, डागस्य तांइ, सच्य दोड तिन लोकके माही "
डाबर्प जादा दौडे तो डुर्वही निचे गिर जाता हे, जमीन पर जादा दौडे तो किसन दुर निकल जाता हें वैसे ही झुठ बोलने वाले की जबान तुर्वही बंद हो जाती है, सच्य बोलने वाले की जबान सदा तेज रहती है, महाशयजी ! मुर्तीपुजक लोग इसेस मुठ्ठी झुठ बोलते रहते है, मगर जैनके असली सिद्धांतोंका असल मतलब समजनेकी ताकद नहीं होनेसे बिचारे क्या कर झुठका शर्ण ग्रहण करके अपने कपोल कल्पित मतको धकाते हुये चले जाते है मगर ईस प्रणसे बिजय नहीं मिलता है

सजम विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा संजमी हे या नहीं

पाठ— किंमते जिन पडिमा मह संजमेणं हवइ,

अर्थ:— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा संवरमे है या नहीं

पाठ— किंमते जिन पडिमाणं संवर मई हवई

गुण स्थान विषय

अर्थ:— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा चवदे गुण ठाणमस्य कोणसे गुण ठाणेमे हे,

पाठ:— किंमते जिन पडिमाण कयई गुण ठाणेणं हवइ,

—द्रष्टी विषय—

अर्थ – अहो भगवानजी जिन प्रतिमा समद्रष्टी मिथ्या द्रष्टी मिश्र द्रष्टी ये तिन द्रष्टीमेंसे कोणसे द्रष्टीमे हे,

पाठ— किंमंते जिन पडिमाण केवई दिठिण हवई,

गवली विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा के आगे अनेक प्रकारकी गवली करे कराव करतका भला माण तो क्या फलकी प्राप्ति होवी है

पाठ— जिन पडिमाण अणेगविहेण गवलीण करइरत्ता करावइरत्ता अनुमोदइरत्ता भंते किफले

भावार्थ— प्रतिमाके आगे चावल वगैरेका सांतिये करके उपर सुपारी वगर धरते हैं, उसे गवली कहते है, परन्तु ऐसी गवली तिर्थकरोंके आगे किसीने करी नहीं है, इस वास्ते प्रतिमाके आगे भी करना गैर मुनासिब है,

—द्रव्य चढावण विषय—

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके सचित (जीव सहीत) अचित (जीव रहित) द्रव्य चढाव तो चढावे वा चढाते का भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ—जिन पडिमाण अणगविहेण सचित्तेण अचित्तेणं दव्वाणं चढाइ वा चढावइरत्ता अनुमोदइरत्ता भंते किफले,

भावार्थ— देखिये ! कसर चंदन अनाज वगैरे सचित अचित मिश्र द्रव्य तिर्थंकर माहाराजको कोइने चढाया नहीं है मगर मुर्तीपुजक मान प्रतिमाको चढाते हैं ये मान गैर मुनासिब है परंतु मुर्तीपुजक क्या कहते है क "चावल देवल गुरुक पान, स्यास्त्र ज्ञान कमु नहीं आण" अर्थात एक तो चावल देव देवको मंदिरमें और एक गुरुको

पास, खाली हातसे नही जाना चाहिये, कुछ तो भी भेट ले जाना चाहिये, सोचिये राजा शिवाय तिर्थंकर माहाराजको तथा मुनिवरोंको तथा भेट करना इसकी खबर हमारे चाल मित्र मुर्तीपुजकोंकु हाल तक नही है; क्योंकर बिचारे ग्रंथ प्रकरण वगैरे कभरा पढी अवलोकन कर ते है तो इन लोगोंका असली बातकी खबर कहांस होवेगी, श्री जैन के असली और माननि सिद्धांतोंमे तिर्थंकर महाराज तथा मुनिवरोंको त्याग प्रत्याख्यान (सोगानपचखान अर्थात नियम) की भेट करना चाहिये, मगर तिर्थंकर भगवान कुछ कंगाल नही है, के मुठ भर अनाज वगैरसे खुस हो जावगे जैसा मनुष्य होवे वैसी भेट करना चाहिये

द्रष्टांत —कोइ एक गरीब मनुष्य राजाके मिलापको तथा सब भेटके वास्ते एक फुटी कवडी और चरात उमदा पांच सात गारगोटी साथ ले गया, जिस वखत राजा साहबके दरसण होतेही साथ उक्त मनुष्यने वा भेट राजाका इनायत करी, वा भेट राजा देखतेही साथ उस मनुष्यका अतिसय फजीता करवाके गडके बाहेर निकाल दिया वो बिचारा पश्चाताप करते करते घर पोंहचा, सोचिये! जिसोंकी नाम तिर्थंकर भगवान वो महा त्यागी वैरागी है और ससारके सर्व कार्योसे निश्चे निवर्तमान हो गये है, तो ऐसे परमात्मा पुरुषोंको तो त्याग वैराग्य नियम वगैर की भेट होना चाहिये मगर ऐसी निच भेट करनेसे कुछ हासल प्राप्त नही होता है मगर क्या करें बिचारे कायर कंगाल त्याग वैराग्य प्रत्याख्यान करनेके वास्ते असमर्थ होनेसे मुठीभर अनाज भेट कर करके अपना दिल खुस करते है, और माहात्मा पुरुषोंको लांछन लगाते है, लेकिन माहात्मा पुरुषोंको लांछन लगानेसे उत्तम गति हासल होना मुसकल है,

धूप विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनक प्रकारके धूप खेव खेवाव खेवतको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ— जिन पडिमाण अणेगविहेण धुवणं खेवइ२ वा खेवावइ२ वा अनुमोदइ२ वा भंते किफले,

भावार्थ— देखिये ! तिर्थंकर माहाराजको कोई श्रावकोने अगर श्रमन आर्यांग धुप वगैर खेवे नही है, तो जिन प्रतिमाको धुप खवणा ये अप्रामाण्य है, मगर मुर्तीपुजक लोग खेवते है

दिपक विषय-

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके आगे अनक प्रकारकी रोसनाइ कर कराव करतका भला जाण तो क्या फल की प्राप्ति होती, है

पाठ— जिन पडिमाणं अणेगविहेणं दिवणं करइ२ वा करावइ२ वा अनुमोदइ२ वा भंते किंफल

भावार्थ— देखिये ! इंद्रादिक देव तथा चक्रवर्तादिक श्रावक वगैर जहा तिर्थंकर माहाराज बिराजते थे वहाप रत्नाका रोशनाइ कर तो वनसक्थिथी, लेकिन ये बात किसीने किथि नही मगर मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाके आग अनेक प्रकारकी रोशनाई करते हैं ये बात भी अप्रामाण्य है,

फुल माला विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको सचित अचित फूल तथा

अनक फुल चढावे चढवावे चढातका भला माणे ता क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ— जिन पडिमाणं, अणेगाविहेणं सचितेण अचितेणं अेगेणं भ-णेमण कुसुमेणं चढाइरत्ता चढरावइरत्ता अनुमोदइरत्ता भंत किफले,

अर्थ—अहा भगवानजी जिन प्रतिमाको सचित अचित फुलकी एक माला अनक माला चढावे चढावे चढावका भला माणे ता क्या फलकी प्राप्ति हावी है

पाठ— जिन पडिमाणं अणेगविहेण सचितेण अचितेणं कुसुमेण भग ण मालेण मनेगेण मालेण चढाइरत्ता चढावावइरत्ता अनुमोदइरत्ता भंत किफले

भावार्थ— देखिये ! मुर्तीपुजकोके आचार्य वगैरोंने कैसी कैसी अदभुत बाते प्रकाश करी हैं के जिसको जैनके माचिन असली सिद्धां-त किंचित (बिल्कुल) मात्रभी स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन निचे मुजब देखो ! धन उपदेश नामा ग्रंथमे क्या कहा है,

गाथा

सयंरन्म जणे पुन्नं, सहस्सच विलेवणे सयसाहस्सीया माला,
अणतं गिय वाइम ॥१॥

अर्थ— निर्मल जलसे प्रतिमाका स्नान करावे ता १०० का उपव सका फल हाव, चंदन कपूर कपुर कस्तुरी अगर तगर वगैरे गुलाब जलमे घसके भगवंतकों की सर्वांगी पुजा कर ता १० ० हजार उपवा-सका फल हाव, फल मर्यन्के गलेम पच रंगकी माला पहरावे ता भ धना चमेली रायवली चंपा मोगरा मचकुंद गुलाब मरवा इत्यादि अनक

मफरके फुलोका हीगला करे तो १००००० लाख उपवासका फल होवे, फेर गितग्यान छराग छतिस रागनी गावे ढोल नगारा ताल मृदंग विणा सबुरा सारगी इत्यादि अडतालिस जातका वाजिन्त्र बजावे और नाटक वगैरे करावे तो अनंत उपवासका फल होवे,

(पुनर्पि) दशभि पुफ मालमी सर्म्य चतुर्थीक लक्तते।
माले देश गुणे क्रमात षष्टाद पासिकं मासस्य द्विमासी
त्रिमासी षणमासिकात्

अर्थ— दस फुलोकी माला भगवानको चढावे तो एक उपवासका फल होवे, सो फुलकी माला चढावे तो बेलाका फल होवे, हजार फुलकी माला चढावे तो तेलेका फल होवे, दस लाख फुल चढावे एक महिनेकी तपका फल होवे, लाख फुल चढावे तो दो महीन के तपका फल होवे, दस लाख फुल चढावे तो तिन महिने तपका फल होवे एक क्रोड फुल चढाय ता छ महिन के तपका फल होवे और नाचणे कुदनमे अनंता तपका फल होता है

समीक्षा—अनंत तप तिर्थंकर महाराज सिवाय अनरे से कदापि नही होवे, नाटक करनेसे तिर्थंकर नाम गोत्र उपारजन होता है पस एसे अपुर्व लाभ दिखलावे है इस शिवाय और दुनियांमे क्या लाभ ज्यादे होवेग, एस लाभकी इच्छा सर्व इसानोंका (मनुष्योंका) रहती है,

इत्यादि हुंडा सपणी पंचम काल और भस्मग्रह ये तिन भा-गोके मजोजनसे विभ्रम मतिवाले या जड उपासक साधुपाचाय हुय है उनोने भी जैनके एकादस अंगादि माचिन असली सिद्धांतोके विरु द्ध मन कल्पीत महान लाभ बताके भुगमत भोले मणीयोंको भ्रमस्य

आम्म फसा दिये ह, मगर मुर्तीपुजकोंके लेखानुसार भी जैनके ममर्मी नवक लोगोंने एक भी नात स्विकार करी नहा हे, जिस वखत ति- र्थंकर महाराज तथा मुनिराजोंके पास श्रावक लोग जाते थे, उस वख त पांच अभिगमण साधते थे,

[गद्य पाठ]

पचविहेण अभिगमेण गंछति धंज्जारा सचित्ताण दव्वाणं
विउसरणयाए अचिताणं दव्वाणं मविउसरणयाए एग
साडियं उत्तासंग करणेणं चरकू पास अजलि पगहेण
मणसाएगति करणेण जेणेनयेरा भगवंता तेणव उवागछंति॰ पा

भावार्थ — देखिये ' जिस स्थानप त्रिलोकी नाथ तथा मुनि महाराज विराजत थ उस स्थानप श्रावक लोग वंदना नमस्कार करण के वास्ते जात थ लेकिन वो मकान देखते क साथ अकल पांच बातोंका अंगिकार करक फर मकानमें प्रवेश करक मुनियोंको तिख्खुतके पाठस वंदना नमस्कार करक सेवा भक्ति करते थ वो कैसे हे सचित्त अर्थात जीव सहित द्रव्योंका दुर रख, अचित दुर करने लायक तरवार खडग वगेरे दुर रखे, दोनु हाथ जोड क मस्तोंके सन्मुख करे मनको स्थिर करक पर वंदना नमस्कार करते थ देखो जैनक प्राचिन असली सिद्धांतोंका तो अधिकार ऐसा हे मगर मुर्तीपु जकोंके लेखानुसार अधिकार असली सिद्धांतामे कहीं भी नजर नहीं आता ह मगर लोप सहेज मालुम होनेकी जगा हे, के मुर्तीपुजक लोग उनाके आ- चार्य वगैरोंके लेखोंको पुर्ण सत्य समजते होवे तो उस मुताबिक सब काम करना चाहिये—देखिये ' आपने पुस्तक नाटक वगैर करवानेस तिर्थंकर भग वंतोंकी उपासना होती हे तो मुर्तीपुजकोंमे गेवरचीके वासस्ते मान्य वगेर श्रावके उन लोगोंका काम एसा ठिक नही ह देखो ' इस कामसे मादा

दुसरा धर्म इस दुनियामे कोनसा हे इस महान धर्मके वास्ते मुर्तीपुजकोक मुनि वर्गने महासति वर्गने श्रावक वर्गने श्राविका वर्गने भ्रमारके मध्यम नाच के कुदके नाटक वगेरे करके तिर्थंकर नाम गौत्रकी फोरन उपार्जना करेना चाहिये परंतु किंचित मात्र विरोध करना ठिक नही हे, (सवाल) ये कथन तो निर्लज्य मनुष्योंका हे लेकिन प्रमाणिक पुरुषोंका नही हे (जवाब) धर्म कार्य कर्त्ता पुरुषोंका ऐस्या उस्मी सवन करने की काइ जरुरत नही हे अर्थात धर्म कार्य करनेवाले महात्मयोंको काइ भी बुरा (खोटा) नही कह सके हे, अगर जो अपना कल्याणार्थ कार्य सिद्ध होता होवे तो दुर्वचनाक तर्फ लक्ष न देता ये कार्य मुर्तीपुजकाने अवश्य स्विकार करना चाहिये तब हम मुर्तीपुजकोको सत्यवादि समजेंगे

देखिये। एक फुल की माला जिन प्रतिमाको चडानेसे एक लाख १००,००० उपवासका फल होता हे तो क्या मुर्तीपुजकोंके मुनि वग तपस्याका श्रम नही लेना चाहते हे अगर वो लोग कहेंगे क हम लोग त्या गी है तो क्या तिर्थंकर महाराज भोगी है कदापि नही, खकिन गैर, मगर मंडलिक राजा माहा मंडलिक राजा, चक्रवृति राजा वगैरोने दिक्षा ल क माहा कठण तपस्या करके आत्म सिद्धि करी है और एसी तपस्या सुनन क साथ कायर पुरुष कंपायमान–भाय मान हो जाते है ये अधिकार जैनके अजम्मी सिद्धांतोमे वीर प्रभुने बयान किया है तो क्या उन पुरुषोका नाच ना कुदना गाना बजाना मालुम करना अगर याद नही था, क्या उनोको फुल अगर फुलोकी माला नही मिलती थी तो उन पुरुषोंका महादुक्र [घोर] तपस्या करके आत्माको दुःख देना यह बडी खेदाश्चर्य की बात है क इन पाखंडीयोका पाखंडपणा दुर कब होवेगा

फल विषय,

अर्थ– महा भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके सचित

अचित फल चडावे चडावे चडाते को मक्ष माण तो क्या फलकी मापि होती है

पाठ:— जिन पडिमाण अग्गेग चिट्टेणं सचितेण अचितेण फलेण चढावइ२त्ता चढवावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किंफले,

भावार्थ:— देखिये। तिर्थंकर भगवानको किसीने फल चडाये नही है मगर जिन प्रतिमाको मुर्तीपुजक लोग फल चडाते है, ये बात अयोग्य करते है

आरती विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा की अनेक प्रकारसे आरती कर कराव करतको भला नाम तो क्या फलकी मापि होवे

पाठ— जिन पडिमाणं अग्गेमचिट्टेण आरतीणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किंफले,

भावार्थ— दखिये! तिर्थंकर माहाराजकी इन्द्रादिक कौरे कोइने आर ती उतारी नही है मगर जिन प्रतिमाकी मुर्तीपुजक लोग आरती करते, है य अयोग्य करते है,

—छत्र विषय—

अर्थ — अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके छत्र चडावे चडावे चडातेको मक्ष माण तो क्या फलकी मापि होवे

पाठ— जिन पडिमाणं अग्गेगचिट्टेणं छत्तेण चडावइ२त्ता चडावावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किंफले

भावार्थः— देखिये। तिर्थंकर भगवानको इंद्रादिक वगैरेने छत्र धरा-ये नही लेकिन मुर्तीपुजक लाग जिन प्रतिमाको छत्र धराते हे, य वात अयोग्य करते हे (सवाल) तिर्थंकर माहाराजके शिशप तिन छत्र हमेस रह त हे [जवाब] तिर्थंकर महाराज के अतिसयसे नजर आते है लेकिन कि-सीन धराये नही है

चामर विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारे चामर धराव धरावते चलाके भव्य भाव तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ— जिन पडिमाणं अणेगविहेणं चामरादिं एड़ावई सा एड़ावई २त्ता अनुमोदइ २त्ता भंते किफले,

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारक चामर विंजे विंझावे विंजतेको भव्य जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होय

पाठः— जिन पडिमाणं अणेगविहेणं चामरा दिडष्पु माणेहिं करइ २ त्ता करावइ २त्ता अनुमोदइ २त्ता भंते किफले,

भावार्थः— देखिये तिर्थंकर भगवानको इंद्रादिक वगैरेने चामर धराये नही है, और उनोपे चामर होते भी नहीं है परंतु मुर्तीपुजक लाग जिन प्रतिमाको चामर धराते हैं और उपर विंजते है, य वात भी अयोग्य है (सवाल) तिर्थंकर महाराजके पोसुप इंद्र चामर सदा विंजत रहत है (जवाब) तिर्थंकर माहाराजके अतिसेसे चामर विंजते हुवे दिखत हे ले किन कोइ विंजता नहीं है, कारण छकाय जीवोको समय समय मरणांतिक कष्टस बचानेका (दयाका) उपदेश देते है मगर मतलबके वास्ते छकाय जी वोके प्राण छुटवानाये तिर्थंकरोका मार्ग नही है, अगर तिर्थंकर भगवान स्वता के वास्ते छकाय जीवोंकी हाणी करवाके दुसरेको मना करेंगे तो उन माहा

त्या पुरुषोंका हुकम करण प्रमाण करेगे, तिर्थंकर उनके स्तात्रका नितम कार्य होता है वो उन माहात्मा पुरुषोंके अतिसमस होता है, मगर तिर्थंकर देव स्तात्रके वास्ते उपधाय की हाणी करवाके कदापि कार्य नही करवाते है.

नेत्र विषय

अर्थः— अहो भगवानजी जिन प्रतिमांको अनक प्रकारके नेत्र बनावे बनवावे बनावका भला भाग तो क्या फलकी प्राप्ति होवे,

पाठः— जिन पडिमाणं अणेगविहण नयणं घडावइ२त्ता घडमावइ२त्ता अनुमोवईज्या मंसे छिकले

भावार्थ— देखिये। तिर्थंकर भगवानका इंद्रादिक वगैरे कोइ भी श्रावकोंने नेत्र बनाये नही है, मगर मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाको नेत्र बनाते है, वो क्या प्रतिमा अंधि हे, अंगहीणका निनराजकी पदवी नही मिलती है, हनुमान समयम अंगहीणका राज्य पद भी नही मिलता है वो अंगहीणको तिर्थंकर पदको कहांस मिलगा, फर दिगम्बर आम्नायवाले प्रतिमा को नेत्र नही लगाते है सो अब सची जिन प्रतिमा किसको समजना या होय य भी एक बडा भारी फर्क है इस फर्क परसे हम दादुजी साफ साफ खोटे समजना चाहीये, कारण दादुजी चौबीस तिर्थंकरोको मानते है इस वास्ते दादुजी लिख लाते है

भावार्थ— देखिये। मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाका जिन राज तुल्य कहते है वो जिन प्रतिमा भगमी समदृष्टी और तेरव गुण स्थान होना चाहीय मगर सुत्र श्री भगवतिजीके शतक पम्म उद्देशा दुसरे मे पाचयाचर विन विकलेन्द्री (प्रथवी अपतेउवाउवनसपति बेन्द्रीये

त्रिवींद्री) को एकात मिथ्या दृष्टि कहे है, इस वास्ते जिन प्रतिमा जिन राज तुल्य नही है,

--पुजा विषय--

अथः-- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी तिर्थंकर महाराज पुजा प्रतिष्टा यात्रा करे कराव करतेका भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवी है

पाठ-- जिन पडिमाण तिथंकराणं पुयाण पतिठाण यात्राणं करइरचा करावइरचा अनुमोदइरचा क्ते किंफल,

भावार्थ-- देखिये। तिर्थंकर देव किसीकी भी पुजा प्रतिष्टा यात्रा नही करते है मगर मुर्तीपुजक लोक ऋषभ देव माहाराजने सत्रुंज की यात्रा करी ऐसा कहते है वा तिर्थंकरको तो मोक्षका फल प्राप्त होनेका निश्चे हो चुका वो फर इससे तिर्थंकर का क्या ज्यादा फल प्राप्त होवेगा सो मुर्तीपुजकोन भी जैनके भलकी और प्राचिन सिद्धांतसे सिद्ध करके दिखलाना चाहिये

माता पिता विषय

अर्थ-- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके बनानेवाले शिलावट लोग है सो जिन प्रतिमाके माता पिता है

पाठ-- किंभंते शिलावटाणं जिन पडिमाणं अम्मा पियरो हवई,

अर्थ-- अहो भगवानजी तिर्थंकरके माता पिता भय भगवान भगवानको भजे भाव तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ-- तिथंकराणं अमा पियाराणगाइरचा दयाइ वा अनुमोदइरचा कीं फिंफले,

भावार्थ— देखिये। पर्युसणमे भगवानका जन्म मोक्षम करावते है तथा प्रतिष्ठा वगैरसे भगवानके नकली माता पिता बनते है ये भी एक अजब गजबका ख्याल है

लिलाम विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन सिद्धांत लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है १

पाठ— जिन सिद्धांताणं रोहणं करइरत्ता भंते किंफले ?

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी माला लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे २

पाठ— जिन मालाणं रोहण करइरत्ता भंते किंफले २

अर्थ— अहो भगवानजी जिनराज की माता को जो चवदा सुपना आया है उसको लिलाम कर तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ३

पाठ— जिन अम्माण सुमिणेणं रोहण करइरत्ता भंते किंफले ३

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी आरति लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ४

पाठ— जिन पडिमाणं आरतीणं रोहण करइरत्ता भंते किंफले ४

अर्थ— अहो भगवानजी जिन मंदिरका इंडा लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ५

पाठ— जिन पडिमाणं इंडेणं रोहण करइरत्ता भंते किंफले ५

अर्थ— अहो भगवानजी जिन मंदिरका दंड लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ६

पाठ— जिन मंदिरमें रंहणं रोहण कराइ२ता भंते किंफले ६

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी पुजा छिमम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ७

पाठ— जिन पडिमाणं पुयाण रोहण करइ ता भंते किंफले ७

अर्थ— अहो भगवानजी जिन मंदिरके कमाड छिमम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ८

पाठः— जिन मंदिरण कमाडाणं रोहण करइ२त्ता भंते किंफल ८

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका स्नान छिमम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ९

पाठ— जिन पडिमाणं पखालेण रोहण करइ२त्ता भंते किंफल ९

अर्थ— अहो भगवानजी जिनागमका पाल्णा छिमम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे १

पाठ— जिन पालणणं रोहण करइ२त्ता भंते किंफल १०

अर्थ— अहो भगवानजी जिनागमका पत्र छिमम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ११

पाठ— जिन छनमें रोहण करइ२त्ता भंते किंफले ११

अर्थः— अहो भगवानजी भगवत प्रवचन जिनागम का वस्तु छिमम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे १२

पाठ भगवं[illegible] जिनदवाणं रोहण करइ२त्ता भंते किंफल १२

भावार्थ— देखिये । मुर्तिपुजकोंने कैसा प्रपंच रचा रखा है के जिन्होंने आप निर्भय भगवानको भी इसाम्य कर दिये है " और वस्त्र जिन प्रतिमाका जिनागम तुल्य करते है और जिन मंदिरकी अनेक वस्तु

लिलाम करते है लिलामकर—नि— बोला जाता है लिलाम करके पैसा जमा करते है

(इरादत) जैसा कोइ मनुष्यके उपर किसीका पैसा लेना होवे और वो न देता हो तो वो मनुष्य सरकार मारफत उक्त मनुष्यकी इस्टेट लिलाम करवाके अपना पैसा जमा कर लेता है इस बनेसे मुर्तीपुजकोने न्यास भवाके इसम लागोको धर्म बतलाते है मगर ये बात जैनके असली सिद्धांतोस बिल्कुल बरखलाप है, देखो एक कविने कहा है

कुंडलीया छंद

तिर्थंकर मुक्ति गया, जैनी करे बखाण,
ताकि सुरत पुतलि, मंडिया मेली आण२
मोक्षसे पाछा लाया छपाया पमसाण,
कुछ कर मंदिर बणाया, कर भंडार भिन्न करण करे,
द्रव्य भरणे की युक्ति, जैनि करे बखाण,
गया तिर्थंकर मुक्ति, तिर्थंकर मुक्ति गया,
जैनि कर बखाण ॥१॥

देखा ' मुर्तीपुजकोने इर मजेसे लोगोको फुसलाके पैसा जमा करनेका इन्तजाम किया ह लेकिन इसमे धर्म और आत्म सिद्धि किंचित मात्रभी नहा ह,

अभक्ष विषय

प्रश्न— जहा भगवानकी अभक्ष भक्षण करे कराये करते को भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ— भमसेर्भ मसाइरचा ममावइ०चा अनुमोदइरचा मते किफले,

भावार्थ— देखिये ! मुर्तीपुजक लोग मक्खण, सहेत वगैरेको अ मक्ष कहत है मगर अभक्ष किसको कहेना माण घात हो जाव तो मंजुर ह परंतु मक्षण करनेके वास्ते कदापि मजुर नही करना चाहिये लेकिन मक्खण का तो " घी " और सहतका " मुरबा " वगैरे बद होसके साथ मुर्तीपुजक लोग खा जाते है ये अभक्ष कैसा उपका है, दिल ख़ुस मना रता है,

थडा आहार विषय

अर्थ – अहो भगवानजी सितल आहार करे करावे करतेको क्या माणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती ह

पाठ:— सीयपिंडं करइ चा करावइ०चा अनुमोदइरचा मते किफले

भावार्थ— देखिये । रात्रीकी वासी रही हुइ " रोटी वगैरे " खाने मे मुर्तीपुजक लोग भाहा दोष बतलाते है मगर " लड्डु पेड वगैरे " मिठि मिठि पकवान और स्वादिष्ट वस्तु रातवासी पड़ाकर खा जाते हैं क्योंकि जिम्याके वस है रातवासी रोटी तो न खाना और मजेदार माल ताल रात वासी खा जाना ये कोणसे जैनके असली सिद्धांतोका न्याय है एस माल ताल सिवाय मजा उडाइ नही जाती है मगर क्या करे विचार वासी रोटी वगैरेस तो शरिरका बल हिण होता हैं इस वास्ते वासी आहारमे जीवकी उत्पति बतलाते है मगर ये नही मानते है के वीर परमात्माने वासी आहार करके पारणा (समाधि) किया है मगर यदि आहारमे दोष होता तो भी वीर प्रभु कैसे ग्रहण करते य अधिकार पुन भी आचारांगजी क दुसर सतस्कन्धन देख लेना

चार अंग विषय,

अर्थ – अहो भगवानजी पंचम कालके जो सामज्याचार्य हुवे हैं उनोने भी टिका, चुर्ण, भाष्य, निर्युक्ति संस्कृत भाषामे य चार अंग रच है सो ये चार अंग है

पाठ – किंभंते पंचम कालंणं साचज्याचारणं संस्कृतेणं चत्तारी अंगेणं भापाई सत्तेयं चत्तारि अंगेणं हवइ

---जिन भाष्या विषय---

अर्थः– अहो भगवानजी तिन कालके तिर्थंकर महाराज संस्कृत भाषा म वाणी प्रकास करते हे या नही

पाठ – किंभंते अतिते पडुपन्ने अनागते कालेण तिर्थंकरेण संस्कृतेणं वाणी पामराइ?त्य,

सिद्धरंग विषय

अर्थ– अहो भगवानजी सिद्ध माहाराजका काल रंग है या नही,

पाठ– किंभंते सिद्धाणं कालं रंगणं हवइ,

भावार्थः– देखिये ! मुर्तीपुजकोका जो भव पदका गया है उसम सिद्ध माहाराजका काल रंग धरा है मगर सुत्र श्री आचारंगजी म सिद्ध माहाराजको रंगरूप वगैर सब बातकी मान्दी करी है और सिद्ध माहाराज का अरूपी पद फरमाया है तब मुर्तीपुजकोन सिद्ध महाराजका काला रंग कहांसे निकाला हैं, इस रंगके वास्ते कोनसे स्थानप गया जाता है

---भाव विषय---

अर्थ – अहो भगवानजी जिन मंदिर जिन प्रतिमा सेत्रुंजादि जिन

ये पुजा प्रतिष्टा यात्रा वगैरे—उवे—उपसम—खेउपसम—खायक—भावमेसे एस भावमे है

पाठ— किमंते जिन मंदिरेण जिन पडिमाणं सेत्रुंजेय अणेगेयं जिन येणं पुयाण परतिष्ठण यात्राण जावसावज धम्मणं उदयइए, उवस ए, खेउवसमिए, खइए; कमइ भावेण मइ इवई,

भावार्थ— इसिये ! मुर्तीपुजक लोग कहत है के धर्म निमित हिंम्या र वो दिसनम हिंम्या है मगर भावम हिंम्या नहीं गिनी जाती है, हमार व सुभ हैं, अर भाइ ये बात भी कही भी मानि जाती है कदापि नही रण धर्मके उपर पुण प्रेम रहता है वैस हो धर्मके वास्त छकाय जीवोंके ण घात करने के वास्त प्रेमयुक्त मणाम रहत है तब हिंम्या युक्त धम दय—उपसम—खेउपसम—खायकम स काणसे भावमे हैं

देखो ! सुत्र श्री भगवतजीमे—छ—भावका अधिकार चल हैं उसमे स च्यार भावका किंचित अधिकार बतलाते हे व निच मुजब—

[गद्य पाठ]

उ० आठ कर्मको	ख० रासखेर्ड़की	स० काईकभय	खा० कर्मका
उदे करि विपाक	भया निपर कर्म	काइक उपसम	भय करना
(दुःख) भोगवनो	रइ उसे उपसमभा	वो भयो पम	वा खायक
उदय भाव कहना	व कहेना	भभाव कहना	भाव कहना
उदयइए १	उवसमिए २	खउवसमिए ३	खइए ४

भावार्थ—देखिये ! छ काय की हिंस्या, हिंम्या युक्त धर्मत अशुद्ध धम भक्ष्र पाप, मवविस पवरसक मिथ्यात पंचक्रिम भवारकी क्रिया, अ

उमद, पांच आश्रव, आठ कर्म; पांच प्रमाद, चार क्रोठिया, पांच प्रघातकी अंतराय, सात कुविसन, वगैर मिलन अशुभ कर्मोका बंधन होके, इस भव पाभवका दुःख की प्राप्ति होती है जो सब कार्य उग्रभावसे त्याग करना, उत्त भावसे एकांत कर्म बंधन काहेतु हैं, छ कायकी दयाका, ज्ञानका, समकितका, चारित्रका, [साधुपणका—वा—श्रावकपणका] तपका, संवरका, निर्जराका तथा आत्म सिद्धि वगैरेका, जितना शुद्ध पवित्र निर्वध धर्म करणिका कार्य है जिससे अशुभ कर्मोका क्षय होके, इस भव परभव सुखानंदकी प्राप्ति होती है वो सर्व धर्म कार्य शुद्ध भावसे समज लेना

च्यार घन घातिया अर्थात ज्ञानावरणी कर्म १ दरसणावरणी कर्म २ मोहणीकर्म ३ अंतरायकर्म ४ ये चार कर्माको पुर्ण क्षय कर के केवल ज्ञान के वल दरशन (अनंतज्ञान अनंत दरशन) की प्राप्ति करके अंतमे अष्ट कर्मोको पुर्ण क्षय करके मोक्ष जाये अर्थात सिद्ध पद को पहोंचे ज्यांप जन्म, जरा, मर्ण, रस, रंग, वगैर सर्व वस्तुकी तथा सर्व कार्योकी नास्ती है वो सिद्ध स्थान अलोकके अंतमे और उर्द्ध लोकके उपरोक्त के अग्र भागपे है; मगर ज्यांपे बस्ती अगर जंगल वगैर कुछ नही है, ऐसे अलौकीक स्थानपे अरुपि पदसे सिद्ध महाराज विराजमान है, मगर पुनरपि इस संसारमे आके जन्म (अवतार) नही लेते है एसे सिध्द स्थानपे पहोचनेका जितना कार्य है वो सर्व कार्य धारयक भावमे समज लेना,

देखो ' मुर्तीपुजक लोग कहते है के स्त्री का चित्राम देखनेसे विषय विकार प्राप्ति होती है तो क्या जिन प्रतिमाको देखनेसे वैराग्य क्यों नही होवेगा, क्या स्त्री के चित्रामसे जिन प्रतिमा हीण हो गई, कदापि नही, ये कहेना मुर्तीपुजकोका साफ खोटा है, सबब, स्त्री का तथा स्त्री के चित्रामका देखना तथा सब पापिष्ट कार्य वगैरोका करना

भ्रष्ट हुवो अव भार, कंपिलके मामियो, नाटकको मापणो,
रिवदी मारिस लेर, अमभरियो सनेह, कुंदन मकणे मांही,
मुसाहिको मापणो ॥१॥

और ये लोग ' कुरमा पुत्र " के वास्ते भी कहते है के कुरमा पुत्र को केवल उत्पन्न होनेके बाद—छ— महिने तक संसारमे रहे है, ये कहना भी इन लोगोका जैनके असली सिद्धांतासे विरुद्ध हैं, मगर इसका सबब यह हैं के एसे ऐसे महात्मा पुरुषोंको मिथ्या लांछन लगाये शिवाय इन मुर्तीपुजकोंके इंद्रि भोगका सब मगरपण काय सिद्ध नही हो सक्ते है, इस वास्ते अन्य विगाडा तो बेहेतर है मगर उत्तम पुरुषोंका तो लांछन लगाना य सो मुर्तीपुजकोंको फर्म है

—रावण तिर्थंकर गोत्र विपय—

अर्थः— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके आगे नाटक करती वक्त रावनन तिर्थंकर गोत्र बांधा या नही

पाठ— किंमेते जिन पडिमाणं सनमुसेण नाटकेणं करइरग्रा रावणेनं तिर्थकरेण गोत्रेणं बन्धन्ने,

भावार्थ — देखिये ! मुर्तीपुजक लोग कहते है क जिन प्रतिमाके आगे रावणन नाटक करक तिर्थंकर गोत्र बांधा है ये कहेना मुर्तीपुजकोका साफ मोटा हे, कारण श्री जैनके एकादस अगादि प्राचिन असली सिद्धां- तोंम ये अधिकार नही है, तब इन मुर्तीपुजकोंने कोनसे कूवामे डुबकी मारक ये अधिकार बाहेर निकाला है, सो मालुम नही पडता है

आद्र कुमार विषय,

अयः— अहो भगवानजी अनार्य देसका रहनवाला, मिथ्या दृष्टी

आद्र कुमारने जिन प्रतिमाका दर्शनसे समकित्तकी तथा जाति समरण ज्ञानकी प्राप्ति हुइ या नहीं

पाठ— किमस्ते आद्र कुमारण जिन पडिमाणं पासइरत्ता समतेण जा-ति समरण नांणेणं रभइ,

भावार्थ— दखिय । मुर्तिपुजक लोग कहते है के अभय कुमारने आ द्र कुमारके भटम जिन प्रतिमाको भेजी थी वो जिन प्रतिमाका दर्शक आद्र कुमारको जाती समरण ज्ञानकी तथा समकित्वकी प्राप्ति हुइ ये कहेना मुर्ती पुजकोंका साफ खाद्य है कारण सुत्र थी सुगडायगजीम आद्र कुमारका अधिकार चला है वहाय ये बात बिलकुल नही है और बिसेष अधिकार पन्नातम खुलासा कर आये है

देव गुरु धर्म निमित्त हिंस्या विषय

अथ— अहो भगवानजी अरिहंतके वास्त धम आचारज (गुरु) क वास्त धमके वास्त प्राणि (बेंद्रितेंद्रिचोरद्रि) का भूत [वनस्पति] का जीव (पचेंद्रि) को सत्ता (प्रथ्वी पाणी तन वायु) इत्यादि जीवोंका मार पींटे, दासस देव दासस काटे दुःख दव, दगाव स्थान (ठिकाणा) छो डावे और उनाका जानस मार डाले एस देव गुरु धर्मके वास्त एसा कार्य करणवाले को करान वालेका करतेको भला जाणने वाले का क्या फलकी प्रा-प्ति होती है

पाठ— अरिहंतकजेण धम्मे आयरिया कजेण धम्म कजेणं बहु सुपा णाण भूयाण जीवाणं सत्ताणं हणति छिदंति भिदंति किलामइ भियाई ति भयखम भियाईति, ठाणाउठाण कवति जिवीयाओ, व वराह्या करति, एवणं, कजेणं, करइत्ता करावइत्ता अनुमोदइत्ता भंत किफल

भावार्थः— देखिये। जैन गुरु धर्मके वास्ते मुर्तीपुजक लोग छ काय जीवोंकी हाणी करते हैं अर्थात छ काय जीवोंकी हिंस्या करते हैं लेकिन ऐसा कार्य करना मुर्तीपुजक लोगोंका साफ खोटा है कारण जैनके एकदम अनादि प्राचिन असली सिद्धांतोंमे देवगुरु और धर्म के वास्ते छ काय जी-वोंकि हिंस्या करणा साफ मनाइ है और ऐसा कार्य करणे कराणे करतेको भला मानने वालाको उत्तम गति मिलना मुसकल है ऐसा साफ साफ शा-स्त्रोंमें लेख है

महाशयजी ! देखिये ! हम हमारे पुर्ण प्रेमी बाल मित्र मुर्तीपुज कोंके, मुनि वर्ग तथा श्रावक वर्ग वगैर आम लोगोंको जाहिर करते है क हमने जो उपरोक्त नकली पाठ दाखल किये है सो हमारे दाखल किये हुवे पाठकि अनुकुल भी जैनके एकादस अंगादि प्राचिन वाह प-त्रोंमें लिखित असली सिद्धांतोंसे असली मुल पाठसे समामे सिद्ध करके दिखलाना चाहिये मगर इधर उधर उथपने पानोंके अवमे ऐसे छु-ट आये हैं उसके आगे देखो गाथमा ऐसा शब्द पतलाना पडेगा और अमुके फलें ऐसा शब्द आया है उसके आगे एसे पाठ दिखलाना पडेगा

पाठ— पीवा समत लुभई भाव विरूसाइ सुप धम्मे चरिव धम्म म्मई निजरा कम्म सुलभाई रहभई नाणिरई परिमा उदयद परित संमार कजई अरणेणे शाश्म कप्पो ठकोंसेण सज्मट सिज्झे,

अर्थ— वा जीव समकितपामे भाव विसराम सुप धर्म चारित्र धम पामे कर्मोंकी निरजरा करे, दुर्लभ बोधिका सुलभ बोधि होय, अज्ञानिका ज्ञानी होय परम (वेका) शारिरि होवे, संसारमे परिभ्रमण करनेका भा-व भव बहोत बाकी रहे होवे ना, थोडे बाकी रहे, क्रमसक्रम चरब्ब ब्य छाक भावे, आदासमाहा भावे वो सवार्थ सिद्ध जाय

एस स्वल्पस पार हमार निम्न लिखित लेखानुसार अविचार आम समामे सिद्ध करक दिसलयोग तब हम भाग तुमारा और तुमार पुर्वाचार्यो वगैरोंका कथन सत्य समजेगे, नही तो, भोले प्राणिया का फुमल्यक माल जमा फरक इस भयम मजा उडाना और ससारत्य समुन्मे आप डुबना और दुसरोंको भी डुबाना, ऐसा पवांग [पाखंड] मचा रखा है, एसा आम लोगाको निश्चे होवेगा,

— ० —

यें स्वयन अनानचास्य पूस्य मुर्तीपुजक था और अन्य मतक वास्ते देखो क्या लिखता है,

॥ मिथ्यात्वी वर्णन लावनी ॥

कनडकु शंकर कही मान, ए कुमतीकी वातां है ॥
आक धतुरा बेल पांनशुं, पुजत शिव रग राता है ॥क॥१॥
नही भीकसा भस्म बतावे, लोक कहे ए माता है ॥
ताकु पुजा मगन मन मोहन, सो नर नरके जाता है ॥क॥२॥
इन गुरुशु परमव दुःख पामे, नही तिल भर एक शाता है ॥
इन दवके चरन सु सकल, हिंसा धर्म दुःख दाता है ॥क०॥३॥
कुगुरु त्याग सुगुरू निज सवे, नित्य निर्मल गुण गाता है ॥
जिनवर गुण जिनदास बखान, ए मुक्तिका खाता है ॥क ॥४॥

देखिय ! अन्य मतके वर्वोंकी पाषाणादिक की मुर्तीका निषध करते है, तो फर इनोंकी पाषणादिक का मुर्ती तिरण तारण कहांस माइ, इनके और अन्य मतके किंचित फर्क नजर आता है, वसी

किंचित पाप हिंस्या नहीं करनी, ज्ञान पाया कोशारे ॥तु०॥८॥
सुगडांग इग्यारम अध्ययन, सुत्र खुल्ला अधिकार ॥
गौतम स्वामी किया उधारण, श्रावकके बवाहारे ॥तु०॥९ ॥
समायक और दशावकाशी पोसा और पचखाण ॥
सभी सुत्रोंमे यही पाठ है, तु मतकर खेचा ताणरे ॥तु ॥११॥
ठाणायंगमे तिन मनोरथ, श्रावकका अधिकार ॥
चैत्य मनाथ ना किया सर, सुत्र साख विचाररे ॥तु ॥१२॥
ठाणायंगके चोथ ठाण, चार कहा विसराम ॥
समायक और दशावगासि, पोषध और पचखानरे ॥तु०॥१३॥
मद्द सुमिय मिली श्रावकक्रुं, क्रिया करी भगवान ॥
कोही सुत्रन नहीं सुनासरे, चैत्य तणा विसरामरे ॥तु०॥१४॥
द्वादश भगवतकी बाणी, गया तिर्थंकर भाख ॥
समायंग सुत्रमें देखो, भगवतीकी शाखरे ॥तु०॥१५॥
इनकी बरि सतावणीसे, जुदा २ अधिकार ।
समायंग और नदि सुत्रम, देखो प्रथमभाग दुवारे ॥तु०॥१६॥
सर्व साधुका यदि पाठ है, भण्या इग्यारे अंग ॥
मुक्ति गया आराधक होवा, तज्या कुगुरुका संगरे ॥तु०॥१७॥
तुंगिया नगरका श्रावकस, सुत्र भगवति माय ॥
तप संजमका फल पुछियासर, बताता पुरा नायर ॥तु०॥१८॥
सुत्र भगवती इग्यारो सर, प्रश्न पुरा छतिस हजार ॥
चैत्य तणि पुछा नही सर, भवभवमा दुवाररे ॥तु ॥१९॥
मात भ्रमरको साता देवा, होवे दृढ अवतार ॥
दश श्रावक विपाका सुत्र, भगवंतीमे अधिकाररे ॥तु ॥२ ॥

वृन्द लोकमें अक्सरे सरे, प्रत्यक्ष जाने हाथ ॥
क्या करणि करतुत करि सरे, दाबा हमारा नाथर ।।तु ।।२१।।
अथाककी मेहर सरे हम होवे तुमारा नाथ ॥
प्रथम अदुमें मायके सरे, तुम भलो हमारी सायर ।।तु०।।२२।।
जंघा चारण विद्या चारण, चैत्य वदनका पाठ ॥
भगवतिमे क्या विराधक, मतकर मनकी आंतर ।।तु ।।२३।।
मल्ली कुवरिजी या फरमायो, ज्ञाता सुत्रमें जोय ॥
रुधीरका वस्त्र रुधिरमें धोया, कभी शुद्ध नहीं हायरे ।।तु ।।२४।।
पुत्रमि जन्मे वामदि सरे, हिंस्या धर्म निहोय ॥
सुत्र सास विरोधके सरे, य मियो मन्मको बोंयरे ।।तु ।।२५।।
कही कर्म और अधर्म दुवारेमें, सुत्र सुक्ष्म अधिकार ॥
आचारग और प्रश्न व्याकरणमें, देख अगभोग दुवारे ।।तु ।।२६।।
प्रश्न व्याकरणका धर्म अधर्ममे, देख हिये विचार ॥
चैत्य प्रथमा माहि चाल्या, फल अधर्म दुवारेरे ।।तु ।।२७।।
विसंक हिया वस्तु ईश्वरकी, नहीं देखवा जोग ॥
दसमा अंगके माहि देखलो, कुगुरु रमाया रोगरे ।।तु०।।२८।।
चैत्य बगाया कारण सरे, करे जीवाको नास।।
साध्य फल भगवती कहा सरे, कर मनमें वासरे ।।तु ।।२९।।
उत्तराध्यन सुत्रमे सरे, छटि गाथामें जोय ॥
बिन हरिकी हिंस्या कराय, पापी समता हायरे ।।तु ।।३ ॥
उत्तराध्यन गुन तिसमे सर देखो चित लगाय ॥
तिर्योतर बाजबा फल चालिया, चैत्यको फल नायर ।।तु ।।३१।।
भिशा पुत्रकी महेलमे सर; किबो पद दो घ्यान ॥

साधु दग्धनसि क्रिया मोरे, माति समण ग्यानरे ।तु ॥१२॥
मुहा दाइ दुखा हास, मुहा जीवी विसस्स ॥
चेत्य दुखहान क्या सर, दसमी कालिक वसर ।।तु ॥१३॥
भीम हणो मत माण तासरे, मत काही हणो अनान ॥
प्रश्न अवेन दसमी कालीकम, यो मगवन बखाणर ।तु ॥१४॥
आद भत्त समया ही रहेगा, करता वचन प्रमाण ॥
वम अधिनम वसमा सर, नहीं चेरसा नामर ।तु ॥१५॥
चार निक्षेपा कह्या सुत्रमे, सुत्र सुत्र अधिकार ॥
नाम स्थापना मन्न है मरे, तु देस भणजाग दुवारर ।तु०॥१६॥
नाम इंद्र गुवाल्यियो सर, गरुड नारायण हार ॥
मांथाको चीतराम वखन, गरम सरे निस्गारर ।तु ॥१७॥
नकल सिंघ मोरे नहीं सरे, दुध न वम गाय ॥
फाटु वेस मसतास्को सरे, विक्षा मुवागण नहीं पावेरे ।तु ॥१८
पासंडी और मिदाधारी, दर्व निक्षेपा माण ॥
साधु श्रावक भाव निक्षेप, क्रिया की भगवानरे ।तु०॥१९॥
मगमत निर्गो कर ध्या सरे, क्यो करों है रोस ॥
अशुभ कर्मका भार नुमार, नहीं किर्सोका दायरे ।तु०॥४ ॥
तरी नाव दरयाम सरे, पडि भवरके बीच ॥
का गुरु सेगया सेवक सर, डायी किसा विमर ।तु ॥४१॥
दया धम भगवत कयो सरे भगर किया विसेस ॥
साधु श्रावक पार उतरता, सब सुगम वसरे ।तु ॥४२॥
समण माभ अणगारका सर, पंच माहाव्रत जाण ॥
श्रावक द्वादस किया सर, पहोता पद निरवाणर ।तु ॥४३॥

सेव सिछोना नरम हे सरे, को गुरु बनाया तोत ॥
असली शुध गुरु धर्म धारो, मिले मातम जोतरे ।।सु ॥४४॥
अनतिचार चेठास पुजा, देव सागक माय ॥
भव्य अभव्य सरिखा जीवान, गरजन सिरी समारर ।।सु ॥४५॥
पुद्गलकी पुजा करे सरे छुट मोक्षाक माग ॥
बोले इस्री आपनी सरे, थम कहे वैमानरे ।।सु ॥४६॥
जलमे नावा जीव हे सरे, मास गया भगवान ॥
सात बोलका किया कलपाट, सुनगा चतुर सुजान ।।सु ॥४७॥
वनस्पति सुग्म फुलाम, जीव घना हे माण ॥
कोहि एक भव करने मुक्ति मासी, मास गया भगवान ।।सु ॥४८
पुग्दलकी पुजा मत करो सर, मत छुटो जीवाका माण ॥
मित्र इष्ट शत्रुका पुजा, सुखी नर्कमी खानरे ।।सु०॥४९॥
चोविस मामी नवर क्या सरे, सुणले भव कुमार ॥
अवस्था दो सास दो सुमन, गमका भव सुमाररे ।।सु ॥५ ॥
कर्मा मुनिमर इमणे सर, पाछो वर्ते अधीव ॥
जीव दयाकी जतना करन, मनो सिद्धाय नंदरे ।।सु ॥५१॥

॥ इति संपुर्णम् ॥

दोहा

देव गुरु धर्म तिनका, किजे हिये पिछाण
जाण पर्णो जग दोहिल्य सुनजो चतुर सुजाण ॥१॥
देव भणी जाणे नहीं, सुं जाणे गुरु धम,
मोटा भाग्ये समजे, पाये भारा कर्म, ॥२॥

कारागिर हाथे घडीयो, माथे थापि पाव,
ते पत्थर किम तारसी, प्रत्यक्ष फुटी नाव ॥३॥
धुर गुण ठाम्यो तेहमे, ध्यान तणो नहीं लेस,
पत्थर मुख बोले नहीं, किम विध दे उपदेश ॥४॥
मुरख पेलु पिलणे, काढयो चाम्हे तेल,
मृग तृष्णांस जल चाह, सरासरीको खेल ॥५॥
तैसेही पत्थर पुजके, मुक्ति मांगे मुढ,
ते मुक्ती पावे नही, निकमी ताणे रूढ ॥६॥
जैसा दरसन होय छे, तैसा छोडा जोय,
जडतो जड जे हवो कर, चेतन कदवि होय ॥७॥

स्तवन

साधन जाणो इम चक्रवर्तु (देशी)

सुत्र तणो तो न्याय विचारो, मति करो झुटी ताणजी,
पत्थरमे जिनजी नहीं आवे किमो हिये पिछाण ॥१॥सु ॥
हिंसा धर्म कहे नही जिनजी तिन काळरे बिचजी
हिंसा माहे धरम परुप ते तो जाणो नीचजी ॥२॥ सु ॥
अनुयोगद्वार सुत्रमे चाल्या निक्षेपा चारजी
भाव निक्षेपो साधु वंदे किमो हिये विचारजी ॥३॥सु०॥
नाम थापना द्रव्य न वंदि, बरो लिधो न्यायजी
स्थापना वंदन कुमति भाखे योही बडो अन्यायजी ॥४॥सु ॥
जिनजी आपमोसम भाव छारे तह शरीरजी

पंचम अंगे मिलजी माखे भरथावरने महा ध्यानजी
वुपण कहा है तेहणा निषे मास गया भगवानजी ॥१७॥सु०॥
ध्याता सुभमा ब्राम्ही पुना किम पाठांतर तहजी
इनमें ध्यान अति है उंडो आलोचो तुम पेहजी ॥१८॥सु०॥
सुत्र उपासक माहे भाख्या दस श्रावकना नामजी
देहरा प्रतिमा एकना पुना हुवा माहा गुण धामजी ॥१९॥सु०॥
महण किया अन्य तिर्थी साधु नहीं देखुं सेहन आहारजी
कल्पवु पहेली नही नेहन नहीं करु ते दसु प्यारजी ॥२०॥सु
यंम अनक ठिकाणे प्रतिमा नहीं कही वदन जोगजी
पुज भैमलजी इनपर भाखे समजो शहाणा लागजी ॥२१॥सु०॥

सवैया २६

मुरख निपसमार माहा सठ, पत्थर पुजके धर्म सजावे
धमना भेद लेश न किंचित, ध्यानीनो चित हुया अकुलाय,
बुल्को कोधरुमे मुढ भरि फिर, आपही स्वांग करी पुनधाय,
एसेही ध्यान धर कहे साहेब, कहो मन्नु कहांसे मिलजाय,

मन्य मजबमे एक माहान कवी और परम भक्त करक
कबिर दासजी " है उनोने मंदिरक उपर एक
हरजस बनाया है सो निचे मुजब

तिन लोकका नाथ कहीजे अनंत गुणका धामी—राम—
तांकु तु पाषाण बनाया गुरु मिलिया कमीन हरामिर ॥१॥
मन्दिरमें कहे रोमता फिरर थारा मनमें बिराजे श्री भगवान ॥र ।

पचम अंगे मिनजी भाखे अरयावरने नहा ज्यानजी
दुपद प्रम है वहणा निश्चे भास गया भगवानजी ॥१७॥मु०॥
ज्ञाता सुभमा द्रापदी पुजा किम पाठंतर वहजी
इनमें ज्यान अति है उंडो आलाषो तुम पहजी ॥१८॥मु०॥
सुत्र उपासक माह चाल्या दस श्रावकना नामजी
देहरा प्रतिमा एकना पुजा हुवा माहा गुण धामजी ॥१९॥मु०॥
महण किया अन्य तिर्थी साधु नहीं देखुं वहन आहारजी
कल्पातु पहेली नही नेहन नहीं कल त हसु प्यारजी ॥२०॥मु
यम अनक ठिकाण प्रतिमा नहीं कही वदन गामजी
पुम अमलजी इनपर भाख समझा शाहाणा आगमजी ॥२१॥मु०॥

सवैया २६

मुरख निचरवार माहा सठ, पत्थर पुजक धर्म लजावे
धमना मद सहन किंचित, ज्यानीना चित दया अकुलावे,
युम्को कायमा मुद भरि फिर, आपहा खांड करी पुनधाव,
एमहा ध्यान धर कइ माइव, कहा मग्नु कहास मिल्जाव,

मन्य मगलम एक मारान कर्वा और परम भक्त सरक
' कवि दासजी ” है सनानें मंदिरक बपर एक
ररजम बनाया है सा निच मुजब

जिन माकाय नाप कहीज अर्मत गुणका धामी-राम-
ताहुं यु पथाग बनाया गुर मिल्पिया कर्मान हरामिर ॥१॥
मंन्दिरमें बाह राजना फिरर भारा पर्मे बिगन की भगवान ॥२ ।

निम मदिरको सोधन कियो पर मंदिरमें काम—राम—
नही पदाय कामे कठी, तो तु मुलक बाखेर ॥२॥म०॥
मल उपर बातिरे नाहीं ठट पषाण गावे—राम
या तौं कुं ता कशी तारे कहेक दिस ममावेरे ॥३॥मं०॥
पेट भरणके कारण स्वा यो मंदिर बनवायो—राम
थारा गुरुको करि ठगाइ ताकुं पषाण पुगायारे ॥४॥मं०॥
मंदिर पुतली उपर देखो स्वान आयके मूत—राम
ताकुं तो या तारे नही तुम काहे भतानमें सुधरे ॥५॥मं०॥
भकनस या सुणे नही, कैसो गाय रिमाव—राम
नैणासे या देखे नही काहे रसनाद बणोवर ॥६॥म०॥
हिम स्वर हैं नासका याका, काहे फुल चडाव—राम
रसना रस तो भयो नास्ति काहे भोग लगावेरे ॥७॥म०॥
हाथ पाव तो याके नही काहे रथ चडावे—राम
मूर्खा मिर्क तु लिया फिरे, नामं रेषादि भरावेरे ॥८॥म०॥
सर्व भतकी भई नास्ति यो नही है भगवान—राम
ताओमें तु भडने बास्यो निकल गयो थारो राम ॥९॥मं०॥
उग कासिमर चोर अन्याई तु ता मगुरु किनो—राम
तन तु ताताम भइ बास्यो सत गुरुको ध्यान नही किनोरे ॥१ ॥
मुसल्मान हिन्दुवको देखो और जैनके ताई—राम
मुर्तीपुजा कही नही चाली, या नवी बात बनाइरे ॥११॥मं ॥
उग पासिमर कुगुरु बणिया, एसो जाल फसाया—राम
धन हरणके कारण माई, उल्टो रस्तो बतलाया ॥१२॥मं ॥
इण रस्तासे दुरा हुवे, परम पदको पावे—राम
इण रस्तामें पडिया रवे, धम दुवारे जावेरे ॥१३॥म ॥

पश्चिरा प्रकारे चोवण पाणि ऐसो सिद्धांत देख हो ॥२॥सु०॥
सट कायाका मर्दन करके- उमोदक कराव,
साध मर्हाव भ्रष्टाचारी निमे अधागत मांव हो ॥३॥सु०॥
सट मिठो करवो नेक सायको करको फेर था भाव,
पयसम उष्णोदक पितां पतो दुःख कुम पावे हो ॥४॥सु०॥
हांदि और कढे ठिकेरा. चोवण सिद्धांत दाख्यो,
अध्येन पांचवे दस वैकालिक, श्री सुस सति भाख्यो हो ॥५॥सु ॥
इंद्रि दमन होवे चोवणसं कक पुष्ट किण पावे,
उष्णोदकमे मवे प्राकम फेर मन्ती दिस आवे ॥६॥सु०॥
सुत कसल उष्णोदक चोवण, ववव ऐसा भाखो,
गाल पुराण तो मैं नहीं माना सूत्र सिद्धांतकि दाखो हो ॥७॥सु॥
अतरमो रत पिछेको चोवल संन्स काय कसल्प्त,
सुंद्य चोवा पेय अर्घी शास्त्र रहस नहीं पावहो ॥८॥सु०॥
अंतरमो रत मो पिछ लेव सचित चोह कसल्प्त
अंतरमो रतजो पछि लेव वाकुं प्रायश्चित आवे हो ॥८॥सु ॥
प्रथम पहेर असिर नहीं कल्प तिन पहेरका कास-
सिद्धांतोक् पला पहुंचावे उनके लार हाल हा ॥१०॥सु ॥
सचित आहार पाणिका भागे निश्च महरिय होय,
संयम भ्रष्ट सत्र मत माणा ऐसो सिद्धांतको जोय ॥११॥सु०॥
तिनठ कसल गासे मुरण मेद तणा प्रमाण,
जघन्य उत्थ और मध्य समागम, जिनवर वेस प्रमाण हो ॥१२॥सु ॥
पूव भवे चावण वेसरां गोंत तिर्थकर बांध्यो,
सस राजाय सोमति रामि मोस पंथक साध्यो हो ॥१३॥सु ॥
प्रसाद पूज्य सौभाग कहिमे मुनि कुंदन इम भाख,

कमादि माहे स्तवन बनायो सिद्धांतोकि साख हो ॥१४॥सु०॥
उगणिसे पचावन सालमे, कृष्ण पक्ष वैशाख, ।
रिख आवेतो सुध प्रकासो असुध मेंक मति भाख हो ॥१५॥सु०॥

॥ इति ॥

॥ अथ श्री उपदेशनी लावणी ॥

आप समक्कत घरे नहीं पाया, दुजाकु क्या समजाव ॥
बाकर फिरे जिन दास जगतमे, हियो हाथमें नहीं आव ॥

॥ ए आंकणी ॥

दरस सवाद चाहनकी विषयमे, चालक अधिकी आय लगे ॥
इंद्रीके परवसमे पडियो ध्यान धरम कहा कैसे जगे ॥
तृष्णामे मन छुट लियो है, कपट करी परधनकु ठगे ॥
खाय ग्याय छोही मांस पचान्यो, प्राणि किस विध बचे पगे ॥
विषय विषकी करे चुगली, चलोंसु चित्त नहीं कावे ॥म १॥
अपन अवगुणकु नहीं देखे, दुजाका अवगुण भाखे ॥
हिंसाडीमे हुओ हजुरी, दया दुर दिलसे नाखे ॥
गुणवंतका गुण लोप मरो मन, अवगुणके रसकुं चाखे ॥
विगुडी प्रणम राग परगम, सरखे जिनवर किम राखे ॥
ठग फांसीगर चोर अन्यायी, धन मिले इनकुं ध्यावे ॥म २॥
अवगुणकी मेरी खान आतम, अभान होय सो मोहे पुजे ॥
नही गाममें रुख अककों, एरंड बम सरिखो सुजे ॥
पारस नही है चिंत ग्यानकी, गुण अवगुणकु कुण बुज ॥
गदहर वेस करे सुग करसें, काम धेनु इतनी दुजे ॥
ऐसी मेरी अकनीत आतम, अवगुन किम गाया जावे ॥म ३॥

काम मान मायामें मातो, लोभ मांहि लपन्यो रहेतो ॥
गरब गुमानी गमको गरजी, पिछ पारकी नही सतो ॥
भक्ति नही गुरु देव धर्मकी, कठण वचन मुखस केता ॥
अवर और न सुज हिसाकर, कुंड परम पड़्ई दता ॥
भाग छगी जिनदास जैनका, माल मुफ्तको टग खावे ॥भ० १॥

—:वर्ग ५ वा:—

प्राचीन अर्वाचीन निर्णय

दे

खिये ' बडी भारी आश्चर्य की बात है कि हमने कितने क प्रयास अवस्मकन किया है, और यति संवेगी पितां बरी दिगम्बरी वगैरोंके मुंखसे भी सुना है कि श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी (ढुंढीये) वग नवीन है ऐसा कर ते है मगर य कहना इन लोगोंका साफ खोटा है लेकिन हम यहांपे इसका किंचित वर्णन करना चाहते है मा न्यान किजीय,

मूर्तिपूजकोंका पुराना निम मुजब—

आत्मान विमर भास्कर पृष्ट १७९ ओली २१मी में सवन १७०० म निकले ढुंढक मति एस लेख हमारे उपर बडे प्रयास दरज किये हुए है कोई ग्यारह सा वर्ष बतलाते है कोई चार सो वर्ष बतलाते है कोई

बुविया मजब ऐसा क्रम उत्पन्न हुवा ऐसा भी कहते है ऐसे कपोल कल्पित गप्प मचाके अपना दिल खुस करते है लेकिन असली बात का हाल अभि तक इन लोगोको पुर्ण खबर नही है,

मारासपजी देखो ! पवि संवेगी पितम्बरी दिगाम्बरी वगेरे मुर्तीपुजक लोग कहते है क हम लोग अनादि प्राचिन है लेकिन ये कहेना इन लोगोका साफ सोप्य (झुठ) है, अगर इन मुर्तीपुजकोंका अपने मतकी आदि अनादि प्राचिन अर्वाचिन की खबर नही है तो दुसरी असली बातों की तो क्या खबर होवेगी (मिसाल) दियाके निचे अंधेरा ही हुवा करता है सोचनेका स्थान है के हमारे नकली जैन भाईयोंका अंधेरा कब दुर होवेगा

देखिये ! आम (सर्व) जैन धर्म नवकार मंत्रको सर्वोत्तम और (प्राचिन) मानते है और आम जैन धर्म नवकार मंत्रको स्वीकार [अंगिकार] करते है और आम जैन धर्म नवकार मंत्रके स्मर्ण (जाप) के साथ आत्म सिद्धि भी मानते है और आम जैन धर्म नवकार मंत्रका सिद्धांत शिरोमणि भी मानते है इसलिये आदि अनादि प्राचिन (अर्वाचिन) का निर्णय हम लोग नवकार मंत्र परसे निर्णय करना चाहते है,

॥ परिछेद १ ला ॥

— नमोकार मंत्र :—

णमो अरिहंताणं—णमो सिद्धाणं—णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं—णमो लोयेसव्वसाहुण—॥१॥

इसलिए ! य नवकार मंत्र आम जैन धर्ममें मान्यवर है लेकिन

इस नवकार मन्त्रके आखिर (अंत) में णमो लोये सव्वसाहुणं ऐसा पद है, मगर णमो लोये यतियाणं, णमो लोये संवेगीयाण, णमो लोये पिताम्बरीयाणं, णमो लोये दिगाम्बरियाणं, णमो लोये सुरिणं, णमो लोये सागरणं, णमो लोमे विजेयं, वगैरे एसे पद नवकार मन्त्र के आखिर मे एक भी नजर नही आते है अगर हमारे लेखानुसार नवकार मंत्रके आखिरम कोई भी पद होता तो उस पद वालेको हमभ्मी ग अनादि (प्राचिन) मान लेते लेकिन हमारे लेखानुसार नवकार मन्त्र के आखिरमे एक भी पद नहीं हानेसे इन कपोल कल्पित गाम बजाने वाले मिथ्या वादियोंको अनादि (प्राचिन) किस तौरमे माने जावेंगे कदापि नही नवकार मन्त्रकी साक्षीसे पुर्ण सिद्ध हुवाके यति वगैर मुर्तीपुजक लाग अनादि [प्राचिन] नही है आर्वाचिन नवीन है

परिछेद २ रा

श्री जैन के इग्यारस अंगादि प्राचिन अमुल्य सिद्धांतोंमे च्यार मगल च्यार उत्तम च्यार सरण प्रभुने फरमाया है लेकिन इस अपरस भी यति वगैर मुर्तीपुजक लोक अनादि प्राचिन सिद्ध नही हो सकते है,

चार मगलके नाम-अरिहंता मगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मगलं, कवली पन्नत धमो मगलं,

च्यार उत्तमके नाम-अरिहंताला गुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, कवली पनते धम्मोलय गुत्तमो,

च्यार सर्णके नाम-अरिहंता सरण पविज्जामी सिद्धा सरण पविज्जामी साहु सरण पविज्जामी कवली पनते धम्मा सरण पवि ज्जामी

देखिये ! च्यार मंगल च्यार उत्तम च्यार सरण जैनके असली सिद्धांतोंमें प्रभुने फरमाया है लेकिन इस ठिकाणे सिर्फ साधुका नाम है परंतु यति वगैरेका नाम बिल्कुल नहीं है अगर-ये लोग अनादि [प्राचिन] होते तो इस ठिकाणे तथा नवकार वगैरोंमें यति वगैर लोगोंका नाम अनेक दाखे भया होता था, इस परस पुर्ण निश्चे हुवा के यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नहीं है एसा सिद्ध होता है,

(परिछेद ३ रा)

देखिये ! यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अपने बडे तथा भक्तिमां वगैर को वंदना नमस्कार करते है लेकिन इस रितिसे भी यति वगैर मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) सिद्ध नहीं कर सक्ते है, माहाराजजी ! देखो ! यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग क्योंके आचार्य उपाध्याय गुरु भक्तिमां वगैरेको, " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि जाए निसी ही आए मथेण वंदामि " इस पाठसे वंदना नमस्कार करते हैं लेकिन ये भी पाठ अधुरा है, और इस पाठमे भी दुसरे ठिकाणे के शब्द मिलाये गये है परंतु इस पाठसे वंदना नमस्कार करना भी जैनके प्रकाण्ड अंगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंसे बिल्कुल बरखिलाफ (खोटा) है लिकिन देखिये ! अवश्यक सुत्रका पाठ,

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि जाए निसीहि आए अणु जाण म मिउग्गह निसीहि अहो काय कायसं फासं खमणि ज्जो मेकि लामा अप्पकिलं ताण बहु सुभेणं मे देवसी वइक्कंता जत्ता मे जवणि ज्जं च मे खामेमि खमा समणो देव सियं वइक्कमं आवसि आए पडिक्कमामि खमा समणाणं देवसी आए आसायणाए तेतिस अन्नयराए जंकिंचि मिछा ए मन दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए

मेदाए सव्वधलिमाए सव्वमिछा वयराए सव्वधम्माए क्रमाणाए आसा-
गाए जोमे क्वसी अयारको तस्स समासवणे पडिक्कमामि निंदामि गिं
रिहामि अप्पाण वोसिरामि

ये पुर्ण पाठ वो प्रतिक्रमण [सध्या] करिव वखत तिन दफा
पढना (कहेना) पडता है, मगर हर वखत मुर्तीपुजकोंने मुर्तीपुजाका
नवीन मत चलाया तब जैनियोंके असली कायदे छोडके नवीन कायदे
निकाले और असली सिद्धातोंके कितनेक पाठोंका ढामा डोल कर डा-
ले परंतु उक्त पाठसे वंदना नमस्कार करना ये जैनका असली कायदा
नही है मगर इस जमेमे जैनका असली कायदा जाहिर करते हैं,

इसिये ' गणधर माहाराज वगैरोंने वंदना नमस्कार जिस पाठ
से करि है वो पाठ निचे मुजब—

॥ असली सिद्धातोका पाठ ॥

तिख्खु चेत्त्या भयाहिण पयाहिण वंदामि नमसामि सक्कारेमि समा
णेमि कल्याणं मंगल देवीयं चेइय* पज्जुवासामि मथेणं वंदामि,

---

* १॥ इस ठिकाणे मुर्तीपुजक लोग वैयाकर्णके मतांगस चेइय
शब्दका अर्थ प्रतिमा करते है लेकिन यहांपे चेइयं शब्दका अर्थ प्रतिमा
नही होता है कारण इस शब्दके अव्वल देवयं ऐसा शब्द आया है और
पश्चातमे पज्जुवासामि एसा शब्द आया है परंतु इसका तात्पर्य क्या है
देवयं—के० जो च्यार मंगलके अस्त ज्ञानी देव है या भी इस लोकमे
पुजनीक है और इनास तो आप चेइय—के० अनंतगुणा अधिक माहा
ज्ञानी पुरुष है इस वास्ते मे आपकी पज्जुवासामि—के० तन मनसे स-
दा भक्ति करके नमस्कार करता हु इस वाक्यका तात्पर्य इत्यादी है,

महासयजी ! देखिये ! गणधर वगैरोंने ईस पाठसे वंदना नमस्कार करी है,

जैन मुर्तीपुजकोंकी तोरसे वंदना नमस्कार करना जैनके असली सिद्धांतोंमे कोइ जगेह लेस नही है इसपरसे पुर्ण सिद्ध हुवा के यति वगेर मुर्तीपुजक लोग अनादि प्राचिन नही है अर्वाचिन नवीन है,

(परिछेद ४ था,)

यति वगैर मुर्तीपुजक लोग जिस वखत शिष्य करते है तब शिरपर वास खेप डास्ते है इस उपरसे भी ये लोग प्राचिन नही ठहर सकते है महाशयजी ! देखिये ! यति वगैर शिष्य करते है तब उसके शिरपर वास खेप डास्ते है, लेकिन वास खेप डालना ये भी जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंसे साफ बरखिलाफ है अगर ये बात सत्य होती तो भी जैनके असली सिध्धांतोंमे कोइभी ठिकाणे ये अधिकार आता लेकिन कोइ भी सिद्धांतोंमे ये अधिकार नही है इस परसे सिद्ध हुवाके, यति वगैरे मुर्तीपुजक लोक अवस्ले (प्राचिन) नही है अर्वाचीन (नवीन) है मगर प्राचिन नही है,

॥ प्रवेश ॥

यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग जिस वखत श्रावकोंके घरमे गोचरी

लेकिन तात्पर्यका जो पुछ अजान होता है वो पुछ प्रजापतके घोडे का पुछ पकडी हुई कदापि नही छोडता है लेकिन उसे मुर्ख विराम जो कहते है परंतु खोटा अर्थ कदापि मंजुर नही होता है जैसा स्थान होवेगा वैसा अर्थ मंजुर करनेमे आता है.

वगैरे के वास्ते प्रवेश होवेके वाय धर्म ध्यम ऐसा शब्द उच्चारण करते है तथा कोइ पुरुष इन लोगोंको वदना नमस्कार करे तो, उस वखत भी उपदेशम धमलाभ ऐसा शब्द उचारण करते है, लेकिन इस परसे भी यति वगैर मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नही ठर सकते है,

देखिये ! श्री जैनके असली सिद्धांतोका कायदा ये है के जिस वगत जन मुनि ग्रहस्यके मकानपर (घरका) कोइ भी वस्तु लेनेके वास्ते जाय उस वखत वो वस्तु कल्पनिक (निर्दोष) है या नही है, इस बातकी सिर्फ चोकशी पुर्ण करना चाहिये लेकिन उपदेश तरीकेका शब्द धीरे ज्यार जोरसे वस्तु की याचना करनके आग तथा पिछे उचारण करन की काई जरुरत नही है अगर उस वखत कोइ वदना नमस्कार कर तो करना चाहिये और यति वगैरे मुर्तीपुजक लोगोंको कोई वंदन नमस्कार करते है तब उपदेशमे धमलाभ ऐसा कहते है लेकिन ये क-हेना इन लोगोका श्री जैनके असली शास्त्रोंसे वरखिलाफ है,

महाशयजी ! देखिये ! श्री वीतराग देवाधिदेव तिर्थंकर महारा ज वगैरोंको काइ भी पुरुषने वदना नमस्कार करी है तब उपरसमे ज्ञानी पुरुषोंने इस मुजब फरमाया है "देवाणुप्पीया" ये शब्द उचारण किया है लेकिन "धर्म लाभ" एसा शब्द काइ भी तिर्थंकरोंने फरमाया नहीं है और किसी जैनके असल्य सिद्धांतोंमे भी कहि लेख नही है- अगर ये बात अनादि (प्राचिन) होती तो जैनके असल्य सिद्धांतोमे लेख अवश्य होता मगर यति वगैर मुर्तीपुजकोंने ये "धर्म लाभ" का कायदा (रस्ता) नवीन निकाला है इस परस पुर्ण निश्चय हुवा के यति वगर मुर्तीपुजक लोग अनादि प्राचिन नही है अप्राचिन (नवीन) है

पाठ नही है तब यति वगैरे मुर्तीपुजक लोगोने " धर्मस्थम " ये कोनसे मत मेंस सोदके निकाला अगर काहांसे हुस्हुल्का मचा पैदा किया इसकि हमको कुछ खबर पडति नही हे लेकिन उपदश शद्में " धर्मस्थम एमा कहेना भी जैनके प्राचीन असलि सिध्दांतोंके विरुद्ध हे इस परसे पूर्ण निश्चे हुवाके यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचीन) नही है अर्वाचीन (नवीन) हे

पूर्वपक्षी- आपने तो सिद्धांतोंके न्यायसे खुल्लासा करके हमारे मनका संतोष किया इस वास्ते आपको धन्यवाद घटताहे

[परिछेद ५ वा]

यति वगैरे मुर्तिपुजक कहते हैं के शत्रु-जय परबत सासभ्वताह लेकिन इस परसे भी मुर्तिपुजक लोग अनादि [प्राचीन] नहीं टहेर सकतेहे.

देखिये ! श्री जैनके एकत्रम अगाधि प्राचीन असलि सिद्धांतोंमें " शत्रु नयण पव्वयं सासभावव्वयं " एमा पाठ कोइमी सिद्धांतोंमें नही हैं, इसपरसे शत्रुंमयपरबत सासक्ता सिद्ध नहीहोताहे, फर मुर्तिपुजकाके ग्रंथ वगैर सभी शत्रुंजय परबत सासकता एसा पूर्ण रिति ससिद्ध नहीहोताहे जैनतत्वादश ग्रथक प्रष्ट ५०२ ओली ११ मीमेंलिखताइक * अवसर्पिणीनो प्रथमआरा सुषम सुषम च्यार कोडाकोडी [क्रोटाकोटी] सागरोपम प्रमाण छ तकाल्मां भत क्षेत्रनी भुमी मृदुंग पुपर रमणिय मर्देलतात्का समान सम हती

यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग कहते है के शत्रुजय परबत सासव त्य है लेकिन इस परसे भी मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्राचिन] नहीं ठहर सकते हैं,

महाशयजी ! देखा मुर्तिपुजक लोग क्या लिखते हेके भवासर्पणीके पहल

आरेकि प्रतिमा मार्दुमके सबे समान समझी, जैसा लोकको धर्म मनवाते, वो परम सापाधिकन्य होताहै बसी पहले आरेकि प्रतिमाको सब परस्तारिक कि इस भरतक्षेत्रमें नास्तिपी तब मुर्तिपूजकोका " शत्रुंजय पर्वत " सास्वता क्याहोसकता क्या आस्त्रमें लोकभक्तिवोसे अस्कताथा तो निष उत्तर, क्या ? ज्ञानिपुरुषोंसे भी मादर्शहोरहाथा जो अनसारोंके नगर आताहै। एसी मिथ्या प्रकरण करनेसे कुछ अर्थ सिद्ध नहीहोताहै लेकिन ज्ञानिपुरुषोंने जो जो वस्तु सास्वती फरमाई है वो वस्तु सास्वती सही आप्नी परंतु अन्य वस्तु सास्वति अभिमानी (समझी) जाती है,

महाशयजी ! यतिवगैरे मुर्तिपूजक लोग शत्रुंजयको सास्वता मानते है [सनातन] और धर्मतिर्थ मानते है तब मुर्तिपूजकोका शत्रुंजय धर्मतिर्थ सास्वत (प्राचिन) नही है तो ये लोग तो प्राचिन कहांसे आये इस परसे पूर्ण सिद्ध हुवाहै यति वगैरे मुर्तिपूजक लोग अनादि [प्राचिन] नही है अर्वाचिन (नवीन) है

॥ परिछेद ६ था ॥

— प्रतिमाके चमत्कार —

यति संवेगी पितम्बरी दिगम्बरी वगैर मुर्तीपूजक लोग कहते है के हमारे शत्रुंजय तिर्थ, वगैरेमें कैसे बड भारी चमत्कार प्रत्यक्ष होते हैं और कितनेक ठिकाणे जमिनमेंसे गडेहुवे प्रतिमाजी, भी निकलते है, और संप्रति राजा वगैर बड़ा पावान राजा महाराजाओंके सबोंके हम लोगोंकिसाथ है इसपरसे हमलोग अर्वाचिन (नवीन) नही ठहर सकते है, हमलोग अनादि प्राचिन है

महाशयजी ! क्या इस बात परसे भी यति वगैरे मुर्तीपूजक लोग अनादि (प्राचिन) नही ठहर सकते है

दखिये। जिस वक्त तिर्थ वगेरे स्थापित करते हैं उस वक्त होम मगादि करके देवता आराधन करके तिर्थ वगेरेका अधिष्ठायक कर देते है और जिस वगेसे तिर्थ वगेरे की महिमा कराना होवे उस वगेस हर वक्त कार्य करना एसा उस दक्ताका वचन छते है दक्ताका वचन छते है उस वक्त हमारा वर्षोकी मुदत वाल वत है, उस मुदत तक उस दवताको अ- नुकुल हर वख्त वो कार्य करना पडता है मगर ये कुछ तिर्थोका पराक्रम नही है, और ऐसे माडम्बरसे तिर्थ मान्याभर कदापि नही हो सकत है अगर तिर्थ वगेरे पराक्रमी होवेतो समेत शिखर उपर जिसवखत गवरमेंटी बगले बंधना, शुरु हुवथे उसवखत यतिसंवेगी श्वेताम्बरी दिगंम्बरी वगेर मुर्तीपुजकोंने समेत शिखर उपर बंगला कायदमेसे बंधनानही एसी बंदोबस्त करनेके वास्ते मुल्कमे हुल्लमणा दिया था उसवखत तिर्थवगेरेका पराक्रम कोनस खडमे घुमइ गयाथा आखिरका दरज, नाणेके जरिये बदोबस्त करनापडा सच्चहै असलि जिसमें असलि पराक्रम होताहे नक्लि जिसमें असलि पराक्रम कदापि- नही होसक्ताहे इत्यादि कमाल कस्ति बातोंसे जो मनुष्यप्रमाण होवगा वो पुरुष मेवर जाकमेहसेगा लेकिन चतुर पुरुषतो आत्मसिद्धीक कार्यको प्रमाण करेगा इससरसे सिद्ध होताहेके यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्रचीन] सिद्ध नहीं ठहरसक्ताहे [जमिनमे गडि हुइ प्रतिमा] जमीनमेंस गडीहुइ जो प्रतिमा निकलतिहे उसका येकारणहे विक्रम संवत ४ म मुर्तीपुजाका मत निकलाहे अंदाजन पचासो १९० स कुछज्यादा वर्ष स्थापन हुवहै कारण मुर्तीपुजाका मत स्थापित करने वाले शिवाजी गुरू और रत्नजी गुरू हुवेहै; और इस मत कि वृध्दी करनवाला सप्रति राजा हुवाहे जब अंदाजन १९ ० सो वर्षके लगभग य बात सिध आति है तो पचास - तथा १ तथा २ के स्थापन कर ठिकाण प्रतिमा दटन पटन हाय हाव परजमिन रादेमें जमिनमेंसे गडिहुइ प्रतिमा निकल्नेमे क्या नही आश्चर्यकी बात हुई

क्या कदापी नहीं अगर फलके आडंबरीभक्तक विसान्के वास्ते मंत्रादिकसें प्रतिमाको मन्दिरमें दान पन्न करके भी निकाल सकते है। तथा अक्सर प्रतिमाको गाडके पिछल ऐसाभी असत्यनरकलोकोंके हमेस्वप्नमें प्रतिमाजीने आके कहाके हम अमुक मकानमेंगडि हुइ है' सो मुझे निकालो ऐसी परोक्ष कल्पित बातें बनाकेभी मन्दिरमें गडि हुइ प्रतिमाको निकाल सकत है ये कुछ आश्चर्यकि बात नही है येतो सिर्फ आडंबरके जरिये मुग्ध भोले लोगोंको भरमाके भ्रमर जालमें डालनेकि बातें है यहांप सहज सवाले होनेकि जगहेके अगर जो प्रतिमाजीमें एसा जबरदस्त पराक्रम होता तो स्वमेव मन्दिरमेंस निकलके उपर क्यों नहीं आति और सर्व दुनियाको जाहिर चमत्कार क्यों नही बतलाया ऐसी आडंबरी अंध श्रद्धाका ज्ञाता पुरुष स्वीकार कदापि नही करते है तथा चमत्कारको नमस्कार होता है मगर असत्य बात कदापि विजय नहीं मिला सक्ती है इस परसेभी यति वगेर मुर्तीपूजक लोग अनादि [प्राचीन] नही ठहरसक्ते है

[परवाने]

तांबापत्र तथा शिलालेख वगेरे परवाने लिखवाने का कारण य है कि जिस वखत मुर्तीपुजाका मत स्थापित होके पुर्ण बलवान दशा म आके घातक फैल गया तब मुर्तीपुजकोंके आचार्य वगेरोंने विचार किया कि सत्ताधीश हाके आडंबर धारण नही करेंगे तो ये नवीन मत चिरकाल तक नहीं ठहर सकेगा इस प्रयोजनसे मुर्तीपुजकोंके आचाय वगरान जोतिष निमित्त वैदंग जंत्र मंत्र तंत्र इत्यादि अनेक प्रयोगस राजा बादशाह वगेर का अनेक प्रकारके चमत्कार बताने लगे इन चमत्कार के जरिये तांबापत्र शिलालेख वगेरे परवाने लिखवाये मनवांछित बन गये मनवांछित तनख वाह पन्न चामर स्याना पालखि हाथी, घोडे हय पडिहार चापदार नकीब चोबदार सिपाई वगेरे राजा बादशाहोंस

बक्षिस करवालिये और द्रव्यधारी हो के राज रिध्धी भोगवते हुवे और भी जैनके असली मुनियोंका लिंग (दरेस) और समाचारि छोडदिवी और श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन सिद्धांतोंके कायदे विरुद्ध लिंग (दरस) और समाचारि धारण करके नवीन और आडंबर सयुक्त जैनका नामसे पाखंड मत चलाया है, लेकिन ये कार्य असली जैन मुनियोंका नही है कारण असली जैन मुनियोंको कोई भी सरका आगार नही "आगाराउ आणगारियं पवइय" एसा सिद्धांतका लेस हैं, इस वास्ते इसपरसे भी यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नही ठर सकते हैं इसके मालुम फर भी देखिये ! श्री जैनके एकादस अगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंमें जैनके असली मुनियोंका नाम जा चले हैं, लेकिन उसपरसे भी यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्राचिन] नहीं ठर सकते है,

जैनके असली मुनिके नाम

जैसे मेघनादि इच्छितार्थ सिद्ध करनेके तरफ लक्ष रख कर मानक उपसर्ग अडगपनसे सहन करते है, तेसे ही जो पुरुष अपनी आत्माकी सिद्धि करनकी तरफ लक्ष रखकर एकांत मोक्षकी तरफ दृष्ट रखकर आत्म साधना कर उनको साधु कहे जाते हैं,

साधुका श्री सुयगडांगजी सुत्रके प्रथम स्कंधके १६ वे अध्याय में ४ नामस फुमाये हैं,

सूत्रः— माहण भगवं, एवं, मे दंत, दुवीए, वोसट्ठ मति वच्चे १ माहणत्तिवा, २ समणत्तिवा, ३ भिक्खुत्तिवा, ४ णिग्गंथेत्तिवा, पडि

थाइमवे करेत देवे दवीए योसठ कायतिवच्चे माहणेतिवा, समणेतिवा, भिक्खूतिवा, णिग्गन्थेतिवा, तच्चे मुदी मारामुणी १

अर्थः— श्री तीर्थंकर भगवान तरिस्तुरी गुप्तियोग मिले अशुभयोग स्थागन किया है एस साधुको ४ नाम कुम्रत है. १ माहण २ समण ३ भिक्खु ४ निर्ग्रंथ

तब शिष्याने प्रश्न किया की अहो स्वाम इन चारोहीके अलग अलग गुण फरमाइये

१ माहण किनको कहना ?? समणे किनको कहना ? ३ भिक्खु किनको कहना ? ? और निर्ग्रंथ किनको कहना ? ४

सुत्रः—इति, विरए पाव कम्मेहिं पेज्ज दोस, कलह अभ्याख्याण पसुन परपरीवाए अरति, रति माया मोस, मिच्छादंसण सल्ल विरए समिय, सहिए, सयाजय, णो कुजे, णोमाणी, माहणत्तिवच॰

अर्थ—तब भगवंत ब्राह्मणादिक चारोंके शब्दका अर्थ व गुण अनुक्रमें फरमाते हैं कि हे शिष्य जो कायिकादिक सर्व कियासे निवर्ते हैं, सर्व पाप-कर्म, राग, द्वेष, क्लेश, चुगली, अवर्णवाद हर्ष, मायाक, कपट, मुक्तामुठ सहितमत कि मथ्या इत्यादि स निवर्ते हैं पच सुमतीसहित हैं सदा काल हे—आपकी और सबकी यत्नावतहे क्रोधादि कषाय, रहित किसी पौगुणक गर्व रहित हैं उनको माहण अर्थात महात्मा कहेना॰

॰ माहण शब्दका अर्थ ब्राह्मणभी होता है, अर्थात इसने गुण युक्त होय उन्हें ब्राह्मण कहणा !

२ सूत्र— एत्थेवि-समणे, अणिस्सिए -अणियाणे, अदाणच अति-वायंच मुसावायंच, बहिद्धंच, कोहंच, माणंच, मायंच, ल्योहंच, पज्जंच, दोषंचे, इच्चेवं मज्जज, मशाणादउ अप्पणापदेसहेउ तस २ अदाणता पुव्वं, पदि विरिए पाणार वायाए क्षत दविए यो सव काए समणो ति वच्चे.

अर्थ—अब, समग [साधु] के लक्षण कहते हैं, किसीके भी प्रति बंध (मर्माय-आश्रय) रहित कर्णीक फलकी बंधम रहित कषाय रहित (शांत प्रणातिपात भयात हिंसा मृषावाद झूठ चौरी मैथुन मत्सर्मान माया काम राग द्वेष इत्यादिसे सब या निवर्ते है और जो ऐसही आवों कसब वक व अवगुणके कारण वस्त उनसे पहिलेही निवृत इन्द्रियोंको दमन कर आत्माकी मनवाको बामराव (छोडे) उनका समण अर्थात साधू कहना

३ सूत्र —एत्थेवि भिक्खू अणुण्णए विणीए नामए दंत दविए वोस-ट्ठकाए सविधूणिय विरूवरूवे परिसहा वसग्ग अज्झप्पजोग सुधादाणे उवट्ठिए, ठिअप्पा संखाए, परदत्त माइ भिक्खुत्ति वच्चे

अर्थ —भिक्खु अर्थात भिक्षुक उनको कहते है कि जो विषय विश्राम शरीरका निर्वाह करते हैं और जो अभिमान रहित और विनय नम्रता आदिसहित हुन इ इन्द्रियोंका दमन करते है दब दानव मानवके किये उपसर्ग समभावसे सहन करके निरतिचार व्रतपालन है. अध्यात्मयोगीहै मोक्ष ध्यान मात्र करनेके लिये सावधान होकर संयम उसमें स्थिर मुनहै और अन्य किसीके निमित्तसे बनाये हुवा आहार मत हैं

४ सूत्र:—एत्थवीनिग्गंथ एगे एगविउ बुध्धे संछिन्नसोए सुसंजिए सुसामाइए आयवाय पत्त विदुदुहउ विसोयाविधिने णोपूयासकार लाभट्टी धम्मट्टी, धम्म विउ, णियाग, पडिवन्ने समियंचरे, दंत, दविए वोसट्ठ काय निग्गंथेवि वच्चे

अर्थः—भगवन्तिमके लक्षण कहते हैं सदाराग द्वेषरहित भवका नाश सर्व धा आवश्यक निरुपन किया अच्छी तरहसे आत्मा वसुम करी सुमतिवत आत्मतत्वके मान शुध्धमानके आण द्रव्य और भावसे दोनो प्रकारसे आवश्यक निरुपन किया समाधि (चित्तकी निश्चलता सहित) महिमा पूजा सत्कार सन्मानकी इच्छा रहित एकांत निर्जराके धर्मके ही अर्थीक्षमा आदि दशविधी धर्मके भिन्न २ भेदके जाण मोक्ष मार्ग अंगिकार करके उत्तम सम्यग प्रकारे प्रवर्ते दमितेन्द्रिय और कषायकी ममत्वा रहित इतने गुणवाले को निग्रंथ कहना

भगवंत फरमाया है कि, " से एवमेव जाणह जमहं जाणइ भयंतारो त्तिबेमी " अर्थात येही पद मोहा मपत्त निवारनको समर्थ, है लेकिन यति समेगी पितांम्बरि अगर सुरि सागर विजय ये नाँव तो जैनके असलि प्राचीन सिद्धांतोंमे कोइमी ठीकाणे नही कहे है अगर यति वगैरे मूर्तीपूजक लोग प्राचीन होते तो एसे नांव सिद्धांतोंमे दरज होनेके लिये क्या हरज था परन्तु यति वगैर मूर्तीपूजक लोग प्राचीन नही होनेसें यति वगैरे मुर्तीपूजकोंके नवीन नांव माफिक असलि सिद्धांतोंमे कहांसे दरज होवेंगे इस उपरसे पुर्व लिखे मुजबके यति वगैरे मुर्तीपूजक लोग अर्वाचीन (नवीन) हैं

पुर्वपक्षीः—क्यों जी आप लोग भी ढुंढक साधु स्थानक वासी साधु मार्गी बाविस समुदायके साधु इत्यादि नांवोंसे कहलाते है ये तो नाम जैनके असली सिद्धांतोंमे दरज नही है तो माफिक कैसे बनते हो,

उत्तरपक्षी—तुमारा कहना सत्य है मगर हमारे लेख उपर थोडा ध्यान दिजीये

माहाशयजी ! देखिये ! ढुंढक साधु ये नांम तो मुर्तीपुजक लोग हम लोगोंके उपर द्वेषाधिपती होके पुर्ण मेहरबानीके साथ ईनायत (बक्षीस) किया हैं ईसका खुलासा आगे करेंगे, और स्थानक वासी

साधु ये नाम तो ईस कारणसे प्रसिद्ध हुवाके जिस वखत हम लोगोंके तर्फके श्रावक लोग मुर्तीपुजकोंके श्रावक लोगोंसे पुछने लगे के आप लोग कोन मतके हो तब मुर्तीपुजकोंके श्रावक लोगोने जवाब दियाके हम लोग (चैत्यवासी) हैं, देखिये ! संघपट्ट के ग्रंथके पृष्ट ७ वा लेख २ री "चैत्यवासी" एसा लेख है एसा कहने लग पश्चातमे पुछनेसे उत्तर मिलाके हम लोग स्थानक वासी श्रावक है, कितनेक काल पिछे पुछनेसे कहने लगे के हम लोग मंदिर मार्गी हैं पिछे उत्तरमे जवाब मिलाके हम लोग साधु मार्गी है कितनेक काल पिछे पुछनेसे कहन लगाके चौरासी गछवासी श्रावक है ये नांव हाल वर्तमान कालमे भी चलता हैं तब उत्तरमे जवाब मिलाके हम लोग १० बाविस समुदायके श्रावक है एसा संवाद होता रहा लेकिन ये नविन नांव तो हुंडासर्पणी तथा दुषमी पचम काल के तथा भस्मग्रहके प्रभावसे तथा ससारी लोगों क ताणा ताणके कारणसें भी जैनके असली साधुके नावमी फर्क्य पल

---

१० बारा कालके प्रभावसे कितनेक उत्तम मुनि आर्य क्षेत्रोंको छोडके अन्य क्षत्रोंमे उतर गये (चले गये) पिछे रहे हुवे मुनि संयमसे भ्रष्ट होके मुर्ती पुजाका नवीन मत निकाला और इस आर्य क्षेत्रोंमे उत्तम मुनि की नास्ती हो गइ फिर विक्रम संवत १६११ के बाद इस आर्य क्षेत्रोंमे ज्ञानचंदजी माहाराजका पधारणा हुवा माहाराज श्री के पधारणसे इस आर्य क्षेत्रोमे श्री असली जैन धर्मकी और असली जैन मुनिकी वृद्धि बहोत होने लगी और एक आचार्य माहाराजसे सर्व मुनियोंकी संभाल नही होनेसें प्रथम संप्रदाय स्थापित हुइ इस कारणसे असली जैन मुनियोंका लोगोने बाविस समुदायक साधु एसा नाव धर दिया लेकिन हम लोगोंका असली नांव तो जैन साधु है

द्यो गये है, लेकिन उपरोक्त नवीन नाम हम लोगोंके नहीं हैं, हम ल्प गोंका तो असली नाम सिर्फ एक जैन साधु है इस सिवाय जितने हम लोगोंके नमिन नाम जाहिरमें प्रसिद्ध है सो नाम हुंदासपणी तथा दु स मी पंचम कालके तथा भस्मग्रहके प्रभावसे तथा संसारिक लोगोंके ता ला वाणके द्वेषसे प्रगट हुवे है, और इन नामोंसे व्यवहारिक नाम बोलना पडता है, इत्यादि कारणोसे हम लाग अनादिन (नवीन) नही ठहरेमे, मेहरबान साहेब! देखिये !! मुर्तीपुजक लाग कहते है के साधु मार्गी-वर्ग नवीन है मगर मुर्तीपुजक स्वामीके बनाये हुवे ग्रंथोंसे हम लोग अनादि सिद्ध होते है, कैसी उमदा बात है हम लोग कुछ बयान नही कर सकते है इस लिखित सग पढक ग्रथके लेख निच मुजब,

(काव्य १ ली,)

॥ मालणी ॥ —इह किलि किल काल व्याल बक्रालवाल ॥ स्थिपति कुशिमत सत्वे स्थिति नीति प्रचारे ॥ प्रसरद, नयबोध प्रस्फुरत्का प्रबोध ॥ स्थिगिति सुगविस्त्रीं संगति प्राप्नुवंतें ॥ १ ॥

भावार्थ—येकलि काल पंचम आरा काल हुवा जैसा सर्पके मुखमें रहेने वाले प्राणियो क्या सुलष जैसा पंचम कालके मनुष्योंकि स्थिति सुख होनेसे सत्वादिक, देव गुरु धर्म दयादिक सुधर्म अर्थात धर्म मार्ग गुप्त हो जायगा (लोप जायगा) प्रति और धर्म स्थिति बगैर गुप्त होवेगी नव नमा, कुमंथ (खोटे मतम) प्रगट होंगे, कुकर्मयोंकि हानि करके धर्म कि स्थापना करेगे ऐसे लोंकि मंथा का उदय [प्रचारा] होवेगा मोक्ष मार्ग सत्य दया धर्म गुप्त होवेगा ?

॥ काव्य १७ ॥

॥ सादूर्ल ॥—कि निम्मोह मीताकि मयमधिरा कियोग पुर्ण कृताकि ई योपदया कि मगठगिता कि मायावेष्टिता ॥ इत्वा मूर्च्छिपद भुनस्पपदमीट्येसदापामपि ॥ यादृचि कृपया जवान दधत सूपति घव इत्व ॥१७॥

भावार्थ— क्या दिमा सुचि य होगये हो क्या अंधे होगयेहो क्या बहेरे हो गये हो क्या योग सत्र बगैर मूर्ण मुक्ता बासत्वेर मस्तकप टसक मोले लोगोंको वस्य करत हो क्या अशुभकर्मके मस्स (देवे इणाछा) मद बुद्धि हाके मुढ प्रतिको पिछि खचि दिखदिहे ठगोकि तोरसे जगत हा विचारे माले मुख लार्गोको कुगुरु कुवचके सब हुव छ कय जीवोंको मारके हिसाम धर्म प्रख्यास हो इन मय धारियोंने रुचिक्र मय केक पारंधिक तारसे साधु भयके गरिय मुगमत श्रावकोंका ठगत है १* सुत्र सिद्धांतकी वाणी छिपाके कुर्पक गिन्नदि पकर्ण देसके कारण की स्थापना करके मम्महम विपरीत माले सार्गोका भर्मकि या मैत्य पासाद करवाके अभो मार्गे भग्न है सिद्धांतोंमे मदिर करवाणा कहा नहीं है १७

। काव्य २० मा ।

जिनगृह जैनबींब जिन पुजन जिन याबादि विधिकृत दानं तपा मगादि गुरुभक्ति मतपठनादि चादृत ॥ स्यादिर कुमत कुगुरु कुग्राह कुबाप कुदर्शनात स्पृश्यन मिमतकारी पर माजन मिव विषम्मनी

१* वर्तमानमे भी जैनके असली सिद्धांत बावत सार्गोका भावनेका कुर्गुरुसत रहस्य लाव रसाए है

पेक्षव: ॥२०॥

भावार्थ— जैन दरसणीने जैनके मंदिर जिन बींबकी स्थापना करके जिन बींब भराए और छ काय की हाणी करके पुजा कर करावे छ काय की हाणी कराके धर्म म्हाराकी इझी पोषण करनेके वास्ते उपाय करा है चौराशि गच्छकी उत्पत्ती हुइ परंतु ये सब भस्मग्रह असंजति की पुजाका अंधेराके कारणसे चले है भोले भोगोंका भरमाके धम दिखाके मंदिर कर वाके हिसामे धर्म स्थापके,

हिंसा मार्ग चलवा किया, मंदिरका द्रव्य गुरुके मत भंग की पूजाका द्रव्यसे भंडार भरवाये है, ये भवधि मार्ग चालु किया जो दान तप इत्यादि गुरुभक्ति मुनिवरोंकी पुजा पोथीपुजाण्य इत्यादि कुमति कुगुरु कुमता कुबोधी कुवेषधारी प्रकारे चली प्रशस्तके घरहे घ्यापा मधन्या प्रकार समर पंडनवर्ष्या जैसे प्रधान भोजनमे विष मिलानेसे नुकसान करता है वैसे ये सुरी गुरुके हृद आत्म सिद्धिका नुकसान करके चेत मति नही जाने देते है ॥२०॥

काव्य २१ मी

स्रग्धरा— भाकृष्ट मत्य मीनान्बीडशपिशितं विदर्शयदाप जैन वीतराज्यनतरम्य स्थान पवर कमप्यन्तीषु सिध्या विपाप्य॥ यावास्ता-वाणुमये ममशितक निशा जागरादि स्पदेव॥ भवास्तुर्नामजैनो स्पर्शी प्रशम छर्दिष्प्यत्तोयाजीनेर्य॥२१॥

भावार्थ:—जैसे मछीमार मच्छी [मच्छी] को पनी दोरी बांधके दोरीके अंतम काटेका अंकुश बांध देते है, फिर अंकुशोमें मांसका टुकडा

फसाके वा दारी पाणीमे डाल देत है, उस मांसके रसके प्रयोगसे मछि पाणीमेंस उपर आके उस अंकुशमें फंस जाती है फेर उस मच्छीको बाहर निकालके मार डालत है वैसाही यति संगेरका वस मछीमार समान प्रकर्ण रूपदारी लाईके अकुडारूप आरंभ मांसकी वाटीरूप जिन प्रतिमा की पुजा दिखाके वैसे मछी रूप पद्धति है तैसे श्रावकोंको छ कायकी हिंसामे धर्म और मोक्षकी पुजा करवाके चर्तुगति संसारके फासमें फसा दिया है नाम धर्ुपिक्षर कहवाके पुर्व विधाके अनुयोगस लोगी रचना करवाई है और शत्रुंजय गिरनारादिक जात्रा स्नात्रादि विधि पूर्वक पुजा रात्री जागरण वगर करवाके प्रत्र मांगा है, ऐसे शुभ पुर्व विधा करके मांगा करते है अहो जैन वपधारी बाहवा ऐसे कर्म कैसे करते हो क्योंकि प्रथम सर्व जगतका यथाथ होता है लेकिन तुम लोग जिन वचन विरुद्ध कार्य करके जगतमे जगत गुरु कैसे कहेलाते हो ॥२१॥

॥ काव्य २० मि ॥

स्रग्धरा— सेया हुडावसर्प्पिण्यानु समयत समभ्य भावानुभावा ॥ मिशास्योग्रग्रहार्य ससनस मितिवर्प स्थिति भैस्मराशी ॥ अर्त्यंचाश्चर्यमेतं जिनमत हतपेत, स्ममा, दुःसमाच्ये ॥ स्वैरग्रहं पृथुभैरनुक्रिड मधुना दुष्टमों जिन मार्ग ॥२०॥

भावार्थ— पुरीके मत चोरासी चले है १ हुडावसपणी पचम आरेका दुसम समय २ भस्मग्रह ३ असंजति की पुजाका दसमा अछेरा ४ वां कलजु माया ५ ये पांच आगोंस भव्य जीवोंके भाव मंद (कम) पड गयें करके पांच आत्मामे हिंसा मार्ग दिखाया, गुनतिसमा भस्मग्रहका प्रार बहा माहावीर स्वामीके जन्मराशीपे भसम बैठा तिण कारण करके जन मार्गे प्रमप पप रहा है सुध मार्ग और सो धर्म मुलासा छिप गए कुमते मार्ग चले पे बडे आश्चर्यकी बात है और भी जिनेन्द्र देवकी

मानि एक दयामे धर्म्म मानी है आचारंग प्रमुख सिद्धांतोंकी साक्षीमे "सव्वेजीवा, सव्वेभुया, सव्वेसत्ता, नहंतव्वा;" इति केवली वचनात सिधा रस्ता नित्य चला आता है अनंत चोविसीकी वाणीकी नास्ती हुइ अर्थात माधिन रस्ता हुआ, स्त्रीमोको दुखी किये छ कायकी हिंसा क रके दुष्टाने पांच इन्द्रीका पोषण करनेका धर्म स्थापा, अरे भाई जिन मार्ग मिलना मुशकिल हुवा, लोगोंपर मिथ्यात करके ये जगत छा र हा है, कुंभारके चाक समान इस जगतको च्यारु दिसामे फिरा रहा है सुभ सिद्धांतोंका मार्ग छिप गया और मकानोंकी नवी रचना हुई ।१०।

सज्जन जनोंने पुर्ण विचार करना के मुर्तीपुजकोंके मथ मुर्ती-पुजकोंकु बाधक होके मुर्तीपुजकोंके ग्रंथोंसे मुर्तीपुजक लोग अर्वाचीन (नवीन) सिद्ध होवे है तथापि इन पागल लोगोंका पागलपना दुर नही होता है और भी जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी धर्म को नवीन ऐसा हमेस पुकार करते हैं इन ए वादियोंको कैसा समजाना चाहिये,

देखिये ! बारा वर्ष माहा दुष्कालके प्रयोगसे ईस आर्य क्षेत्रोंमे असली जैन धर्मकी और असली जैन मुनियोंकी नास्ति हुई और मिथ्यात्वका फेलाव अतिशय बढ गया

पुर्वपक्षी:— क्योंजी इन आर्य क्षेत्रोंमे जैन धर्मकी और जैन मु नियोंकी नास्ति आज तारिख तक हुई नही मगर ये बातां आप कैसे बयान करते हो इन बातों की कुछ सबुती बतलावोगे

उत्तरपक्षी:— माहाशयजी ! थोडा ख्याल किजीये के सबुत बात क्यों न मानेंगे देखिये ! मुर्तीपुजकोंके पक्षका संपादक ग्रंथमे सुलासा है संपादक प्रस्तावना पृष्ट ७ ओल्मी ८ "भाभ्रमस्ने एटले स्मरण भव्योके निश्चय मार्ग विरल मानवाइ पडयो निर्ग्रंथ प्रवचनपर वाल्ले देवायां अने-

व धर्मोक्त कल्पित मर्यादेन निजप्या० तमाकरवामा आव्या ”

प्रस्तावना पृष्ट ६ आली १३ मे इवे कहवत छे के “ यथा गुरु तथा शिष्यो यथा राजा तथा प्रजा ” ते प्रमाणे गुरुओ शिथिलयता तेमना ताबा, नीचना यतिओ, तेमना करतां पण वधु शिथिलयताओ दवा दारु दोरा धागा वगेर फरिने श्रावकोने पशुमा रागमाल्प्या वेपार करवा लाग्या तथा खेतर वाडी सुद्धा करवा तत्पर थया, सम छवातओ पातान मालदार भमुना धारस थयआो तरीके ओळखावि पो तानु मान साचवया मांड्या, अथ से प्राप तुमार दिवसी तसल्ली हुइ

पूर्वपक्षी — अजी साहब वर्तमान समयके यति संवगी पितांम्बरी वगेर मुर्तीपुजक लोग आदके लेखानुसार नही है

उत्तरपक्षी — मामलत्यजी ! किचित गौर किजीये वर्तमानके यति संवगी पितांम्बरी और मुर्तीपुजक लोग हमार लेखनुसार निन्च है, इसलिये ! ढुंढक हृदय नेत्रांजन पृष्ट १७ आली २४ मी था लख, “सा कैसे मन जायगे ! क्यों की जिन ढुंढकोका मार्षीन यनेका एक भी निमान नहीं है कभी त्रिगदर धारमा करनको जाव तब सा कुछ विचार भी करना पर परंतु तुमरा न ता गांवमे घर और न ता सीम मे खेत किस करतुतसे सनातन पथका दावा करनेका ख्याल हो, इस लेखपरस पुन निन्चे हुवा के वर्तमान समयके यति संवगी पिता म्बरी वगेर मुर्तीपुजक लोग अणगार (जैनके असम्मी मुनी) पदवीस भ्रष्ट है क्योंकि जैनके साधिन व असम्मी आचारगादि सिद्धांतोंमे एमा लेख है के “ आगराओ अणगारियं पव्वय ” जिस वख्त जन साधु की प्रव्रज्या ग्रहण करते है उस वख्त आगार धर्मसे आधात प्रहस्थ धर्मसे पुर्णपणे निर्वतमान होके अणगार अथात् निर्ग्रंथ धर्ममे प्रवेश कर ते है किंतु ससारिक कार्य करना ऐसी कोईभी बात बाकी रही नहीं

है परतु सर्वथा प्रकारसे संसार संबंधि संसारिक कोइ भी कार्य करना नही और दुसरे के पाससे करवाना नही और करते को भला (अच्छा) समजना नही, ऐसे त्रिविध २ त्याग (नियम) होते है लेकिन कोइ भी प्रकारका जैन मुनिका आगार नही रख करता है, सोचनेका स्थान है के अब असली जैन मुनियोंके गांवमे घर और सिवमें खेत कांहांसे आवेगा क्योंकि जैनके असली मुनि तो त्यागी है फेर गांवमे घर और सिवम खेत वगेरे रखना काम तो भोगीयोंका है इसपरसे पूर्ण निश्चे हुवाके वर्तमान समयके यति संवेगी पितास्वरी मुर्तीपुजक लोग जैनके साधु पदसे तथा संयमसे भ्रष्ट है कारण इन लोगोंकि लेख से ये बात सिद्ध होती है और मुर्तीपुजकोंके लेखसे ही मुर्तीपुजकोंकि यति संवेगी पितास्वरी वगेरे लोगोंको हम लोग जैन साधु नही कहेंगे कारण इन लोगोंको जैन साधु कहनेसे हम लोगोंको मिथ्यात्व लगता है तब मुर्तीपुजकोंकि लेखपरसे ये बात सिद्ध होती है के मुर्तीपुजक के यति संवेगी पितास्वरी वगेरे लोग गांवमे घर और सिवमे खेत रख ते है, ईस लिये परिग्रहधारी को साधु नही कहना चाहिये, देखो' साधुकु कुसाधु और कुसाधुकु साधु कहनेसे मिथ्यात्व लगता है इस वास्ते इन लोगोंको साधु कहनेस देसक मिथ्यात्व लगता है फेर सुत्र श्री समवायंगजी के विलमे समवायंगजीम फरमाया है के साधु नही और साधु नाम धरावे तो सितर कोडा कोड सागरोपम की स्थीतीका मोहनी कर्मकी उपार्जना करे यति संवेगी पितास्वरी मुर्तीपुजक लोग परिग्रहधारी होके साधु नाम धरावते है तब ज्ञानी पुरुषो के वच नोंसे ये लोग कठोर कर्मकी उपार्जना करने वाले है ऐसे कठोर कर्मी योंका साधु कोन मुर्ख कहेगे, देखो। वर्तमान समयके यति संवेगी पितास्वरी लोग हमारे लेखानुसार प्रसस्त सिद्ध हुये है दिलकी ससल्ली किजिये,

पुर्वपक्षीः— मुर्तीपुजकोंकि लेखस आपने दुवेहुय सिध करके दि-खलाये आपको धन्यवाद घटता हे,

देखिये ! श्री जैनक एकादम अगादी माचिन असली सिद्धावोंम जिन मतिमाकी पुजा करणा ऐसा लेख कोई भी ठिकाणे चल्प नहीं हैं परंतु मुर्तीपुजाका आडवरी मत क्या कारणसे चल्य हे ईसका हम ह खास मुर्तीपुजकोंकि ग्रंथसे दिखलाते हे,

सयप्रकिा मस्तावना मष्ट ५ ओली २१ मी से " पाचमा आरा रुप अवसर्पिणी काल एटले पडतो कालतो हमेशा आव्या कर छे पण अगाउकाइ आ जैन धर्ममा आविधांधल त्रभियाइनथी पण हमणानों पडतो काल साधारण रिते पडता कालना करता कांईक जुदी वरे हतो होवा थी ते हुंडा एटले अति सय भुंडो होवा थी तेने हुंडावसर्पीणी काल कहे थामां आव्यो छे आवो काल अनंती अवसर्पीणी ओगीतवाज आवे छे तेवो आपाल्ु काल मात्पयपो छे ते साथे वीर मभुना निर्वाण नखते बेहजार वर्षनो भस्मग्रह ठेसो बेसायेल्यो तेमजतेनी साथे असयति पुजारुप दशमो अछरो पोवानु जोर चलावत्रा लाग्यो एमघारे संयोगे मेगायवाथी आचैत्यरुप कुमार्ग जैन धर्मना नामे चोफेर फेल्य थामां गयो "

इस लेखसे भी यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग माचिन सिद्ध नही हवे हे मुर्तीपुजक लोग हमेश अनादन करते हे के साधु मार्गी (ढुंढक) की मुंकाजीसे उत्पति हे ईसका किंचित विस्तार दिखलाते हे,

सासनाधिपति देवधिदेव श्री वीर प्रभूके निर्वाणसे अगाक प्यार सा लिखर ४७० वर्षोंके बाद, राजा विर विक्रमादीतका सकत चालु हुवा,

विक्रमसंवत १०३१ के सालमहं वीर निर्वाणको दोहजार एक २००१ वर्ष होनेसे भस्म ग्रहकि उतरिहुइ जब असलि जैन धर्मोंकि और जैन मुनियों कि उदय २ पूजा होनेका वखत आय पहोंचा तब गुजरात देशके अमदाबाद शहरमें श्रीमन श्रीमाल लुंकाशाह लेहेवेय एक दिनके समय श्री जैनके पक्ष तम अंगादि प्राचीन असलि सिद्धांतों कि पत्रत मूर्तिपूजकोंके भंडारोंमेंकि लुंकाशाहके हस्तागत हुइ (मिलि) तब लुंकाशाहने जैनके असलि सिद्धांतोंका अवलोकन (वाच) करके विचार किया के, वर्तमान समयमें जा ये आर जैन गुरु कहलाते हे हिंसामे धर्म परुपते हें, जिन प्रतिमा कि पूजा करवाते हैं आर्भकर्ममें आरम्भ सिद्धी मानते हें गुरु पूजा पुस्तक पूजा वगैर कर्ते हें करवाते हे. करते को अछा समजते हें और आआबके कार्यमें मुक्ति मानते हें, इत्यादिक कारणोंसे ये लोग और ये धर्म श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असलि सिद्धांतोंसे परांङमुख हें और इन गुरुवोंसे और इनधर्मसे आत्म सिद्धि कदापि होनवाली नही हें, इसलिये इन गुरु लोगो और इन धर्मको निमे परित्याग करना चाहीये तब लुंकाशाहने कुगुरु और कुधर्मका त्याग करके इस आर्य क्षेत्रोंमें असलि जैन शासिन और दया धर्मका भाण [सूर्य] मोदरस (उद्यात) किया और मिथ्यात्वरूपा अज्ञान अन्धतिमर (अंधेरे) का विनाश किया फैर कन्मसि भाइ रत्नसि भाइ प्रेमसि भाइ मोहनसि भाइ भाणसि भाइ खेतसि भाइ जीवराम भाइ शिवजी भाइ प्रेमचंद वगैरे अमसरोंका लुंकाशाहने कुरमयाके सुप्रभी भगवतिजीके विषम हाकाम अभिप्रार देखकर वर्तमानमें असलि जैन मुनि हें इसवास्ते मुनि बनोंकि तमासि करके इन आर्य क्षेत्रोंमे मुख्याना चाहियें इन आर्य क्षेत्रोंमें असलि मुनिका पावन दोनेसें धर्मका उद्यात (प्रकाश) होवेगा तब कन्मसि भाइ कोरेनि इस बातकी पूर्ण चाहना करनेस सिद्ध कि लुंकाशाहकि

तरफ मुनि श्री ज्ञानचन्दजी माहाराज ठाणा २१ विमस विचरत ऐसि खबर मिलनेके साथ अमदाबादके फिरनेक श्रावक लोग उक्त मुनि श्री के सवामें पोहोचके अन करके आय क्षेत्रोंमें असलि जिनधर्मकि हाणी होके मिथ्यात्व प्रद्योत फैल गयाहे इस वास्ते आपने तकलिफ उठाके आर्य क्षेत्रोंको पावन करके दया धर्मका और जिनवाणिका प्रकाश करना चाहिये और मिथ्यात्व का हटाना चाहिये, एसि श्रावक लोगोंकि अरज मुनि श्रीन स्वीकार करके अमदावाद कि तरफ फौरन विहार करा मगर रस्तेमें अतिशय परिस उपसग होनेसे बवदा मुनि काठो देह अत गैस्तेम होगया बाकि सात ठाणस अमदाबाद पधारे शहरको पावन करके अमोघ वासरूप श्री जिन वाणीको अमृत रसनास प्रकाश करके जिन मार्गको प्रचलित किया और मिथ्यात्व का हटाया तब जिन मार्ग कि बाठक महिमा फैली और जिन मार्गकि उदय उदय पुगा सत्कार हूवा मुनि श्रीकेबरणोंमें स्वमति अन्यमति हजारो भाग मान लगे और बहु भव्यजिवोंको प्रति बोध हुवा और जिन मार्गका अतिशय नमाव पडा और जिन मार्गका झंडा इस आर्य क्षेत्रोंमे मुनि श्रीने रोपा और जिन वाणि रूप अमार पाठ दिन्नाम पुरन लगा और समकितरूप धम्मा चौतर्फ फरफरन लगी और असलि जिन धर्मका और असलि जिन मुनियोंका आदर सत्कार अतिशय होन लगा और कर्णोन कल्पित आरंभरि जिन मार्गकी हाणी होन लगी मगर जिस वख्त ढुंढकमाह असलि जैन सिद्धांतोंकि अमृत धारारूप वाणि प्रकाश करवय उस वख्त शिरोही और मारठिया गच्छके सब यात्रा करनेके वास्ते नजाराय उक्त मयरा पडाव अमदावाद हुवा तब सर्पवि बगेर बदातस मनुष्य ढुंढकशाहक पास सिद्धांत श्रवण करनके वास्त मातय उसमस फक्कलिम ४५ मनुष्योंको वैराग्य उत्पन्न हुवाथा और उन सब मनुष्यान ज्ञान चन्दजी माहाराजके

जिसमतका खंडन करताहे सोमत तिसके समयमें प्रकट विद्यमान होता है और ग्रन्थकारके मतका विरोधी होता है एस लिखताहे "

माहात्मजनी ! देखो !! हम लोग जो नविन होते तो मुर्तिपुजकोंके आचार्योंके बनाये हुवे ग्रंथ प्रकर्णोंमें हम लोगोंकि निंदा कहांसे आति लेकिन इस बातका तात्पर्य इतनाही हे के दुसराधरा वर्षी माहा दुष्कालमें मुर्तिपुजकका मत निकला तब हम लोगोंका पुर्ण कल्याण बनाया और इन मिथ्यावादियोंके मतको पुर्ण धक्का पोहचके मलय होनेका समय आन पोहोंचाथा मगर अन्य महात्मायोंका शर्ण ग्रहणकरके मुर्तिपुजकोंने अपना मजब कायम रखा और हम लोगोंकि निंदा करना सुरू करि मुर्तिपुजकोंके लेखसे हि, सिद्ध हुवाके साधु मार्गी धर्म प्राचीन हे और मुर्तिपुजकोंका मत अर्वाचीन (नविन) हे

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

मिथ्यात्व निकन्दन भास्कर

का

प्रथम भाग समाप्त

चक्रवर्ती गजरूप अपने मसमकी हाणी हुई इसवास्ते हरयगेस उक मनकि वास्ती करना चाहिये एसा विचारकरके असली मैन मुनियोंका एसा एमा शासविपाक हमारी कल्पमस कुछ नही छिप सक्ते हे परंतु आत्मार्थी मुनि योंने समपरिणामस परिसह सहन किये लेकिन इश्रोमी राज हुवे के बाद मूर्तीपूजकोंकि मूग मूर्तीपूजकोंकि हठीमेंही सिनगये इस्यादि कारणोसे मूर्तीपु जक लोग साधू मार्गी वर्गको कहेतेहें क इन लोगोंकि उत्पत्ति लुंकाजीसेहे और नविन हे मगर लुंकानानेता मादस्म छिप हुये मांणकु प्रगट किया अर्यात मसमद और धारावर्षी माहा पुष्करके समस आर्य क्षेत्रोमें असली मैन धर्मकि और असली मैन मुनि योंकि नास्ति होगइथी और असली जिनवाणी के उपर ताले लगगयेथ, और मिथ्यातरा तथा अज्ञान रूप अवधार इन आर्य क्षेत्रोमें छारहाथा तब लुंकाजिने मिथ्यात्व तथा अज्ञान रूप अंधरे का विनास करके असली जिन वाणी रुप भावको बाहिर करके असली मैन धर्मको और असली मैन मुनिका प्रगटसमान किये लुंकाजी सिवाय येसा कार्य कदापि नहा होता तो क्या लुंकाजीने असली मैन धर्मको प्रकाशित करनेस क्या असली मैन मुनियोंकी आदि लुंकाजीसे हुइ एसा कदापी नहीं हागा मगर विचार क्याकरे पक्षपुरुषता है, धो अमज्ञान मांगता है, एसे मुर्तीपूजक लोगोंमें असली मैन मुनियोंके गुण सहन न होनेसे निंदा करना सूलकरी और हम लोगोंको नविन ठहराय हे लकिन मुर्तीपूजकोंमें अ- नादिका एक भी नाम निशान नही मिलताहे और इनोके लेखसही ये न्वाट ठहरत है

देखिय ! प्राचीन अर्वाचीन निर्णयके वास्ते मुर्तीपूजकोका लेख क्या छपगा कहेकिहे इस लेखस हमारे प्यारे पाठक गण निपक्षपात हो शाम इसीस अवस्य निर्णय कर लेवेंगे, लेख मिष सुनिय:—

अज्ञान तिमर भास्कर मढ १८० ओली २ दुसरिमे " प्रथपर

मिसमतका खडन करसाहे सामन तिसके समयमें प्रकम विद्यमान होता है और प्रमकरके मतको विराघी होता हे तब सिन्तराह "

माहासयगी ! देखो !! हम लोग मा नविन होते तो मुर्तीपुजकोंके आचार्योंके बनाये हुवे ग्रंथ पकर्णमें हम लोगोंकि निंदा कहासे भाति लकिन इस बातका तात्पर्य इतनाही हे के दुसराभारा वर्षी माहा दुष्काल मुर्तीपुजका मत निकला तब हम लोगोंका पुर्ण अज्ञान पणाथा और इन मिथ्यावादियोंके मतको पुर्ण पक्ष पोषणके प्रसम होनेका समय भाग पोहोंचाया मगर मन्य मतानुयायोंका शर्ण ग्रहणकरके मुर्तीपुजकोंने अपना मत कायम रखा और हमे लोगोंकि निंदा करना सुरु करि मुर्तीपुजकोंके लेखस हि, सिद्ध हुवाके साधु मार्गी धर्म प्राचीन हे और मुर्तीपुजकोंका मत अर्वाचीन (नविन) हे

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

मिथ्यात्व निकन्दन भास्कर

का

प्रथम भाग समाप्त

मिथ्यात्व निकन्दन भास्कर

का

द्वितिय भाग प्रारंभते.

वर्ग ६ टा.

—ढूंढिये जैनि है या नहीं —

दे खिय ! हमने कितनेक ग्रन्थोंमें अवलोकन किया है तथा अति सयेगी पितांम्बरी वगैरोंके मुखसेभि सुनाहै के श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी (ढूंढिये) वग जैनी नही है कितनि बडी आश्चर्यकि बात है के हम कुछ बयान नही करसक्तेहे लेकिन किंचीत मात्र खुलासा करना चाहते हैं—

जैन कोन हे और कोन नही हे इसका नीर्णय देखिये ! ढूंढिये जैनी नही है ऐसा मुर्तिपुजकोंका लेख नीचमुजब :—

रिमम मतहन ढूंढिय प्र २ औ २ मी ढूंढिय लोग अपने आपको जैनके नामसे जाहिर करते है लेकिन जैनकी किताबोंमे ये लोग बिल्कुल गिरायाक है

ढूंढक हृदय नेत्रांजन पत्रातक प्रष्ठ १२९ ओली ३— यथा यम जैन नहि मत धारमर्पय पक्षयाहे अमने आपणम सार्थका सकजा कान्ही पराणहे मोभी मुगस धर्म सकरा, जिसमे पारोगाय हैं ॥ सी॰ ॥ ११ ॥

इत्यादि ऐसे अनेक ग्रन्थोंमे उपरोक्त क्रमानुसार लगे हम लोगोंप

दरन किये हुवे है सकीन खूद मूर्तिपुजकोके लेखोसे हमारे प्यारे पाठक गण निर्णय करेंगे, के, जैनी कान्हे या कोन नहि है सो निर्णय कर लेवम वास्ते ! निर्णयके वास्ते मूर्तीपूजकोके किंचित मात्र लेख दरज करते हे

इ स १९०८ फरवरी ता० १ आत्मानन्द जैन पत्रिकाका पुस्तक ९ का अंक ३ रेका लेख निचे मुजब म १९

—दिक्षा प्रकरण —

" घासीराम और मुगलराम दो ढुंढीये साधुवोके भ्रमजालमे मवेसका सविस्तर वृतांत हम गतांकमें लिख चुके है अब उनकी शुद्धि ओर दीक्षाका समाचार सैसेसे लिखते ह "

"पूर्वोक्त पापो दयसे इनको धो २ अशुभी मिथ्याये कल्पित मतमे पडनि पडीथी उनके शुधीके निमित्त गंगा स्नानार्थ जाना जरुरी था अब सर्वोकि सम्मतिसे यह गंगाजी भजे गये वहां के पंडोकी वहीयामे अपने गुरु दादागुरु आदिका नाम और आगमनका कारण लिखवा पवित्रविधि जल्मे स्नान कर पविम हो अत्यंत हर्षसे तारीख १६ जनवारी को अमृत सरमे वापीस आये " देखिये। प्रगट जैन पितांबरी मुर्तीपुजकोका मिथ्यात्व ये ग्रंथ संवत १९६९ सालमे प्रगट करनेमे आया था लेकिन इस ग्रंथका उत्तर आज तक मिला नही अगर मुर्तीपुजक सच्चे जैनी हाते तो उत्तर द न परतु उक्त ग्रंथ हमारे प्यारे सज्जनोका हमेसा यादगिरीके वास्ते इस ग्रंथ म दाखिल किया है

॥ श्री वीतरागायनम ॥
॥ श्री मंगला चरण ॥

श्लोक

अद्रोह सर्व भूताना, कर्मणा मनसा गिरा ॥
अनुग्रहश्च दानंच, सतां धर्म सनातन ॥१॥

अन्य मतके विर्योका विजय जैन श्वेताम्बरी मुर्त्तीपुजकोंके विर्योका पराजय गंगा माताकी जय, जिसके स्नान सेवा करनेसे जैन मुर्त्तीपुजक पवित्र होते हैं और उन पुरुर्षोका कल्याणार्थ कार्यभी सिद्ध होता हैं देखिये ' आत्मानंद जैन पत्रिका १० स० १९०८के अंक २ १ वाचनसे हमको कुतुहल माम हुवा के अंक २मे मोहतसी कपोल कल्पित वाते दरज की हैं परंतु ईण वार्तोसे हमारा कुछ जरर नही हैं किन्तु जो पुरुष असली मतस और मयमसे भ्रष्ट होयेगा, वो पुरुष असली धर्मकी या असली मुनिकि अवश्य निंदा करेगा, और मिथ्या र्लांछन ल्गायगा, फिर कपोल कल्पित मतको अंगिकार करके असय भी साधवोंका गुरु धारण करेगा, इस वातका कुछ आश्चर्य नही है (मिसाल) उत्तम कुलका जा कुलर्हीन होता हैं वो वेश्याका मकान ताकती है

अंक ३रे के लेखस यह लिखते है दिक्षा प्रकरण "घासिराम और कुशलराम" दो ढुंढिये साधुओंके अद्यवरसमे अनेकश्रम सविस्तर वर्तांत हम गताकमे लिख चुके है अब उनकी शुद्धि और दिक्षाका समाचार संक्षेपसे लिखते है,

पूर्व कृत पापोदयसे इनकी जो २ अशुची क्रियाये कल्पित मत मे करणी पडी थी, उनकी शुद्धि के निमित गंगा स्नानार्थ जाना जरूरी था, अब सर्वकी सम्मतीसे वह गंगाजी भेजे गये वहांके पांडोंकी वहीयोंमे अपने गुरुदादा गुरु आदिका नाम और आगमनका कारण

दाम किये हुवे है लेकीन खुद मूर्तिपुजकोके लेखोस हमारे प्यार पाठक गण निर्णय करेंगे, के, भैनी कोनहै या कोन नहि है सो निर्णय कर लेवमे वास्ते। निर्णयके वास्त मूर्तीपूजकोके किंचित मात्र लेख दरज करत ह

ई स १९०८ फरवरी ता० ? आत्मानंद जैन पत्रिकाका पुस्तक ९ वा अंक १ रेका लेख निच मुजब प्र० १९

—दिक्षा प्रकरण —

" भसीराम और गुलाबराम दो ढुंढीये साधुयोके भन्तसमे प्रवेशका सविस्तर वृतांत हम गतांकमे लिख चुके है अब उनकी शुद्धि ओर दीक्षाका समाचार संक्षेपसे लिखते हैं "

"पूर्वक्त पापो दयसे इनको जो २ अशुभी क्रियाय करनिउ भतमे करनि पडीथी उनके शुधीके निमित्त गंगा स्नानाथ माना जरुरी था अब सर्वकि सम्मतिसे यह गंगाजी मंगे गय वहां के पंडोकी बहियाम अपने गुरु दादागुरु आदिका नाम और आगमनका कारण लिखवा पवित्रविध जलस स्नान कर पविम हो अत्यंत हर्षसे तारीख १६ जनवारी को अमृत सरमे वापीस आये" देखिये! प्रगट जैन पितांबरी मुर्तीपुजकोका मिथ्यात ये ग्रंथ संमत १९६९ सालमे प्रगट करनेमे आया था लेकिन इस ग्रंथका उत्तर आज तक मिला नहीं अगर मुर्तीपुजक सच्च जैनी हावे तो उत्तर दे त परंतु उक्त ग्रंथ हमारे प्यारे सज्जनोको हमेसा यादगिरीके वास्ते इस ग्रंथ मे दाखिल किया है

॥ श्री वीतरागायनम ॥
॥ श्री मंगला चरण ॥

श्लोक

अद्रोह सर्व भूताना, कर्मणा मनसा गिरा ॥
अनुग्रहश्च दानंच, सता धर्म सनातन ॥१॥

अन्य मतके तिर्थोंका विजय जैन श्वेताम्बरी मुर्तीपुजकोंके तिर्थोंका पराजय गंगा माताकी जय, जिसके स्नान सेवा करनेसे जैन मुर्तीपुजक पवित्र होते हैं और उन पुरुषोंका कल्याणार्थ कार्यभी सिद्ध होता है देखिये ' आत्मानन्द जैन पत्रिका ' स० १९०८के अंक १ ३ वाचनसे हमको कुतुहल मास हुवा के अंक २मे चारहतसी कपोल क स्पित बाते दरज की हैं परन्तु इन बातोंसे हमारकु कुछ जरूर नही हैं किंतु जो पुरुष असली मतस और संयमस भ्रष्ट होयेगा, वो पुरुष भ सच्चे धर्मकी या असली मुनिकि अवश्य निंदा करेगा, और मिथ्या स्रंछन लगावेगा, फिर कपोल कल्पित मतका अंगिकार करके अर्थ भी साधवोंका गुरु धारण करेगा, इस बातका कुछ आश्चर्य नहीं है (मिसाल) उत्तम कुम्भमें भी कुम्हीन होती है वा पन्नाको मकान ताकती है

अंक १२ के लेखस यह लिखते है दिशा प्रकरण "धार्मिराम और शुगलराम" दो ढुंढिये मावुओंके अमृतसम मन्तम्य मविस्तार वृतांत हम गवाकम लिख चुके है अब उनकी शुद्धि और दिपाका समाचार संक्षेपमे लिखते हैं,

पुर्व कृत पापादयसे इनकी जो २ अमुर्ती लिखत करितम मत मे फरणी पड़ी थी, उनकी शुद्धि के निमित्त गंग स्नानार्थ जाना जरूरी था, अब सर्वकी सम्मतीम वा संमार्थी मत मत यतीके पाटोधी १ पर्यायेमे अपने गुरुदादा गुरु आदिका मान और अपमानका कारण

मिलाया पवित्र तीर्थ जलसे स्नान करा पवित्र हो, अरथत इससे तारीख १६ जनवरीके अनन्तरसमे वापीस आये, ”

देखिये ! मन्त्रस वो मुर्तीपुजकोंका आचार्य वितोम्बरी आत्माराम संवगी हुवा है और उसे इन लोगोने सुरी पद दिया है, वो पुरुषका वाविम संप्रदायके पंजाबी जैन महा मुनियोंने सयमसे विपरित (साय) मतमुक्त देखके संप्रदायके बाहर निकाल दिया था फिर इन लगोने उस अंगिकार किया था उस आत्मारामका कोनसे अन्य मतोके ति र्थोपर या गुरु नानकके द्वारेपर भेजकर पवित्र किया और कितने मन्नमार्जन किये गये, और कोनसे अन्य मतके रीतिसे उसका शरीर पवित्र किया और कोनवे अन्य मतके तिर्थोसे उसका कल्याणार्थ कार्य सिद्ध हुवा, अगर वो पवित्र नही हुवा होवे वो उसके समप्रायम रिहा रहनवाले पवित्र कैसे होवेगे कदापि नहीं,

वितामम्बरी आत्मारामने जी जो ग्रंथ बनाये हैं उन ग्रंथोंमे अन्य मतके धर्मकू अन्य मतके तिर्थोकू व अन्य मतके देवोंकु व अन्य मतके गुरुको पवित्र नहीं कहा है और कइ ग्रंथोंमे अन्य मतका व अन्य मतके तिर्थोका अन्य मतके देवोंको व अन्य मतके गुरुका अच्छी तरहसे खंडन किया है, परन्तु आत्मानन्द जैन पत्रिका का लख अवलोकन करनेसे इनका निश्चय हुवा के आत्मारामका लिखना माफ नाय है,

पिताम्बरी वल्लभ विजय आदि मुर्तीपुजक लोग समुजा, गिर नार अयाय, समेत शिखर आदि तिर्थोंका कल्याणके कर्ता मासक नाम तरण तारण परम पवित्र मानते है, तो इन तिर्थोसे धर्माराम गुलाराम व दाना पुरुष भी पवित्र न हो सके, और उन दोनोका कल्याण कार्य भी सिद्ध न होनेसे उनके गयाके स्नानसे पवित्र

करना पडा, हाय अपसोस ! सो अब सेत्रुंजा गिरनार आदी तिर्थोका माननेसे या सेवा पुजा प्रतिष्टा करनेस भव्य जीवोंकी पवित्रता और कल्याणार्थ कार्य कैसा सिद्ध होयगा, इसपरसे हमकु पुर्ण निश्चय हुवाके जैन मुर्तीपुजकोंके सर्वस्व तिर्थ अपवित्र अयोग्य और अधोगती क दाता है

पितान्बरी वल्लभ विजय आदि मुर्तीपुजक लोग जो सेत्रुंजा गिरनारादि तिर्थोको परम पवित्र कल्याणके कर्ता मोक्षक दाता तरण तारण उत्तमोत्तम मानते तो अन्य दर्शनीक तिर्थोका शरण ग्रहण नहीं करते, परतु मुर्तीपुजकोंने सेत्रुंजादि तिर्थोको अपवित्र अधोगतीके दा ता कुछ योग्य न समजता अन्य दर्शनीका तिर्थ गंगाजीका शरण ग्रहण किया है, और पासीराम गुमानरामको गंगाजीके जलसे पवित्र करता ये ह, हाय अपसोस ! हमकु आश्चर्य प्राप्त हुवाके खुद अन्य मतके पुराणादी सिद्धांतोंमे कैसा अद्भुत अधिकार फर्मायित किया है क अवलोकन कर्ताको पुर्ण आनंद होता है.

माहा भारत का अधिकार

(श्लोक)

मातात्र सर्व भुतेषु, मनोवा काय निग्रहः ॥
पापस्थानक कषायाणां, निग्रहेण शुचिर्भवेत ॥१॥

अर्थ-सर्व जीवकी दया करना, मन वचन काया इस तिन जोग क विकारोंका विनाश करना, कषायादि सर्व पाप स्थानकका परि त्याग करना इतनी बातां जिल्नेसे य चिदानंद पवित्र होता है

भावार्थः– धर्मसे या संयमसे भ्रष्ट हुवा जो पुरुष सर्वथा प्रकार जीवकी दृश्य अंगिकार करगा, और मन वचन काया ये तीन योगके विभवोंका विनाश करेगा, कषायादि सर्व प्रकारके पाप स्थानकका परित्याग करेगा, वो पुरुष परम पवित्र होवेगा परंतु केवल तरक पाणी मनके उपर डालनेसे कभी पवित्र नही होवेगा, जैसाकी जलचर प्राणी सदैव जलमे निमग्न होते हुवे भी कभी उससे कोई पवित्र हुवा नही करता देखो ! आदित्य पुराणके विषये जो तिर्थ कहे हे उसी तिर्थोंसे शुद्ध और पवित्र होता हे,

(श्लोक)

सत्यं तिर्थं तपस्तीर्थं, तिर्थं मिंद्रिय निग्रह ॥
सर्व भुतदया तिर्थं, मेतत्पार्थ मुदाहृतम् ॥१॥

अर्थः– सत्य, तप, ईंद्रियोका निग्रह, सर्व जीवकी दया इत्यादि तिर्थोंसे आदमी परम पवित्र होता हैं

भावार्थः– धर्मसे या संयमसे भ्रष्ट हुवा पुरुष ईन उपयुक्त तिर्थोंसे पवित्र होवेगा लेकिन दुसरे तिर्थसे नही होवेगा, सत्यसे तथा तपस तथा ईंद्रियोंका विकार जीत लेनेसे तथा सर्व जीवोकी दया करणेसे पवित्रता व शुद्धता होती हे, लेकिन गंगादी तिर्थो के स्नान करनसे पवित्र नही होता हैं ये सोचनेकी जगा हे के घासीराम और जुगलराम ये दो पुरुष धर्मसे और संयमसे भ्रष्ट हुवे हे वो गंगोके स्नानसे कैसे पवित्र हुवे होगे, कारण धर्मसे और संयमसे जो पुरुष भ्रष्ट होता हे, उस पुरुषका हृदयकमल पुर्ण रीतिसे अपवित्र और मलीन होता हैं,

है, और उसका बदन भी विकारोंकी शक्तिसे दुराचार क्योंकि विषे रममाण होताहै. अब देखिये ! अंतःकरण जहांतक पवित्र और निर्मल नहीं हुवा वहांतक वो पुरुषभी पवित्र और निर्मल नहीं हुवा तब बदनके उपर चाहे जितना पाणी डाल लेवे या नदीमेंहि रात्रदिवस वास करलें ताभी अंतःकरणका मलीन पुरुष कभी पवित्र नहीं होवेगा इस न्यायसे घासीराम व सुगनराम सिर्फ गंगाका स्नान करनेसे शुद्धान्तःकरणाभावसे कुछ पवित्र नहीं हुये, यह अमदिनहि है

जैन धर्मसे भ्रष्टहुवा पुरुष अन्य धर्मसे कभी शुद्ध और पवित्र नहीं होवेगा प्रभास पुराणमे देखिये ! क्या उत्तम अधिकार लिखा है

॥ श्लोक ॥

अन्यलिंगपरिभ्रष्टो, जैन लिंगेन सिध्यति ।
जैनलिंगपरिभ्रष्टा वज्रलेपा भविष्यति ॥ १ ॥

अर्थ —अन्य लिंगसे भ्रष्ट हुये जो पुरुष है वो जैन लिंगसे सिद्ध होवेंगे परंतु जैन लिंगसे जो पुरुष भ्रष्ट हुवे है उसे वज्रलेपकी (महाक्रिया) प्राप्ति होवेगा

भावार्थ—अन्य धर्मसे और अन्य संयमसे भ्रष्ट हुवा पुरुष जैन धर्मका और जैन संयमका शरण ग्रहण करगाता शुद्ध पवित्र होकर सिद्ध पद पावेगा परंतु जैन धर्मसे और जैन संयमसे भ्रष्ट हुवा पुरुष अन्य धर्म, अन्य देव, अन्य गुरु और अन्य संयमसे और अन्य नदिसे उसकी पवित्रता और सिद्धता कदापि नहीं होवेगी इसीसे सवाल होणेकी जगा है के घासीराम और सुगनराम ये दो इसम जैन धर्मसे और जैन संयमसे भ्रष्ट हुये है सो ये कैसे गंगाजीके स्नानसे पवित्र हुये है इस

पासका पुस्तक जैनके एकादश अंगादि प्राचीन असली सिद्धांतके मूळ पाठसे आत्मानंद जैन पत्रिका वालेने न किया, इसपरसे इनका पूर्ण निश्चय हुवाके य दोई इसम इसवक्त शुद्धाशुद्धकरणके अभावस अपवित्रहि है.

घासीराम ओर गुगनराम ईन दो ईसमोकु गंगाजीके स्नानार्थ भजनेकी सम्मती देनेवाले, पवित्र समजणे वाले ओर इस बातकु मान्य पण जाणने वाले ईन सर्व जैन मूर्ती पुजकोंको जैनके एकादश अंगादि प्राचीन सिद्धांतोक आधारसे तथा मूर्ति पुजकोंके महा पंडित विद्वान आगे जो आचार्य हुवे है उन पुरुषोंने टिकादि ग्रंथोकी रचना किवी है, उन ग्रंथोके आधारसेहि उक्त मुर्तीपुजकोंको हम ईस ठिकाणेपर मन्य मती, मिथ्यात्वी, हिंसाधर्मी, पाखंडी, अशुद्ध धर्मी इत्यादि नाम आपने तो अयोग्य नहीं होगा

घासीराम ओर गुगनराम ये दोई इसम गंगाजीके पत्राकी वहीयोंमें आपके गुरु, दादागुरुका नाम ओर आगमनका कारण लिख आय (परंतु पंजाबी जैन मुनियोंने दुराचारके कारणसे उक्त इसमोको संस्थायके बाहेर निकालेहे वो कारण वहियोमें लिखवाया या नही ईसका हमकु पुर्ण संदेह रहा है, य कारण लिखवाना अवश्यथा) अब ये दो ईसम दरसाल गंगाजी जाके आपने गुरु या दादागुरुका श्राद्ध करके पिंड करावेंगे ओर वो खुद गंगाजलसे हमेस पवित्र होवेंगे जैन श्वेतांबरी मुर्तीपुजक संवेगी साधू लोगोंका एसाहि आचार होवेगा, एसीहि परंपरा होवेगा ओर ऐसाहि व्यवहार होवेगा तथा उनोंके तिर्थकरोंने, तथा उनके आचार्योंने सिद्धांतोंमे व ग्रंथोंमे ऐसा लेख दरज किया होवेगा, ? धिक्कार है उन पुरुषोंकु के जैन धर्म विरुद्ध मिथ्या आचरण करते हुवे भी वोभी एक जैन कहलाते है! किन्तु ऐसे दुरभिमा-

नी पुरुष कदापि नही हो सकते

पिताम्बरी पद्म विजय संवेगी आदि मुर्तीपुजक लोग कपोल कल्पित गाल बजाते है, के जैनमे साधु धर्म हमारा है, और असली साधु हम है, एसा कहते हैं लेकिन जैनके साधु और असली मुनि या श्रावक लोग है वो सर्वंम प्रकार कितने ही दुःसह कष्टादिककी प्राप्ती होवे तो भी प्रत्यक्ष मरणकी भी बिलकुल पर्वा न करके अन्य मतके धर्मका, देवका, गुरुका, व तिर्थका शरण ग्रहण कदापि नहीं करते और इनसे पवित्रता होना भी नही मानेंगे मुनि श्री गजसुकमालजी तथा श्रावक कार्तीक सेठ व कामदेववत समजना अन्य मतके धर्मका देवका, गुरुका और तिर्थका शरण ग्रहण करणा और पवित्र होना ऐसा मानना ये नवीन और नकली मतका लांछन हैं लेकिन असली जैन धर्मका लांछन नही है, जैन मुर्तीपुजकोंको कुछ शरम प्राप्त न हुइ के जैनके नामको लांछन लगाया धिक्कार ! धिक्कार !! धिक्कार !!! हो

ये बात किस वजे पर हुइ है के कोई मनुष्यने इच्छापुर्वक भोजन करके पापीस वमन किया उसे कोन अंगिकार करता हैं, और उसे क्या पदवी दी जाती है, इस मिसाल पजाबी साधुकी झुटी पत्तर साधर्म वमन की हुइ वस्तु अंगिकार करते है, लेकिन ये नही समजते हैं के झुटी पत्तरावल कोन उठाता हैं और उसे क्या पदवी मिलती है इसका विचार विद्वान पुरुषोंने निःपक्षपात बुद्धिसे करना चाहिये

स्तवन

राग—भैरवीर भुग अभागणी म्हारा व देवी
मन्यो हुआर इण सागमे, कोय हलाहल भार सबरे ॥

मान्य है और इस "सूरी मंत्र" को कोनस तिर्थंकरोंने सर्वोत्तम और अनादि मान्य किया है इस बातका खुलासा मुर्तीपुजकोंने भी उनके शा-स्त्रि असली सिद्धांतोंके मुह पाठसे करना चाहिये

देखिये। अब कोन है या कोन नही है, इस निर्णयके वास्ते किंचित मात्र मुर्तीपुजकोंके भ्रम दरज किये है इन सबों परसे हमारे प्यारे पाठक वर्गने मेरा ख्यालके साथ निर्णय करना चाहिये के मुर्तिपुजकोंके कथोंसे मुर्तीपुजक लोग जैनी नही है ऐसे ठहरते है या नही ठहरते है

—:वर्ग ७ वा:—

ढुंढक नामकी उत्पती

देखिये। महाशयजी। जैनके असली मुनियोंका नाम ढुंढक नही है परंतु विरोध पक्षोंने विरोधके कारणसे ढुंढक ऐसा नाम दिया है (तर्क) इस बा-त सुमारा कथन (कहना) सत्य प्रमाणसे समझि (समाधान) देखो। विरो-ध पक्षोंके लेखानुसार सिद्ध करके दिखाते है,

अज्ञान तिमर भास्कर पृष्ठ २० लैन ५ इनके रहनेका मकान फूटा भग्न क्षय हुवा था इस वास्ते लोकोंने ढुंढक नाम दिया है *

* मेवाडमें हाल तक एसा ही विरोध बना हुवा है असली जैन मुनियोंको उतरनेको मकान और आहार (भोजन) मिलना बहोत मुश्कल है

समीक्षा— पाठक गण मुर्तीपुजकोने अपना एब छिपाया है लेकिन हम जाहिर करते है देखो, देश गुजरातके शहरमें हाणेम जैनके अच्छी मुनि राजोका पधारणा हुवा, लेकिन यद्यपि मुर्तिपुजकाका अतिसय जोर था तब यति सवगी पितामरी लोगान एसा पग्र बदोबस्त कियाके उक्त मुनियोको उतरनेको कोइन जगा देना नही और अहार (पानन) बगैर देना नही और शहरमें रहन भी देना नही तब मुनि विहार कर गये शहरके बाहेर गयके बाद य समर एक कुमारको माल्म हुइ वो कुंमार भागता भा गता मुनियोंके पास गया पाव पकडके कहन लगा के आप एसी धुपमे मत माबो, तुमका बहात दुख होवगा तब मुनि कुमारके वहां गये उस कुमारके गिरा हुवा एक मकान था वहांपे मुनियोंका उतारा दिया य खबर विराध पक्षोका मिलि तब वो लोग मुनियोके पास गये और गैर बकने लग और पातरे फोड डाले, य बहोत त्रास देन लग परंतु मुनि ननान मौन धारण करी तब वहांके सद गृहस्थोने उन लोगोको अपमान करके वहांसे निकल दिये वो लोग पाविस मात मात करने लगे के य लोग बुरुम उतर ह इसवास्त आज रोजस इन लोगोंको ढुंढक पुकारगे नाबो य नाम विक्रम संवत १५७१ के मालम विरोध पक्षोका दिया हुवा प्रसिद्ध हुवा

देखो ! विराध पक्षोके केगम पूण सिद्ध हुवाके अपना जैन मुनिया का नाम ढुंढक नही है परंतु इस नामम हम लोग नाराज नही है इसका कारण ये है की देखिय ! ढुंढन शब्द कहा या सोधनेवाला कहा, या हेरनेवाला कहा, या गवेसणा करनेवाला कहा, या तलास करनेवाला कहा या अनुसंधान करनेवाला कहो, या खिजमत्पा करनेवाला कहो, या मार्ग करनेवाला कहो, इत्यादि शब्दोका भावार्थ एक है परंतु अन्यथा नही है इस लिए हम इन शब्दोका मतलब प्रमाणस सिद्ध करके दिखाते है

वीरपरमात्मा वीतरागी पुरुषोंके फरमाय हुए जैनके पञ्चदश अगादि प्राचीन ताड पत्रोंमें छीलीत अपकी सिद्धांताके मुळ पाटस आम सभामें दुर करके विस्तर अगर भ्रम दुर करके नहि दीखलावगा तो पच परमेष्ठी एन्के अज्ञावे विरोधक होके अघोगत गामी होवगा ओर प्रसिद्धमें मिथ्या वादि ठहरगा आगे जैनके माहात्यागी वैरागी आत्माअर्थी ज्ञानांमानिधि उत्तमोत्तम अमलि मुनि हुए हैं उनमहात्मावाने शल्या द्वार कत्ताको किम दरगा हर्षीम छोड दिया है येह हम कुछ बयान नहिकर सकते हे लकिन हम लोक तुम लोकके पाससे हमारे निम्म लिखीत लेखोकर व तुमार तरफसे जो जैन विरुद्ध लेख छप गये हे उन सब लेखोकर तुम लाकोके पाससे आम सभामे तुमारे पासने सिद्ध करवा लेंगे ये सत्य समजना

वर्ग ८ वा

चैइंय शब्दका निर्णय

खिये ! इस पंचम काळमे इस शुद्ध निर्मल जैन धर्मकी क्रिया जैनके असली सिद्धांतोकी रचना देखकर हमको पुर्ण खेदाश्चर्य प्राप्त होता है, सबब इस पवित्र जैन धर्म मे से कितनेक मथ्थी मत निकलकर अज्ञानताका ओर मिथ्यात्वका ऐसा जबर दस्त गसम्मा मचा दिया है के शुद्धवातका निर्णय करणेमे बहुत पत्थरा आती है मगर वितराग देवा

धिवेर्वोके भवनोंपे रुपाल पहोंचानसे नियत साफ होके समकित शुद्धर्नी रहेती है अतएव 'चेइय' या 'चैत्य' इस सबद ईस वखतमे ईसना गम्मा चठाया है क हम कुछ बयान नहीं कर सकते है मगर अछे भछ मकल वशके अकस्मे ऐसा मगर जाल डाल दिया है के हदसे जादा, कारण 'चेइय' या 'चैत्य' ये शब्द भी जैनके असल्मी और प्राचिन सिद्धांतोंमे उक्त शब्दोको भनेकार्थ अर्थी किया है मगर मुर्तीपुजकोने इस शब्दको एकार्थी किया है किंतु एक अर्थी करके भी भी जैन के असली और प्राचिन सिद्धांतोंके मुताबिक अर्थ नही करते है, सिर्फ 'चइय' या 'चैत्य' इस शब्दका अर्थ एक प्रतिमा करते है, मगर इन लोगोंको ऐसा अर्थ करना भी जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंके आधारसे साफ खोट है, क्योंकि ये लोग ईस बाबत्र पुष्ट करनेके वास्ते सिर्फ "हैमकोष" (चैत्य जीनोकस्तद्विंबं इति हैम) वगैरे की साक्षी देते हैं, लेकिन असल्मी सिद्धांतोंकी साक्षी इन लोगों को ढुंढनेस भी नही मिलती है मगर ख्याल किजीये खुद इन लोगों क घरमे ही खास दो बाते है इन लोगोंक जो आचाय हुये है और उनोंको ये लोग अमर सिंहजी कहते है उनोंने अमर कोष बनाया हैं उसने 'चैत्य' इस शब्दका अर्थ ओर ही किया हैं देखो 'अमर कोष' मृष्ट ९९ श्लोक सातवा

(श्लोक)

चैत्य मायतनं तुल्ये, वाजि शाला तु मन्दुरा ॥
आवेशनं शिल्पि शाला, प्रपा पानीय शालिका ॥७॥

अर्थ:- चैत्य, आयतन, ये दो नाम यज्ञ के है, ये आपसमे तुल्य सिमी है [illegible]

आयतन, भित्ति शाल्म, ये दो नाम छुमार आदिक शिल्पि जनोंक नरके हैं, तथा, पर्नाय शास्त्रिम, ये दो नाम अन्य स्थान अर्थात प्याउ के है ॥७॥

देखो ! इसके अपवना "शब्दस्तोम, माहा, निधि, कोश" ई० १९१८ के छप हुए की नट १६२ को जिसमे चैत्य शब्द के १० दस अर्थ करे हैं

यत

ग्रामादि प्रसिद्ध माहाहसे देवा पास जनानां सभास्य वरौ,
बुद्ध भद आयतने, चिह्न चिन्ह, जन सभायां यज्ञ स्थान,
जनाना विश्राम स्थान, देवस्थान च,

सोचिये ! इस जग "चैत्य" शब्दका अर्थ प्रतिमा एसा नहीं करा है, तो अब विचारना स्थान हे के मानवाले भी 'चैत्य' शब्द का अर्थ एक एकम प्रतिमा एसा नहीं करते है सो स्थियतका तो कैसा करंग जैसा स्थान वैसा अर्थ होयेगा, तो फिर ओपवाल भी "चैत्य" शब्द को अनेक अर्थो मानते है, इसलिये ! श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांताके आधारसे 'चैत्य-पार्चैत्य' इन शब्दाके ज्ञान वगैर अर्थ होते हैं या हम निच खुलासा करके दिखलाते है सो सुज्ञ मन स्थान के साथ पढीये

सूत्र श्री ठाण्यंगजी समवायंगजी मे ज्ञानी पुरुषोंने एसा फरमाया है सो देखो

(गद्य पाठ)

च उम्मीले, चउवीसाए, सित्ययराश, चउवीसे, चरत, ईसत, चउनेत्ता,—

अर्थः— जिस जिस वृक्षोंके निचे चौविस तिर्थकरोंको केवल ज्ञान और केवल दर्शनकी प्राप्ति हुइ है, उन वृक्षोंको ज्ञान वृक्ष कहते है मगर ढुंढिये मुहबंधे लोग 'चेइय' इस शब्दका अर्थ ज्ञान नहीं करते हुवे प्रतिमा करेंगे तो पण तिर्थकरोंके शरिरमे, मस्तकमे, किंवा मुखमे किंवा मंडलक द्वारा, प्रतिमाके अंदर घुसा दी थी जो प्रतिमाके प्रमान से तिर्थंकरोंको ज्ञान प्राप्ति हुई, नहीं नहीं फेर भी नहीं, ये बात कदापि नहीं होने पाती है, सो फेर इस स्थानपे 'चेइय' शब्दका तो अर्थ निश्चय ज्ञानही होवेगा, मगर दुसरा अर्थ कदापि नहीं हो सकता है, फेर भी ढुंढिये 'जिस वक्त असुर कुमारका मालिक चमर इंद्र पहेले देव लोक गया उस वक्त छद्मस्त अरिहंत श्री महावीर स्वामिका शर्ण लेके गया है जिस वक्त चमर इंद्र प्रथम देव लोकमे पहोचा उस वक्त पहेले देव लोकका मालिक शक्र इंद्रने चमर इंद्रको मारनेके वास्ते चमर इंद्रपे वज्र चलाया (फेंका) शक्र इंद्रका वज्र चमर इंद्रपे आने के साथ चमर इंद्र एकदम अतिशय पराक्रम वहांसे अपनी जान लेके अति शिघ्रके साथ भागता हुवा श्री वीर परमात्मा के बिल्कुल नजिक आनेके साथ अपना रूप परावर्तन किया अर्थात बिलकुल छोटा कुंथवे जितना शरिर बनाके श्री महावीर स्वामीजीके चरणारविंदके निचे घुस गया, अपने बचावके वास्ते, मगर जिस वक्त शक्र इंद्रने चमर इंद्रपे वज्र चलाया उस वक्त दिलमे सोचा के चमर इंद्र आपि आ न ही सकता है लेकिन किस जोरसे आया है तब अवधि ज्ञानका उपयोग देनेसे माल्म हुवा के छद्मस्त अरिहंत श्रीवीर वर्द्धमान स्वामीजीकी नेश्राय (ओथस्के सरण लेके) आपे आया है ये बात ज्ञानमे माल्म होने के साथ शक्रेंद्रने बहोत पश्चाताप करके अपने फेंके हुवे वज्रको पक डनेके वास्ते पिछे दवडा शिघ्रगति चालिके साथ जो वज्र श्री महा वीर स्वामीके अतिही निकट [पास] पहोंचनेके साथ वज्रका शक्रेंद्रने हरती

पकड लिया वगैरे वगर ईसके बारमे सुत्र श्री भगवतिजीमे तिन पाठ दाखल किये है सो निचे मुजब,

[पाठ]

नन्नत्थ्य, अरिहंतेवा, अरिहंतचेइ आणिवा भावि अप्पणो अणगारस्सवा, णिसाए उड्ढं, उप्पयंतिजाव, सोहम्मो, कप्पो

भावार्थ – देखिये ! गौतम स्वामीजीने अरिहंत भगवंत श्री महा वीर भगवानको पुछाके अहो भगवान असुर कुमार देवता सो धर्म देव लोक का जाना चाहे तो किसकी नेश्राय लेके जावे तब प्रभुने गौतम स्वामी को श्री मुखसे फरमायाके, अरिहंत अगर छद्मस्त अरिहंत, अगर भावित आत्मा अणगार (जैन मुनि) का सरण लिये सिवाय मा धर्म देव लोक तक नही जा सकता है.

सोचिये । माहेरबान, अगर आपे मुर्तीपुजक ऐसा अर्थ क-रग के अरिहंत, अरिहंतकी प्रतिमा और भावित आत्मा अणगार अगर आप 'चईय' शब्दका अर्थ प्रतिमा करेगे तो छद्मस्त अरिहंतका कहां पर छिपा के रखेगे और प्रतिमाको कोनसे शब्देमत सोदके निकाल, य भी इन लोगोको अवश्य ही बताना पडेगा, खैर अगर आपे मुर्तीपु जक लोक कहेगे चमर इंद्रता सो धर्म लोक प्रतिमाकी नेश्राय लक गया है तो ऐसो ध्यांय साहम सवाल होनेकी जगा है जो चमर इंद्र मा धर्म देवलोक प्रतिमाकी नेश्राय लेके गया ता, फिर जिस वखत मकेन्द्रने चमर इंद्रके उपर बज्र चलाया तब चमर इंद्र प्रतिमाका सरण नहीं लेते हुये वहांसे भाग के प्रभुके चरणाविंदके निचे जाके क्यों घुसा य बात कसी हुई भव्य क्याकि तुमार कथनानुसार तो देव लोकमें धर्म में सासती होना चाहिये,

फेर भी देखो, 'तुमारे आचार्योंकी बनाइ हुई जो " अंबुद्वीप की हकीगत है उसका पुस्तक चुस्त मुर्तीपुजक श्रावक भिमसिंह माणकने मधिप्रसद्दीत छापके प्रसिद्ध की हुई पुस्तकके पेसट ९१मे यथमे लिखा है के वो धर्म देव लोकमे प्रतिमाकी संख्या सतावन क्रोड साठ लाख ५७६०००० प्रतिमा सासवति है सोचिय! सो धर्म देव लोकमे क्रोडा प्रतिमा सासवति होके चमर इंद्रको एक भी प्रतिमा शरण लेनेके वास्ते नहीं मिली तो वो सर्व प्रतिमा उस वख्त यहांसे कहां भागगई थे कुछ खबर नहीं पडती है, सो वास्ते सिद्ध भागक प्रभुक एर्णाबिंदके निचे घुसके आखिरमे प्रभुका ही शरण चमर इंद्रको लेना पडा, मगर चमर इंद्रने प्रतिमा का शरण लिया ये कोइ बजेसे सिद्ध नहीं हो सकता है

देखिये! 'चइय' या चैत्य' इन शब्दोका आत्मी अर्थ भी जैनके असली सिद्धांतोके आधारसे ज्ञान और साधु बाता है इसमें कोइ शक नहीं है,

इसके अलावा फेर भी देखिये! दिगाम्बर जैनाम्नायम श्री कुन्द कुन्दाचार्य हुये है, उन्होने ए पाहुडा ग्रंथकी रचना करी है, इस ग्रंथके चौथे बोध पाहुदकी आठमी नवमी गाथाम स्पष्ट रितिसे 'चेत्य' शब्दका इस अर्थमे प्रयोग किया है,

॥ गाथा, ॥

बुद्धं जं बोहन्तो अप्पाणं चेइयाइ अण्णंच, पंच मह व्वय सुद्धं, णाणमयं जाण चदिहरं ॥८॥

अप्यार्थ संस्कृतः- बुद्धंयत बोधयन आत्मानं चेति अन्यच, पच मह व्रत शुद्धं ज्ञानमय जानीहि चैत्यग्रहम ॥८॥

मगर मुर्तीपूजक लोक उपरोक्त तिनो पाठोंका अर्थ प्रतिमांहि करेंगे क्यों कि ' गुण सिलनाम्य तिर्थंकर किंवा छन्द पच्चस नाम तिर्थंकर " इस मल्के तिर्थंकर गत कालकि चाविसिमें होगय होवेंगे, तथा वर्तमान कालके चोविसीमेंभी हुवे होवेंगे और वो तिर्थंकर सबेमे मुसड गये हावेंगे ता हमारे मूर्तीपूजक भाई लोदके निकालेंगे अगर आकासमे लब्के होवेंगे तो उक्त लोक हिंमामतसे निचे उतारके उनोकी अवश्य पुजा करेंगे इसमे कोई तरेहका शक नहीं हैं मगर क्या कर बिचारे नविन और नकली किंवा खाट मममको हर सुरतसे इत्यादि ग्रहण करके अपनेकि मुक्ति करनाही चाहिये लेकिन खोटे आदमी और खाटे भेस सत्य पुरुषोके किंवा सत्य लेखोंकि स मिल कदापि नहीं होसके है,

देखिये ! श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोके आधारसे तथ दिगाम्बर मतके आधारसे तथा कोशोंके आधारसे चईय- या चैत्य इन शब्दों का अर्थ खूब तोरसे साफ साफ ज्ञान था साधु, ही होताहै मगर इन महा पक्षपाति मनुष्योंके द्रव्य और भाव नेत्र मिथ्यात्व और अज्ञानके नसम गुम होगयहैं सो असली सिद्धांत कारोंके शुध और निर्मल अर्थ नजरम नहीं आवे है

फेरभी दखीये ! मुर्तीपुजक लाग श्री जैनके असली और प्राचीन सिद्धांतोमेसे मूल पाठ निकालना:—

श्री उपासक दशांग सुत्रम आनन्दजी श्रावकके वर्णन में चइयाई के पहले अरिहंत शब्द और लगादिया है, डा हानल साहब कि जिन्दान उक्त सुत्रका इंग्रजीमे अनुवाद किया है उन्होने भी युक्ति ओस सिद्धकिया है कि अरिहंत तथा चइयाई ये दोमा शब्द क्षेपक है उन महाशय का ओमभी अनुवादके दोयम भिस्तको प्रष्ट १९ पंक्ति १४ म नाट ९९ में लिखा हैकि—

The words Cheiyani or arihant Cheiyani which the M S. S here have appeared to be an explanatory interpolation taken over from the commentary which says the objects for reverence may be either Arhanti (or great saint) or cheiyas. If they had been an original portion of the text there can be little doubt but that they would have been Cheiyani.

जिसका भावार्थ है की, शब्द चेइयाई और अरिहंत चेइयाई जो हस्त लिखित पुस्तकोंमे है सो विदित होता है की ये शब्द टिकासे ले के मिला दिये हैं जिस टिकामे लिखा है की पूजनिय या तो अरिहंत (महर्षी) या चैत्य है यदि ये शब्द मूल पुस्तकके होवे तो कुछ सन्देह नहीं की ये शब्द चेइयाणि होता

देखिये ! चैत्य शब्दका अर्थ ज्ञान और साधु होता है इसमें कोई भी पक्षका संदेह नहीं है, विशेष देखना होवे तो "ढूंढी दम्भ दर्पण" देखो—

पापोका पोषपणा को, बजेसे स्विकार नहीं करते, इस लिये यांपे हम द्रव्य हिंसा और भाव हिंसाका खुल्लासा साफ खोरस करते है,

पुर्वपक्षीः— क्यों जी श्रावक वगैरोको भी जैनक असली सिद्धांत वाञ्चना कहां कहा है सो बतलाईये

उत्तरपक्षी— देखिये ! श्री जैनक असली और माचिन सिद्धांतों मे तिन मकारक आगम (सिद्धांत-सुत्र) फरमाये है,

मूलपाठ—आगमे तिविहे-पण्णते-तंजहा-सूत्तागमे अत्थगमे-तदुभयागमे-ये तिन मकारक आगम (सिद्धांत-सुत्र) मभुने भी थी मुख स फरमाये है इनका अर्थ०सुत्ताक०मूलपाठ-अत्था०के पाठका अर्थ-तदु०के० मूल पाठ और अर्थ दोनु सामल इस मकारस तिन मकारक सुत्र है, इन तिनो मकारके सिद्धांतोकी अभ्येयणाकी विधि मुनियाक या श्रावकोके वास्ते एक सरिसि फरमाई है उपास्में लिखीये

। मुल पाठ ।

आगमे-तिविहे-पण्णते-तंजहा-सुत्तागमे-अत्थागम-तदुभयागमे एहवा श्री ज्ञानके विष पे कोई अतिचार स्मगो होय ते आलोउं-जंहा इद्धं १ वच्चामेलियं २ हिणक्खरं ३ अचक्खरं ४ पयहीणं ५ विणय हीण ६ जोगहीण ७ घोसहीण ८ सुट्ठदिन्नं ९ दुट्ठपडिच्छियं १० अकालेक आमज्झामो ११ कालनक ओमज्झामा १२ असज्झाए सज्झाईय १३ सज्झायेन सज्झायं १४ भणतां-गुणतां चितवतां-ने चिंता रता (विचारता) ज्ञान अन ज्ञानवंतकी अशातना किन्ी होय ता तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥इति॥

अब तुम सोचिये ! जो कभी श्रावक लोगोंको सिद्धांत वाचनेकी

मनाइ होती'तो, सुत्रागम ये पाठ ज्ञानकी आस्थ्य नामे नहीं कहते मगर श्रावक लोग सिद्धांत वाचते है, तब तो मुनि माहाराजके बराबर विधि पुर्वक ज्ञानको भाम्बण करते हैं, ईस परस खुब तोरस सिद्ध हुवा के श्रावकोंने सिध्धंत वाचना जो लोग भी जिनके अमम्भी सिद्धात नहीं वाचते है वो लोग दरव हिंसा और भाव हिंसाका स्वरुप नहीं समझ सक्ते है मगर थापि हम किंचित खुलासा करते है.

देखिये ! माहाशयजी ' इस तोरके मुनि होवे उसे भाव हिंसा न ही लगती है,

(पाठ)

याहा रुमाणं समणाए माहणाए संजमेणं तव्वसा ॥
अप्पाणं भावे माणे विहिरती ॥

अर्थ—या वहस्य, स० साधु, मा० छ कायके जीवोको स्वतासे मारे नही, दुसरेके पाससी मरावे नही, और काइ मारता होय उसे अच्छा समजे नही, मन करके वचन करके और काया करके, ऐसे जिस माहात्माने त्रिविध त्रिविध त्याग करके, सं० संजममे, त० तपस्यामे अपनी आत्माको रमम (तल्लीन) करते हुवे विचरते [फिर ते) है, उनोको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा नहीं लगती हैं,

फर भी देखिये ! जो पंच माहा व्रत धारण किये हुवे जो भावित आत्माके माहानुभाव मुनि माहाराज है उन माहात्माओका द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा कोर भी तरेसे लागु नही होती है कारण सर्व प्रकारसे वो त्रोष त्यागि है, अब आपे पुर्वोपुजकोंके प्रयासे पंच माहा व्रतोका खुलासा करते है,

जैन संप्रदाय शिक्षा– पृष्ठ १९१ लेन १६मी " उनमेसे प्रथम माहाव्रत यह है का– मन प्रकारक अयात सुक्ष्म और स्थूल किसी जीवका एकेंद्रियसे लेकर पंचेंद्रिय तकको न तो स्वय मन वचन का यासे मार न मरावे और न मारते को भला जाणे "

" दुसरा माहा व्रत यह है की—मन, वचन, और काया, से न तो स्वय झुठ बोले न बोलावे और न तो बोलते हुवे को भला जाणे

" तिसरा माहाव्रत यह है की– मन वचन और कायासे न तो स्वय चोरी कर न करावे और न करते हुवेको भला जाणे "

" चौथा माहा व्रत यह है की– मन, वचन, और कायासे न तो स्वयं मैथुनका सेवन करे, न मैथुनका सेवन करावे और न मैथुनका सेवन करते हुये का भला जाणे "

" तथा– पांचवा माहाव्रत यह है की– मन, वचन, और काया, से न तो स्वय धर्मोप करणके सिवाय परि ग्रहका रखे न उक्त परि ग्रहको रखावे और न रखते हुवे को भला जाणे "

ईन पाच माहाव्रतोंके सिवाय मुनि माहाराज कोई भी पचेस बरताव नही कर सकते है,

समीक्षा– अब देखिये ! अर्थ अनर्थ और धर्म अर्थ य तिनो हा प्रकारसे मुनि माहाराज छ काय जीवोकी हिंसा स्वयं कर नही और दूसरके पाससे करावे नही और करते हुवेको भला जाणे नही मन वचन और काया करके सोचो। एसे माहानुभाव पुरषोंका द्रव्य और भाव हिंसा स्पर्शु नही होती है

पूर्वपक्षी:— क्यों जी, हिंसा, झिझरा, पानी, मदि नही होती है क्या,

तिर्थंकरोंने खास फरमाये है और चाहे जैसा उत्तम मुनि होवगा तो भी उस हिंसा लगती है सो हम आपको प्रत्यक्ष प्रमागम दिखलाते है

उत्तरपक्षी.— भजी साहेब थोडी अक्कलनकी तस्दी लिजीये

पुर्वपक्षी.— भजी साहेब मुनिये— मुनि माहाराजको नदी उतरनकी और नदी वगैरेमे मुनि तथा माहासतीजी बहेते जाय तो निकालनकी और मुनि माहाराज आहार, निहार, विहार, इत्यादि कारणोके वास्ते गमणा गमन अर्थात हलना चलना, करते है, उसमे मुनिराजको हिंसा लगती हैं और श्रावक लोग स्थानक बनाते है उसमे भी हिंसा होती है वगैरे वगैर देखो ! हिंसा शिवाय धर्म कैसा हुवा भला

उत्तरपक्षी— माहाशयजी ! शोक तक आपको सर्वोत्तम गुणसंयुक्त सत्यधर्मी गुरु नहीं मिले है वास्ते ऐसा भक्ति बांक करते हो— सबब कपोल कल्पित मतधर्मी गुरु के फांसेमे पडे हो यत्र क्वचित्‌—स्त्र—पुरु— भगवानके कोण्डीक शास्त्र चमत्कैया, जीव विघातक, धर्म घातक, इंद्रि पोषण, ज्ञ भ्रमकर्त्ता, मार्गभूरंदर, विरागद्वषी नेत्रक, मेत्रक, मैत्रपुरीभी, एसे दुर्गुणा संकृत धर्म विरुद्ध गुरुवोंसे भसकी सिद्धांतोका असली रहस मालम नहा होता हैं. इसलिये नेत्रोंको बंध करके कांफ मारते हुवे भाजते हो

पुर्वपक्षी:—भजी साहेब ! भाय मेहरबानगीके योडा खुलासा करनकी तस्दी लिजीये

उत्तर पक्षी—देखिये ! माहाशयजी ! विश्वपरमेके तिर्थंकर भगवान एकसरिखी निर्दोष वाणी प्रकाशा करते है मगर सावद्य वाणी प्रकाशते नही है; देखिये ! श्रमणी पुरुषोने तो ऐसा फरमाया है हे साधु- महीनेम २ दा वारा महिनेमें तीन १ उपरांत नदी उतरना नहीं- नदिमें महासती बहेती जाय तो बहेने देना नही ऐसे अनेक कार्य समझेगा कहिये, आपे तिर्थंक-

राकी कानसी रजाहूद फरमी वसो। मद्दा वगैर मुनिमाहाराज उत्तर दे एस कार्योंका जा कार वस्त मुनि माहाराजको जा काम पड़ताह तो उसका मुनि माहाराज प्रायश्चित (दंड) लेते है; और मुनी माहाराज आहार विहारके वास्ते गमणा गमन अथात हलन चलन करते है एस कार्य किसके बाद इर्यावहिका प्रति क्रमण करके बादमें प्रायश्चित (दंड) लेते है और अपनि आत्माकी शुद्धता करते है किंतु दस वैकालिकके चौथ अध्यन म त्यागी पुरुषोंके वास्ते ज्ञानी पुरुषोन क्या फरमायम कियाहै सो वस्तो'

गाथा

जयंचर जयंचिट्ठे, ज्यमासे जयंसए ॥ जयंभुजतो
भासंतो, पावकम्मं न बधइ ॥८॥

अर्थः—यतनासे चलते, यतनास खडे रहते, यतनासे बैठते, यतनास सोते, यतनास आहार करते, और यतनास बोलते, इत्यादि कार्य यतनासे करते हुए साधुको पाप कर्म नहीं बंधता है ॥८॥

जिन पुरुषोंने, तिन करणे, तिन योगेसे अथात नव कोटिसे, सावज मार्गके अर्थात सावज कार्योंके त्याग कियेहै वो पुरुष यतना पूर्वक कार्य करते हुवेको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा नहीं लगती है कारण वो पुरुष समारंभ सर्व कार्योंसे किंवा छकायजीवोंके आरंभ समारंभसे सर्वथा प्रकार निवृत्तमान होगये है इसलिये

देखिये श्रावक ठाम स्थानक कराते है मगर स्थानक कराते वक्त छकायजीवोंका आरंभ समारंभ जो होता है उसका वो लोग प्रायश्चित (दंड) लेके अपनी आत्माको शुध करते है

इसलिये ! द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा ए दोनु भाव स्वयस्मन कर नहीं और दुसरके पाससे सेवन करवाने नही, और सेवन करवाको भला माणते भी नहीं, मनकरके, वचन करके, और काया करके ऐसी सर्वोत्तम, निर्वद्य और शुभ क्रियाके करन वाले माहानुभाव सब त्यागी पुरुषोंका द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा कोईभी वगत स्मगूनहीं होती है

इसलिये ! मूर्तिपूजक लोग, मंदिरकरवाते है; प्रतिमा स्थापित करते है प्रतिष्ठा करते है होमादिक करते है, सचित्त, फल, फूल, पत्र वगैरे तुड वाके मगवाते हैं, तथा स्वयंभी तोडके लाते है, और प्रतिमाको चढाते है, धूप करते है, दीप करते हैं, स्नात्राई करते है, रात्रीका जागरण करते हैं, पुस्तक पूजा करते है, गुरुकि भव भक्ती पूजा करते है, प्रतिमाकी पूजा करते हैं, गाजे बाजे करते है, संघ निकालके विषे यात्रा करते है, इत्यादि कारणो- के वास्ते छकायकी हिंसा सयुक्त, धर्म निमित्त सावद्य करणी करते है, और फरभी कहते है के हमको किंचित द्रव्य हिंसा लगती है मगर भाव हिंसा नहीं लगती है, सबब हमारे परिणाम प्रभुकि भक्तिमें शुभ हैं इसलिये हमको भाव हिंसा नहीं लगति हैं, एसा हमेस अनुमान करते है, ये कहेना इन लोगोंका साफ खोटा हैं क्योंकि प्रभूने एसी सावद्य भक्ति करनेके वास्ते कोईभी सिद्धांतमे फरमायस नही किया है और अर्थे, अनर्थे तथा धर्म अर्थे छकायकि हिंसा करने वा कराने वाले और करतेको भला मानने वालेका परिणाम शुभ हैं ऐसाभी प्रभुने कोई सिद्धांतमें फरमायश नही कियाहै जबभी जैनके आगमि और प्राचीन सिद्धांतोमे ये अधिकार नहीं हैं तो इस मिथ्या वादियोंका कथन सत्य कैसा समजनेमे आवगा कदापि नहीं इसलिये ! अर्थे अनर्थे और धर्म अर्थे छ काय जीवोंकी हिंसा स्वयं करे और दुसरके पाससे कराय और छ काय जीवोंकी हिंसा करनेवालेको भला समज इस विनो इसमोंके परिणाम सर्वदा मलिन रहते हैं अगर मुर्तिपूजक लोग झोर शक करके के हमारे परिणाम, छ काय जीवोंके प्राण घात करनेके नहीं

है तब हम मुर्तीपुजकोंको पुछेगे के अहो भाइ हिंसा सिवाय तो धर्म की प्राप्ति नही होती है एसा तुम लोगोंका साफ तोरस लिखना और कहना है तब तुम लोग छ काय जीवोंकी यतना किस तोरस करते हो सो दिल लाइये थोडा सोचिये ! जैसा किया कर्म करेगा वैसा परिणाम आवेगा जैसा परिणाम होवेगे वैसा कर्मोका बंधन होवेगा इसम कोइ तरेका फर्क समजना नहीं कारण तुम लोग जो धर्म करणी करते हो सो साफ उमेदवारीके पुण मनसे युक्त पुर्ण प्रेम युक्त धर्म बुध्धिपणेस और उत्कृष्ट भाव भावसे धर्म करणी करते हो और तुम लोग धर्मके वास्ते छकाय जीवोंके प्राण घात करते हो और तुम लोग हिंसा धर्म सेवन करनेवाले का माहान लाभ भी बतलाते हो तो फर तुम लोगोंको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा क्यों नहीं लागु होना चाहिये अवश्य मूर्तीपुजक लोगोंको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा भी जैनके असली और माचिन सिद्धांतोके आधारसे निश्चय लागु होती है

समीक्ष— देखिये ! मुर्तीपुजक लोग धर्मके वास्ते छ काय जीवोंकी प्राणघात करते हैं मगर द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा का कलंक दूर करने के वास्ते कैसा जबर दस्त इलाज किया है के कुछ बयान करनेका स्थान नहीं है देखो ! श्री जैनके माहानुभाव असली मुनि माहाराज आहार निहार विहार वगैरेके वास्ते हलन चलन करते है, नदी वगैर उतरते हैं तब हिंसा होती है, तो हिंसामे धर्म हुवाके नहीं और श्रावक लोग धर्म स्थान करवाते है, उसमे हिंसा होती है तो हिंसा मे धर्म हुवाके नहीं, किंतु हिंसा सिवाय धर्मभी नहीं होता है यारो ! मुर्तीपुजकोंका कैसा उमदा उपदेश है, मगर हमारे वाम मित्र मुर्तीपुजक लोग श्री जैनके मर्मर्म सिद्धांतोका रहस्य समजनेके वास्ते हम अपने किंचित खुलासा करना चाहते है

देखिये ! श्री जैनके सद्गुरु मुनि माहाराज आहार नेहार विहा

र वगैरेके वास्ते हलन चलन करते है और नदी वगैरे भी उतरते है, मगर उक्त कार्योंको मुनि माहाराज मन वचन और काया ये तिनु जोगसे अच्छा नही समजते है अर्थात साफ खोटा समजते हैं, और इसके बारेमे सचे दिल्से पश्चाताप करके छ कायके जीवोसे क्षमा अ र्थात माफी मागते है और उक्त कार्योंके बारेमे इर्यावहिका प्रतिक्रमण करके प्रायश्चित लेते है अर्थात दंड लेके अपनी आत्माको शुध (निर्मल) करते हैं

और श्रावक लोग धर्म स्थानक करवाते वखत जो छ काय जी वोंका आरंभ समार होता है, मगर उसका उपरोक्त सरिसा अधिकार समज लेना

देखिये ! द्रव्य हिंसा और भाव हिंसाके बारेमे हमारे मुर्तीपुजक भाइयोंने भी जैनके सदृश्य (आगली) मुनिराजोंका द्रष्टांत लागु किया मगर ये द्रष्टांत कोइ भी बखत यहां लागु नही होता है ये द्रष्टांत लागु नहीं होने की वजे ये है के हमारे बाल मित्र मुर्तीपुजक भाई धर्मके वास्ते छ काय जीवोंके प्राण घात करते है, मगर इस कायको मन वचन और काया ये तिनु जोगसे खोटा नही समजते हैं, और इस कार्यके बारेमे सचे दिल्से पश्चाताप करके छ कायके जीवों पाससे क्षमा अर्थात माफी नही मागते है और इस कार्यके बारेमे इर्यावहिका प्रतिक्रमण करके प्रायश्चित अर्थात दंड लेके अपनी आत्माको शुद्ध (निर्मल) भी नही करते है, इस लिये उपरोक्त द्रष्टांत लागु नही होते हुये हमारे मुर्तीपुजक भाईयोंकी सावद्य धर्म करणीके बारेमे हमारे बाल मित्र भ्रात गण मुर्तीपुजकोंके सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोके आधारसे द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा निश्चय लागु होती है
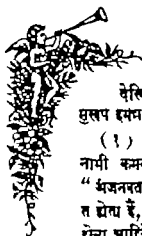
(इत्यलम्)

—:वर्ग १० वा:—

[मुखपती विषय]

देखिये! माहाशयजी !! मुखपति पांच कारण से मुखप हमेश बांधि जाती है

(१) अवल तो, जीवोंकी यत्नाके वास्ते अर्थात नामी सूक्ष्म जो गर्म भाफ मुख द्वारा निकलती है "अजनपद" और उस भाफसे सुक्ष्म जीवोंका प्राणघात होता है, सो मुखपति द्वारा उक्त जीवोंका बचाव होना चाहिये,

(२) दुसरा, श्वासा श्वास द्वारा मुखमे जीव वगैरे दुसरी कोई भी सुक्ष्म शुद्ध वस्तु प्रवेश नही होना चाहिये

(३) तिसरा सिद्धांतोपे [शास्त्रों पे] अगर मनुष्य [आदमी-इन्सान] वगैरेपे भरना थुक नही गिरना चाहिये,

(४) चतुर्थ ऐसा कोइ चक्रवति बादशाह के राजमे माहान (बडा भारी) पदविदार आदमी होवे, और उसको सरकार की तर्फ से वरिष्ट पदविका चिह्न [पट्टा] बखसीस किया होवे तो चिह्न दे

सनेसे फोरन सर्व भालुम [लोगोंको] मालुम (मान) होता हैं क ये अमुक पदवीका मनुष्य हैं ईसही तरेसे श्री देवाधिदेव वीतराग भगवान त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर महाराजने श्री जैन मुनिवरोंको सर्वोत्तम पदविका मुखवस्त्रिका चिह्ना [पट्टा] बक्षीस किया है, सो ये चिह्ना देखनेसे फोरन ज्ञात अर्थात पहेचान हो जाती है क ये लोग जैन साधु हैं,

(५) पंचम श्री जैन मुनियोंको मरणान्तीक कष्ट आ जावे तो भी स्वतासे झुट बोलना नहीं दुसरेके पाससे झुट बुलवाना नहीं, अगर कोई झुट बोलता होवे उसे भला (अच्छा) समजना नहीं,

ये मुख्य पांच कारण मुखपति बांधनेके समज लेना मगर देखिये ! हमने कितनेक ग्रंथोंमे अवलोकन किया हैं किंवा यति, संवेगी, दिगाम्बरी वगेरेके मुखसे भी सुना है के श्री जैन साधु मार्गी (ढुंढिये) वर्ग हमेस मुखपर मुखपति बांधे रहते हैं सो ये भी जैन शास्त्रोंके बरखिलाफ है क्योंकि मुखपर हमेस मुखपति रखनेसे छमो छम जीव उत्पन्न होते हैं क्योंकि मुखपति बांधकर प्रथम रखना अन्यास तो ये ही विरोधा भास है द्रव्यसे जीवकि उत्पती होती तो ज्ञानी पुरुष मुखपति मुखपर बांधने की रचा कदापि फरमाते नहीं, तिसमे प्रथमे रखने से खुले मुख बोला जाता है और खुले मुख बोलने की ज्ञानी पुरुषों की रचा नहि हैं तिर्थंकरोंके हुकमके सिवाय काम करना ये ही मिथ्या त्वका कारण है ईस वास्ते मुनिको हमेश मुखपर मुखपति बंधा हु रखना चाहिये मुखपति हमेस बांधना ये जीवोंकी यत्नाके वास्ते है मगर मुर्तिपुजक लोग कहते है के अपना मुख पुस्तकका नही लगना चाहिये इस वास्ते मुखपति रखना हैं मगर जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुखपति की क्या जरूरत नहीं है, ये कहना मुर्तीपुजकोंका शास्त्रोंसे

विरुद्ध (साध्य) है क्योंकि मुखपति मुखको बांधना सो एकान्त जीवों-की जतना के वास्ते है

पुर्वपक्षी:— क्यों जी आप तो बडे मकानके मालक हो और टरखाजी करनका हुशियार हो, क्या मकानके ही ममा सर्व करोग के भी जैनके असली सिद्धांतास सिद्ध भी करके दिखलावोगे

उत्तरपक्षी— हां भी अवल तो जैनके असली सिद्धांतोका परमाण दिखलाते है दुय्यम मुर्तीपुजकोंके बनाये हुए शास्त्रोंका भी परिमाण दि खावेंगे

पुर्वपक्षी— म्हेरबानीके साथ दिखलाइयेगा,

उत्तरपक्षी— माहाशयजी ! खुब ध्यानके साथ अवलोकन किजीये-गा, जिसस पुर्ण खुलासा आपको मालुम होय,

देखिये ! अव्वल जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुख मुख बोलना नहीं, सुत्र भी भगवतीजीके सतक, साव्य ११ वा उदेसा वि २ मा मे गौतम स्वामीजी ने पुछा कीवी के अहो भगवान जिस वक्त सकेन्द देवराजा आ पक सवामे हाजर होते है, तब वो खुले मुख भासण कर वो सावम (दो ष सहित) क निर्वद्य (दोष रहीत) है

। गद्य पाठ ।

गौयमा, जाइण सक्के देविंद, देवराया,
सुहुम कायं, अणि जुहित्ताणं भासे मासई
ताईणं सक्के देविंदे देवराया, सावज्ज मास भासई

मावार्थ— अहो गौतम सकेन्द्र देवराजा मेरि सभामे हाजर होके खुले मुख बोले तो सावज भाषाका बोलनेवाला कहीये अर्थात हिंसा कारी

घमवण जमालिम्स खत्तिय कुमारस्स, पिउणा एव वुत्ते समाणे
हठे तुठे करयल जाव एवसामी तहत्ति आणाए विणएण
पडिसुणे इत्ता, सुरभिणा, गन्धो दएण, हथ्यपाए,
पक्खालेइ त्ता सुध्धाए, अठ पडलाए, मुहपोतियाए, मुहबधइत्ता
जमालिस्सखत्तिय कुमारस्स, परण जतण, चउरंगुल वज्जे
निरकमणप्पउग अगाकेसे कप्पई,

भावार्थ— वलिये ! मिलवत भमाली शिष्य इनको तैयार हुए प
उस वक्त जमालिजीके पिताश्रीने नामर (नाई) का बुलाक कहने लगे
के अहो देवताके वलभ जमालि कवर दिक्षा लेनको तैयार हुवाहै सो तुमचार
अंगुल शिखा की जगा के अयात दिक्षा की वक्त लोचन करनका वास्ते
भाव एस ठिकाण के कम छोड़ के बाकी कस काटो तब उस नापुन जमा
लीजीके पिताके ऐसा वचन सुनके हृषवत होके विनय सयुक्त भज करके
कहन लगा के महा सामीनाथ आपका वचन प्रमाण है एसी अर्ज करके सु
गन्धिक [सुगन्ध मलवत) अचित [निर्मल] वस्त्र की आठ पुड (पड़) की
मुखपतिस मुख बांधके कर जमालि क्षत्री कुवरके चार अगुल प्रमाण की
शिखा की जगा छोडके बाकीके केश वतार (हजामत करी) सिर साफ
किया

समिक्षा—भाविये ! मूर्तीपूजक लोग इसपक्त पक्षवाद करत हैं के
मुखपति मुखको बांधनका कोइभी जैन शास्त्रमे तिर्थंकरोने फरमाया नहीं है
मुखपतिको हातमे रखना एसा हमरा अहाम करतहे सो भम मेंसिये ! जिस
वक्त जमालजीकी हजामत नाईने बनाइ तब मुखपती हातमे रखीता एक
हातसे हजामत नहीं बनसक्ती है सो अब मुखपति हातमे रखना सिद्ध हुवा—या
मुखको बांधना सिद्ध हुवा इसगोन मुखपति हातमे रखना सिद्ध नहीं
होसकता है;

पूर्वपक्षी:—अभी थारा ख्याल करो कान फटवाके मुसका मुखपति बांधि लेकिन डोरासहित मुखपति नही बांधी

उत्तरपक्षी:—देखिये ! तुमारा कथन साफ खोटाहे कारण कान फटवाके जो मुखपति बांधता तो व्हांपे एसा पाठ आनाथाके [पाठ] "अठपुड कर्ण मुखपोति यार्म कद्दु कवइरत्ता मुखबंधइरत्ता" ऐसा पाठ होता तो प्रमाण करते

पूर्वपक्षी:—अभी साहेब आढ्यबंधा होयगा

उत्तरपक्षी—येभी तुमारा कथन साफ खोटा है, सबब व्हांपे एसा पाठ हानाथा [पाठ] " अठ पुडकर्ण पयाण मुख बंधई २ त्ता " तो हम सत्य समजते

पूर्वपक्षी:—अभी साहेब गलेके पिछे गांठ देके मुखपति बांधि होगा

उत्तरपक्षी— येभी कथन तुमारा साफ खोटा है कारण गलेके पीछे गांठ देक बांधते तो व्हांपे ऐसा पाठ आनाथा (पाठ) "अठ पुडकर्ण मुहपोतियाण कंठण पछार्ण ग्रंथी दई २ मुख बंधई २ त्ता" एसा पाठ होजाता हम लोग बेशक प्रमाण करते परंतु तिन बातोमेंसे एकभी बात व्हांपे नही हे तो फेर हम लोगोंका कैसा मजुर करावे हो एसी खोटी बात हम लोग कदापि मंजुर नही करेंगे

देखिय ! मगावतिजीने दिया सेठि बरात नाईके पाससे शिर मुंडवाकरवाया, मगर उस नाईकुभी खुले मुख बोलने नहीदिया, किन्तु यत्ना पूर्वक काय करवाया, सोचिये कैसा उमदा काफी ईसाफ है इस ईसाफसे तो भी जैनके असलि मुनियोंको हरगीज खुले मुख बोलना नही चाहिये, क्योंकि जब नाईके पाससभी यत्नापुवक कार्य कराया जाताहैं, तो फेर मुनि माहाराज का जितना कार्य है उतना सब यत्ना पूर्वक करनाहा है, इस बातमें तो कोई

तरह्य शक नही है तमो मुनि माहाराजाने जीवोंकी यत्नाके वास्ते हमेशा मुखके उपर मुखपति बांधक रखना चाहिये, स्यात्किवीये जैन मुनियोंका मुख्य मुखपति हमशा बांधना जैनके मतछि और प्राचिन सिद्धांतोंस मुवातार सिद्ध हुवा

सबुत तिसरा:– वेखिये ' जिस वखत श्री वीर परमात्मा का पधारणा पोल्मसपुरमे हुरा था, उस वखत श्री सासनाधि पतिक जेष्ट शिष्य श्री सासनके बजीर श्री गौतम साम माहाराज श्री वीर प्रभुकी रजा लेके वेलाका पारणा करनेके वास्ते पोलासपुर नग्रमे पधारे और निर्वद्य भिक्षा की गेवेषणा (सोधणा) करते थे, उस वखतमे " वि-जय राजाका पुत्र सेल्ने हुवेन भिक्षाभरि का गमन (फिरते) करते हुव गौतम साम माहाराज को देखे देखते क साथ सिघ्रगतिसे मुनिके पास आया और अर्ज करी के हे दयाल ईस भर दुपेरको आप काय के वास्ते फिरते हो तद श्री गौतम साम माहाराजने फरमाया के हे भाई हम जैन साधु ह और निर्वद्य (दोषरहित) गौचरी (भिक्षा) को फिरते है, तब एवता कुमरने मुनि माहाराजसे अर्ज गुजारिस करीक हे दयाल पधारो म आपको गोचरी दिलाता हु इतनी अर्ज करक श्री गौतम साम माहाराजक हस्तकी अगुली ग्रहण करक साथ याया लाभक अपन मकानप ले गय

(पाट)

तवेर्ण भगवंग गोयमे पाल्मसपुर नयर उच्चनिच जाव अडमाण ईदगणम आदूर सामंत वणर्वीति वयती, तर्णेगोते मगुते कुमार भगवं गायमं अदूर सामनर्ण बीता वयमार्ण पासविच्चा, जेणव भगवं गायम तमेव उवा गछविच्चा भगवं गायमं एवं वयासी कर्ण भंते तुमे कर्ण

[गद्य पाठ]

तेण कालेणं तेण समएणं समणस्स जेठे अंत वासी इंद भूतिनाम अणगारे जाव विहरति तएणंसे, भगवं गोयम, ताजातिं अंधे पुरिस पासति जायसडे जाव एव वयासी अत्थीण भंत सर्व पुरिस सेजाती अंधे जात अध सव इंता अत्थी कहण भंतेसे पुरिसे जातिअंधे जातीअंधरूवे एवंखलु गोयमा इहेव मिया गामे नगरे विजयस्स खत्तियस्स पुते मिया देवीए अत्तए मिया पुत्ते नामदारए जाति अंधे जाति अंधरूवे नत्थीणं तस्स दार गस्स जाव आगि तिमित्ता तएणं, सा, मिया देवी जाव पडि जागर माणी विहरइ, तएणंसे भगवं गोयमे समण भगवं महावीरं वंदति नमं सतिरत्ता एवंवयासी इच्छामिण भंते अहंतुब्भेहिं अब्भणुनाया समाणा मिया पुत्तं दारगं पासामि, विकद्द, अहा सुहं देवाणु प्पीया, तएणंसे भगवं गोयमे समणेणं भगवंया अब्भणुणाया समाणे, हट तुट समणस्स भगवन्त अंतिया तो पडि निक्खमतिरत्ता अतुरिय जावसे दी यमाणेर जेणेव मिया गामे नगरे तेणेव उवागच्छतिरत्ता मिया गामं नगरं मज्झमज्झेण अणुप्पविसतिरत्ता जेणेव, मिया देवीए गहे तेणेव उवागच्छतिरत्ता तएणं सा मिया देवी भगवं गोयमे एज्जमाण पासतिरत्ता हट्ठतुट्ठे जाव एवं वयासीस दिस्सण देवाणुप्पीया किं आगमण पयोयणं तएणं भगवं गोयमे मिया देवीए एवं वयासी अहणं देवाणु प्पीयाणं तव पुत्तं पासितुं हव्व मागए, तएणं सा मिया देवी मिया पुत्तस्स दार गस्स अणुमग जातए चत्तारि पुत्त सव्वालंकार विभूसिये करे,

विभूसिय करतिरत्ता भगवता गोयमस्स पायसु पाडित, एवं वयासी एण्ण ममपुत्ते पासह, तएणंसे भगवं गोयम मिये देवी एवं वयासी नोखलु देवाणुप्पिया अहं एयात पुत पासिउ, हं मागय तत्थणं, जेणं तव, जेट्ठ पुत्तं

मिया पुत दारएमाति अथ माति अपसे मइण तुमं रहस्सिय सिमुमिवर,
सि रहसियमं मत्त पाणण पडिमागर माणप्र विहरतित्र महं पासिउं इच्छ
मागत तणण सामिया देवी भगवं गोयम एवं वयासी सकेणं गोयमा स तहा
रूव णाणा वा तवसा वा जण ताव एसमठ, ममताव रहस कप्पित, तुम्नह
माय गमए मातांग तुम्ह माणह दवण समणे गोयम मिया दवी एवं वयासी
एवमस्तु दवाणु प्पिया मम धम्मा यरिए समणेण भगवया महा विरेणंजाव तावण
अहं माणामि माव वणं मिया दवी समण गोयमस्स सिर्द एयमठ सकमति, टावं
वणं मिया पुत्त दार गम्म भत्तवस्स नायापा विहात्था तएण सामिया दवी
भगवं गोयम एव वयासी तुम्हण भंते इहंचव चिट्ठह जाण अहं तुम्हमिया
पुत दारग उवदं समि तिकटु जगव भत्त पाणघर तणव उवागच्छइरत्ता
वत्थ परिय टुव करतिरत्ता कत्तस गडियं गिन्हविरत्ता विपुल असण पाण
खाइम साइम मिस्स भरति तक्कठ सगडिय अणुकड्ढमाणीर जेणव भगव
गोयमे तणव उवागच्छतिरत्ता भगव गोयम एव वयासी एहण तुम्ह भंत्र मम
अणुगच्छ अपिह तुम्हमिया पुत्तं दारग उवदंसेमि, तएण भगव गोयमे मिय
दवी पिठी उस मणु गच्छतिरत्ता तएणं सामिया दवी तंकठ सगडिय अणु
कड्ढमाणा जेणव भुमिघर तेणव उवागच्छइरत्ता चउपाडण वत्थण मुह बंध-
दिरत्ता भगव गोयमं एवं वयासी तुम्हणं भंत मुह पोतियाय मुह बधह
तएणंस भगव गोयम मिया दवीए एवं वुते समाण मुह पोत्तियाए मुह बंधति
रत्ता तएणं सामिया दवी पर मुही भुमि घरस्स दुवार विहाडेति तएणं
सामिया दवी पर मुही भुमि घरस्स दुवारं विहाडति तएणं गंधे निगच्छति स
जहा नामए अहि ममतिया जाव ततोविणं अणि तराए चेव, जावगंधे पंगे
व तएण सामिया पुत्ते दारए तस्स विर्ण विपुलस्स असण पाण खाइम साइम

अडमाणे, तत्तेण भगव गोयम अति मुत कुमारं एव वयासी अम्हण द वाणुपिया समण्य निर्गथा इरिया समिया जाव बंभचारि उंचनिच जाव अडमाणे, ततेणं, अति मुंत कुमार भगवं, गायमे एवं वयासी ए इण भंते तुझेणं जेणेव अह तुम्ं भीरवामिअणे मी सिवद्ध भगवं गोयम अगुलि से गेन्हविरत्ता जेणेव सयाते गिहे तणेव उवागए,

देखिये! तिवारे (तिस वखत) भगवंत गौतम साम पोलसम पुर नगरके विषे गोचरी के वास्ते गमन [फिरते] करत हुये ईंद्र स्थान (राजभवन) क निकट (पास) आते थे तिवार एवंत कुमार भगवत गौतम साम को आते हुवे देखे अनुक्रम [रस्तेसे] से जाते देखे जिस ठिकाणे गौतम साम माहाराज थे उस ठिकाणे एवंत कुमार आये, प्रभुसे अर्ज करि के अहो प्रभु आप कोन हो और क्या प्रया जनके वास्ते गमन (फिरत) करते हो, तिवार गौतम साम माहा राज एवंत कुमार को ऐसा फरमाने लगे अहो देवनाके वल्लभ हम समण निग्रंथ [समजा भारी साधु है] पांच सुमति और तिगुप्ति ये आठ वातके धारन करके ब्रम्हच्य पालन करते हैं, और निर्वद्य [दोष रहित] आहार (भोजन की) गवेषणा करनेको गमन करत है तिवारे एवंत कुमार प्रभु से अर्ज करते हुये पधारो अहो पुज्य मे आपको भीक्षा दिलवा हु ऐसी अर्ज करके गौतम साम माहाराज की अंगरुली एवंत कुमारने पकडके अहांपे अपना खासका मकान ह वहांपे मुनि क साथ वाता ख्याम करते हुवे मुनि का लेके आये

समीक्षा— देखिये! जिस वखत एवंता कुंवरने भी गौतम साम माहाराज साहेब की अंगुली पकडके वार्ता करते हुवे अपने घरपे ले गये उस वखत क्या गौतम साम माहाराजने तिसरा नविन हाथ लगाके हाथ मे मुखपति रखी, एक हाथमे तो झोली थी और एक हाथ की अंग

[गद्य पाठ]

तेण कालेण तेण समएणं समणस्स धेरे भते वामी इद भूतिनामं अणगारे जाव विहरति तत्तेणसे, भगव गोयमे, सांजाति अंधे पुरिस पासति जायमठे जाव एवं वयासी अत्थीण भेव कई पुरिस सेगाती अधे जाल अध सव इता अत्थी भएण भंतेसे पुरिसे माविअधे जातीअंधरूवे एवंखलु गोयमा ईहेव मिया गामे नगर विजयस्स खत्तियस्स पुते मिया देवीए अत्तए मिया पुते नामदारए जाति अंधे जाति अधरूवे नत्थीण तस्स दार गस्स जाव आगि तिमित्ता तत्तेण, सा, मिया देवी जाव पडि जागर माणा विहरइ, तत्तेणंस भगव गोयमे समण भगव महावीर वंदति नम सतिरत्ता एवंवयासी ईच्छामिण भंते अंहतुम्मेहि अम्मणुनाया समाणा मिया पुत्तं दारगं पासामि, विहइ, अहा सुह देवाणु प्पीया, तत्तेणंसे भगव गोयमे समणेणं भगवंया अम्मणुणाया समाणो, हट तुट समणस्स भगवन्त अंतिया वो पडि निखमतिरत्ता अतुरिय जावसः ही समाणेरेणेव मिया गामे नगरं तणेव उवागच्छतिरत्ता मिया गामं नगरं मज्झमझेणं अणुप्पविसतिरत्ता जेणेव, मिया देवीए गेहे तेणेव उवागच्छतिरत्ता तत्तेणं सा मिया देवी भगव गायमे एज्जमाणे पासतिरत्ता हट्ठतुट्ठे जाव एवं वयासीस दिस्सण देवाणुप्पीया किं मागमण पयोयण तत्तेणं भगवं गोयमे मिया देवीए एव वयासी अहण देवाणु प्पीयाणं तेव अ पुत्तं पासितं इच मागए, तत्तेण सा मिया देवी मिया पुत्तस्स दार गस्स अणुमग जातय एचत्तारि पुत्त सव्वालंकार विभुसियं कर,

विभुसिय करतिरत्ता भगवता गोयमस्स पायसु पाडिते, एवं वयासी एएण मसपुत पासह, तत्तेणंस भावं गायम प्रिय देवी एव वयासी नोखलु देवाणुप्पिया अह एएमत पुत पासिउ, इच मागए तत्थणं, जेसे तव, इजट पुते

मिया पुन दारुण्णर्ति अथ माति अक्कन्त महण तुम रहसिय सिमुमिवर,
मि रहसिण्णे मस्त पाणणं पडिमागन माणार विहरंति अहं पासिट एव्व
मागम तत्तण सामिया दवी भगवं गायम एव बयासी सवेर्म गायमा स तहा
रूव माणा वा समणा वा जण ताव एसमट, ममताव रहस करिए, तुम्मह
माय गयर नाताण तुम्म जाणह तत्तण सगवं गायम मिया दवी एवं बयासी
एवमलु दवाणु प्पिरा मम धम्मा यरिए समणण भगवया महा विरेगनाव तत्तण
अह जाणामि माव पण मिया दवी समण गोयमण सिद्धं एयमट्ठ सलाति, ताव
वर्ग मिया पुत्त दार गम्स मत्तवलम जायाया विहोल्या मत्तण सामिया दवी
भगवं गोयम एव बयासी तुम्मणं भंते इदचव चिट्ठह जाण अहं तुम्मामिया
पुत दारग उवदं समि तिकट्टु जणव भत्त पाणघर तण्व उवागच्छइरत्ता
वत्थ परिय ट्टय करेतिरत्ता कट्ठस गडिय गिन्हतिरत्ता विपुल असण पाण
माइम साइमं भिम्म भरति तकट्ठ सगडिय अणुक ढमाणी जणव भगव
गायमे तणव उवागच्छतिरत्ता भगवं गोयम एवं बयासी एइणं तुम्मे मंत मम
मणुगच्छ अपिह तुमममिया पुत दारग उवदंसमि, तत्तण भगव गायम मिय
दवी पिठी उम मणु गच्छतिरत्ता तत्तण सामिया दवी तकट्ठ सगडिय अणु
कडमाणा जणव भुमिघरे तेणव उवागच्छइरत्ता चउपडणं वत्थण मुह बंध-
मिरत्ता भगव गामयं एवं बयासी तुम्पण भत्त मुह पातिपाग मुह बघइ
तत्तणस भगव गोयम मिया दवीए एवं वुते समाण मुह पातिपाद मुह बधति-
रत्ता तत्तेण मामिया दवी पर मुही भुमि घरम्म दुवारं विहाडेंति तत्तण
मामिया मिया पर मुही भुमि घरस्स दुवार विहाडति तत्तेण गंधे निग्गच्छति स
जहा नामए अहि ममतिवा जाव तत्राविणं अमि ता एयरु, जायगंधे पमे
त उन्नी सामिया पुत दारग तस्स विण विपुलस्स असण पाण साइम साइमं

गंभीरे अभिभूते समागते सि विहर्मंसि समण पाम पठ मुच्चिर्ते तेचिउव अमणं ४ आमरण आहारेति सिप्पामसीर्ड सचि ततपष्षम पुरुसस्स सा- णिस्सतए परिणमे तित पियण पुर्व आहारेति, ततेणं मर्ग गायमम्म सेमिया पुव दारिया पासिज्जा

भावार्थ – देखिये ! ओम भार ध्यास और प्योय आरक्ष समा (सु- तत्युग) श्री वीर परमात्माके बडे शिष्य इंद्रभूति एसे नामका साधु (गौत म साम) विचरते (गमन करते) थ उस वखत म भगवान गौतम सामन जन्म अंध पुरुसको देखके दिमम विचार उत्पन्न हुवा, और तत काल श्री वीर प्रभुको अर्ज करते हुवे, बोले अहो भगवान केइ पुरुष जन्म अंध जन्म अंधरूपस हि, हां गौतम हे, अहो भगवान जन्म अंध पुरुषकानस कमम दाख है जिसे अहो गौतम इसही मृगाग्रामके विषय, विजय क्षत्रीका भा मात मृगा राणीका पुत्र, मृगापुत्र ऐसे नामका बालक जन्म अंध मन्म अधरूपमे है और वो बालक हलता चलता भि नहीं ह और उस बालक की बड़ी हुसियारी क साथ मतिपाल मृगाराणी (होपानन) करति है, एस वखत श्री वीर प्रभुके गौतम सामन सुनके साथ उस बालक का देखने की इच्छा हुइ तब हात जोडके श्री शासनाधिपति स गौतम स्वम बिनती करते हुवे अहो दयाल आप की आज्ञा हुव ता म उस बालक का दर्शन का जाउ तब प्रभुने फरमाया क जैसा सुख होव वैसा करो, तब प्रभुकी आज्ञा मिलनस पुर्ण आनंद प्राप्त हुवा, तब गौतम स्वाम प्रभुके पाससे रवा- ना होके ग्राम गती की तरफ घुमते हुवे इरया सुमतिका साधन करते भगवान गौतमजी धाना प्रमाण निचि नगर विहारत हुवे जिस ठिकाण मृगा महेर्ष आक, जिसा नगरके मध्य बजारके मध्य भागमे होके जिस ठिकाण

पे मृगाराणिका घर हे व्हांप आय तब वो मृगाराणी गौतम सामको आतेहुए देखके राणिका संतोष प्राप्त हुवा और राणि गौतम सामको कहेन लगी, अहा दयाल आप हमारे व्हांप कोनस काया अर्थ पधारे हो, एसि अर्ज करी तब भगवंत गौतम साम राणिका एस कहते भये अहो देवानुप्रिय तुमारा पुत्र देखनको आयाहु तब मृगाराणि मृगापुत्रके शिवाय जो दुसरे चार पुत्रथ उनाको वस्त्र आभुषण वगैरे पहेनाके शिणगार समके गौतम साम माहाराजके चरणार विंद, सेवन, करवाए अर्थात पगे लगवाके राणि अर्ज करनलगी के हे माहाराज ये मेरे पुत्र है सो आप देखो तब गौतम साम माहाराज मृगाराणि प्रत कहेने लगेके हे राणिमे ये तेरे च्यार पुत्र देखनको नही आयाहुं हे राणि जो तेरा बडा पुत्र मृगा पुत्र इस नामका बालक हे जन्मअंध हे और सुमन उसको अंने गुप्तपणे भूहर (तलघर) मे रखाहे और अन्न पाणि देति हुइ प्रवृत्तिहे उस कुंवरका म देखनको आयाहु तब वो मृगाराणि भगवंत गौतम सामप्रते ऐसि अर्ज करति हुइ, अहो गौतम वो कोण हैं, प्रत्युत्पन्न ज्ञानी पुरुष तथा तपस्वी पुरुष जिसने हमारा गुप्त अर्थ मेरा छाना गुप्त रखा हुवा बालक सो देवताका भी मालुम नाही एसी गुप्तबात आपका किसने स्व मगर (मुखसे बार) करके कहाई है उसका आप जानते हो तब गौतम साम माहाराज मृगाराणिको एसे कहेते हुवे अहो राणि निश्चे हमारा धर्माचार्य सम्म भगवंत श्री माहावीर स्वामीके फरमानसे मैने इन बातका माणी तब मृगाराणिन गौतम सामके पास प्रसिद्ध पण ऐसी बार्ता सुणी इतनेम मृगा पुत्र बालक की भोजन की टम हुइ तब मृगाराणी गौतम साम माहाराजको अर्ज गुजारिश करि के अहो दयाल आप कृपा करके व्हांपे बिराजो वो म आपको मृगापुत्र कुंवर दिखलाउ इतनी अर्ज करके जिहां भोजन शाला है व्हांप मृगाराणी आई और वस्त्र बदलाके लकडे का गाडा उसके टममे भरोत मा चार प्रकारका भोजन भरके उस लकडे के गाडे को साथ लेके जिस ठिकाणपे गौतम साम बिराज थ व्हांपे आके गौतम सामको अर्ज करती

हुई अब अहो भगवान आप मेरे पिछ पिछे आवो सो मे तुमको मृगापुत्र बालक दिखाव तब भगवंत गौतम स्वाम श्री रानीके पिछे पिछ चलत हुवे तब मृगादेवी काष्टकी गाडीलेके जहांपे मुहरा (तलघर) हे वहांपे आइ वहांप आएके बाद वस्त्रके चार पुड करके स्वताका मुख बांधा रानीने स्वताका मुख बांधेके बाद गौतम स्वाम माहाराजसे रानीने अर्ज करी के अहो पूज्य आपभी वस्त्र से मुख बांधो तब गौतम स्वाम माहाराजने रानीका वचन सुनके वस्त्रसे मुख बांधा भगवंत गौतम स्वामने मुख बांधेके बाद मृगा देवीने भूमी घरकी तर्फ पिठ करके उल्टे हातोंसे भूमि घरका दरवाजेके कमाड खोले तब वो भूम घरी भूमि घरके अंन्दरसे खोलनेके साथ माहा दुरगंध अंदरसे निकली वो दुर्गंधि कैसी खराब है के मृतक सडा हुवा उससे भी अतिशय ज्यादा ज्ञानी बयान नही करसके है ऐसी भयानक दुर्गंध भूमि घरमसे निकली मगर मनुष्य कोइ जनेस सहन न कर सके एसी भगवानने मृगापुत्रके शरीरकी दुर्गंधि फरमाइ है बादमे जो रानीने भोजन लाइ थी वो भोजन दुर्गंध स व्याप्त होनेस वो भोजन मृगापुत्र मुर्छी होके वो भोजन आहार रहित मृगापुत्रने किया भोजन किय के बाद वापिस वमन किया वमन करते के साथ सुरभे स पु और रुधिर साथमे भोजनके गिरा वो वमन किया हुवा भोजन वापि-स मृगापुत्रने भक्षण किया य सर्व हकिकत गौतम स्वाम माहाराजने उस मृग पुत्रको खुम तारसे एक ध्यानके साथ देखा.

समिक्षा:– देखिये ! इस ग्रन्थके स्वार्थके वास्ते मुर्तीपुजक लोग किस तरह अवर वस्त्र मुह वास्ते है और शासनके वजीर भगवंत श्री गौतम स्वाम माहाराज सरिसे माहानुभाव पुरुषोंको कलंक लगाते नहीं डरते है तो फेर दुसरोंके वास्तेवा कहनाभी क्या, मगर एसी मिथ्या बक वाद करनेसे कुछ चितामणिरत्नको कलंक नहीं लगता है, इस वास्ते मे मुर्तीपुजकोंका पुछ मगर करता हु अतःएव मुर्तीपुजक लोग कहेते है के मृगारानीके कहनेसे गौतम स्वामने मुखपति बांधि मगर असल

गुल मुख बोल्ने भ इसका खुलासा निचे मुजब है

फरम ? पक्षी— दखिये ! माहाशयजी ! मृगाराणीके कहेनेसे गौतम साम माहाराजने जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुखपत्ति मुखपे बाधि न हा सबब मृगाराणी कुछ जैन श्राविका नहीं थी और देखो ! उनके सिवाय अन्य मतावलम्बियोंका मुखपत्ति बांधनेसे जीवोंकी यत्ना होती है और नामी कमलके बाफसे वायु काय वगैरे सुक्ष्म जीवोंकी घात होती है और कुछ मुख वाल्नेसे दाग (पाप) की उत्पत्ति होती है इत्यादि मदा (परता) से अन्य मजव वाले स्वान वाफगार नहीं होते हैं इस वास्ते मृगाराणीने जीवोंकी यत्ना करनेके वास्ते गौतमसाम माहाराजका मुखके उपर मुखपत्ति बाधनेका उपदेश दिया नहीं है कारण मृगापुत्रके शरीर की महा विकराल (अतिशय खराब) दुरगंधि आती है सो उस दुर्गंधिसे गौतम साम माहाराजको किल्पना (दु ख) नहीं होना चाहिये इस वास्ते राणीने गौतम साम महाराजको मुख बांधनेके वास्ते अरज गुजारिस करी है.

पूरपक्षी — क्यों जी मृगाराणी जैन श्राविका नहीं थी ये बात आप कहांपरसे कहते हो,

उत्तरपक्षी — देखो ! गौतम साम माहाराजने मृगापुत्र की गुप्त बातें मृगाराणीसे जाहिर करते के साथ मृगाराणीने गौतम साम माहाराज से अरज करि के मेरे मृगापुत्र की गुप्त ऐसी देवगादिका या भा ग्पर नहीं है सो फिर ऐसा कथन भाना और तुमको किन ए गा ऐसा गुप्त पाता आपसे जाहिर करि है, उन पुरुषोंसे आप जानते हैं तब गौतम सामने मृगाराणी को उत्तर दिया के सुद मेरे धर्म चार्य श्रम गुरु माहावीरजी पुरुषोंने ये मृगापुत्र की गुप्त बात सब मुझको जाहिर करके फरमाई है सावो ! जो मृगाराणी जैन श्राविका होती तो निंघ

क्योंकि इनसे जाणकार होवी तिर्थंकरोंका सत्य जैनियोसे किंचित मात्र भी छिपा हुवा नही रहता है और जिस वस्वत गौतम साम माहाराज मृगराणी के घर पधारे थे उस वस्वत मृगाराणीने गौतम साम माहाराजको वदना नमस्कार कुछ करि नही है ईत्यादि कारणो के सवब से मृगराणी जैन श्राविका नही थी देखो ' ये बात प्रत्यक्ष सिद्ध हुई

फकरा २ दुसरी— जिस भूमी घरके विषे मृगापुत्र रहेता था उस भूमि घरके पास मृगाराणी और गौतम साम ये दोनु ईसम गये उस भुमि घरमे गयेके बाद् अवल मगाराणी ने वस्त्रक चार पुड करके साम अपना मुख बांधा अत एव मृगाराणीने चार पुड वस्त्रसे खास अपना मुख बांधे के बाद मृगाराणीने गौतम साम माहाराजको अर्ज गुजारिस करि के अहो दयाळु आपको मेरे पुत्रके शरिर की दुर्गंधिसे कोई भी वजे की किस्समना न होवे इस वास्ते आप भी आपका मुख बांधो— आपि सहज सबब होने की जगह हैं सोचिये ' मगाराणीने कुछ वाउ काय वगैरे सुक्ष्म जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुख बांधा नही सवब वो जैनि नही थी, ईस वास्ते, परंतु मृगापुत्रके शरीरकी महा विकराल (अतिसय खाटी) दुर्गंधि आती है उस दुर्गंधिके प्रयोजनसे शरिरमे रोगादिक उत्पन्न न होवे किंवा दुःख उत्पन्न न होवे किंवा वो दुर्गंध सहन न होनेसे वमन घबराट कुमल्प आवे और किस्समना उत्पन्न हो जावे ईत्यादि भयके सबबसे मृगाराणीने चार पुड वस्त्रसे खास अपना मुख बांधा इत्यादि कारणो के सबबसे गौतम साम माहाराजको मुखके उपर मुख नि श्रा के साथ भी मृगाराणीने गौतम साम माहाराजको मुख बांधन का अर्ज गुजारिस करी है विचारिये ' सुगंध या दुर्गंध मुखमे आता नहि , सुगंध या दुर्गंध मुखसे कभी भी नही आती है सुगंध या दुर्गंध नाक मे आती है और सुगंध या दुर्गंध नाकसे किंचि

भी जाती हैं इस वास्ते नाक बाधो एसी तुछ बात, ऐसे पुरुषोत्तम माहानुभाव पुरुषोंको कहेना ये उत्तम स्वयक चातुर और ज्ञाता पुरुषों का काम नही है इस लिये मृगाराणीने गौतम स्वाम माहाराजके मुखप मुखपति होत के साथ भी गौतम स्वाम माहाराजको मृगारानीने मुख बांधन कि अर्ज गुजारिश करि हैं

देखिये ! माहाशयजी सुत्र श्री विपाकजीके अधिकारसे हमेस मुखपे मुखपति बंधी हुई रखना ऐसा साफ साफ खुब जोरसे सिद्ध (सबुत) हुवा

माहाशयजी ! अब हम मुर्त्तीपुजकोंके मान्यवर आचार्योंके बनाये हुवे ग्रंथ प्रकर्णोंसे मुखप मुखपति बांधना सिद्ध करते है

देखिये । प्रवचन सारो द्धार की ५२१ मी गाथामे कहा है की "मुखपर, मुखपति, अच्छादन करके बांधना चाहिये ।१। माहानिशी थमे कहा है के मुखपर मुख बस्त्री बन बिगर प्रतिक्रमण करे, वाचना देवे या लेवे वदना–सझाय बगैरा करे तो पुरि मढका प्रायश्चित आवे ।२। एसा ही योग शास्त्रके वृति के पृष्ट २६१ म लिखा है की उडकर पड्ते जीव और मुख के उष्ण श्वाससे वायु कायके जीवों की विराधना (हिंसा) यत्नने के वास्ते मुहपति धारण की जाति है, ऐसे ही आचार दिनकर ग्रंथमे और सतपदी बगेरा आनेक ग्रंथोंमे लिखा है ।।३।। और भी देखिये ! सुक्न मनु केवली का रास जो हेमचन्दाचार्य की रचना नुसार उदय रत्नजीन सवत १७६९ मे रचा है उसकी ६६ मि ढाल मे भी देखिये ।।टाल्य।। मुहपति ए मुख बांधिरे. तुम बेशोछोजेम ।।गुरु णीजी ।। तिम मुखडुपा देखेरे, पिजा वेसा एकेम ।।गुरुणीजी ।। मु ख बांधि मुनि निपररे, पर दोष न बधे आहि ।। गुरुणिजी ।। साधु

जिन ससार मेरं क्या रकोदिठ क्या ।।गुलणिजी ।।४।। और एसा ही सुसस धार कथन कथन हित शिक्षाके रास थोरोंमे कहा है ।।५।। और भी दखो। मुनिरूध्धी विनयजी कृत हरिबल मच्छी के रास की ढाल सतावसमि के दोहे म मुखपर मुखपति बांधना लिखा है [दोहा] सुध मंबोधिगीयरा, मांडे निज सर धर्म्म, भावुजन मुख मामवि, बांधि दे जिन धर्म ।।१।। ६।।

इसिये ! माहाशयजी ! श्री जैनक अत्तठी सिद्धातोंसे—या—मुर्तीपुज क्षेके सावजाचार्योंके बनाय हुवे ग्रंथ मारणोंसे मुखके उपर हमेशा मुखपति बांधि हुइ रखना एसा हमने खुब तारस सिद्ध करके दिखला दिया है—सो आपन पुर्ण ख्याल कर लिजिय

पुर्वपक्षी:— क्योंमी मुखपे मुखपति रखनका कारण ता इतना ही है पुस्तक बाचति वखत पुस्तके उपर थुक उडना नही चाहिये पुस्तकप थुक उडनस ज्ञानकी असातना होती है इस वास्त मुखप मुख बधाकर रखना चाहिये

उत्तरपक्षी:— माहाशयजी। हाय्यक (अफिसोस) आपको सुद्धा क्या म दनरामा ज्ञानी पुरुष नहां मिला है इस वास्त थाडा ख्याल करक दखो श्री वीर परमात्माके निर्वाण क बाद नव (९) सा वर्षोंके पिछस पुस्त सिद्धांत लिख गय है, मगर मुखपतिका अधिकार ता सिद्धांतोंम अवस्य सन्य आता है, यथा ! सुत्र श्री भगवतीजी उत्तराध्ययनमी वगरे सिद्धांता मे है, सो पाठ निच मुजब

। गद्य पाठ ।

म'पखिरा पडिले हिता पडिले हित गुच्छं

पूर्वपक्षी – अजी मेहरबान साहब आपका धन्यवाद है आपने खु ब तोरसे तो मुखपति सिद्ध करके दिखलाइ है मगर डोरेका अधिकार तो कहीं नही दिखलाया डोरे सिवाय मुखपति बांधना ऐसे य भी एक आ श्चर्यकी बात दिखाइ देती है

उत्तरपक्षी— महानुपक्षी ! कुछ ह्याम की न्या किजीये, स्याद्वाद साथ भाषण किजीये, देखिये, शास्त्रमे "रतो हरण वा" ऐसा पाठ है मगर इसमे डोरी पो करके बांधना नही कहा है, फर क्यौं बांधते हो, मुझी फलीयां हाथमे रखो, और महासतिजी के मुहपति का अधिकार कहा है मगर साडीमें भाड़ा लगाकर बांधनेका अधिकार नही कहा है, तो फर नाड़ा डालकर क्यौं बांधते है, मतलब ये, साधा शास्त्रमें तो मोगम अधिका र खोड़ता कहा है, तब आप वो कार्य विधि पूर्वक कैसे करते हो, य बात आपको खुलासे तोरसे जाहीर मे करना चाहिये [मिथ्यत्व] ओर श्रावक न किसी मुनि को प्रश्न के अहो दयाल आपने आहार (भोजन) किया तब मुनिने फरमाया हां आहार किया, देखो आहार इस शब्दमें तो चार ही प्रकारका आहार आ गया, मगर मुनि कुछ श्रावकों का प्रत्यक्ष र वस्तु नही बतलाते है, इस तौरसे मुखपति का अधिकार समझ लेना दूसरा तुमसे हमेश मुखपति रखना खुब तोरसे सिद्ध हुवा

पूर्वपक्षी— अजी साहेब ! आप तो जमानेके बड़े बाके और छलीके दिखाई देते हो और पंडितोंका भी बड़ा भारी घमंड रखते हो या फेर मुखेकी तोरसे उलट रस्ते से क्यौं चलते हो, सिधे रस्ते पे ठीक डोरा सहित मुखपर मुखपति हमेश बांधना ऐसा साफ लिखित क्यों नही दिखलाते हो अगर डोरी की नास्ती होय तो आपने मौन-साधन करना, नही तो फौरन दिखलाना चाहिये,

उत्तरपक्षी— महाशयजी ! मखौल तो सिवाय अभीमानका होवेगा

गा सत्यवादि तो सदा सिंह की तोरसे गर्जना करते ही रहेंग अबल तुम को जनक असली सिद्धांत क मूल पाठ से सिद्ध करके दिखलयेंगे, पिछे मूर्तीपुजकोंके ग्रंथोंसे सिद्ध करके दिखलयेंगे,

पुर्वपक्षी— मेहरबानी क साथ दिखलाना चाहिये,

उत्तरपक्षी— महाशयजी! खुब ध्यानके साथ दुर्बीणारिसे देखिये सुत्र श्री माहानिशिथजी क सातवे अध्यन म डोरा सहित मुखपति हमेश मुखपर रखना ज्ञानी पुरुषोंने फरमाया है वो पाठ निग मुजब

[गद्य पाठ]

कणा ठियाएवा मुहणं तं गणंता वीणाइरियं पमि कम्म मीए दुकड पंच मतंवा

भावार्थ— महाशयजी! देखो! क्या बात अपि सिद्ध होती है असली सिद्धांतसे—डोरा सहित मुखपति कानमे अच्छीके हमेस मुखपर बांधके रखना चाहिय, एसा महानिशिथमे ज्ञानी पुरुषोंने स्पष्ट फरमाया है, अगर मुखपर मुखपति सिवाय जो इरियावही की पड़ी पर तो मिच्छामि दुकडं—का तथा एक उपवासका प्रायश्चित (दंड) आता है,— देख सहेज मसाल हाथ की लगा है क श्री जैन के असली सिद्धांतोंसे तो मुखपर डोरा सहित हमेस मुखपर बांधके रखना चाहिये, एसा खुब तो- रसे सिद्ध होता है मगर खुले मुख बोलना किंवा हाथमें मुखपति रखना सिद्ध कदा भी कभी नहीं होता है, परंतु जैन मुनिने खुले मुख बोलना और हाथमें मुखपति रखना य बात तो— जैन पाखंडी के बनाये हुव ग्रियरि गपाड ग्रंथोंमे ही सिद्ध होवेगा मगर असली सिद्धांतोंमे कदापि सिद्ध नहीं होवेगा, महाशयजी! आप जैनके असली सिद्धांतोंमे डोरा सहित

मुखपति हमेस मुखपर बांधके रखना चाहिये खुब द्वारसे सिध्द हुआ

माहात्म्यमी। मुर्तिपुजकोंके मान्यवर आचार्यों के बनये हुवे निध्द ग्रंथोंसे मुहपर डोरा सहित मुखपति हमेस बांधके रखना चाहिये, एसा सिध्द करके दिखलाते है, मगर इस ठिकाणे पर इन लोगों की कपोल कल्पीत चतुराइ भी किंचित नाम जाहिर करके दिखलाना चाहते है, लेख ओघ निर्युक्ती का लिखे मुजब.

(गाथा)

चउ, रंगुल विहथ्थी, एय मुहणं तगस, पमाण ॥
बीयं मुहप्पमाणं, गणण पमाण ईकैकं ॥

भावार्थः– वलिये। एक बिलस्त (बवेत) और चार अंगुल, एसी मुखपति डोरा सहित, प्रमाण युक्त होना चाहिये, अर्थात प्रमाण युक्त डोरा (तागा) सहित मुखपति हमेस मुखपर बंधि रखना चाहिय,

समीक्षाः– मुर्तीपुजकोंके ग्रंथ प्रकरण ग्रंथोंमें भी डोरा सहित प्रमाण युक्त मुहपे मुखपति हमेस बांधना लिखते है, मगर हमेस मुखपे मुखपति बांधने मुर्तीपुजकोंका सर्म भासि होती है, परंतु ये लोग असल जैनी नही हैं अगर असल जैनी होवे तो जैनका असली चाल नही छोडते मगर मुर्तीपुजकोंने इस जगह पर इतनि चतुराइके साथ डोरा सहित मुखपति मुखपर बांधना स्विकार (अंगीकार) करा है किस तोरसे जिस मकानमें उतरे होवे ओर उस मकानका साफ करति वखत डोरा सहित मुखपर मुखपति बांधना चाहिये, क्यौ की मुखमे बारिक "रज" (रेति) नही आने पावे, मगर मुखपति मुखपर डोरा सहित बांधक जो मकान साफ करे तो भी मुखमे कचरा जाना बंध नही हो सका है, सबब मुखपति का निचला भाग तो खुल्ला रहेता

ह, ईस लिये अगर मुख बांधके कचरा निकालने की जरुरत होती तो भपि एसा पाठ आना था के जिसको बांधके कचरा निकालनेसे मुख म कचरा प्रवेस कोइ भी प्रजेस करसके नही, वो पाठ एमा होना था

पाठ,

मुहपमाणेणंवा घटेणंवा मुह मधहन उपासयेणंवा कज्ज करईरत्ता ॥

एसा पाठ होता तो हम लोग अवश्य ममाण करते मगर ईस रितिका पाठ न होने पर ईन लोगोंने उक्त गाथा के पछात को दो पद हमेस मुखपे मुखपति बांधि रखना नही रखे तो मायछित (दंड) आता ह एसे जो पद ज्ञाम ज्ञानी पुरुषोंके फरमाये हुवे थे मा निकाम के पिछे मूर्तीपुजकोंके जैन पोप सावज्याचार्योंने मिथ्यात्वके नस क पगले पणेमे पिछले दो पद नविन बनाके उक्त गाथा मे वो पद दाखल करके, वो गाथा असली सिध्धांत म से निकाल करके अपने बनाये हुवे गपोड ग्रथोंमे वा गाथा मयस (दाखल) कर दिवी ह मगर एसी मिथ्या कारवाद करनेम कुछ कायम मुखपति रखना सिद्ध नही होता हे सबब जो बात असली सिधांत स्वीकार नही करे ता सब मिथ्या मम जी जाती हे, मगर विचार मूर्तीपुजक लोग क्या कर से कर तिथंक रोंके असली वचनो को अंगिकार करे तो हमेस मुखपर मुखपति बाध ना पडता हे और हमेस मुखपर मुखपति बांधि रखनेस श्वास रुकन की तकलिफ उठाना पडति है तब मुखप मुखपति हमेस बांधि हुइ रखना नहीं एसा कायम किया है

इस की तवारिख विक्रम सम्वत ७ व स३ १२म कि सम्वत १२४ माघ २१ मे विधव पाटमें मूर्तीपुजकोंका भी मन फुटा हुवा था, वहांव सर्व सघने विचार किया के अपना माग जो जेनका जुगास मुखपति संयुक्त

मेष (ड्रेस) कायम रखेंगे तो, ठिक नहीं होगा सबब यारा काळके प्रभावसे जो जैनके असली साधु अनार्य देशोंमें चले गये है या वो लोग कदापि इस आर्य देशमें वापिस आ गये तो फेर उनो की महाप्रभावि दुष्क करणी [कठिन] भिक्षा और संयमका पालना और तप जप का करना और शरीरपे भार लगाना इत्यादि महा घोर परिसे सहन करते हुये लोग उनोको देखेंगे तो फर अपनेको ढोंग मानेगा, इस वास्ते एक साधवोंके ज्ञान के अलग ड्रेस (भेष) वगेरे सर्व समाचारीका फरफार डालना चाहिये, कारण भेष एक नहीं मिलेगा तब अपनी २ समाचारी न्यारी न्यारी हो जा- वेगी, और आते के साथ उन लोगोंका असल लोग नकिल और नक ली ठेरा देवेंगे, ऐसा काम करनेसे अपने नविन और नकली मजब की दिनपेदिन वृधि होवेगा, और पश्चात म आनेवाले साधवोंका जोर बढेगा नही, ऐसा पुर्ण विचार करके, हाथमे मुखपति रखना मुर्तीपुज कोंने यहांसे शुरु किया है ये गुरु मुख धारण मुर्तीपुजकोंने हाथमे मुखपति रखना शुरु किय के बाद ऐसा बखान करते है के मुखपर हमेश मुखपति बंधि रखनेसे मुखमका थुक उस मुखपति को लगता है और मुखपति को थुक लगनेसे स मार्छीम जीवोंकी उत्पती होती है, मगर ये कहना एक भोलोंका साफ ठगना है, सबब स मार्छीम जीवों के, उत्पन्न होनेके ज्ञानी पुरुषों ने चौद ठिकाणे (स्थान) फरमाये है मगर चौदा स्थानमे "थुके सुया" ऐसा पाठ नही है, तब स मोर्छीम जीव उत्पन्न होने के, ज्ञानी पुरुषोंने चौदा स्थान फरमाये है मगर ये पंदरवा स्थान इन लोगोंने कोनसे शास्त्रोंसे खोद के निकाला है, ये कुछ खबर नही पडती है, तब तो ये लोग ज्ञानिसे बढकर अवर ज्ञानी हो गये, कदापि नही, मगर इन मस्त बुधिवाले मुर्तीपुजक लोग इत ना ख्याल नहि करते है के जिस वखत वही पुजा वगेरे करते है तब आठ पुडका मुख कोश (वस्त्र) बांधते है, बिना मुख कोश बांधेके

सिवाय, सेवा, पूजा वगेरे नही की जाती है मुख कोरा (घाय) बांधके पुजा भणाई जाती है, सब मुख कोसको शुक लगता है, और बडी पुजा होवे जब पुजाको कलशको बघ देर लगति है, तब ईन मुर्तीपुजको के न्यायसे तो उस मुखको समे छ मोछीम अनता जीवोंकी प्राप्ति होती है, अपसोसका स्थान है के ये मुर्तीपुजक स्नेक जान मुख कर मत्स्यथ अनंता असन्नी पचेंद्रि जीवोंकी घात करते है ये कितना बडा भारी अन्याय है, इस अन्याय से ईनका किया हुवा सावज सबकी क धर्म सर्व नष्ट हो जावे मगर शास्त्रके अजान मनुष्य अंध तुल्य, हुवा करते हैं, जिनोको अपने बोलनेका और लिखनेका और भलण्यका बिलकुल कुछ ख्याल नही रहता है तब वो आदमी भावे विचारमे पडता है और भी देखो ! संसार विचारमे जैनी और अन्य मजहबवा से कितनेक देसोमे या कितनेक कुलोंमे एसा रेवाज है के जिम वक्त शादी [लग्न] होती है तब वो दुल्हा (बिंद) अपने रुमालका अग्र भागको घडी करके हाथमे पकडके मुखके सामने रखता है और भी देखो ! राजा माहाराजके सभामे लोग जाते है व रुमाल की घडी जमाके हातमे पकडके मुखके सामने रखते है, ये भी एक मुख की यत्ना करनेका रवाज प्राचिन कालसे चला आता है, तो धर्म कार्य करति वखत सुक्ष्म मुखपति जीवोंकी यत्नाके वास्ते बांधना किस तोर स सोग्य ठहरग मा बतलाना चाहिये,

इसके ि ा और तुमको हम लोग महीत मुखपे मुखपति हमे. स बांधके रखना ि गर मुखसे मुखपति दुर रख तो प्रायश्चित (दंड) लेना ा पाठ निचे मुजब मदान सिय धुल्काध्य

(गद्य पाठ)

कणादि ा, ा, र्ण्यकर, पीणादरिय पडिकमे,

मीच्छ दुक्कडं, पुरिमड्ढा

भावार्थ – देखिये ! डोरा सहित मुखपति कानमे भरावके हमेस मुखपर बांधे रखना ऐसा साफ साफ मुर्तिपुजकों के सावद्याचार्योने कहा है मगर बिना मुखपर मुखपति अर्थात मुखसे जो इयावही की पडी का उचारण कर वा मिच्छामि दुक्कडं का तथा दो पोरसिका प्रायछित [दंड] आता है,

समीक्षा – मारासपजी देखो मुर्तिपुजकों के सावद्याचार्यों के बनाये हुए गपाड ग्रंथ प्रकर्णोसे डोरा सहित कानमे अटका के हमेस मुखपे मुखपति बांधके रखना चाहिये नही रख तो दंड आवे ऐसा खुब तोर जोर के साथ साफ साफ सिद्ध हुआ, इस के सिवाय और भी हम आपि अन्य मतानुयायों के ग्रंथोंसे जैन मुनिका हमेस मुखपर मुखपति बांधके रखना चाहिये, ऐसा सिद्ध करके दिखसकते है मारासपजी ! शिव पुराण की ज्ञान संहिता के अध्याय २१ के श्लोक २१ मे क्या लिखता है तुम द्रव्य और भाव ये दोनु नेत्र खोलके पुर्ण ध्यानभाव के साथ तोर जोरसे देखिये, या नही कही गफलत मे पुगल नेत्र तुम रह जावोगे तो तुमारा संदेह दुर नही होवेगा वास्ते द्रव्य और भाव दोनु नेत्र पूर्ण खोलके अवलोकन किजीयेगा सो तुमारा संदेह घोरम रफा [दुर] हो जावे सस ज्ञान संहिता का लिखे मुजब

[श्लोक]

मुण्ड मलिन वस्त्रं, कुंडिपात्र समन्वितं ॥
दधान पुंजिक हस्ते, चालयन्तो [illegible] २५२॥

अर्थ – शिर मुंडित मैले (रज लगे हुए) वस्त्र धारक पात्र हाथमे माना पग२प देखके चले अर्थात आपे स कीडा आदि मतुओ को हटाता चला रहे ॥८॥

(श्लोक)

वस्त्र युक्त तथा हस्त, क्षिप्यमाण मुखे सदा,
धर्मेति व्याहरन्तत, नमस्कृत्य स्थित हर ॥१॥

अर्थ— मुखवस्त्र (मुखपति) धारण करते हुये सदा मुखको तथा किमी कारण मुखपति को अलग कर तो हाथ मुखके अगाडी रखे परन्तु खुल मुख न रहे और न बाप ॥१॥

समीक्षा:— देखिये ' अन्य मतानुयायोंके पुराणोंसे भी जैन मुनि का मुखप मुखपति बांधक रखना मगर खुले मुखस रहना नहीं और हाथमे मुखपति रखना नहीं, या फर हाथम मुखपति रखना य जैन वर्गसे बरेखिलाफ (विपरित) बात हुई, दखो ! खुब वारसे य साफ साफ अन्यमतानुयायीक पुराणोंसे जैन मुनिको मुखप मुखपति हमेस बांधे रखना सिद्ध हुवा,

[पाँच ययान ढूंढीये प्राचिन]

देखिये ' शिव पुराणको वेद व्यासजीन रचा है और वेद व्या स जी का होन का अंदाजन पांच हजार वर्ष करिब हुवे ह, ऐसा कह त ह, तो अब सोचिये ' क ५०० ० पांच हजार वर्षके भी अव्वल ढूंढिये थे ये बात तो शिव पुराणसे प्रत्न मदिराम पुण सिद्ध हुई म कब जैमा मरण जैना मानुको ज्ञान सहिताम बनाया है वैमा सदप धत

नामग्रका मात्रकम करे अगर ,फेरफार करेतो अनंत ससारि होता है तो ये लोग असलि सिद्धांतोंका कितना बडा भारि फेरफार करते है तो फेर इन मूर्तीपुजक लोगोंको कितने अनंत संसारि कहेना चाहिये, और इतन परभी नहो तो फेर जैनके असलि सिद्धांतोको भडा पहोचानेके वास्ते मूर्तीपुजक कर्मि, जैनक क्या मह और जैनपोप और गड उपासक जो इनोके साथ क्याचार्य हुव है उनोने टिका चूर्णी भाष्य निर्युक्ति वगेरे ग्रंथ प्रकर्ण" कोकीला शास्त्र " बनाके भी जैनके असलि सिद्धांतोंके विरुद्ध ऐसे ऐसे गपाडे मारे हेके उन गपोडोको भी जैनके असलि सिद्धांत किंचित मात्रभी कबुल नहीं करतेहे तो फेर भी जैनके असलि सिद्धांतोंका स्वीकार (अगीकार) करन वाले पुरुष जैन मापक पोपोके गप्पाडे कैसे मंजुर करेंगें कदापि नही तो फेर अब मुर्तीपुजक लोग जैन मापके पोपोकि बनाई हुई निर्युक्ति वगैरे ग्रंथ प्रकर्णके लेखोंसे हायम मुख पति रखना सिद्ध करतेहे तो क्या भी जैनके असलि और प्राचीन सिद्धांतोंके लेख गुम गये हे अगर गुम होगयेहे ता भी जैनके असलि और प्राचिन सिद्धांतोंके लेखोसे मूर्तीपुजक लोग हायम मुखपति रखना सिध्द क्यों नही करसकते है मगर क्या करे बिचार श्री जैन-के असलि और प्राचिन सिध्दांताका सण समतो मुखप हमस मुखपति बांधना पडताहे, इसवास्ते जैन मापक पापाके बनाय हुव ग्रंथ प्रकर्णका शरा अष्ठ आप डुबने हे और औरोंका डुबात हे

सवैया ३१ सा पत्ती नांवाशिरपर नाव होवताकु कहे उस नांव मलाहस छेयो बापे रालेहे, मदनिके ग्रिसटिका इत्रपति भागतहे, प्रना भति-पासकते, पुत्र समरागहे, पत्ती हुउ नांव पाव, फतीस उसरआहे, अनामे सब थाकु विमवार दास है, मुलकनी नांवपाप, मुग्न अधिपतीयह, कुन्दन नानि मनवाकुं, मुलसर रालेहे, ॥१॥

॥ दोहा ॥

मुखाधिपत्ति जो हुवे रखे हस्तके मांय
हस्ताधिपत्ति हेसही, मुखाधिपति हेनाय ॥१॥
मुखधिपति मुख रहे, जीव असख उवार,
भविपाल ह मृताकी, सत्य मुख वचन उचार ॥२॥

॥ सवैया ॥ ३१ सा०

चरणका भूषणर, शिरपर धारलियो
शिरहीका भूषणए, चरणन सोवेहै,
आकनक पसरए, अगुठि अगलिरहे,

भुजहिवे भूषणए, भुजबंध होवेहै, कानमे कन्न फूल,
पौचामे पूणछी हाय, हीयां कंठ भूषणए, हारकंठो होयहै,
अनेकांत वावणसि, कुंदन कहि नजात, मुखहीका भूषणए,
मुखपती हावेहे ॥१॥

कुंडलिया छंद ॥ जिन्हापन्नति साख्य, प्रश्न कियो गणधर, सुर इंद्र भाव विभु, भाखे खुले द्वार भा सावनके मिर्जेन दाख्या, मतनी भग तनि हाय भी मुखसेति भाख्या कुल्दन सावग साखिया, नी कतणा संहार, जिन्हापन्नति साख्य, प्रश्न किया गणधार ॥१॥

सोरठा

छिद्रग्रहर भा माखियो, एक सरिखी बात
अनर तो राख्या नही, मुरख करताबात ॥१॥

सत्य शिरोमणीपणा दिखाव हे, मगर इनोके सरिखे इस दुनियामे सर्व लोग सत्यवादि हो जाव तो बेशक इस दुनियाका सत्यानास हो जाव, क्यों की जिनोका लिखना और व कहेना और व फरना और ये कैसे सत्यवादि हे, के जा इनोके फंदमे पड जाव तो बेशक जन्म सुधारना मुस्कल हो जाव-क्योंकि ये लोग ज्ञानीके और गुरुके और सिद्धांतोंके अज्ञान विराधि (विराधक) बहुलव हैं इस वास्ते इति—

ज्ञानी पुरुषोंने तो मुखपत्तिको हमेस मुखपर बांधके रखना फरमाया है मगर कितनेक लोग, इस बातों को अंगिकार नहीं करते हैं तब तो जपने खुसी की बाव रही, कोई हाथमे रखेगा, तो कोई दुमर ठिकाणे रखेगा और कोइ साफ मुखपत्ति को उडा देवेगा, ईस लिये थोडे नकली पाठ निचे दाखल कर हैं खुलासे के वास्ते—

पाठ,

अर्थ— अहो भगवानजी हाथमे मुखपत्ति रखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे १

पाठ— पाणिना मुहपोत्तियाए ठवइ रत्ता भंते किंफले १

अर्थ— अहो भगवानजी मस्तक उपर मुखपत्ति राखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे २

पाठ— शिर्सेणं मुहपोत्तियाए ठवई रत्ता भंते किंफले २

अर्थ — अहो भगवानजी गले में मुखपत्ति राखे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ३

पाठ — कंठेणं मुहपोत्तियाए ठवइ रत्ता भंते किंफले ३

अर्थः— अहो भगवानजी भुजा पर मुखपति रखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ४

पाठः— भुयेणं मुहपोतियाणं ठवइ२त्ता भंते किंफले ४

अर्थ— अहो भगवानजी कमरके ऊपर मुखपति राखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ५

पाठः— कटीण मुहपोतियाण ठवई२त्ता भंते किंफले ५

अर्थ— अहो भगवानजी पावपर मुखपति राखे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ६

पाठ— पादुन्नाण मुहपोतियाणं ठवइ२त्ता भंते किंफले ६

अर्थ— अहो भगवानजी धन फइयाक मुखपति भाप तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ७

पाठ— कनुफाइडे वा मुहपोतिमं ठपइ२त्ता भंते किंफले ७

अर्थ— अहो भगवानजी मुखपति हमेस मुखपर बांधके रख तो वम मुखपतिम जीवकी उत्पती होवे किंवा नही होवे ८

पाठ— किंमते मुहपोतिपाण निरंतरण मुह बंधइ२त्ता तस्स त्राण जीवाण उववजेसिर२त्ता ८

अर्थ— अहो भगवानजी कांई भी बजेस मुखपति नही राखे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ९

पाठ— मुहपोतिपाण नोठवइ२त्ता भंते किंफले ९

देखो ! मुखपति रखना या नही रखना या रखना तो किस ठिकाण रखना ईसका खुलासा मुर्तीपुजकोंने जैनके पचंदस अगादि

सावपर्योमे छिलीव माचिन और असली सिद्धांतों के मुख पाठसे भाम समामे सिद्ध करके दिसलाना चाहिये, इतनेपर भी ये लोग मस्ते ह क बुहक मुखपर पट्टी बांधके फिरते हैं इस वास्ते,

“वांपे पट्टी बांधनेका प्रत्यक्ष प्रमाणसे गुण बतलाते है जो जिज्ञासु पुरुषोंने ल्यासम सेन की कृपा करना चाहिये,

(दोहा)

पाटो बांध्या वेसाले, मिटे दरकी पिट,
रोगमामे विनासता, निर्मल होय शरिर ॥१॥
कमरूपीयो रोग हे, ज्ञानरूपीयो पाट,
कुदन सय गरु बांधियो, मिले मुक्तका ठाट ॥२॥

बाबा—मगर इतने पर भी समजना नहीं, फेर भी वेसो ! भी जैनके असली सिद्धांतोसे तथा मुर्तीपुजकोके मान्यवर आचार्योंके बनाये हुवे, निशादि ग्रंथ प्रकर्णो वगैरेमें भी मुखपर मुखपति बांधके धम क्रिया करनेका अधिकार सिद्धांतोंमें तथा ग्रंथकारोंमें ठाम ठाम चल्य है मगर मुर्तीपुजक लोग सिद्धांतोंकि तथा ग्रंथकारोंकि लेखाकं प्रतुल (विरुद्ध) खुलेमुखसे धर्मक्रिया करते हे, लोमीदेखिये बांधर ये लोग अपना पोल छिपानेके वास्ते सत्य घिरोमणीपणा प्रगट करते है, मगर बांप हमने भी जैनके असली सिद्धांतोंसे और मुर्तीपुजकोंके आचार्यों के बनाये हुवे ग्रंथ प्रकर्ण वगैरेसे किंवा अन्य मतावलुयायोंके बनाये हुवे ग्रंथोंसे डोरा सहित हमेस मुखपर मुखपति जैन मुनिको बांधके रखना चाहिये पेसा छुड जोर जोर के साथ साफ साफ खुलसे बार इसमें सिद्ध करके दिखलाया है ईवद्दी जोरसे मुर्तीपुजकोने भी जैन के असली और माचिन सिद्धांतोंके मुख पाठसे समाम मुखपति रखना एथा खुलसे घार

साफ साफ सिद्ध करके दिखलाना चाहिये, तब हम लोग ईन मुर्तीपुजको की मित्रता भरी हुइ पंडिताइ की बाहादुरी समजेंगे, अगर सिद्ध करके नहीं दिखलायेंगे तो फेर इन लोगोको, विवेकीयोंके तथा ईनोके आचार्य वगेरोके आज्ञाके अराधक किस तोरसे समजना चाहिये इस वास्ते ईन मुर्तीपुजकोंका पुण दयाके साथ खेद प्राप्त होता है के, ये मुर्तीपुजक लोग बिचारे अज्ञाण पामर प्राणियोंका आत्म सुधारा किस तोरसे होवेगा,

मुहपति निर्णय वतिसी

[दोहरा]

महपति राखी हाथमां, जो बांधे नही मुख,
साम्भल जो ते मांत थइ, मुहपति निर्णय टूंक ॥१॥
मुख वस्त्रीका सुत्रमां, भाखी जिन भगवंत,
उपयोग तेनो शुद्ध करे, ते भाखो जिन संत ॥२॥
माहाराज माहावीरना मुनि पच्चखत जाण,
पच्चे धांधे मुहपति, जिन आज्ञा प्रमाण ॥३॥
भय करो जो मुख पटी, नई बांधो नही मुख,
हाथ केडे राखरा, किण आज्ञा धरो मुख्य ॥४॥
आज्ञा ए धर्म जो कह्या, ते पालो जिन आण,
मुख बांधीने मुखपति, आज्ञा करो प्रमाण ॥५॥
सुक्ष्म मुख बरतां मरे, असंख्य वायु काय,

सातय मापा ते कही, पचम भगनी मांय ॥८॥
जिर्वोकी रक्षा हुवे, मुहूर्त द्वादश भेद,
सुक्ष्म दर्शक यन्त्र ते, करो ये निर्वाद ॥७॥
अनेक शास्त्रमां मुखपत्ति, कही तेनो शु अर्थ,
तेह विचार कर्या विन, उल्टो करो अनर्थ ॥८॥
तुंगीयादि नगरी तणा, श्रावक चतुर सुजान,
उत्तरासण मुख कोश करी, पांधा वीर भगवान ॥९॥
आठ पडी कही मुखपत्ति, भगवती अंग मोझार,
दोरो नाखी बांधता, मुख तणी श्रणगार ॥१०॥
" ओघ निर्युक्तिक चुर्णी " मां, मुहपत्तिनु कह्यु मान,
चाऊ अंगुलने एक वेंत, दोरो मुख प्रमाण ॥११॥
' जैन तत्त्वादर्श " ग्रंथ छे, आतमाराम रचित,
अन्य मता पण धारवता, तेमां कह्या अवित ॥१२॥
' महाभारत " ना श्लोकमां, स्पष्ट अर्थ जणाय,
अर्थ अक्षर उच्चारतां, अगणित जीव हणाय ॥१३॥
वेज प्रथमां वर्णव्यो, सांख्य मत अधिकार,
काष्ट तणी मुख पाटली, बांधणको आचार ॥१४॥
" निरयावलीका सूत्र " मां, प्रभु येम भाखंत,
काष्ट तणी मुख पाटली, सोमिल नित बांधंत ॥१५॥
जुओ " श्री माल पुराण " मा गौतम विशे कहंत,
श्री महावीर पासे आई, मुखपति मुख बांधंत ॥१६॥
वेद व्यास स्पष्ट कहे, जिन साधु आचार,
मुखबांधेली मुखपति धर्म सनातन सार ॥१७॥
शिव पुराणमा जोईलो कह्यु येम निरधार

प्रगट परेस मुहपति मुख बांधण व्यवहार ॥१८॥
जैन लिंगेच्छु प्रश्नमां, अथ इाक्स्त विचार
मांधी पातुनी मुहपति, करतां मुखोपचार ॥१९॥
अजाण पणे एक वार जा, खुले मुख बोलंत
तने दड हरिया वही, कपूर विजय कहंत ॥२०॥
मुख उघाडे बोलवां, सामायिकनी मांय,
सामायिक अत्यार दंड, साध समाचरी ” माय ॥२१॥
तम प्रतिक्रमण सुत्रमा, श्रावकने व्रतमाय,
मुख उघाडे बोलवा; अतिचार कहा त्याय ॥२२॥
एक बखत येम बोलवा, जो लागे अतिचार,
बोल वारंवारते, अणाचार निराधार ॥२३॥
अतिचार हरिया वही, दड तणो अधिकार,
अणाचारनो देहशुं, तें करजो विचार ॥२४॥
मुहपति बिन मुख जो रहे, पड़े मुख अपकाय,
वायु काय सचस रज, मच्छर मारवी हणाय ॥२५॥
विष्टा परथी मक्षिका, मुखपर बेस आय,
अशुद्ध येवा मुख थकी, प्रभु भजन कम थाय ॥२६॥
मुख बांधी होय मुहपति थाय दयानो पाप,
अन्य जाणा पण देखीन, करे बस मुख काश ॥२७॥
पट दर्शन समुच्च विष, मग कहेल जणाय;
लिंग जैननु मुहपति; मुख बांध्ये कहेवाय ॥२८॥
मुहपति मार हाय तो, सौं जाने जिन सत,
मारे मुनिना मतकने, मुहपति मुख बांधत ॥२९॥
मुख बांध्ये मन स्थिर रह; स्य स्मग दिल माय,

प्रत्यक्ष करक येम स्ले; किंचित संशय नांय ॥१०॥
सीधे मप मुकित हुवे लिम्बे मुहपति बांध,
जैन आराधिक लिंग छ, समजे नहीं मदांध ॥११॥
हजी आसख्य छे घणा, स्वसता थाय विस्तार;
विशेष माटे ग्रंथ छे जुओ मुहपति विचार ॥१२॥
ओगणी येको तरमां, गोंडल रही चोमास
मुनि माहनजी ये रची, बत्तीसी कार्तक मास ॥१३॥

देखो ! बड बडे अंग्रेज विद्वान भी इस विषय पर क्या लिखते है —

The religions of the world by Jhon Murdock L. L. D 1902 page 128 —

The yati has to lead a life of continence he should wear a thin cloth over his mouth to protect insects from flying into it

Chambers Encyclopaedia Volume VI London 1906 page 268 —

The yati has to lead a life of abstinence and continence he should wear a thin cloth over his mouth Sit

Mr A F Rudolf Hoernle ph D Tubingen in his English Translation of Uvasagadasao Vol II page 51 N to No 144 write.

" Text muhapatti Skr mukha Patri lit a l af for the mouth a small piece of cloth suspended over the mouth to protect it against the entrance f any living thing

अंग्रेज महाशय मैान मुरडॉक एल एल डी इन्होने

" दुनियाके धर्म " पर सन्न १९०२ में एक ग्रंथ लिखाहै उस ग्रंथके पृष्ट नंबर १२८ में यति लागोने किस तौरसे अपना आयुष्य गमन करना चाहीय यह स्पष्ट लिखा है जिसमें वह स्थापित करते हैकी—

" यतीको ब्रम्हचर्यसे रहेन पडता है और मुखपर एक बारीक (पतली) वस्त्रीका बांधने पडता है ताके उडन वाले सुक्ष्म किडे मूखके अंदर न जाय " औरभी देखिये:—

चेंबर्स इन्सीक्लोपेडीया जिल्द नंबर ६ लंडन १९०१ पृष्ट नंबर २६८ में भी यतीके निस्वत नीचे मुताबक लेख दर्ज है—

" यतीको अल्पाहार करके ब्रम्हचर्यसे रहेन पडताहै और मुखपर एक बारीक) पतली) वस्त्रीका बांधने पडता है, "

इन लेखोंसे पूर्ण सिद्ध हो चुकाके यतीको मुख पर वस्त्रीका बांधना फर्ज है

अब देखिये ' मुखपती किसको कहते है—

मिस्तर ए एफ रडोल्फ होर्नेलो इन्होने " उपासगदसा " इस ग्रंथका अंग्रेजीमें भाषांतर (तर्जुमा) कियाहै के उस तर्जुमेके जिल्द २ पृष्ठ में ९१ नोट नंबर १४४ मे वह लिखते है के —

" मुखपती " जीसको संस्कृतमे ' मुखपत्री ' याने मुखका ढक्कन यन सूक्ष्म जीव उडन वाले मुखके अंदर दाखल नहो इस गरजसे छोटा (टुकडा) कपडा मूहपर बांधा जाता है उसको मुखपती कहेते है

इसलिये ' महाशयभी मुख मुख बकनेवाले नाम मात्रके यतिमि यति वगैरे मुर्तीपूजक लोकोंके वास्ते कैसा अच्छी इन्साफ अंग्रेजोनेने दिया ह ताके सर्व सत्यहकि नास्ति करडालि है ताहमभी यति वगैरे मूर्तीपूजक लोक

हाथमे मुखपति रखनेकी धोंका मारते फिरते है क्योंकि ये लोग सर्वज्ञ प्र- णित सिद्धांतोंका अवलोकन नहीं करते हुवे, हुंडा सर्पणिके पुत्र सावद्याचार्य अर्थात गपोडाचार्य मुर्तीपुजकोके कल्पित कवलि बन हुए है उनोने जो टीका, चुर्णि, भाष्य, निर्युक्ति, ग्रंथ, प्रकरणादि, कचरा पत्रिक टेकर बनाये हैं, उक्त टेकरोंके उपर सवार होके कमोल कल्पीत धोंका मारनेका वास्ते मुर्तीपुजक लोग खडे रहे है, मगर हमको धोंप यमा नजर आता है के ना मुर्तीपुजकों- के कलि कालके केवलि हुवे है, उनोके पिछेके पिछकि किंवा बैठकके निचेकी वस्तुओ अवस्यही सिध्यताके साथ नजर आति होवगी इसमेंतो कोइ तरेका शक नहीं है मगर मुखके सामनेकी वस्तु तो भाग्यो दयसे ही नजर आती है इस लिये उक्त इसमोंसे सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोंका मथन नहीं हो सका; वास्ते सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोके प्रतिकुल गपोडाके सिणगार टीकादिक कि रचना करके भव्यभावोंका डुबानेका रास्ता बतला गये है इसमें कोईभी तरेकि शका नहीं है; ये भी एक खेदाश्चर्यका स्थान है। मगर साथ अप- सासके विशेष खुलासा नहीं करना चाहते है, सबर करो सबर करो !! सबर करो !!!

ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !! ॐ शान्ति !!!

—: वर्ग ११ वा :—

—जैनके असली श्रावकोंका स्वरुप—

—o—

[श्रावक *]

देखिये ! हमने मूर्तीपूजकोंके कितनेक ग्रंथोंसे अवलोकन भी किया है और मूर्तीपूजकोंके मुखसभी सुना है के जैन साधुको द्रव्य पूजा नही करना मगर श्रावकोंको द्रव्य पूजा अवश्य करना चाहिये मगर ये कहना और लिखना मूर्तीपूजकोंका साफ खोटा है क्योंकि सब दशविध सिध्दांतोंमें श्रावकोंके गुण और लक्षण ज्ञानी पुरुषोंने फरमाये है उसमें मुनिराजोंकी सेवा भक्ति करनेका अधिकार है, लेकिन जिन प्रतिमाकी पूजा करनेका लेस किंचित मात्रभी नजर नही आता है इस लिये श्रावकोंने जिन प्रतिमा की पूजा कदापि नही करना चाहिये किन्तु यहांपर किंचित मात्र श्रावकोंके गुण और लक्षणोंका स्वरुप दर्शन करते है विशेष अधिकार देखना होवे तो जैन तत्वप्रकाश देखो।—

---

* 'श्रावक' शब्दमे ३ अक्षर है श्र—श्रद्धा, व—विवेक क—क्रिया अर्थात् जिस मनुष्यमें श्रद्धा हो और जो विवेक पूर्वक क्रिया करे वो श्रावक. अथवा श्रावक शब्द की 'श्रु धातु है श्रु—श्रवण करना अर्थात् जो मनुष्य धर्म कथा श्रवण करे वो श्रावक.

अहो वीर परमात्माके छद्म पुत्रो और, हमारे छद्म भ्रातगण आपके गुण और लक्षण भी वीर परमात्मान फरमाये है उस मुताबिक वरतना योग्य है मगर हिंसा धर्मीयों के फांसेमे फसके अपनि आत्माका अमूल्य लाभ खोना मत—

> श्री सर्वज्ञ पदाब्ज सेवन मति श्राद्धा गम चिन्तना
> तत्त्वातत्व विचारणे निपुणत्व सत्संयमो भावना
> सम्यक्त्व रक्षता भयोप शमता जीवादीके रक्षणा
> मरत्नागरि गुणां जिनेंद्रै कथिता येषां प्रासादाच्छिवम्,

श्री सर्वज्ञ जिनेश्वर भगवानकी सेवा [आज्ञा आराधनमें] जिनकी मती (बुद्धी) लगी हैं, सदा शास्त्रार्थ आगम (जिनेश्वर कथित [श्री जिनके मन में चिंतवन–विचारणा बनीरहती है, सदा तत्त्वातत्त्व (अच्छा बु री—न्यायान्याय—धर्मा धर्म) का निश्चय करनेमें बुद्धी पैंफलते है भव [पाप] का उपशमान–स्वाम सम्य उपम करते है, धम स्थावर जीवोंका रक्षण (प्रतिपालन) हमेशा करते हैं ऐसे 'सागारी' (गृहस्थवासमें रह क धम पालन वाल) क गुण की कथरा–प्ररुपणा जिनेंद्र–तिर्थंकर भगवानन करी है, जो जिनेश्वर की कृपा [मार्गानुसारी होने] की अभिलाषा दाय वा उपरोक्त गुणका स्विकार करा

> न्यायो पात्तधनोपमन्गुण गुरुन्सार्द्धी स्त्रीवर्ग भज ।
> अन्योन्या गुणं तदर्ह गृहिणी स्थाना लया ही मयः ॥
> युक्ताहार विहार आय समितिः प्रज्ञ कृतज्ञोवशी ।
> श्रण्वन्धर्म विधि दयाळु रघमी सागर धर्मचरत ॥

न्यायसे धन उपार्जन (पैदा) करनेवाले, गुणवंत के गुण क अनु रागी, तीन वर्ग (धम अर्थ और काम) के सजनवाले, सद्गुरु की

सेवामें अनुरक्त भगिनी (स्त्री) को धर्म मार्गमें प्रवर्तनेवाले; या कुल्ल अभू जैरा अद,गा का मम्जा पूक्त रहनवाले मयादा युक्त भावनवाले याग्य आचार जन) व्यवहार [व्यापार] करनेवाले, सत्पुरुषों की सगत कर सदा सुमती (सु मुखी) वंस, महा सुखीवंस, कृत ज्ञ (किये क मानन वाले) षड्रीपु (काम क्रोध, मद, मोह, लोभ मत्सर ये शत्रु) को स्व वसमे करन वाले सदा शास्त्र क श्रवण करनेवाले यथा विधी धर्म क अराधनवाले महा दयालु, पाप स डरनेवाले सागार ' (श्रावक) धमक आचार [आदरने यो ग्य गुण] यत: इन गुण युक्त होवे सो श्रावक

अनन्तानुबंधी चार, अप्रत्याख्यानी, और तीन मोहनीय, यह ११ प्रकृतीका क्षयोपशम होता है तदर्थात पचम देशविरती गुणस्थानको प्राप्त होता है, यह (साधु) की अपेक्षा से देश विरती कह जाते हैं

सागार—सागार युक्त धर्म सो सागार धर्म साधूका मार्ग अण गारका है अर्थात गृहका त्याग कर, दिक्षा ग्रहण कर पीछे, तीर्थ उन्मर जिनेश्वर की आज्ञामें चले भी करण तीन योग स सगुण पंच महाव्रत पाले सो अणगार और श्रावक घरमे रहकर १ व्रत हैं, उसमें से १ -२ यावत १२ जितनी शक्ती होव उतने ग्रहण करे, इसमें करण—योगकी भी विशेषता नहीं यदी होव तो एक करण, एक योग स, और मरजी होव तो तीन करण, तीन योग स व्रत ग्रहण करे

दृष्टांत—साधू क व्रत तो मोती जैसे है जैसे मोती आधा—पाव ग्रहण नहीं होता है. ऐसा होय तो संपुर्ण लिया जाता है तैसे साधूका मार्ग

* अ—क्रोध-मान-माया-लोभ-४=।।प्र—क्रोध-मान-माया लोभ४=।। मिथ्यात्व मोहनी-मिश्र मोहनी और समकित मोहनी ३=।। कुल ११ प्रकृति

जो अंगीकार करना चाहता उन्हे पांच ही महाव्रत धारण करना परमा श्रावक के व्रत सुवर्ण जैसा है शक्ती होय तो वारा ग्रहण करो, और शक्ती होय तो बारा भर जैसे ही, मरजी होय तो एक व्रत और शक्ती होय त धारे ही व्रत धारण करो

श्रमण कहीये साधु, उपासक कहीए भक्त अर्थात साधुकी भक्ति करनेवाले श्रावक होते हैं इसलिये श्रावकका दुसरा नाम श्रमनोपासक भी क हा जाता है

श्री ठाणायंगजी सुत्रमें साधु ओंकी अपेक्षा से आठ प्रकारके श्र वक कहे है

आठ प्रकारके श्रावक,

१ ' अम्मापिइ समाणे ' साधु ओंकि सब काय आहार–पानी व —पाय—औषधी प्रमुखकी चिंता रख साता उपजावे और कदाचित प्रम वश होकर साधु समाचारी से चूक जाय तो जैसा देखकर भी स्नेह रहित न होवे, यथा उचित विनय सहित हित शिक्षा देवे सो माता पिता सम श्रावक.

२ ' भाइ समाण ' —हृदयमें तो साधुओंपर बहुत स्नेह रक्खे, प रंतु विनय भक्तीमें आळश करे, और संकट समय यथा योग्य प्राण ओंकी साहाय्यता करे, सो भाइ समान श्रावक.

३ ' मित्र समाणे ' —कारण कारण बिन साधु ओंसे रुस जाय प रंतु अपने स्वजनोंसे भी साधु ओंको अधिक समझे सो मित्र समान श्रावक

४ 'सवति समाण ' अभी मानी, कठिन हृदयी, छिद्र गवेषी, कदा चित प्रमाद वश साधु चूक जाय तो उस दोष को प्रगट करे सो सौ तुल्य श्रावक,

५ ' आय समाणे ' —साधुओंका मकाशक सुगाय जिसके हृदय

यथार्थ निश्चित हाय मूळे नही सो मर्दी (आरीस कॅाच) जैसा श्रावक

२ ' पताग समाणे ' साधु ओंके वचन का जिसको निश्चय भरोसा (भरवसा) था, मूर्खो-पाखन्डीयो के भरमान से जिसका चित पताका की तरह फिर जावे, सो पताका समान श्रावक

३ ' खाणु समाण' साधु ओंका सद्बोध श्रवण करके भी अपना असत्य आग्रह (पकडी हुइ बात) का त्याग न करे, सो खीला-स्थंभ समान श्रावक

८ ' खरट समाणे ' -हित शिक्षा दन वाले साधु ओंकी निंदाकर तथा अयोग्य दोस अपमान करे, कलंक चढावे, सो अशुची विष्टा जैसा श्रावक.

इन ८ में श्लोक समान और खरट समान श्रावक मिथ्या द्रष्टी है प-रन्तु साधुके स्थान को आते हैं इसलिय श्रावक कहे जाते हैं

' श्रावक के २१ गुण '

अखुद्दा रूपव पगइ सोमा लोग पियाओ ॥
अकूरा भीरु असढ, सुदक्खिन्न लज्जालू दयालू ॥१॥
मझत्थ सुदिठी गुणाणुरागी सुपक्ख जुत्तो सुदिह ॥

विसेसन्नु वुड्ढाणुग, विनीत कयन्नु परहिय कारिये लद्धलक्खा ॥२॥

१ ' अखुद्दा-अक्षुद्र अर्थात क्षुद्र (खराब) स्वभाव [मस्ती] करके रहित सरल, गंभीर धैर्यवंत अपराधीका भी बुरा नहीं चिंतवे

' २ रुववं-रूपवंत, तेजस्वी, अंगोपांग की हिणता रहित पांचो इन्द्री पुर्ण सुंदर और सशक्त होय,

३ ' पगई सोमो ' प्रकृतिका सौम्य-शीतल-स्वभावत शांत, सबे से हिलमिल कर चलनेवाले, विश्वास निय होय

८ 'लोग पियाओ' इस लोकमे पर लोकमे, और उभय (दोनो) लोकमे विरुद्ध निंदनिय दुःख प्रद होय सो काम नही कर
* गुणवंत निंदा दुर्गुणी मूर्ख की हांसी, पुन्य पुरुषों की ईर्ष्या, बहुत लोकोंके विरोधी की साथ मित्रता, देशके सदाचारका उल्लंघन, सामर्थ्य हो स्वजनो की असहायता, इत्यादि इस लोक विरुद्ध काय गिने जाते है १ खेती कम, कोटवालपणा, ठेकादारी, कसकाई, इत्यादि महा हिंसक कर्म इस लोक विरुद्ध नही भी गिने जाय तो भी परलोकमे दुःख दाता होते है ३ सात दुर्व्यसन का सेवन* सो दोनो लोक विरुद्ध कर्म गिना जाता है इन तिनो को छोड सर्व जनको प्रिय वल्लभ लगे ऐसे काम उदार भाणाम स दा, विशुद्धसील सम्पदाय

---

* श्लोक—द्युतंच मांसंच सुराच वैश्या पापर्धी चौर्य परदार सेवा,।
एतानि सप्त कु-व्यसनानि लोके, घोरातिघोरे नर्के गच्छति॥

अर्थ १ जुवा खेलनेवाले, या सट्टेक वेपारी घरका धन गमाके चोरी आदि कर्म कर इज्जत गमा दिवाल्या निकल, राज पंचके गुन्हेगार बन, नर्कादि दुर्गतीमे चले जाते है २ मांस अहारी निर्दयी पशुओंको घात कर के २ मनुष्यो कों भी मारे डालते हैं और इन घोर कृत्यसे नर्कमे जाते है ३, मदिरा—दारु पिनेवाले शुद्ध बुद्ध नष्ट हो मिष्ट भोजनका छुप्य बन, माता, भगनीसे औरसे व्यभिचार कर नर्कमे चले जाते है ४ वैश्या गमनी जाती धर्मसे भ्रष्ट हो, धन बुद्धी अक्कल गमा और गरमी आदि रोगसे अकाल मृत्यु पाकर दुर्गतीमे चला जाता है ५ पारधि शिकारी निष्ठूर कठोर हृदयी बन अनाथ निरापराधी जीवोंको वध कर नर्कमे यमोंके हाथसे अपना भी वैसी ही दशा—खराबी कराता है ६—७ चोरी और परस्त्री गमन करनेवाला इस लोकोंमे निंदनीय बन, राजो पंचका गुन्हेगार हो अकाल मृत्यु पाकर दुर्गतिका चला जाता है, एसे यह ७ दुर्व्यसनोंका सेवन दोनो लोक विरुद्ध है

शुधाचार विनय नम्रतादि धारण करे,

५ 'अक्रूरो क्रूर प्रकृतिवाला नहीं होवे किसीके भी छिद्र नहीं देखे छिद्र ग्राहिका चित सदा मलीन रहता है

६ 'भीरु पापका'—कुकर्मका लोकोपवादका पर भवका अनाचारका डर रक्खे जो डरगा सो ही पापसे बचे

७ 'असठ' मुर्खाई पणा रहित होवे, दगा कपट नही करे, क्योंकि कपटीका चित सदा मलिन रहता है, कपटी पर जगतका विश्वास नही रहता हैं, इस लिये सरल रहे §

८ 'दक्षीन' दक्ष-विचक्षण निपामे समजनेवाला, अवसरका जाण होय,

९ 'लजालु' लोकोंकी लज्जावंत, मत भंग की कुकर्मकी लज्जा धर, लज्जावंत कितना ही दुगुणी हुवा तो ठिकाणे आता है, लज्जा सब गुणका भूषण है, ✿

---

§ श्लोक—यथा चित तथा वाचो, यथा वाचस्तथा क्रिया ;
धन्यस्ते त्रितय येषां, विप वादो न विद्यते,

अर्थ—जैसा चित वैसा वचन और जैसा वचन वैसी क्रिया, इन तिनामे जिनको विसवाद नहीं है, उनका धन्य है

✿ लज्जा गुणौघ जननी, जननी मिव,
स्वा मत्यन्त शुद्ध हृदया मनुवर्त मानाम ॥
तेजस्विन सुख मसुनपि सत्य जन्ति
सत्य व्रत व्यसन निनो न पुन प्रति ज्ञार्म ॥१॥

अर्थात्—लज्जा है सो गुणोंके समूहको उत्पन्न करनवाली और अपनी माताकी तरह शुद्ध हृदय और स्वाधिन रहन वाली, प्रतिज्ञाका तपस्वी और सत्य व्रत धारन करनवाले पुरुष नहीं छोडते परन्तु अपना प्राण भी सुखसे त्याग कर देते है

१० 'दयालु' दुःखी प्राणीको देखकर अनुकम्पा लावे, गया धक्कि साता उपजावे, बने वहां तक उसका दुःख मिटावे मृत्युके मुखसे छुडावे दयालु होवे, 'दया ही धर्मका मूल है'

११ 'मध्यस्थ' मध्यस्थ प्रणामी होय, किसी भी अच्छी और बुरी वस्तुपर अत्यंत राग द्वेष न धरे, शुष्क–रुक्ष वृति रखे, क्योंकि अत्यंत प्रधी पणा अत्यंत निबड–मजबुत कर्मोका बंध करता है, फेर वा छुटना मुश्कल हो जाता है और लुक्ष वृतिसे स्थील कर्मोंका बंध होता है, सो शिघ्र छुट जाता है,

लालजी रणजितसिंहजीने कहा है–

जो समद्रष्टी जीवडा, करे कुटंब प्रतिपाल
अंतर घट न्यारो रहे, ज्यों धाय खिलावे बाल ॥२॥

१२ 'सुदिष्टी' सदा सु–भली द्रष्टी रखे, किसीका भी बुरा नहीं चिंताय, किसी भी पदार्थको विकार द्रष्टीसे नहीं देखे, सौम्य द्रष्टी नम्र रखे,

१३ 'गुणानुरागी' ज्ञानवंत, क्रियावंत, क्षमावंत, धैर्यवंत, विनीत, धर्म दिपानेवाला, ब्रह्मचारी, संतोषी इत्यादि गुणोंके धारक जो होवे, उनके गुणका अनुराग कर–उनपे प्रेम धरे बहुमान करे साता उप जावे किर्ती करे गुण दिपावे खुशी होवे की अपने धर्ममे एस उत्तम पुरुष की उत्पती हुई तो ईनसे अपने धर्मकी उन्नती होवेगा एसा अनुराग धरे,

१४ 'सुपक्ष युक्तो' न्याय पक्ष धारण कर अन्यायी पक्षका त्यागन करे एस कोई कहेगा की तुमने राग द्वेष करने की मना की और फिर सुपक्षका पक्ष धारण करने को कहते हो? उनसे कहा जाता है, की जेहरका जेहर और अमृतको अमृत कहनेमे कुछ

हरकत नहो ह, जो जेहर अमृत एक जानेगावो जरूर मिथ्यात्व लगेगा खोटे को खोटा और अच्छेका अच्छा जानेगा तबही खोटे को छोडेगा और सु पखी उसे भी कहते हैं की जिसको परिवार स्वजन कुटम्ब के लोग अच्छे धर्मात्मा शुद्धधारी धर्म कृत्यमे साहाय्यके करनेवाले होवे,

१८ 'सुदीह' अच्छी दीर्घ-लम्बी द्रष्टीवाला होवे कोई भी कार्य विगर विचारा नहीं करे जिस कार्यमे बहुत लाभ और क्लेश (मेहनत) थोडी होवे बहुत जन स्तुती श्लाघा करे एसा कार्य करे जो कर्ता कर्मके निपजानेको और फलको जाणेगा वा लोक अपवाद से बच सकेगा विगर विचार करनेवाला पीछे पछतावा है,

१९ 'विसेसन्नु' विज्ञानी होय अच्छी बुरी सर्व वस्तुका जाण होय क्योंकि अच्छी २ देखी और खोटीको नहीं देखी होगा वो खोटीस कैसे बचेगा? नवतत्वमे भी ३ जाणने योग्य ३ आदरने योग्य और ३ छोडने योग्य है; ईन तीन ही का जाणपणा विस्तारसे करना पडता हैं, गायका और आकका दुध सुवर्ण और पितल एक सा होता है अज्ञाण ठगा जायगा *

* सवैया—कैसे कर केतकी कणर एक कह्यो जाय,
आक और गाय दुध अंतर घणेरा है
पीरी हो तेरेही पण रोप करे कचन की
कहां काग वानी कहां कोयल की टेर है
कहां भानु तेज कहां आगीयो बिचारो कहां,
पुनमको उजासो कहां अमावस्य अन्धेर है
पख छाडी पारखो निहारो देखो नीको करी,
जैन बिन्द और बन ब्धर घण रो है

१७ 'वृधानुग' अपनेसे गुण ज्ञानमे जो वृद्ध होवे उनकी से वा भक्ती करे तथा आप ज्ञान सत्य, सील, तप, धर्मादी गुणों करके बडा होवे †

१८ 'विनीत' सम्म सदा नम्रभुत हो रहे 'धर्मका मुल विनय ही है' विनयसे ज्ञान, ज्ञानसे दर्शन (श्रद्धा) दर्शनसे चारित्र और चारित्रसे मुक्ती की प्राप्ती होती है,

१९ 'कृतज्ञ' किये हुये उपकारका माननवाला होवे ; कृतघ्नी न होवे कहा है कृतघ्ना महा पापी ' इस कृतघ्नाका जरुर बोझा है एसा जाण श्रावक उपकारीयोंके उपकारसे ऊरण होनेकी अभीलाषा रखते हैं*

२० 'परिहितार्थ कारीये' जो काम करनेसे अन्यका हित और अपनेको दुःख होता होय तो अपने दुःखकी दरकार नही करता

† श्लोक— तप श्रुत धृति ध्यान विवेक यम संयेम
य वृद्धास्ते ऽ प्रशस्यन्ते न पुन पलितां कुरे. ॥ १ ॥

अर्थ—तपश्चर्यामे, धैर्यमे, ज्ञानसे, ध्यानमे विवेक मे नियम [पच्चखाणो] में, संयम [इन्द्रीय दमन] में इत्यादि गुणो में जो वृद्ध (बुढे) होवे उनको वृद्ध [बडे] कहना परन्तु श्वेत, पाके बाल (केस) वालेको वृद्ध (बडे) नहीं कहे जाते है

* ठाणांगसूत्रमे भगवंत फरमाया है की तिन मनाके उपकारसे उरण होना मुशकिल है. १ माता पिताने की जिनाने अति कष्ट सह पुत्रकी प्रतस्ती करी है, उनके उपकारसे उरण होने उनको सदा शत पाकादि तेलका मर्दन कर स्नान करावे, फिर सर्वालंकारसे विभुषितकर मन योग्य भोजन कराय जिन्दगी जो जीवते रहे वहां तक उनको अपनी पिठपर उठाय फिर किंचित मात्र मन नही दुःखाये तो भी उरण नहीं होय ! मा

परोपकार करे कहा है की 'परोपकाराय पुन्याय' परोपकार करना यह महा पुन्य उपराजनेका स्थान है

२१ 'सद्द सत्तो' जो ग्रहण करने जैसा ज्ञानादि गुण है, उस का लक्ष पूर्वक ग्रहण करे, जैसे लोभी धनका, और कामी स्त्रीका लम्पटा होता है तैसे श्रावकजी ज्ञानादि गुण ग्रहण करने के लम्पटी होवे सदा नया २ ज्ञान ग्रहण करे, कहा है 'संद रूडे त पदहु' संद २ कर के अर्थात थोडा २ ज्ञान ग्रहण करके भी बुद्धिवंत थोडे कालमे पंडित होते है, एकेक गुण ग्रहण करने से अनेक गुणका धारी हो जाते है, इस लिये सदा नवीन २ ज्ञानादि गुण ग्रहण करनेको

श्री जिनेन्द्र प्रणित धर्मम उनको स्थापना कर समाधीस आयु पूर्ण कराव तो उरण होव

श्लोक— अन्य लिंग परि भ्रष्टो, जैन लिंगेन सिध्यति ॥
जैन लिंग परि भ्रष्टा, कस्य रूपो भविष्यति ॥— प्रभास पुराणे—

उपकारक कहा बना पुत्रथा भाणगा २ सेठजन का जिनान दारिद्र पर तुष्टमान हो द्रव्य (पुंजी) देकर या अनेक तरह साहाय्य देकर उस भीमत बना सुखी कर दिया और कर्म योग वो सेठ दारिद्रता निर्धनता को प्राप्त हुवे उनको वो अपना सर्व द्रव्य स्मरण कर पावित्र की तरह चाकरी कर तो भी उरण न होवे परतु जिनन्द्र प्रणित धमम स्थापणा कर सम्यकी भाव युक्त आयुष्य पुर्ण कराव तो उरण होवे ३ धर्माचार्य गुरुसे श्री जिनान कथक एकहा आर्य धर्मका सच्चौप स्म शब्द सुन के देवलोक म पहोचाया वो देवता उन गुरु महाराज की यथा योग्य भक्ती करे परिसह उपसर्ग दुर्भीक्षादि से बचाव तो भी उरण नही होवे परतु जो कभी धर्माचार्य श्री जिनेन्द्र प्रणित धर्मसे पतित हो भय होवे उन- को किसी भी योग्य उपायसे पिछे धर्म म स्थिर कर तो उरण होवे

लब्ध लस्री होना, सामायिक सूत्र से लगा कर द्वादशांगका पाठी होवे, सम्यक्त्व की क्रिया से लगाकर सर्व वृती की क्रिया तकका अभ्यास करे पहिले चतुर्थ कल्पमें देखिये चंपा नगरीका पालित श्रावकको कहा है, 'निग्गथ पव्वयणे, सावय सेवी कोवीय' निर्ग्रंथ प्रवचन (शास्त्र) का पालित श्रावक पारगामी था और राजमतीजी को कहा हैं की 'सिलवंता बहु सुया' शिलावंती बहोत शास्त्रकी जाण थी, इन बचनोंसे समजा जाता है कि आग श्रावक श्राविका शास्त्र के जाण थे इससिये अब्भी भी श्रावक श्राविकाको शास्त्रका जाण होना चाहिये पर २१ गुण युक्त होवे उनको श्रावक कहना, इन्ही युक्त गुण स्विकारना,

— श्रावकके २१ लक्षण —

१ 'अल्पईच्छा' –थोडी इच्छा—विषय तृष्णा धन्न स्यादिक का विषय कमी कर, विषयमे अत्यंत मग्न न होवे सुख वृति रहे,

२ 'अल्पारंभ' छे कायका आरंभ करावे नहीं, अनर्था दंड सेवन कर नहीं, जितना आरंभ घटता हो उतना घटानेका उद्यम करे,

३ 'अल्पपरिग्रही' घनकी तृष्णा थोडी कुकर्मे कुव्यापार की इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा है उतनेपर संतोष रक्खे मर्यादा सकोचें,

४ 'सुशील' ब्रम्हचर्यवंत, तथा आचार गोचर भद्रप्रणिय रखे

५ 'सुव्रति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार चढते प्रमाणसे पाले,

६ 'धर्मीष्ट' नित्य नियम प्रमाणे धर्म क्रिया करे,

७ 'धर्म वृति' मन वचन काया के योग सदा धर्म मार्गमे

प्रवृत्ता रहे,

८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो आपक के कल्प (आचार) हैं उसमे उग्र विहार करनेवाले अर्थात उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रमाण रक्खे

९ 'महा सवगी विहारी' सदा निवृति मार्गमें सलीन हो रहे,

१ 'उदासी' संसारके कार्यमें सदा उदासीन वृत्ति युक्त रहे

११ 'वैराग्यवत' सदा आरंभ परिग्रहसे निवर्तन की अभीलाषा रक्खे,

१२ 'एकांत आय' निष्कपटी—सरल—बाह्याभ्यंतर एक सरिसे रहे

१३ सम्यग मार्गी' सम्यक ज्ञान दर्शन चरीता मे प्रवृत्त सदा प्रवर्ते

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमें निम्प वृत्ति करके आत्म साधन कर, प्रणाम से भावत सर्वथा वध कर दा है, फक्त ससार विवहार सा-धनेका द्रव्यसे हिंसा करनी पडती है * इस लिये साधू जैसा ही है,

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तूका विनाश न होवे यथा दान फली भूत होवे

---

* हिंसाकी चौभंगी—१ द्रव्य हिंसा और भावस हिंसा सो कसाई आदिक जीवका वध करे सो २ द्रव्यसे हिंसा और भावसे अहिंसा सो हिंसाके त्यागी मुनिराज का आहार विहार आदिक में विनाउपयोग हिंसा निपजे सो ३ भावसे हिंसा और द्रव्यसे दया इव मिगी गया अभव्य साधु मरे, ४ और द्रव्य भावसे दोनोसे अहिंसा सो अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते है

१६ 'उत्तम' मिथ्यात्वी, सम्यक्त्वी आदिकसे गुणाधिक भेद है

१७ 'मिथ्यावादि' पुन्य पापके फलको माननेवाले शुद्ध क्रिया करनेवाले

१८ 'आस्तिक्य' द्रढ श्रद्धावंत जिनेश्वरके या साधुके वचन पर पूर्ण प्रतीतवंत,

१९ 'आराधिक' जिन वचन अनुसार करणी करनेवाले शुद्ध वृत्ति.

२० 'जैन मार्ग प्रभावक' तन, मन, धन, करके धर्मकी उन्नती करे

'अर्हतके शिष्य' साधू जेष्ट शिष्य और श्रावक लघु शिष्य, एसे अनेक उत्तमोत्तम गुणके धारणहारे श्रावक होते है.

—: वर्ग १२ वा :—

—सूरी मंत्र वगेरो कि उत्पति—

—०—

खिये ! बारा वर्ष महा दुष्कालमे जो मुनि संयमसे भ्रष्ट होगये थे उनामेसे एक जीवाजी गुरुने विचार कराके नविन मत निकाले सिवाय अपना गुजर नही चलेगा और आदर सत्कारमि नहि मिलेगा वो नविन मत कैसा चलाना चाहीये एसा विचार करके चित्रकोटमें महा समर्थवान ब्राम्हण राम भट्टका पुत्र कृष्ण भट्ट रहेता है उसके पास जाके विनंति करके कहेनाके हमारे प्राचीन जैन धर्मके विरुद्ध नविन मत निकालनाहे सो कैसा करना चाहिये तब कृष्ण भट्ट बोलाके तुम प्रतिमाकि पूजाधारण करो और ये पांच बात तुमारे देवकी प्रतिमाका नहि होना चाहिये एकतो प्रतिमाके हाथमे शस्त्र रखना नहीं दुसरी प्रतिमाको कोइ वगेकि असवारी नहि होना तिसरी प्रतिमाके पासस्त्री नही होना, चोथा प्रतिमाको भोग लगाना नहि, पांचवा प्रतिमाको गहना पहेराना नही, ये पांच बातकि प्रतिमाके पास नास्ति करके जिन मुद्रा ध्यानमें प्रतिमा स्थापित करो और मैं तुमको सुरिमंत्र देवा-हु सो तुमने होम करके ये सुरिमंत्र सुणाके पिछे प्रतिमाको मंदिरमे स्थापित कर देना सो तुमारा मत बडे धाम धुमसे चलेगा तिवारे जीवाजी गुरु सुरि मंत्र लेके अपणे ठिकाणे आये और कितनेक अपने श्रावक बनाकर मंदिर प्रतिमा स्थापित करि मंदिर प्रतिमा विर निर्वाणके बाद ८८२ वरस और

मना किया है अत एव ये वस्त्र तेरे अनुपयोगी है वास्ते यह पापीस दे आवो, इसमे हित है परंतु संसमस्तने व रत्न कम्बलका वरिया समजकर वापिस न करते उसपर ममत्व भाव बढाया यनसे बांध रखी और आप बाहर जावे और वापिस अदर आवे दोना वक्त ममत्व भाव से संभा ल्ता रहा एसा करते बहोत समय व्यतित हो गया एकदा वा संसम- स साधु किसी कार्यको बाहर गया था पिछे से गुरु माहाराजन वे रत्न कम्बलको निकाल कर फाडके टुकडे २ कर और साधुओंका पाव पुछने का दे दाल संसमस पाहरस मकान पर आया कम्बलका देखने लगा वे कम्बल न मिलनसे गुरुजीसे पुछा कि मेरा कम्बल किसने ली है, तब गुरु महाराजने फरमाया की तुमने कम्बलके उपर ममत्व भाव बढा दिया साधुओंका चाहिये क किसी भी वस्त्र पात्रक उपर ममत्व भाव नहीं रख ना चाहे इसमे मनुष्य चारगति रूप संसारसे भ्रमण करता है इस ममत्व भावमे तुमारा अहित होता हमने देखा अत एव उसके टुकडे टुकडे करके साधुओंका पाव पुछनेके लिये व टुकडे दे दिये गये है धन्य है जिन कल्पी साधुओंको की वस्त्र तथा पात्र बिल्कुल नहीं रखते है स्थिवर कल्पि साधु वस्त्र पात्र रखते है सो संयमकी भावना तथा लज्जा रुप लज्जीके लिये रखते है वस्त्र तथा पात्रक उपर ममत्व भाव करणा यह साधुका धर्म नहीं है क्योंकि उनपर ममत्व भाव करनेसे व परि ग्रहकी गिनती मे हो जाता है और साधुको जाव जीव परिग्रहका त्याग है वस्त्र पात्रादि रखना वे केवल संयमके लिय है, न की उनपर ममत्व भाव बढाकर वस्त्र पात्रादिकक उपर संसारमे भ्रमणके लिये अत एव हे देवाणु प्पीयाह ममत्व भावका त्यागकर यह सुनकर अपने मनमे ह्र बुद्धिपूर्वक व्याख्यानके वक्त गुरुजीने जिन कल्पी साधुका बयान किया तब संसमस्त्र जिनकल्पका सरण लेकर कहा की आप इस मुजब क्यों नहीं चलते तब गुरु माहाराजने फरमाया की हे देवाणुप्पीया इस पंच

विक्रम संवत भारसे बाद ४१७ कि माल स्थापित हुइ मगर नवा मगम मम-मक्र लोग अंगिकार नहि करने लगे और कोइ लोग भावभि नही, तब मीनाक्षी काशिष्य, रत्न गुरुन विचार कराके ये मत कमन चास्त नही है इसवास्ते कोइभि दुसरा उपाय करना चाहीये एसा विचार करनेस मालुम हुवा के हस्तीनापुरम मो भाग्य कुरुक उत्तम हुव तीन भाइ विद्यामें बड समर्थ मानहे उनाके पासस कुछ विद्याभ्यास अपने मतको स्थीर रखना चाहिये एम-विचारक हस्तीनापुर जाके इच्छाराम धर्म मन पासामीस मिले मिलनेके बाद रत्न गुरुन उनास विनंती करके कहाके, अहो भाइ हमार मतकि नास्तीहा-मता परगत भार्पोपचाहे सा आप महरबानी करके हमारा मत कायम रहे एसा इलाम करना चाइये य बात सुनक वा तिनु भाइ कहन लगेके हमारा नांव नित्य लेवो ता हम भापका मत कायम रखगे और विद्या दवग तब रत्न गुरुन य वचन सुनही प्रमाण करके नाय इच्छारामन धम बुध्धिकि विद्यादि-वि, धम सेनने धमधर परिपुष्प मीति जनकि विद्यादिवि, और वासामीन वसिकर्ण विद्यादिवि य विद्यारत्न गुरुन लेके स्थानप आया और विचार कराके इनके नांव नित्य स्मरणमे भाव एसा कोन उपाय करणा चाहिये तब साधन के साथ विचार उत्पन हुवाके हरणक मनुष्यके नावका प्रथम अक्षर लेनस काय सिद्ध हो जावगा ऐसा विचारके तीन भाइक निगम क्रियाके वंदना व्यवहार करणा तब ये पाठ उचारण करणा इच्छा मिच्छ मासणा इसमे इच्छारा-मका नाम बनम आवेगा और अपनेको काइ वंदना करे तब उपदश बखनम धर्म लाभ एसा कहनेस धमसेनका नाम लेनेम आवेगा और विदेशिको शिष्य करना तब वंदन वगरेसत पूर्ण मंत्रके शिरप रखना इसका नाम वासक्षेप सहेना इसम वासामीका नाम लनम आवगा और इनाका नाम कायम रहगे और विनयस मध सिध्धि काय पूर्ण फलदायक होवेगा एसा विचारके एक तिनु बाबोका नियम करके और तिनु मंत्र सिध्ध करके मंत्रके प्रयासस मुर्तिपुजकाके मगमकि फिर निय वृध्धि होनलगी, उनक तिनु भाइ मुर्तिपुजकांके मतमम

तु यह लोगही हमारी ऐसा लेख करते है अतएव दो बाते इनाके बारम हम अनिगास लिखनी पडती है क्या किया जाय मन खास करके मूलमे असकी दृष्ट ता फिर क्या करे अतएव हम यहां पर दिगंबर मतकी उत्पत्ति बगेरका कुछ हाल लिखते है , पाठक गौरके साथ पढ़े.

दिगंबर का हमारे उपर लेख

यान ईडियाके गुरु मलिन वस्त्र धारण करते है और स्नानभी नही करते है परन्तु उनकी सख्या बहोत थोडी है व श्वेतांबर जैनियाकी एक छोटीसी शाखा है जैनीयोंकी दो बडी संम्प्रदाय अर्थात दिगंबरी और श्वेतांगी श्वेतांबरोंको इंडीयाके साथ नही मिला देना चाहिये बगैरे बगैरे

बाबु बनारसीदास इ स १८०१ मथुराके धर्म मोहोत्सवमें दिया हुवा जैन धर्मपर दिगंबरका व्याख्यान (हिंदि उल्था) हमे खेदके साथ कहना पडता है कि बाबु बनारसीदास जैसे सुस सुशिक्षित माहाशयने जब एसा आक्षेप किया है तब औरो की बात क्या करे

उतपती

श्री वीर भगवानके निर्वाणकी ६०० वर्ष व्यतीत हो गये थे उस वख्तमे वसुभूती नामा एक आचार्य थे उनके १०१ शिष्य थे जिन मे से सहसमल एक (जो के दिगंबर मतका मुख्य आदिका कर्ता हुवा) एक समयमे जिसर है क वो सेसमल साधु एक रत्न कंबल जाचकर ले आया गुरुको बताया तब गुरु कहने लगे की हे भाई ऐसा भारी मो ल्यका वस्त्र साधुयोंके लिये अकल्पनिय हैं ऐसे वस्त्रका साधुने अपने उपयोगमे नही रखना चाहिये, क्योंकि विगराग देवने एसा करनो साफ

म काल्मे जिन कल्पीका पद विछेद है और इस पंचम कालमे ये मार्ग नही पाल सक्ता अत एव उसके मुताबिक हम नही कर सक्ते हैं ईस पर सेसमल्ने बहुत वाद विवाद गुरुजीसे करा उसको गुरुजीने बहुत समझाया नही माना केवल बापतकी द्वेष भावकी वृत्ति प्रगट होनसे औ र व क्रोधवश (चंडाल्य) के वशमे होकर गुरुजीके पाससे निकलक दिगंबर वस्त्र रहित नग्न होकर चल दिया उसके साथ उसकी बहेन भी नग्न होकर चल दी एक समय दोनो जने वस्तीमे आहार लेने का जा ते थे उस वक्त उस साध्वी को नग्न देखकर किसी वेश्याने लज्जास उसके उपर एक वस्त्र मकानके छपरसे गिरा दिया वस्त्र उसके उपर पडनेसे उसके भाईन जा पिछे फिरके देखा तो उसके उपर कपडा पडा हुवा नजर आया तब वो कहने लगा की एक वस्त्र रख तेरा नग्न रहना ठीक नही है जिस वक्त ससमल्ने ये मत निकाला उस वक्त सिर्फ बोलोका फर्क डाला था पाच बोल ये है केवली आहार न करे १ वस्त्रमे केवल ज्ञान नही २ स्त्री को मोक्ष नही ३ जैन मतके दिगंबर आम्नायके सिवाय दुसरे को मोक्ष नही है ४ काल द्रव्य मुख्य है ५ बादमे ईसही मतमे एक कुमदचंद्र मुनि बहुत प्रबल पंडित हुवा उसने असल्मे अर्थात जैन धर्मसे चौरासी बोलका मुख्य फर्क डाला पिछेसे अब तक बहुत बातोका फर्क पड गया है

॥ दोहा ॥

परस्त्री विग पटसे सुम, बोल चौरासी फेर सब विषम बदे,
भयो भ्रम तो बोत अपर

...ष्य व्यतीत होते होवे ईस मजहबमे से भी कोई मत निकले हैं

बीस पंथी तेरा पंथी और तारण तिरण वगेर फिर यह ससमस्त अपने को प्रसिद्ध करने लगा की मै जैनी हुं उसीसे ईनार्का नग्न ज्ञान की परपरा चलने लगी और संसमस्त शिष्यभूत और काट वीर इन दोनोको प्रति बोध देकर अपने शिष्य बनाये जस्से ईनका दिगंब र मत चला,

अब हम पाठकोके लिये असली दिगबर किसको कहना उस का स्वरूप बतलाते हैं सो निच मुजब—

असली दिगबरका स्वरुप

हालके मझानेम दिगबर मुनियोको जो वरत हे वो शास्त्र म यादिसे विरुद्ध ह और इस मजबकी वृद्धिका कर्त्ता कुंदकुंदाचार्य हुवा है मगर कोपीन (चोला) कमडल और मोर पिछि वगेरे रखना परि ग्रह माय रखना वगेरे कार्य असली दिगबरके नही है वतमान का रुम जो दिगबर कहलाते हे कपोल कल्पित भासक दिगबर हे असली दिगबर का स्वरुप निचे दिखलाते हैं,

—असल दिगबरका स्वरुप—,

जिन कल्पी मुनि [दिगबर मुनि] उनका कहते ह जो वज्र रिषभ नाराच सघण और समचारस स्थाण जिधन नव पुर्व * उत्कृष्ट

---

* १ हाथी के उपर बिम्बर पर हाता (अमारी) हाथ उतनी सुकी स्याही का ढिग करे उस स्याही स लिखा जाव उस एक पुर्व कहा जाता है,

दस पुर्व के धारक घोरतप के धारक तिसरे पहेर गौचरी करे घोर २ ब्रम्हचारी सम, दम, सम, के धारक मेग (मास) मे मण, पांचम, कंदा, शरीरमे भास्र गोली लगे तो निकले नही देवका मनुष्यका तिर्यचका महा कठोर परिसह उत्पन्न होनेसे डरके पिछे हटे नही शरीर मे रोग होनेसे दवा खावे नही, जिस मकानमे उतरे होवे, अगर वहा पर अग्निका प्रकोप होवे तो आपके शरीरकी रक्षाके वास्ते बाहेर निकले नही, तिन ज्ञानके धारक होवे ज्ञानके मख्से सर्व बातको जाणे और अनेक लब्धिके धारक होवे अगर उनके अंजलीमे १०० सो घ ड पाणि के डाल देवे तो सिला बध जावे परंतु एक बिंदु जमीनपर गिर नही और आहार पाणी लेनेको जावे तब आहार वेरावे वसत महरानेवालेके हाथसे एक कण मुनि के अंजलिमे गिर जावे तो उस रोज उसमे सबर कर लेकिन दुसरी वसत लेवे नही ईस मुजेसे पाणी भी समज लेना, एक ठिकाणे जितना अन्न पानी मिले चलने मे ही सबर करना लेकिन दुसर घर जाना नही शीत उस्नकी आतापना सब लेकिन शित कालमे गुप्त मकानम न रहे और उस्न कालमे छायाके मंडे मकानमे न रह मव कल्प विहार करे सर्वथा प्रकारे अमति बंध होवे धम उपदेश नही देवे छवि समर्था इंद्रियोके विकारों को दमन करे अगर औषध वगैरेके योगसे इंद्रि हिण होवे नही अगर छ महिने आहार नही मिले तो भी दिनता नही देखावे सुर वीर और थिर इत्यादिक आके डिगावे तो डिग नही इत्यादि अनेक उत्तम गुणके धारक होवेगे मुनि जिन कल्पि अथात असल्मे दिगंबरी पदवी के धारक और अधिकारी होते है, उसे असल दिगंबर कहना चाहिए द्वादशांगी के अनुसार जिन कल्पि पना (दिगंबर) च्यार महिणे से ज्यादा नही रहता क्योंकि उनोका मनावस्थादि इतने पवित्र और मजबुत होते है की ... , गी पुरुषप ... का नाम कर डालते है,

इतना ख्याल नही करते है के, गत कालके हमारे मैथाम क्या क्या लिखा है, और वर्तमान कालम हम क्या क्या लिखते है और भविष्य कालम हम लोग क्या क्या लिखेगे, मगर इन तिनो कालके वार्ताका अर्थ का क्या क्या नतिजा निकलेगा इस बातका हमारे जैन भापक पोकस भद्दाका किंचित मात्र भी ख्याल नही है, मगर हमारे पास भिम जैन भापक पाचो क ख्यालात स्यामपं खानके वास्ते आप मुर्तीपुजक पगके पुरा मूर्तीपुजक और प्रामाणिक पडितका लेख लिख धरन करते हैं

वस्थिये ! "श्री अनुभव माला उर्फ स्वानुभव दर्पण" विवचन करणार पुरा मुर्तीपुजक प्रामाणिक पंडित "मि लालन" अनुवाद कर णार—माणेकलाल घेलेभा माइ इस प्रथके भए १७–१२–१९ का उस लिख मुजब है सो सामणा —

(देव क्या छे)

तन मंदिरमां जीव जिन, मंदिर मुर्ती न देव ॥
राजा भिखारीयें मम, पत्थी जनने टेव ॥४२॥

भावार्थ—शहरुपी मंदिरमां जीव छे, यम जिन देव छे, परन्तु (पाषाणमां) मंन्दिरमां (पत्थरनी) मुर्ती छ, य देव नथी आमस्य छ क राजा भिख मागवान (ज्यां–त्यां) फरके छ (सर) ये धी माणसन (ट व्यो) टवत पडी छे

परमार्थ—य अरने बहरुपी सुंदर मंदिरमे आ जीव है वा जिन कुल है परतु पत्थरक मन्दिरमे पत्थरकी मुर्ती है वा जिन देव नहीं है, आश्चर्य है क स्वता स राजा हा के हर एक टिकाणप माना प्रवराक मंदिरमे भिखा तिर्थोमे दस्कर ढुंढत फिरते हैं और उनाके पास प्रार्थना करत है, और भीक मांगते है क मुझको मुक्ति देवा, परतु अप

नस निराळे एस पत्थरके मंदिरमे पत्थरकी अचेतन मुर्ती क्या उनोंको मुक्ति अनेक गुण व्यतिकर्ण हो जाय तो भी दे सकती नहीं है ऐसी मिके मंगन हुवे व यात्रा करते हैं मटकते जन्मो--जन्म बित गये परंतु पत्थरके मंदिर मे बैठे हुवे, जो पत्थरके देव है, उनोने किसीको भी मुक्तिका दान दिया नहीं है मगर अपने पासमें ज्ञाता का देहरुप मंदिरमें सचेतन जीव है य ही सच्चा देव है,

> नथी देव देहरा विषे, छे मुर्ती चित्राम, ज्ञानी जाणे देहने,
> मुर्ख भमे मठुगाम ॥४२॥

भावार्थ— देहरामा देव नथी पण मुर्ती अने चित्रामज छे ज्ञानी पुरुषो देहने (पातामांज छे एम) जाणे छे, अने मुर्खो (ज्यां ज्यां) मुर्तिकि चित्रामणु होय तथा मणा ठकाणामें भमे छ—भटके छे-

परमार्थ— हेशिष ! देवल अगर मंदिरमें देव (परमात्मा भगवान) नहीं है, परंतु पाषाणादिक की मुर्ती अगर चित्राम (चित्र) है जो ज्ञानी पुरुष हैं वो देवका स्वय [अपने] शरीरमें है ऐसा खास जानते है, मगर मुर्ख लोग जहां जहां मुर्ती अगर चित्राम [चित्र] होवे एस अनेक ठिकानेपर भटकते रहते घुमते फिरते है

— फेरभी देखो —

सरा देव छे देहमां ज्ञानी जाणे तेह तिर्थ देवालय देव नहीं प्रतिमा निंदक एह ॥४८॥

भावार्थ—ज्ञाना मार्ग गत जाणे छेके माया देव तो देहमां (आत्मरुप) विराजे छे तीर्थ स्थानमाके देव मंदिरमां वा (धातु आदि बना) प्रतिमांतो एमनेन ग्यादी छ—

परमार्थीः—देखिये ! अपने शरीररूप मंदिर (देवल) में जो सचिदानंद (जीव) है, बोही सच्चा देव है बाकिके कलिम मंदिरामें किंवा तिर्थो [शत्रुंजा गिरनार-समेतशिखर-वगैरे] वगस्थानोंमें देव नहीं हैं परतु-धातु-पाषाणादिककी मुर्तिर्यां अर्थात चित्राम (चित्र) है ऐसा पुर्ण खात्रीके साथ ज्ञानी पुरुष जानते है, इसमें कोईभी शंकेका शक न ही समजना, और इसका सेवन कोन करते है जोके मिथ्यात्वकी छाक [नसमें मूर्ख और अज्ञान बाक साय बाल्यवत् ख्याल करते है; वास्त प बात अवश्य त्याग [छोडने], करनेक स्यक है; इसलिये ज्ञानी पुरुषोनें इसका अवश्य त्याग करनाही चाहीये-समीक्षा-मार्थिये ! महाशयजी ! इन मूर्ति पूजकोका साम विलक्षणाक विचित्र प्रकारका चलण है के विचारशील पुरुषोंकि कुछ अक्ल काम नही कर सकति हैं क्योंकि इन मूर्ती पुजकोकी अभ्यंतर [गुप्त] की श्रधा औरकि और हैं और पारप (प्रगट) की श्रधा लोकोंको बुलानक वास्ते औरकी और हैं कहिये साहेब ! अब इन मिथ्यात्वादियोंकि किंसतरसे प्रतित कि जावे कदापि नही, क्योंकि इन लोगोंका कहेना औरका और-चलना औरका और और लिखना औरका और हैं ये इनाक लेखोस खुब तोरसे मालुम होताहैं और मुर्ती पुजकोंकि इश्वर और परमेश्वर झुठ और कपट हा हैं और ज्ञानी पुरुषोंके आज्ञाका भंगकरना और श्री जैनके असलि और प्राचीन सर्वज्ञ भाषित सिद्धांतोके पाठोंकि चोरिया करना -ये इन लोगोंके प्रधान है, अब कहिये साहब ! इन चाहाको समत करनेस क्यों कर प्रधानता न मिले, अभी साहेब अवश्यही मिलगी

पुंगरक्षीः—भाजी साहब ! खुब माप विचारके साथ कलम उठा-मा-नही तो आपको आगे हासका ज्या लेना पडेगा

उत्तर पक्षीः—माहाशयजी ! हमारा तो कथन पूरीतोरसे सत्यहै-

पुर्व पक्षी:—भ्रमीसाहेब ! आपके पास कुछ सबुति है या जबानी जमाखर्च ही है.

उत्तर पक्षी—माहात्मयजी ! मुर्ती पुजकोंके ग्रंथस मानुकुल सपुती मिलाये

पुर्व पक्षी —भ्रमी साहेब ! बराय मेहरबानीके साथ फरमानकी तमदी किजीये

उत्तर पक्षी—महात्मयजी ! नेत्राके पड़दे दुर करके पुण स्याल करके साथ पढीये

देखिये ' माहात्मयजी ' आत्माराम ये एक तपागछ निवासी पिता म्बरी साधुथा और इसे पुर्ण प्रामाणीक पुरुषभी मानते थे और इसका पादु मंदिरमे दरज भी किया गया है. और इनाके तिर्थंकरों की मुर्तियों के बराबर पुजाभी करते हैं ये आश्चर्यका स्थानक मुर्तीपुजकोंके जो गत्काल (भुत काल) मे पुर्वाचार्य हुये है उनाका पादु कोर भी मदिरमे दरज नही किया गया है और न उनाकी पुजा भी प्रतिमाके बरावर करते है मगर मुर्तीपुजकोने अपने पुर्वाचार्योंस भी ज्यादा आत्मारामको तुल्य तिर्थंकरोंके माना है तो कहीये साहेब ' इससे ज्यादा प्रामाणिक पुरुष किसे कहना चाहिये मगर इस आत्मारामके बारेमे तथा गच्छ निवासी कर्ता मुनी ' धन विजयजी अपने बनाये हुये ग्रंथोंमे क्या लिखते हैं, सो नेत्रा खोलके बांचो तो सही—धन विजयजी कृत " चतुर्थ स्तुति निर्णय शंका द्वार " का लेख निचे मुजब—पृष्ठ १८४ पंक्ति ३ से १४ तक—

ज्यों निश्राकृत अनिश्राकृत सर्व चैत्यमें भगवंत पुरुं देव वंदन करयुं छे तथा जिन प्रतिमानी द्रव्य पुजा करी तत्स्यादि भगवंते चैत्य वांदना कही

छे तेमां कस्य मान्य गाथा आश्रित श्रण धुइए तथा मकारांत रची चार धुई वध वंदना कही छे पण एकांत च्यार धुइएन कही नथी ने समाचार मान्य निसम्मति थी नव प्रकारनी चैत्य वंदनानो पाठ आवश्य संग्रहना नीचे पुस्तक मां समाकठ छेम नहीं पण आत्मारामजी आनंद विजयजी स्व कपोल कल्पि त चार धुइए नव प्रकारनुं चैत्य वंदन था पवाने पोताना नवा स्थापित पुस्तकोमां " संघाचार वृतौ चैत्य स्द था व्याख्याने वृह भ्याष्य संमत्या नव धा चैत्य वंदना व्याख्याता " इत्यादिक भीगाकुत " वइय परिवाडि मासुं" ग्रहां सुघी नव प्रकारना मंत्र सहित पकरवी पिसाचना दावामां पडवाने भव भ्रमणनो भय अव गुणीने—पत्र ९९नी पृष्ट बिजी आली आ'ठमी 'थी पत्र १ नी पृष्ट १ ओळी त्रिजी सुधी पोतानी परतमां नवा प्रक्षेप कर्यो ते थी एम जणाय छे के आत्मारामजी आनन्द विजयजीने अभि निवेश मिथ्या त्वना उ-य थी उत्सुत्र परुपणा करवाना भव संसार नि वृद्धि थवाना भयन रह्यो एवात सिद्ध थाय छे ता हवे सज्जन लोकोने विचार राखावो मा ठ्ये के मार्णोन एक अक्षरकतनो मात्र हेर फर करवा थी अनंत संसार वृद्धि नुं कारण थाय तो प्रथमा पोतानी मन कल्पना एन वा पाठ बनावीने पुर्व पुरुषोना करेल ग्रंथोमा प्रक्षेप करीने नवा पाठ स्थापवा ते काम करवा थी जे पाप लागे ते थी अधिक पाप बिजा क्रिया काम करवा थी लागतुं हस ए काम करवाने कोई पण भव भीरु पुरुष पोतानी सम्मतीता नव दे परतु सारा भाग्य: करण थी पश्चाताप करीने आत्मारामजी आनन्द विजयजीने एहवा दुष्ट काम थी दुर करवाने अर्थे अवश्य सत्य उपदेश करवाने केम तत्पर नहीं थाय अपितु तत्पर थायज केमके ग्रंथोमां पोतानी मुतकल्पना नवा पाठ अन्य कृत ग्रंथमां प्रक्षेप करवा ए वात कोई सहेन नथी ए करवा थी ते जीव जिन वचन उत्थापक उत्सुत्र दाव थी अनन्त ससारी थाय छे तो चंद्र सम दुःखमा वर्त रांस थी उजवल जे सर्व दर्शनमे विरोमणी भूत श्री जैन धर्म चिंतामणी रत्न पामीने पोताना कोठ आग्रहने आश्रित थई तेम वेगळु

उत्तरपक्षीः— हांजी ! सुनती व सकते है

पुर्वपक्षी— अजी साहेब। साथ कृपा फरमाइये

उत्तरपक्षी— महाशयजी । नेत्रोके पडल खोल्के पढीये

देखिये। सुत्र भी भगवतीजीमें प्रभुक वास्ते शिरा अणगारने दवा निमित कोला पाक लाय, सांपे कोला पाक बिजोरा पाक का सुक्ष्म अधि कार कथा है मगर भगवतिजीकी टीकामे कुर्कटमस मंसार मंस अर्थाट कुक्कडा [कोमडे] बिल्लीका मांस एसा अर्थ किया है तो क्या ? प्रभुन कोलेका पाक भक्षण किया है मगर कुकडेका मांस भक्षण नही किया है किंतु मुर्तीपुजकोने तो भगवान को मांस आहार का साक्ष्य दाप लगु किया है. तो दुसरोप झुठा कलंक लगावे उसमे वा ताअब ही क्या है

शंका— अजी साहेब ' ये बात कदापि नही होनेवाली है,

समाधानः— हांजी । इसकी सबुती "सम्यक्त्वसार" ग्रन्थके मह १४१ के प्रश्न १९मे भी देखो

फेर भी देखो। पुजा मुर्तीपुजक श्रावक भिमसिंह माणेकका छपा या हुवा आचारांग सुत्र पाठ कल्प सुत्रके मह ९९मे का पाठ निच मुजब

[पाठ]

वासावास पज्जोस वियाणं नो कप्पई निग्गथाणवा,
निग्गथीणवा हट्ठाणं तुट्ठाणं आरोगमणं बलिया सरिराणं
इमाओ नव रसविगइओ आभिक्खण (२) आहारित्तए
तंजहाः— खीर १, दहि २, नवणीय ३, सप्पीं ४, तिल ५, गुड ६, मदु ७, मज्ज ८, मंसं ९, ॥१७॥

ईमदा ग्रंथकर्त्ता उपाध्याय विनय विजयजी कृत सुख बोधिका टिकाका गुजराथी भाषांतर ग्रंथका प्रष्ट ??१ का लेख—

(देखो)

तरुण अने बलवान शरीरवाला साधुवोने वारवार नवरस युक्त विगयवाला आहार करवो कल्प नही पण कारण पडये कल्पे—

समीक्षा— देखिये ' महाशयजी ' ये कैसी भयंकर बात है थोडे साचा तो सही अवश्य ता हम आप नवविगयक नांवका खुलासा करग (विगयके नांव) दुध १ दहीं २ मखण ३ घी ४ (घृत तुप) तेल ५ गुड ६ (सर्व जातका मिष्टान) सहेत ७ दारु ८ मंस ९ [गाप] ॥

ख्याल करनेका स्थान है के उपरोक्त लेखोंसे कारण युक्त जैन साधुको दारु और गाप [मास] सेवन करना सिद्ध होता है, मगर जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें तो ये बात कहीं भी नजर नहीं आती है, और ज्ञानी पुरुषोंने तो साफ तोरसे फरमाया है के दारु और मास सेवन करनेवाले जीव अधोगतिमे जाते है तब ये बात किस तारसे मंजुर करनेमे आवेगी कदापि नही, मगर मुर्तीपूजकोने अपने बनाये हुये टिका चुर्णी भाष्य नियुक्ति ग्रंथ प्रकरण वगैरेमें जो जो माहा विलक्षणी शुद्धा शुद्ध मनकिन पाठ दाखल किये है; उनोंकी पुष्टाइ के वास्ते भी जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमे भी कपोल कल्पी त शुद्धा शुद्ध नकिन पाठ बनाके दाखल कर लिये है और सच्चे मणिम असली और प्राचिन सिद्धांतोंमेसे कितनेक पाठ निकालके बाहर फेंक दिये है, इसलिये ' गुप्तगो ' कैसी जबर दस्त हुस्यारी करी है, के हम कुछ बयान नही कर सक्ते है, मगर जमाने हालमे मुर्तीपुजकोके पास-

के पूछे हाम बिच मैदानमे बजाना शुरु हो रहे हैं

पुर्वपक्षी:— अजी साहेब ये तो मानन आश्चर्य पाया हैं मगर इसका खुल्यसा नही करोगे तो हमको अवश्य जैन मजब छोडना पडेगा

उत्तरपक्षी·— माहाशयजी हम तुमारे दिल्की पुर्ण तसल्ली करेंगे,

पुर्वपक्षी·— अजी साहेब ! हम आपका पुर्ण उपकार मानेगे.

उत्तरपक्षी·— किजीये भाई ! पढो सा सही

सुन श्री आचारांगजीका श्रुत स्कंध दुसरा अध्ययन दसमेका पाठ लिखे मुजब·—

पाठ·— से भिक्खुवा भिक्खुणींवा जाव समाणे सेज्ज पुण जाणे ज्जा मसंबा मच्छंवा भज्जिज्ज माण पेहाए तेल्ल पुयस्सा आए साए उवक्खडी ज्जमाणे पहाएणो खद्ध खद्ध उवसं कमितुभासेज्जा णणत्थ गिलाणणी याए ||६१९||

समीक्षा — माहाशयजी ! देखिये ! ऐसे निच और अशुध्ध काय भीभगवंत माहाराज स्वतास सेवन करते नही हैं और दुसरके पाससेकर वाते भी नही है और ऐसे निच और मलिन काय करनेका उपदेश भी देते नही हैं और ऐसे कार्य करनेवाले पुरुषोंके हृदय हमेश सदा सर्वदा कठोर और मलिन और अपवित्र बन रहते है और ऐसे पुरुषोंके हृदय कमलमेसे सदा सर्वदा दया मायाकी नास्ती होती है, अर्थात ऐसे पुरुषोंसे दया माया हमेशा अनंत जोजन दुर निवास (रहती) कर है मगर मुर्तीपुजक लोग कैसे निर्दयी है के [illegible] बयान नही कर सकते है देखोके जो पुर्वाचार्य जो हरी भद्र [illegible] उनोने भी धर्मासिंध १५४४ के [illegible] हाम बिच [illegible] उपर कीने क्या कहा है सो [illegible]

[सवैया ३१ सा]

हरी भद्र सुर जान, कुर कर्म कियोपर,
भूर मोघ होम स्थिय, मन्यों मन धारी हैं ॥
देखा " कल्पलता " मे भगन कथा लिखी पद,
संजमथी पुरवाको, दई सुर गादी है ॥
ऐसे दयावतके, बनाये शठ माने ग्रंथ,
धत नहीं तामे छाइ अविद्या मनादि हैं ॥
हिंसा बिना धर्म न होय, एसे कहैं शठ,
हिंसा कहा धेरे ईही आतमाकी दाधी हैं ॥१॥

फेर भी देखो। पुलाकलीब्धकी टिका तथा समाचार की नि-
श्रम संघके वास्ते माहा समर्थ चक्रवृति राजाकी सेन्याका विनाश कर
डालना लेख निचे देखो—

[गाथा]

सया ईयाणकव्वे, मुनी जायक चक्कीसेनं ॥
पिक्कविड मुणी मरप्पा, पुलायल्द्ध संपन्नो ॥

देखिये ' भाग्यसपनी ! ये मुर्तीपुजकोके पूर्वाचार्य बगैर मुर्तीपुज
क लाग कैसे महान दयावंत हैं के अनेक मनुष्य वगैरोंको प्राण मुक्त
करते हैं और करनेका उपदेश भी देते हैं ईस वास्ते मुर्तीपुजकोंने भी
जैनके ममस्वी और माचिन सर्वज्ञ भणित सिद्धांतोमे अनेक ठिकाणाप
मनके कपोल कल्पीत मिथ्यात्वकी कल्लोलमे स्वछंदास मनकी उछरय
मुजब माहा विलक्षणी मशुद्ध और मलीन मलिन पाठ बनाके दाखल

कर दिये हैं सिर्फ मवाध इनके लोगोको डुबानेके वास्ते और ईस भव का स्वताका स्वार्थ सिद्ध करनेके वास्ते एसा घताग खडा किया है,

फेर भी देखिये। मुर्तीपुजकोंके आठ आचार्योने मिलके श्री महानसिथ सुत्रका जीर्ण उधार किया है मगर इसही सिद्धांतमे उक्त आचार्योंने मन कल्पीत नकलि पाठ बनाके दाखल करके पश्चातमे मिथ्या दुष्कृत दिया हैं विशेष अधिकार देखना होवे तो मारुस्था ऋष राजजी माहाराज कृत " सत्यार्थ सागर " देखो

फेर भी देखिये। सुत्र श्री ज्ञाताजीमे द्रोपदिके पुजाका अधिकार चल्या है मगर श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोमे जिन प्रतिमाका अधिकार नही है मगर ईन लोगोने नकलि पाठ दाखल किया हैं

फेर भी देखो। महानसिथमे कुशील सेवन करनेका अधिकार मुर्तीपुजकोने दाखल किया हैं

फेर भी देखिये। सर्वज्ञ प्रणित श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोमे मुखपतिके बारेमे एसा लेख था सो निचे मुजब:—

॥ पाठ ॥

वगं, विहत्थी, चउरंगुल, पय, मुहपत्तियाणं, अइपुहाणं तगम्म, पमाणं, कन्नुट्ठियाएवा मुह बंधईएवा, मुहपोतिपाण, अछायन, करइ स्स पहिलहिं वा, मुहपोतिगाण, वगं, मदुतण, मुहण, विरदकालेण, स्हु चोमासियं पायछिन्नं,

परमपराय गुरु मुख धारणा

भावार्थ:— एक विस्तम और चार अंगुल एसा मुखपतिका-दल

है सबब परोक्ष प्रमाणके ज्ञान वाले की भुल हो जाती है यों माहा पुरुष पाठांतर धारण करे तो प्रमाण करनेमे भी आवे मगर श्री त्रिलोकी नाथ वीतराग देवाधिदेव तिर्थंकर भगवानको प्रमाणका ज्ञान था तो फेर सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोंमे पाठांत्तर की कोई भी वजेसे काइ जरुरत नही है, किंवा प्रत्यक्ष प्रमाणके सर्वज्ञ ज्ञानी पुरुषोंकी तो काइ भी वजेस भुल नही हुवा करती है तो फेर सर्वज्ञ प्रणित असली और प्राचिन सिध्धांतोंमे पाठांतर की कोई भी वजेसे कोई जरुरत नहीं हुवा करती है,

पुर्वपक्षी:— अजी साहेब! आपका ख्याल पुण ख्याल नहीं है

उत्तरपक्षी:— माहाशयजी। किस तोरसे

पुर्वपक्षी:— अजी साहेब। देखो। अर्थ भाषित अरिहंता और पाठ गंथीत गणधर अर्थात प्रकाश करनेवाले अरिहंत है, और पाठके गुंथन वाले गणधर है, इस वास्ते सिध्धांतोंमे पाठांत्तर होय उसमे काई हर्ज नही है

उत्तरपक्षी:— माहाशयजी। गपोड पंथीयोंके मर्मोंमे हुवे माहुग बात मत केरा थोडा ख्याल रखो देखो। अरिहंत भगवानने अर्थ प्रकाशित किया है मगर गणधर माहाराजने सिध्धांत गुंथे है, जिस वख्त गणधर माहाराजने सिध्धांत गुंथे थे उस वख्त केवली भगवान हाजर थे अगर गणधर माहाराजको कोइ भी वजेकी शंका उत्पन्न होती तो केवली भगवानसे पुछ करके संशय निवारण कर देते, वास्ते। जिस वख्त केवली भगवान विद्यमान [हाजर] होय और केवली भगवानके जरिये शंकाका पुर्ण समाधान हो सकता है तो फेर भी जैनके असली और प्राचिन सिध्धांतोमे पाठांत्तर की काई भी वजे की जरुरत नही है

पुर्वपक्षी:— अजी साहेब। ये मामला किस तोरसे हुवा है सो इसके बारेमे किंचित खुलासा करनेकी कृपा किजीये

उत्तरपक्षी – हाना लिनीय

दखिये। माहाशयजी। पचम काल और हुंडासपणी और यारा कि लिका पुत्र मुर्तीपूजाका मजब (मत) प्रगट हुवा और जाहिरमे फैलने लगा मगर नविन मतके मश्नस किवा सवज्ञ प्रणित सिध्दांताके समजसे किवा निर्णय करणीके कर्ता तदरूप माहानुभाव पूर्वाचार्योंकी रची हुइ मागधी भाषाम सवज्ञ प्रणित सिद्धांतोंके अनुकुल, टिका, चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ती, व पोथा अगोके सुयवन प्रकासके करनेसे मुर्तीपूजाके मतका प्रबल होनेका बखत आ पहोंचा, तब मुर्तीपुजकोंके कपाल कल्पीत पुर्वाचार्यानि अर्थात गणाचार्योने सवज्ञ प्रणित सिध्दांतोको छोडके बारो अगोका निर्मुल अर्थात नास्ती कर डाली और ये बात मुर्तीपुजक लोग खास कबुल भी करते है मगर इस बातम भी मुर्तीपुजकोने झुट और कपट सेवन किया है, सो निच पढो ता सही—

* पितांम्बरी धर्म ध्वंसी–आत्मारामजी विरचित (कृत) जैन तत्व दराश प्रष्ट ३१४ जैन २९सक्ष लेख निच मुजब —

* प्रभावक चारित्रमें सम्भु ध के सर्व शास्रो उपर टिका हस्ती हती, जे सर्व विच्छेद गइ है*

सोचिये। कैसा चतुराइके साथ कथन किया हैं के अनाण मनुष्य पचम कालके सावद्याचार्योंके बनाय हुव ग्यारा अगोको प्राचिन है एसा समज लेव, मगर नविन का तो नविन हैं एम ही समज आवेगे—मगर प्राचिन कदापि नही समज आवग किंतु सावद्याचार्योंके बनाये हुय ग्यारा अंगोको सवे नही समजते हुव, ईनाप कोइ बनसे प्रतिति भी नही की जावगी

देखो! मुर्तीपुजकोने इतनी मगजमारी करी, ताहम भी मुर्तीपुजाका मत प्रबल पणेसे नही जमा, तब मुर्तीपुजकोके सावद्याचार्योंनि सवज्ञ प्रणित

सिध्दांतोंमिसे, माहा प्रमाविक और कल्याम पाठ निभ्रमक माहर फेंक दिये और मनकी कल्लोल और उछरंगकी तरगमे कल्लोल कल्पीत नविन और मछ ली शुद्धा शुद्ध मनमाने पाठ सर्वज्ञ प्रणित सिध्दांतोंमि दाखल कर दिये, अगर मुर्तीपुजक लोक एसी कारवाई नही करते तो मुर्तीपुजाक्र मत मृतक दशाको प्राप्त हो जाता, इसम कोई तरेका शक नहा था इस लिये मुर्ती पूजकोको ये कारवाई अवश्य करना पडा मगर हम मुर्तीपुजकोंके साथक्या चार्योका पुर्ण पणे उपकार मानगेके, सर्वज्ञ प्रणित सिध्दांतोंमे यथाल कल्पी- त शुद्धाशुद्ध नविन पाठ दाखल करती वखत कोई स्थानाप पाठका आदि मे "पाठांतर" ये शद्द दाखल कर दिया है, अगर एसा कार्य नहीं करते तो सर्वज्ञ प्रणित सिध्दांतरुप मार्णण मिथ्यात्वरुप रजगाके वमो दिशा में अंधेरा छा जाता, और असली जैन धर्मकी नास्ति होजाती क्योंकि किसी को भी मुर्तीपुजकोंके गुप्त कारवाई का मद माल्म पडता नहीं किंतु मिथ्या- त्व और अज्ञानसे बननेका मार्ग कोइ पणेसे किसी को भी नही मिलता ये निश्चय समजना

देखिये। "पाठांतर" इस शद्दका तात्पर्य इतनाही है पाठका अतर से 'पाठांतर' मालिय! "पाठांतर" इस शद्दसे ही मुर्तीपुजकों का पागलपणा जाहिर होके, भी असली जैन धर्मकी समय समय वृद्धि हो रही है

समीक्षा—देखिये! सर्वज्ञ प्रणित भी जैनके असली और प्राचि न सिध्दांतोमे कितनेक शका भरे हुए माहा विलक्षणी पाठ हैं, इन पाठोंके बारेमे हमारे दिलमे पुर्ण संशय थी, मगर हमारी शकाका अब साफ तोरस नाश हो गया, सबब भी सर्वज्ञ प्रणित जैनके असली और प्राचिन सिध्दांतोंमे माहा विलक्षणी शुद्धा शुद्ध पाठ हैं, जिससे भी जैनके अलौकिक माहा प्रभाविक हीरे के उपर माहा कलंक रुप होकरा

चढके भी जैन धर्म नष्ट (भ्रष्ट) होता है, एस एसे सर्वज्ञ प्रणित असली और प्राचिन सिद्धांतोमें जो जो महा विलक्षणी शुद्धाशुद्ध पाठ है, और पाठांतर है- वा सर्व मुर्तीपुजकोने दाखल (प्रक्षेप) किये हुये है, इसका एम खुलासा हम उपराक्त कर आये है, अपितु असली जैन मुनि वर्गने किंवा श्रावक वर्गने महा विलक्षणी शुद्धाशुद्ध पाठोंके अगर पाठांतर वगैरोंके उपर कदापि श्रद्धा, प्रतित, नही करना चाहिये मयव एसे एसे महा विलक्षणी और शुद्धा शुद्ध खोटे अधिकार अर्थात पाठ कदापि वीतरागी सर्वज्ञ पुरुष प्रकाशित नही करते है, ये निश्चय समज लेना चाहिये

देखिये। हम यथे अन्य समाजियोंको भी निवेदन करते है के श्री जैनके सर्वज्ञ प्रणित असली और प्राचिन सिद्धांतोंमे महा विलक्षणी शुद्धाशुद्ध वदन खोटे जो जो पाठ किंवा पाठांतर है वा सर्व मुर्तीपुजकोके आचार्यादि वगैराके दाखल किये हुवे है,

इस वास्ते उक्त पाठोंका आश्रय लेके भी जैनके असली मुनि वर्ग किंवा श्रावक वर्गके उपर आक्षेप करनेका दावा उठाना मत, किंतु एस महा विलक्षणी कार्योंके सामल उत्तम पुरुष नही रहा करते है,

अगर यदि कोई कहेगे के ग्रंथ कर्ताने अपने मजबकी पुष्टीके वास्ते कुछकाकुछ लिख मारा है ऐसे गाल बजाने वाले कण सेठीजी के दोन नमाक पटल दुर करनेके वास्ते अच्छे विद्वान अभिप्रायका लेख दरज करते है, यहां लिखे

देखिये ! कर्ण सेठीजी ! मनारसके अनेक विद्वानोंके समस्त जैना ने जिनको ' जैन दर्शन दिवाकरण " का आर पद इनायत किया था उन-डाक्टर हरमनजेकोबी साहबने अपने अनमेरके पब्लिक व्याख्यान मे क्या भस्मि मार्ती यह सिद्ध नही कर दिया है की जिनोके ग्यारह

अंग बाहर उपांगोंमे कही भी तिर्थंकरोकी मूर्तीपुजनेका निशान नही है, किंतु यह प्रथा (चाल) थोडे कालसे चली आती है अब तो दिल सतोष हुवा के नही, देखो डाक्टर साहेबके व्याख्यानका शुरु फिकरा,

No distinct mention of the worship of the idols of the Tirthankars seems to be made in the Angas and Upangas

भावार्थ— अंगो और उपांगोमे कोई खुलासा जिकर तिर्थंकरों की मुर्तीपुजनका नही किया है,

देखिये ! बडे बडे न्यायधीश विद्वान अंग्रेजोन भी इस विषयका भी जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोका अवलोकन करके खुब तोरसे साफ साफ निर्णय का जजमेन्ट (इन्साफ) सुना दिया है, सोधो ! पक्षपात रहित पुरुषोंको असली वस्तु रत्नवत तुर्त नजर आता है, ईसपर भी मुर्तीपुजक लोग पाषाण पुजनेका पक्ष नही छोडेंगे तो फर स्वकर्णकी पुछ पकडनेका ही न्याय हुवा

कोटीश धन्यवाद है डाक्टर साहबको के असाध्य रोगकी पूरी तोरसे मास्ती कर दासी है आगे इलाज करनेकी कोई भी जरुरत रही नही है मगर भ्रमरिका रोग कदापि नष्ट नही हो सकता है,

देखो ! इस विषयपर एक कवीने क्या कहा है सो

(बाघो)

असल को छोडकर नकल पुजा करे ज्ञान दयासे लंघ जावे मद अश्वारकी सकल महीमा करे, नीरके सीनको मार खावे नकल बादशाय देखकर देहर, सुर दर्शकके सांम्यानें, स्त्रियको शब्द सुन राम मारन चले भय नरसिंग को मृत सवे, गाराकी गणपति बनाय पुजा करे असल गजराजकी पीठ लादे कृष्ण राघ काकी नकल नचायके भट

धनवत होय दान देवे मंगीकू पुजीये, देवसु पूजीये कासकू प्यास्कू मारसेमे मानता है पर मानता नहीं स्वादके संत रुगार साई कहत राम चर्ण कुछ कहव भाव नहीं दम्य गुरुम हैरान होई ॥२॥

ईश्वरके भक्तिके वास्ते वनस्पतीको नही सताना चाहीये, सबब वनसपतीमें ईश्वरका निवास है सो एक कवी दिखलाते है सो पढोता नहीं—

कमलमें कमलनेन, मोतीयामे मदन मोहन, नरकसमें नरोत्तम, गुल छमेमे बिहारी है, चपेम चतरभुज, गुलदा वदीमे दामोदर, गुलम फरमे जगननाथ, गुल्लूरेमे मुरारी हैं, गेंदमे गोविंद, मालतीमें मोहन लाल, सेवतीमे सिताराम दोनाम मुकुटधारि हैं, कमडम केशव, गुलबमें गोपाल लाल, कच्चर और चमेलीमें बिराजे गिरधारी हैं ॥२॥

क्षत्रिय ! कोई मनुष्यने किसीक पुत्रको मारके उसे वापिस उस पुरुषको वो मरा हुवा पुन अर्पण करेतो वो पुरुष संतुष्ट होके उसका भला कदापि नही करगा, इसी वजेसे ईश्वरके-पृथ्वी, पाणी, अग्नि-हवा -वनस्पती-और इलते चलते त्रसजीव-ये छे ईश्वरके पुत्र मग है और ये ईश्वरके पुत्र हैं इनको मारके ईश्वरको अर्पण करनेसे ईश्वर आपनेपे संतुष्ट होके अपना कल्याण कदापि नही करेंगे, ये निश्चे समज लेना

समीक्ष्य—देखिये ! माहाशयजी ! जाहा तक असली ज्ञानकी प्राप्ति नहा होती हैं तब तक असली तत्व भी हांसील नहीं होता हैं, तो असली ज्ञान जरूर हासल करना चाहिये ये भी एक ख्याल करने का स्थान है के असली ज्ञान कम प्राप्त होता हैं के त्यागी वैरागी निर्मम संयमी मुनि की सेवा करे और उन महानुभाव पुरुषोंके मुखार बिंदसे सत्य प्रणित सिद्धांतोको श्रवण करनेसे असली ज्ञानकी प्राप्ति होती हैं,

[गाथा]

सुचा जाणइ कल्लाण, सुचा जाणई पावगं ॥
उभयंपि जाणइ सुचा, जसेयत समायर ॥१॥

इति केवली वचनात् दृष्टांत दंशालिक,

भावार्थ — सुणणेसे कल्याणक रस्ते की खबर पडति है और सु णनेसे पापके रस्ते की खबर पडति है, उक्त दानु बातोंका माणना तब खोटे (खराब) रस्ते का छोडके उत्तम (पवित्र) रस्ते का अंगिकार करना इसके बारेमे हम छोटा दृष्टांत देके दुसरा भाग खतम करना चाहते है

दृष्टांत —एक नगरसे एक साहुकार विदेशको रवाना हुवा, रस्तेमे चलते चलते एक नग्र आया, वहाँ रसाइ [रोटी] बनानेके वास्ते विश्राम लिया और दुकान दारके पाससे रसाईका सामान लिया, रसा ईका सर्व सामान मिला मगर-घी-[घृत-घृप] मिला नहीं,-घी-की साहुकारनें बहोत तलास करी, किंतु उस शहरमें किंवा उस देशमे घी क्या चीज है ऐसा नाम निशानभी नहीं समजते हैं ऐसापूर्ण निम्न होते-के साथ, शेठजी ज्हांसे वापीस लोटके अपने मकानपे आके कितनिक गाया भैंसा खरिद करके उक्त शहरको लेगये और शहरके बाहेर पडाव किया शहरके लोक पुछने लगे सेठ साहेब ये क्या चीज है और एक एककी क्या किमत लगामे तब सेठजीनें कहाके य पचामृतके झाड है; और इनकि किमत हजारों रूपैये हैं तब ये बात शहरभरके धनवर ष हाथी, ये वार्ता सुनतेके साथ दरबारने कितनेक जनावर खरीद करके राज स्थानपे ले गये, किंतु—गाय भैस वगेराका दुध निकालनेकी क्रि या वगैरका विधान मालुम न होनेसे हजुर साहेबने नोकरोंको हुकुम दिया के जिस वखत ये पंचामृतके झाड पचामृत देवे उस वखत हमार

पास लेके हाजर करना, तद् पश्चात थोडे देरके बाद उक्त जनावरोने मुत्र किया वो मुत्र पकडके राजा साहेब के पास हाजर किया तब थोडासा मुत्र हस्तेलीमे लेके सरकारने मुखमे डाला मगर मुत्रका स्वाद अनिष्ट होनेसे तुर्तही सरकारने थू थू थू करके थूक दिया, फर नोकराको हुकम दियाके ये नहीं है दुसरा होवेगा, तद् पश्चात जनावरोंने गोबर किया वो गोबर भी स्वरु हाजर करतेक साथ पूर्ववत सरकारने थू थू थू करके मुख साफ करके तुर्तही सेठको बुलवाके उक्त दोनु वस्तु दिखलाके राजा साहेबने पुछा के यही पंचामृत है, सरकार तर्फे पुछ हाले के साथ सेठनें दरबारको अर्ज गुजारिष करीके ये दोनु वस्तु स्वपक फेंकने के है, लेकिन पचामृत नहीं हैं, तब सरकारने कहा सो फेर पंचामृत कैसा हैं, सो दिखलावो तब तुरतही सेठनें सोवर्ण भाजन मंगवायके उसी वखत गाय भैंसका दुध निकालके सुवर्ण के प्याले राजा साहेबको और आम सभा का भर भरके पिलाये दुधके पिने से सर्व सज्जन जनोको परमानंद हुवा और सरकारनें सवाल पुछाके ये पचामृत है, तब सेठजीनें अर्ज करीके साहेब ये एक अमृत है और इसमेसे च्यार अमृतकी प्राप्ति होती हैं तद् पृथ्वीपतिने फरमायाके मध्यम च्यार अमृत इसमेसे निकालो तद् सेठजीने अर्ज गुजारी के अहो कृपानाथ ईसमेसे च्यार अमृत कल रोज प्राप्त होवेंगे, एसी अर्ज करके सेठने सर्व क्रिया पुर्ण पणे करके दुसर रोज राजा साहेब प्रमुख सर्व सभा सद की सेवामे दुध १ दही २ छाश ३ मखण ४ और घी ५ ये पचामृत उपस्थित करे, राजा साहेब वगेरोनें पंचामृतका सवन करके सब महाशय परमानंद हुये, फर सरकारने सेठजीको नग्र सिरामणी पदवी ईनायत करके, बडा भारी ईनाम दिया, फेर सरकारने पंचामृत प्राप्त होनेका विधान (विधि) सेठजीके पाससे अनेक मनुष्यों को पुर्णपणे सिखलाई दरबारनें अपने शहरमें किया पेश्तर आम शार

से पंचामृतका पुर्ण प्रसार करता । उसमें पंचामृतका पुर्ण प्रसार होनेसे अनेक उत्तम और पवित्र पदार्थोंकी उत्पत्ती होना शुरु हुई और उक्त वृक्ष उत्तम और पवित्र पदार्थोंसे सुशोभित हुवा,

तात्पर्य— देखिये ! संसाररूपी अपना जीव है मगर वर्जाव मान अज्ञानी कुगुरुओंके फासमें फसके मिथ्यात्वके संगमें भव सरीखा घट त्रिशीमें फोफ मारता हुवा वृथा जन्म गमाता है, किंतु सत्यवत सद्गुरुकी कृपा होनेसे पंचामृत रूप सत्य वानीकी प्राप्ति होके अक्षय पद (मोक्ष) की प्राप्ती होती है, इसवास्ते सद्गुरुकी सेवा भक्ति अवश्य करना चाहीये

॥ श्लोक ॥

उत्तमा सम ज्ञान, उत्तमा सम गुण ॥
उत्तमात्तम क्रिया, उत्तमोत्तम पद ॥१॥

ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !! ॐ शान्ति !!!

मिथ्यात्व निकंदन भास्कर का तिसरा भाग डायमंड मराठा प्रेसमे छपनेके वास्ते दिया था मगर फिगर की गरब्बीसे और कापियां कमती आनके सबबसे, इसमेका किननाक काम दुसरे प्रेसमे देना पडा, सो काम टेमसर तैयार नही होनेसे इस भागका शुद्धिपत्र हुवा नही, वास्ते सज्जन जनोने साथ कृपाके सुधारके वाचन की तसदी लेयमे

इस ग्रंथमे शुद्धाशुद्धके किंवा न्युन्याधिक बारमे जो माहाशय हमको खबर देयगे तो दुसरी आवृत्तीमे योग्य रितिसे सुधारा करनेमे आयगा.

॥ श्री ॥

मिथ्यात्व निकदन भास्कर

तृतिय भाग

— चमार पद विषय —

[illegible] लिये ! मूर्ति पूजक लोक श्री जैन श्वेतांबर साधु मार्गी वर्गके मुनिअमलखचदजीको हालीगावमे स्वरूपचंदरिख हुआया जो जातिका चमारथा सम्यक्त्वशल्योद्धार पृ० १०। चमार लिखते है, मगर मूर्ति पूजकोके लेखोसे ये पद किसको मिलेगा उसका विचार— मूर्ति पूजकोके लेखनिचे मुजब—

ढूंढक हृदय नेत्रांजन, मतिया मदन स्तवन संग्रह प्र० १९ ओली २१ मे, जंगालेमे चमार जातीका खासचंद ढूंढिया, सम्यक्त्व शल्योद्धार, प्र० १९ ओलि ३ लिये प्रश्न १० था, भंगी चमार वगे रोको दिक्षा देवेहो—

समिक्षा० महात्माजी ! देखो ! जैसा जिसमे ऐब होता है वो ऐब छुपानेके वास्ते, दुसरोपे वो ऐब डालना चाहताहै, मगर स्वस्थान पर शोधन किये सिवाय, कलम उठाताहै वा पिछे ही पश्चाताप कर्ता है, उक्त लेखोका निर्णय, उक्त लोगोके लेखसही करणा चाहिये, मूर्ति पूजकोका लेख निचे मुजब—

प्रवचरणः धम्म पचागं पटले पर्व पाथ नोम्पाधीमो द्वार कहे छे– मूल– अर्थ एक गाथि महिपी, मिगाण मजिणंच चम्मे होई तरिगा लाण वट्टे-कोसग किर्चा धर्मापंडु ॥ ९८१ ॥

अर्थ—छगलिनो चर्म, गाडरनो चर्म गायनो चर्म, मेसनो चम, हरिणनो चर्म, एपांचना अजिनके० चामडो, होईके० थायछे, अथवा बीजा आदेशे करी, चर्म पंचक प्रयोजन सहीत कहे छे, एमांजे तलिगा के तलिया ते एक तलियो भने, तेना प्रमाने, केटु तल्ला पगलिजे ते, जेवार रात्रे माग न देखाय अथवा प्रथवारामे लिजाय, तेवार उजाड मार्गा चोर, श्वापदादिकना भयथी उतावला जाता कांटादिक थी पोवानो रक्षण करवाने अर्थे पगमा पहेरिये, अथवा कोइ कोमल पगवालो होय, ते, चालवाने, असमर्थ होय, तो पण लीये, बीजो, खल्ल, ते ल्लासडा ते, पगे ल्याउथाय एत्ले, ल्याउथी पग फाटी गया होय तो मार्गे जाता, तृणादिक, दुलभ थाय, वलि अति सुकुमाल पुरुषने सीयाले दुरूभ हाय, तो पहेरवाने अर्थे राखे बीजा, वधे के० वाधरि ते चामडो मुटेल्या ल्लासडा प्रमुखने सांधवा भनि काम आवे, चोथो कोसगए चर्ममय करण विशेषछे, ते कोइक ना नख अथवा पगने काइ लागवाथी फाटी जाय तो ते कोस आगल अंगुठे बांधिये अथवा नख प्रमुख राखवाने अर्थे दाव थाने काम आवे, पांचमो कितीयत्ववि, ते कोइक मागमां दावानलना भयथकि आडोकर वाने अर्थे धारण करायछे अथवा प्रथ्वी कायादिक सचित घणा थाय तनी यतनान अर्थे मार्ग मा पाथरिने बेसिये, अथवा माग मां चोर च्योकाये वस्त्र लेइ लीधा होय तो पहेवारमां पण काम आवे एने कोइक सूवि कहेछे ने कोइक नथि कहेछे एवा मेनाम छे, एयवि जन योग्य चर्म पचक कयु । ६८३ ।

ए आमिषो चर्म पंचकनु द्वार समाप्त थयु—इति–ये अधिकार प्रवचन सारोद्धारमे कहाहै, प्रकरण रत्नाकर, भाग तिसरमे ये ग्रंथ है, इस १८७९ ने संवत १९३४ कि साल्मे मुंबाइमे मूर्ति पूजक श्रावक भीमसिंह माणकने ये पुस्तक छपाके प्रसिद्ध किया है और यही अधिकार 'श्रीस्तुति परामश ' पष्ट ६।७ मे दरज किया हुवा है

देखिये ! मूर्ति पूजक लोग कैसे जैनके असली सिद्धांतोके विरुद्ध लेख देते है, महासयजी ! देखो ! जैन मुनिको कोइ भजेसे रात्री विहार करना नही, सास्त्र सुत्रथी सुयगडांगजीका प्रथम स्कंद मध्यन । ˉ । उदेसा । २ । गाथा ॥ १४ ॥

(गाथा)

णयय मिए अणाउले समविस माइ मुणिहि यासए चरगा अदु वाविमेरवा अदुवा तयसरी सिवासिया ॥ १४ ॥

भावार्थ

देखो ! मुनिविहार कर्ता हुवा चल्ल जाता है मगर जहापे सुर्य अस्त हो जावे व्हापे वृक्ष निचे रहे जावे, फर सुने मस्थे ठवरनेका कामपडे, व्हांपे मछर वगेरेका तथा सप वगेरेका तथा अनक तरेके डरने मरिसे प्रद हावे होवे तथा सिंहादिक का खोप होवे एसे ऐसे अनक तरेके, डर (खोप) किमाति होवे तथा मर्णान्तिक कष्टकी मात्पी होवे, तोभी मुनि उन परीसहका मुह और स्थिर मनसे सहन कर मगर रात्रीको स्थान छोडे नही भार विहार कदापि करे नही, और भी सिद्धांतमे रात्री विहार करने की जैन मुनिको सक्त मनाइ है

जैन मुनिको इसि भजेसे धर्म वगेरेके मोजे (मूत्र) पेहनना नहीं, सास्त्रसुत्र दसवैकालिक अध्येन । १ । गाथा ॥ ४ ॥

(गाथा)

मटा मयय नार्ल्हिए उवस्सय पारउणाडाए, विगिच्छ पाणणापाय समारंभन जोइणा ॥ ४ ॥

भावार्थ

देखो ! जुवासेखेवा १९ चोपड गंजिफा वगैरे खेले तो १९ शिरपर छत्र करावे तो (छत्ता वगैरे शिरपर रखेतो) २० वैदगी करेतो २१ पांवमे चर्म वगैरोके पगारखि (जूते) पहनेतो ५२ छकाय जीवोका आरंभ (हिंस्या) करेतो २१ अनाचार लगता है (दोष) देखिये ! इस अध्यन मे ५२ बावन अनाचारका अधिकार चला है उसमे चर्म वगैरेके जुते पहननेमे चाविसमा अनाचार ज्ञानिने फरमाया है और भी सिद्धांतोमे चर्म वगैरेके जूते पहननेकी जैन मुनिको सक्त मनाइ है

जुते सिनेके वास्ते, अग्निमकोप बचानेके वास्ते बिछानेके वास्ते तथा पहरनेके वास्ते इत्यादि अनेक कारणोके वास्ते जैन मुनिको चर्म सेवन करणा नही, चर्म सेवन करने वाले जैन मुनियोंके हृदय कमल मेसे करुणा और दयाकी नास्ती हो जातीहै और वो मुनि पचेंद्रि जीवोकि चक्रपर घाव करनेके वास्ते तय्यार हो जावेतो कुछ ताजब नही है इसवास्ते जैन मुनिको काइमी कारणोद्रयसे चर्म सेवन करणा नही चाहिये फेर देखो' प्रत्यक्ष जमानमें मुसल्मीन लोगोका "सुवर" का चर्म वगैरे और हिंदु लोगोको "गाय" काचर्म वगैरे सेवण करना बिलकुल बाधक है अर्थात काइमी वजेसे सेवन करना नहीं अब मुर्ति पुजक लाग "गाय"का चर्म सेवन करते है ये जैनके शास्त्रके खिलाप बात है फेर देखो ! मुर्ति पूजक लोगोके भक्त लोगोका कितना फायदा हैके उनोके गुरु जुते सिते देवा फेर इससे निच दरजका काम कोनसा बाकी रखे होवेंगे

मूर्ति पुजकोके लख परसे हमारे प्यारे पाठक चर्मनेही विचार करनेना चाहीयके चमार वगेरेकि पदवि किसको मिलती है ये पूर्ण निर्णय करना ज्ञानी पुरुषोका काम है और निर्णय करके न्यायभी देना चाहिये

—मुत्र विषय—

देखिये ! मुर्ति पुजक लोक भी जैन साधु मार्गी (ढुंढक) धर्मके उपर पेशाब, अर्थात मुत्रके बारेमे कैसा कैसा आक्षेप करते है के हम कुछ इस आक्षेपकी तारीफ बयान नहीं करसकते है मुर्ति पुजकोका लेखनिच मुजब समकत्व शल्योद्धार मष्ट । १८ । १९

(७) पेशाबसे गुदा (गांड) धोते हो
(८) लोच करके पशाबसे सिर धोते हो
(९) पशाबसे मुहपति धोते हो

ढूंढक हृदय नेत्रांजन-पृष्ट ११६:—

और जिस पात्रमें-जिमना (अर्थात खाना) उसी पात्र मे मूतना अब इससे अधिक मद बुद्धिवाले दुसरे कहासे मिलेंगे ?

माहाशयजी ! देखो ! इस जगेह हमारे मोहन प्यार मुर्ति पुजकोको इतने खुस रखेगे के हसते जावे, अहो मुर्ति पुजको अगर हम लोग तुमारे उपरोक्त लेखानुसार काम करते होवे तामी पानीसे साफ कर सकते है. मगर तुम लोग पशाब पिते हो सो तुमारा पेट काय्से साफ करते हो, जोइमे बतलाना चाहिये जैस तुम लोग मलिन हो, वैसे बारोको मलीन रखना चाहतेंहो-चा-याह था-तुमे क्या करना चाहिये (दृष्टांत) देखो ! पशाब कि नापाकि अर्थात अशुचि जितनी मुसल्मान लोग रखते है उतनी हिंदु लोग नही रखते है मगर मुसल्मान लोगोका इजार अगर कपडा पेशाबसे भर जावे तथा आप जरुरत अर्थात दिसा (झाडा) के बखत पशाबसे बैठक साफ करनेका काम पड जाय तो फतवो इस म पानीके मिलनेसे कपडा तथा बदन (शरिर) साफ करके पाक (शुद्ध) हो सकता है, मगर पेशाब पिने वाला इसम कैसा पाक (शुद्ध) हो सकेगा कदापि नहीं, वैसेही मुर्ति पूजक लोक पशाब

पिये है तो उन लोगोको पाक (सुद्ध) कैसे कहेना चाहिये, फ़ मूर्ति पूजक लोग साधु मार्गी (ढूंढक) वर्गके उपर इसता पाकरक साथ लेसि आक्षेप करते है के द्वितिय साधु रातको पानि नहीं रखते हैं तो जैनके असलि सिद्धांतोमे जैन मुनियोकों रात्रीको पानि रखना साफ मना है, साक्षी, दशवैकालिकजी उत्तरा ध्येनजीकि, अब दश वैकालिक, अध्येन । १० । गाथा ९

(गाथा)

तहेव असण पाणगवा, विविह खाइम साइम लभित्ता, होही अदोसुए परेवा त ननिहेन निहाव एजेसभिखु ॥ ९ ॥

भावार्थ

देखिये ! जैनसाधु जो अन्नपाणिमेवा मिठाइ मुखवास (सुपारि वगेरे) येचार प्रकारका अहार रखवे और विचार करेके रात्रीको कल मगर परसुं काम आवेंगे ऐसा समज कर चार प्रकारका आहार रात वासिरखे नहीं, दुसरेके पाससे रखावे नहीं, रखतेको भलां (अछा) समजे नहीं ऐसी कियाबाल्य होय उस जैनसाधु कहेना चाहिये ॥ ८ ॥

सुत्रजी उत्तरध्येनजी । अध्येन । ६ । गाथा । १६ ।

(गाथा)

संनिहच नकुव्वेज्जा लेव मायाए संजए इति केवली वचनात

भावार्थ

देखिये ! जैन साधु चार प्रकारका आहार हाथ मगर उसमेसे लेर मात्र अर्थात, हाथ वगैरका सहजमे किंचित मात्र लगेरहनामी

य मी रखना नही ऐसा शास्त्रमे कहा है और चार आहारमेका आहार बासी रखे तो भी जैनक 'नसिय' वगैरे असलि शास्त्रोमे उसे ग्रहस्थी कहा है लेकिन साधु नही कहा है

अब देखो ! मूर्ति पूजकोके पूर्वा चार्योके गपोडे मगर येसे साधनसे जैन मुनि संयमसे भ्रष्ट नही होता होय तो अवस्य होय

आचारंगकि तथा नसिय चुरण वगैरेमें साधुको वर्जित मांस सेवन करणा कहाइ, कनेरकि कावका फिराके मन्त्रसे सत्रु नामके मस्तक गिरादेना मैथुन (स्त्री) सेवन करना, रातको आहार लेना अनंत कायकंद खंड लेना मंत्र पढना, कच्चा वगरे फल खाना, कच्चा पानि पिना बिना विद्युद्द वस्तु लेना जुते पहरना, पान खाना आहारनि,प मणधमणा, फुल सूंघना, स्नान करना, अनंत कायके झाडपे चडणा, आधाकर्मि आहार लेना, घृत वगैरे बासी रखना, भाट पढाना निधान उखाडना, अन्य लिंगीका वेस करना थंमण विद्या साधन करना, झूट बोलना ग वासिस बोल चूरनमे कहे है सो जैनके असलि सिद्धांतोसे विरुद्ध है ये अधिकार समकित सार ग्रंथमेभी दरज किया हुवा है एस येस कपोल कल्पीत काय करनेवाले लोग भी वितरागके वचन कैसे अगिकार करेगे अगर जो वितराग देवके पूर्ण वचन अंगिकार करेतो वदन (शरीर) पे पूर्ण कष्ट उठाणा पडता है इस वास्ते मूर्ति पुजक लोग भी वीतराग देवके वचन अगीकार नही कर सकते है मूर्ति पूजक लोक भी वीतराग देवोके वचनोमेभी विरुद्ध वरतते है तार्था भी जैन साधु मार्गी वगैपर पेशाव वगेरका आक्षेप हमेश करते है मगर मूर्ति पूजक लोग 'रात्रीको पानी' रखके पानीके ओटसे पेशाव (मूत्र) पिते है चमकि इन लोगोको कुछ खबर नही है इस लिये मूर्ति पूजकाकु जाणनेके लिये, मूर्ति पूजकोका प्रमाण नीचे दरज करते है

—श्राद्धविधी प्रकरण प्रष्ठ १०२ कालेस—

अणाहार (आहार नगणाय भेयी) चीजो नीनाम-लींबडानु पंचाग (मूलपत्र फुल फल अनेछाल) पेशाब, गलों, कडु करियातु

अतिवस्र, कावानिग्रान्, बामेड चंदन, राख, इलदर, गोहिणी वगेरे वगेरे अणाहार जाणवा, ते चउविहार, उपवास मांहेन पण रोगादिक कारणे वावरवा कल्पछे, व्यवहार कल्पनी इतिना चोया लंबमा पण कहेल छे

— श्राद्धविधि-पष्ट ११६ कालेख:—

हवे अनाहार वस्तु व्यवहार मा गणायछे ते आरित-औषधाना पंचांग (मूल छाल पत्र फुल फल) मूत्र, गलो, कडु, करियातुं, अतिविष, कुडो, चीड, सुखड, राख, हलधर, रोहणी, उपलेट, वज त्रिफला, वगेरे वगेरे

मुर्ति पूजक श्रावक, भीमसिंह माणके वि समत १९६२ माहावदि ११ इसवि सन १९०६ कि सालमें 'प्रतिक्रमण सूत्र' छपाके प्रसिद्ध किया है उसका पष्ट। ४७८। ४७९ पिछाव पिना लिखा है लेख निचे मुजब

गाथा

खाइमे भत्तोस पलाइ, साइमे, सुठी, जीर अजमाइ॥ महू गुड तबोलाई, अणाहारे मोयनिंबाई ॥ १५ ॥ ॥ द्वार ॥ ३ ॥

हवे अणाहार वस्तु कहछे, अने पूर्वे कहे ते चारे आहारमांहेला कोइपण आहारमा न आवे, परंतु चउविहार उपवासे तथा रात्रीने चउविहारे वापरी कल्पे, ते अणाहार वस्तु जानवी, तेना नाम कहेछ अणाहारेके०) अनाहारने विषे कल्पे ते वस्तु कहेछे (मोयके०) ...अति जाणवी, अने (निंबाई के०) निंबादिकथे निवनी छसी प्रमुख पांचे अंगथ सर्व अनाहार वस्तु जाणवी, आदि शब्द

मकी विषमा, कडु, करियातु, गलो, नाही, धमासा, केरडा मुल और बाउ मूल, पाञ्चलछाली, कथर मूल चित्रो, खयरसार, सुवड, मलयागर, भगकाचिड, अबर, कस्तुरि, गल गुनो गोढ्मीवज, हलिद्र पातली आमगंधी, कुहर, चोपाचिनी, रिंगनी अफिणादिक, सब जातिमांविष, माजीखार, चूना आको, उपलोट गुगल, अतिविष पुमाड, प्रलिमा भूनिफल, सुरोखार, टंकणखार, गोमुत्र आदेदेकने मब सातिना अनिष्ट मुख, चोल, मंजिट, कणयर मूल, कुमार, बांभर कर्षादिक पचमुल, मारो, फटकडी चिमड इत्यादिक वस्तु सब अनिष्ट स्वादवान छ, अनेइछा विना, येचीज मुखमां प्रक्षेप करिये ते मब अणाहार जाणवि उपवासमां पण लेवी सुज, अने आयंबिल मध्ये पाणहार पचखाण कन्यापछी सुज,ए आहारनु चौमुद्वार थयु सत्तर सब भठार थया ॥ १५ ॥ ये सब प्रसिद्ध कर्त्ता उपरोक्तमें प्रवचन सारो द्वार मधाकि साक्षी देता है

वाकिय ! मूर्ति पूजकांक पूजा चार्य बगैरोंने जो सब प्रकरण बगैरोंमें, अणाहारक खेल पालम किय है वो खल भी जैनक एकादश अंगादि माचिन अमलि सिद्धांतास साफ विरुद्ध है मगर क्या करे विचारोंसे मुद्र समम वृत्तनेम बराबर पालनेकि शक्ति न इनेंमें दर बजेसें जैन साधु श्रावक नाम धरवाके इस वैमवका सिवाइ करत है मगर तथो चो विहारमे चौविहार उपवास बगैरसे चार १ आहारमम एकभी आहार मुखम डालना नहीं मगर मूर्ति पूजकोन जो अणाहार वस्तु बतलाइ है इसमेसेभी कोइ वस्तु मुखमें डालना नहीं, जो चिज इच्छास अगर इच्छा सिवायभी मुखमे डाली जावगी वो सब वस्तु चार आहारादि तिमतिम जावगी, मगर च्यार आहारक पाटर खानपिनादि एकभी वस्तु खानाने नहीं बतलाइ है तब मूर्ति पूजकांका खेल कैसा सच्चा समजा जावगा, कदापि नहीं,—माया ! राम चउ विहारमे तथा पचविहार उपवाम बगैरम मूम " (पलाव) पिनेका भी जैनके असलि सिद्धांताम काइमा ठिकाण सब मर! है

मगर मुर्तिपूजकोंने " मूत्र " [पशाब] वगरे पिनकी बाहादूरा बतलाके जैन धर्मको मलिन कर डाला है, और नास्ति हाने मरिखा बखत भी आ डाला है, मगर जैन धर्मके असलि मालिक साधु मार्गी वर्ग है वो जैस धर्मको मलिन और [नष्ट] कदापि नहीं होन देंग ये सत्य समझना चाहिये

देखा ! " गो मुत्र भारी वेदने सर्व आतिना अनिष्ट मूत्र " इस लेखसे हम लोग [शिक्षित] मात्रमी नहीं समजे है वोसमाधानि के लिये हम मूर्ति पूजकोको प्रश्न करना चाहते है

[प्रश्न]

[१] सर्व आतिका अनिष्ट मूत्र किसको कहना चाहिये ?

[२] मूर्ति पूजक वर्गके मूत्रको सर्व आतिका अनिष्ट मूत्र समज ना चाहिये !

(३) दिगांम्बरि वर्गके मुत्रको सर्व आतिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये !

(४) साधु मार्गी वर्गके मुत्रको सर्व आतिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये !

(५) म्लेच्छ वर्गके मुत्रको सर्व आतिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये !

(६) भंगी चमार, वगैरे निच वर्गके मुत्रको सर्व आतिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये !

(७) सूर [सुकर] गधा, कुत्ता वगैरे तिर्यच आतिके मुत्रका सर्व आतिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये !

अब इमन सर्व आतिका अनिष्ट मुख किसको समझना चाहिये इसका मुलासा और इष्ट तथा सर्व आतिका अनिष्ट मुत्र, रात्रीको चउविहार तथा चउविहार उपवास वगैरेमे " पिना " ऐसा जैनके प्राचिन अमलि सिद्धांतोक मुख पाठसे सुलासा आम समामे करके दरसाना चाहिये, इससे सत्या सत्यका पूर्ण निर्णय होके उत्तम मध्यमकि स हिरमे आम लोगोको खबर होवगी

—वेश्या पुत्र विषय—

दलो ¹ मूर्ति पूजक लोक साधु मार्ग समज (मत) कोवेश्या पुत्र समान कहेते है सा सन लिखे मूजब समकत शाल्योद्धार प्रष्ट –४–ओली–२०–मेका–लेख

' इसपरसे सिद्ध होता है कि कुमतियोने नया मार्ग नाम रखके मुख बधाका जो पथ चलाया है सो वेश्या पुत्रके समान है जैसे वश्या पुत्रके पिताका निश्चय नही होता है ऐसेही इस पंथके देव गुरुकाभी निश्चय नही है इसमे सिद्ध होता है कि यह सम्मुर्छिम पंथ हुवा अवसर्पिणीका पुत्र है "

समिक्षा दलो ¹ कमा समता अककझारिका लेख है क जिसका लेख वसेहीको दलक पहाचाता है सम्मूर्छिम मनुष्य केवळी सिवाय किसीके नजर आते नही है, और हमलोग सारि दुनिया [जगत] को नजर आते है तो येभी लिखना इन लोगोका गलत है, और कुमति किसको कहेंगे ह क दयाके द्वेषि होवे, ये कथन विचारकर आये है मुख बांधना इनके आचार्योके ग्रंथोमे सिद्ध होता है मगर इनोके द्रव्य और भाम नत्र गुम हो गये होवेंगे,तो इनको नजर नही आते होवेंगे ये कथन पीछे कर आये है, और मूर्ति पूजकोंने इनोके देव-गुरु-धम कानिश्चे भी जैनके एकादस अगादि प्राचीन असली सिद्धांतोसे समामे करना चाहिये, वश्या पुत्र किसको कहते है के

जिसकी माता "विभचारणी होवे" अर्थात अपन पतीको छोड़क दुसरेके घर मे बस जावे और फेर उसक पतियोका कुछ सुमार नहीं। हाल जैसा एक कविने कहा है क (दोहा) एक छड दुजामे हर्मी, गिनती नहीं है साते भसि, वेश्या पुत्रवाही का नांव, माव तात के नहीं है ठांव ॥ १ ॥ ऐसीही उत्पत्ती आत्मारामकी है तब वो साधु मार्गी मजबका वेश्या पुत्र कहलाता है

देखिये ? दुर्वादी मुख चपटीका इस ग्रथमे आत्माराम पिताम्बरीकि उत्पत्ती दाखल कि हुइ है उसमेसे किंचित अधिकार इस जग दाखल करते है विशेष अधिकार देखना होवे तो वक ग्रथस देखलेना, लखानिचे मुजब

"एक गुजरान वालेका क्षत्री जातका कुजाइ जीरामामेस जगाकि जगातपर मसुखिया (माफेपर) बनक ला रहा उसका एक गणेश क्षत्री माकरथा उसकि स्त्रीकावनको साथ यारी होगइथी तब मालकने निकाल दिया फेर वो बाहा मारने लग गया उसके वो पुत्र हुये बडेका नाम "दित्ता" जिसका गुरुजीने आत्माराम" नाम दिया बगैरे बगैरे"

देखा ! जैसी जिसकी उत्पत्ती होती है वो दोस दुसरेका लगाना चाहताहै मगर हमारे प्यारे पाठक गण आपही विचार कर लेवेंगे क वश्या पुत्रवत कान है आर किसके देव गुरुका पत्ता नहीं है

– कुशिल विषय –

पाठिय ! मूर्ति पूजक वर्गके पिताम्बरी अमरविजयन महामतो श्री श्री पारवर्तीजीका 'वेश्या' कि ओपमा देके मस्करी (चष्टा) करी है वालेक निचे मुजब, ढूंढक हृदय नेत्रांजन भाग द्वितिय पृष्ट—२३। २४ का लेख

॥ "अथ पारवतीके—चारचार निक्षेप" ॥

अब " इसिवे कि—१ शिवकी। २ वेश्या। और ३ ढूंढनीजी। यह तीन— ' पार्वती ' और तीनोंके—मतकके, चार चार निक्षेपका स्वरुप दिखावते हे जमेकि—महादेवजी की स्त्रीका नाम ह पार्वती, सो ढूंढनीजीके मतम्य मुजब—नाम होगा और जैन सिद्धांतानुमारसे तो नाम निक्षेप ही होगा, परंतु दूसरी स्त्रीम दिया हुवा यह पार्वतिजीका नाम तो ढूंढनीजीके मतम्य मुजबमी—नाम निक्षेप ही होगा, और यह पावता आका—नाम, हजारा स्त्रीयाका वेश्यममेमी आता ह तोभी एक दो स्त्रीयाका मुख्यपणा करके समजाते हे जैसकि—कोइ खुबसुरतकी वश्या ह उसमे नामका निक्षेप किया हे—पार्वती और एक ढूंढनी साध्वीजीमभी वही नामका निक्षेप, किया गया—हेपार्वती।

समा ! अमर बिमेन निक्षेपका आसरा लक सवि पावतिजीकी कुचेष्टा करी ह, मगर इसको, निक्षेपका स्वरुप दिखलानकि अक्कल दाखिल ता वश्या शिवाय दुसरा स्वज नहा मिलता था, मगर बिचारा क्या कर अगर जो उत्तम स्वज हाखल करता तो मूर्ति पूजकोंकि पोल कहांसे मुलति साथो पार्वति जीको वश्याकि ओपमा देके कुचेष्टा करनेका ता कारण ये हेक इसका गुरु आत्माराम था ममकिमसारकि माता ता तावण [सुतार] थी और पिता ब्रह्मी था य बुकमकस [वश्या पुत्रवत] कामा, ये सब छिपानके वास्ते इसम य कारवाइ करि ह लकिन ऐसी कारवाइ करनेमे मसकि कलक दूर नहीं होता हे जैसा कापसेको मोलसे कदापि सुपद नहीं होयगा वैसा समज लेना

मगर इतने पर भी अमरविजयने सतोस धारण न करता पर क्या लिखता है, देखो ! लेख निच मुजब–युवक हृदयनेत्राञन पृष्ठ १८५–मोळी ९ मीका लेख—

" अब इस बाबमे जादा तपास करना होवे तो मु ही तेराजम्मके आचरणका देखके, अनुभव करले हमारे मुखसे किस वास्ते कहा ता है ? और अधिक तपास करनेकी मरजी होवे ता, मारवाड माळवा, काटियावाड, दक्षिण, आदिमे फिरकर देख ले की, मुखसे दया, दया, पुकारने वाले इस चौथे प्रलमे कितन पाप है "

समीक्षा–अरे भाइ अमरविजय पारखतिजीने तो उनके जन्मका आचरणको देख लिया है मगर तेरे गुरु का पिता छत्रा और माता मुसलमान (लावण) है सो तु ही तेरे गुरु के जन्म वगैरेके आचरण का मुवारा करता क लिया है इम हमारे मुखम क्या बयान करे, और इस दुनियामे सारा आलम दया वगैरे का पोकार मुखसे ही करते है मगर इमेस कई के हिंस्या वगैरे का पुकार तु तो बैठगसे ही करता होवेगा, देख ! श्रीजैनके असली साधु तो अपना प्राण जात कर आखमें मगर व्रत भग नही करेंगे सबब व्रतका भग करनेम ज्ञानी पुरषोंने दुगति फरमाइ है, और एक सामान्य कविने भी कहा है

दोहा

पर नारी प्रभ मइ, देन करी कुछ ओर
मुख स्याम अरपण कर, वा ही नक कि ठेर ॥१॥

और अन्य मतमे भी एसा ही फरमाया है,

श्लोक

मस्तूगा पवि त्यागा, नतु सिल खंडन, माण त्याग क्षण दुःखं,
नक सिल खंडण ॥१॥

भावार्थ-हालिय ! मस्तक कटवाके प्राण खोदना, मगर शिल का खंडण [भंग] कभी नहीं करना चाहिये जिसका त्याग करनेसे तण [थोडा] मात्र दुःख होता है मगर सिलका खंडन करनेसे नकादिका चिरकाल तक दुःख सहना पडता है

यहां अमरविजय एक इतने पर भी नही मगरसुमारे पूर्वाचार्य वगराके बनाये हुवे ग्रंथोमे स्त्री सेवन करनेका शिक्षा दे, साध्वी० पृति कम्पनी पुस मध्य साधुका कुशिल सेवन करनेका शिक्षा है

तथा साहाभिर्माप मध्य पण कुशील सवन करणा कहा है मत मां गीभाग मजरीम भी कहा है फर भी देख बरा गुरू आत्मारामने भी ऐसा ख्याल दिया है देखा तिस मुजब—अज्ञान तिमिर भास्कर पृष्ट—२८४ गार्था २२ का लेख ' अंगमदान सुत पडि सिद्ध नय मिथ वद देउ तंसप पिपमाण चारित्त पणाम मणिवच ॥८४॥ अ। वस्तु सवथा सब प्रकारसे सिद्धांतमें निषेध नही करी है मैथुन सेवन वद् छाडक निर्दोष मान्या है " —

इसा पसे एस ग्रंथ बनाये वालोंको एसे पसे ग्रंथ इन बाला को और इमाका सत्य समजने वालाका हम लोग ब्रह्मचारी कभी नहीं मानते मगर उपराक्त तिसु ग्रंथ हमारे पास हाजर नहीं इनमे पाठ संयुक्त लेख इगसन नहीं किये है अतएव कबसे प्रमा भावाथ भावना हुवा जिनर्पिजरक " ८ समय भी कुशिल सवन करण

छिता हे जिनपिंजर के एकविसमे श्लोकम " व्यसनैश्वापदिमरत
इति वचनात, अर्थात तुझे की सेवन करने की इच्छा होवे तो इसका
समरण करनेसे तेरा मनावछित पुर्ण हावेगा, देखो ! रामचंद्र कृ
नवकारमत्र और चोविस तिर्थकर वगैरोंके सामछातसे समरण करण
जाते हे इस स्तोत्रके छाविस भग हे और नवकार के चालिस भ
हे इनोके समरण करनेसे मिले मुताबिक काम होता हे और इसका
अनुभव हमने पुर्ण छे चुके हे मगर इस विधीस जो साधु औ
श्रावक श्रमण करेंगे वो बेसक व्रत प्रत्याख्यानसे भ्रष्ट होवेंगे, औ
दुर्गतिकी प्राप्ति कर लेवेंगे, ऐसा समव हे कारण जिस माहात्म
पुरुषों के समरण करनेसे अपने आत्मा की सिद्धि मानते हे, उ
पुरुषोंका विपरीत समरण करनेसे दुर्गति ही मिलेगी इसमे कु
सका नही हे हमने कितनेक साधवोंको तथा श्रावकोंकु देखा हे, व
ध्यान, ज्ञान, ध्यान, समायक, प्रतिक्रमण, किवरुक भी ये विधि सेवन
करते हें मगर भी जैनके असली सिद्धांतोंमे तो ए विधि नही
और ऐसी विधि सेवन करने वालोको भांड चेष्टाके करने वा
कहे हे—

साख सुत्र उत्तराध्येन अधेन दुसरा और गाथा विसमि

गाथा

सुसाणे सुन गारेवा रुख मुल वएगउ, अकुकुया
निसिएझा नयं वित्ता सएपर ॥ २० ॥

भावार्थ—देखो ! स्मशाण [मसाण] मे तथा सुने घरमे तथा वृ
क निचे, राग द्वेष रहीत, एकांत बेठके, ज्ञान, ध्यान वगैरे क

मगर ज्ञान ध्यान वगैरे करति मस्तव साधु तथा श्रावकने कुचेष्टा कर ना नही मर्यात ज्ञानिके फरमाइ हुइ विधि से विपरीत विधि सेवन कर तो यो सर्व विधि कुचेष्टामे समजी जाती है, और आवश्यक सुत्रमे श्रावकके आठम व्रतमे भी कहा है के " मेद कुचष्ठा करी होय " इसिवचनात प्रतिक्रमण वगैरे मे विधि उपरांत नवीन विधि सेवन करे उस कुविधि कही जाती है, सो भी कुचेष्टामे गिनी जाती है, उनो को अनेक अमर्त्य भिर्द्वानोके आभारसे भांड की ओपमा मिलती है, इस वास्ते सझाय, ध्यान, वखान, प्रतिक्रमण वगैरे धर्म कार्योमें जिन पिंजर वगैरे की विधी सेवन ही करना चाहिये,

फेर भी देखो ! जिन पिंजर वगैरे सेवन करने वाले साधु लोगो को रात्रीके समयमें दरेस बदला के इसकवाजीके वास्ते फिरत हुवे हमने देखे है और उनोके अनुयाइ श्रावक लोक भी उनोके साथमें फानस लेकर फिरते देखे है यो श्रावक लोक उत्तम साधुक उपर द्वेष भाव भी रखते है उनोके उपर मुनि श्री मनुलालजी साहीन ऐसा फरमाया है

सवैया

एक मुनि समयक्ति, कारण ग्रहस्थ जाय, करे निगरानी, परनार पर नारीकी, एक मुनि सग मिथ्यागमन ग्रहस्थ करे, दोनु मामे नारी मन उमेग उपारकी, उत्तमसे सेग करे, कपटीको पस प्रहे नारी को रसिक नर महिमा करे जारकी, मणे मुनि मनुलाल सुणो हो भाविकजन, मुनि मवथा ग्रहस्त जार, दोनु जावे नारकी ॥१॥ दिनके द भव और रातके हे कंप प्यारे, मस्त कहावते, वो, करत उपारणा सिवकि स्नानसेति, तिरणो वो होवे नहीं,

नारीकि स्नान सेति मुगट पधारणा, चारु विर्थसम रखे भम्यमति
वाके परे, सकल्के संयोग करत विचारणा भणे मुनि
मनुलाल मुगटार्यमसारि दिये, सात मिका वपराते निमर्दा
ये धारणा ॥२॥ जिन पिंजादि पध, भोग मंजरिकु देख
जंत्र मंत्र तंत्र आदि बुद्धि बस पडना, धर्म कर्म सर्व मना,
विर्थिय सममना, वंच निच नहीं देखे, उत्तम क्रिया साडना,
उपर सफाइ और अंदर मेल्याइ माइ, आडंबर देखाय मोल
बिच फास पाडना, भणे मुनि मनुलाल, अनंत संसार रुले,
सिद्धांतके न्यायसे, निगोद सर्व धारणा ॥३॥

पूर्वपक्षी—क्यों भी साहेब कितनेक मुनि महाराज रात्री विषय मकानमे अकेले ही रहेते है मगर उस मकानमे ग्रहस्त को रात्रीके समय रहेने नही देते है, इस का क्या सबब है भला इस परसे हमे ज्ञात होता है के बेवाक वो लोग रंडिबाज है इसलिए सेवन करनेके वास्ते रात्रीके समय एकेले रहते है, उत्तरपक्षी—माहासयजी ! जरा रहो कुछ होस की दवा ले तो तुमारा मगज ठिकाने पर आवे, देखो ! प्रभु भी नसियजी वगेरे भी जैनके असली सिद्धांतोमे भी वीर प्रभुने भी मुखसे फरमाया है की जिस मकानमे मुनी उतरे होवे उस मकानमे रात्रीको अपने पास ग्रहस्ति नहीं रहेने देवे सोचो, चोथ आरेमे ग्रहस्ती लोग अपनि अपनि समक " पोपध शाल्मे धर्म ध्यान करतेथे मगर मुनि माहाराजके पास रात्रीको ग्रहस्त रहकर धर्म

ध्यान करते ये एसा अधिकार पुर्णपणे सिद्धांतोंमे नजर नही आता है मुनि महाराजने रात्रीके समय प्रस्तीको पासनहा रहने देना इसका ये सबब हे मुनि महाराजके संयमका रस्ता अत्यिय सुक्ष्म (बारिक) है, सो अल्प बुद्धिवाले दुपक्षी प्रदस्त के ख्याल में नही आवेतो या बाल बुद्धि दुपस वाला इसम बाहेर जाके खोटी २ निंदा करने लग जाव मगर जमाने हालम असली जैन धमकी किंवा असली जैन मुनिगोकी खोटी खोटी निंदा होनेका सबब ये ही है वास्ते मुनि महाराजने रात्रीके विषय प्रस्तीको पास नही रखना चाहीये लेकिन प्रस्तके साथ मालकिकी पोषध शाला की नास्ती होनेसे जिस मका नमें मुनि उतरते ह उस मकानमें रात्रीके विषय श्रावकोको धर्म ध्यान करने के वास्ते मनाइ नही करते हे मगर जमाने हालके समया नुसार देखनेसे मालुम होता है कि जिस मकान मे मुनि महाराज उतरे होवे उस मकानमें रात्रीके समय प्रहस्तीको पास रखनेसे संयम करणि मे किंवा ज्ञान ध्यान मे पुर्णपणे खल (हानीं) पहोंचति है सबब जमा न हाल मे नव आगीमोज मंजरी किंवा जिन पींजर वगैरे का सुब सार जोरसे किंवा धाम धुमके साथ बराबर चारा चल रहा है और य सेवन करने वाले पुरुष आत्म ध्यानी असली और उत्तम मुनि महाराजके पुर्णपणे दुसमन हे और इन लोगो का इलाज पराव ध्यालक उत्तम मुनिको संयमसे भ्रष्ट करनेका उपाय करते हैं एसा कार्य करन का ये सबब है कि उक्त लोग जो ही सेवन करने वाले कुमिलीये मुनि है उनोके धुम पराये हुवे कावड़ी होते और काश्मिरी कागें ह तब वो लोग उत्तम मुनियोको महान त्रास देते है उसका नमुना देखो तो सही प्रथम मुनिका कर्तव्य कहते है आठ प्रहरमेसे एक पहरका काम गोंचरी वगेरमें व्यतित करना और एक प्रहरका काम नींद्राव

गैरे प्रमादसे व्यतित करना बाकी छ प्रहरका काम वाचना, पुच्छना, परियट्टना, अनुप्रेक्षा और धर्म कथा अर्थात ज्ञान ध्यानमें व्यतित करणा इस तोरसे हमेस मुनिने वरतन करना चाहिये, देखो ! अब उत्तम मुनि के पास रात्रीके समय वो काश्मीरी काग रहके किसतरेहका सा फान करते है सो सुनियेगा,

देखो ! रात्रीके समय जो उत्तम मुनि निद्रा और प्रमादसे निवृत मान हो के ज्ञान ध्यानके वास्ते जाग्रीत होते है, तब वो कावलि ता ते और काश्मीरी काग कपट निद्राके जोरसे जाग्रत होके चारदुरीका नमुना मगन करते है सो ख्यालके साथ पढिये, नाटक की खुबी, जैसाके मरते वखत मनुष्यके गलेमें कफका घुरना चलता है इस सजे स घुरटोके घुरट दोडते है और पुंसाडोंके सांड दोडते है हाथीकी चडी पिसी जाति है हाथ पाव घसनेके और रगडनेके हथियार चलते है, छिकोके छरे छुटते है, डकारोकी ढाकन आतिहै, ठसकाके ठाः लगते है थु थु के मास मरतेहै, छिंकिके छाडने लगते है, अंगुलि वगैरोके कडकोकि कमान चढतिहै, चिमटीयोंके चिपट चढतेहै, घुंडुक घोडे दोडतेहै, खट खटाके खेल होतेहै, पेटकाके तर्फसे हड हडाटकीतोपां छुटतिहै, अगर पत्थरेका मकान होवेतो सन सनाटके नाटक होतेहै, पत्तरोके उपर रत्नोकिवृष्टि होतिहै, कपाटोके मरमराटके नकिब बोलतेहै, जैसाके मुर्देके सामने डफडे बजते होवे बिछानेके उपर लोट पोटकि लाठि घुमतिहै, बादमे खोंखारोके खजाने खुलतेहै इत्यादिकार्योमें हरवार हुंशियार होके एकदम परिवार सहीत उत्तम मुनिराजोपे हमला करके उत्तम मुनियोको घबरा डालतेहै, अगर मुनि महाराज काश्मीरी कागोको अवाज देवेतो पीछा उत्तर नही देतेहै, जाणेके मेणाग निद्रामेंहै, इत्यादि तोफानोके समित माग पासचे रहिसखोग प्याप्रत होके अनेक प्रकारके आरंभ समारंभ

फरनका छमजावहै, तब मुनिराज विचार करत हैके एसे लक्षित पुरुषोंको छांप नहीं रहने दस तो अपने ये नांहक कम कायके वास्ते दांधते और ज्ञान ध्यानकी हानि कायकेवास्ते होवेगि, इत्यादिक प्रश्नाताप्क भाव वापिस सयनकर देतहै, मगर काश्मीरी कागोका काय बंध नहीं होता है, याम्मे मुनि माहाराजका निद्राभम जानेके वा कायकी खोल और काश्मीरी काग दोनु हरूकाती करनेके वास्त रफूफोंक खावहै पश्चातमें मुनि माहाराज जागृत होगये और इनोको पुछने लगाके तुम काहांगयेथ तबतो दुर्गतिदाया क्याकहते है के आप मुनिराज होके प्रथम मुट बोलतेहो आपको कोई स्वप्न तो नहीं आया है, हमतो छांक झांपेहै साधुको मुट नहीं बोलनाचाहीये, एसे सत्यवादी बनत है, कोटीस धन्यवाद है आपको और आपके पढाने वालेको, के आप दोनु पूर्ण सत्यवादीके पुत्रहो और उत्तम गतिकि नास्तिकरने वालेका पण वाहादूरी येतो दुर्गति सजोगीयोंके रात्रीक कर्तव्यहै, मगर दिनकोंमी उत्तम मुनि रासास मदाकरते है, दखो मुनिके शरीरमे किंवा बखेमे, किंवा पात्रसे किंवा पाठस, किंवा पाथियोस, किंवा ओघापूजणीमे, किंवा उत्तरे, हुवे मकानमे ईत्यादि प्रयागोमे लेटा करते है फेर मुनि बाहेर निकलतेहै, येसामंत्रवादि मत्रसे कार निकाल त है इस मुजब कारनिकालतहै इसके सिवाय गौचरीम साथ रहके अनक प्रकारकि खटी कारवाई करतेहै इत्यादि कारणोके प्रयोग (प्रसंग) से वो कावलि शाव और काश्मारी काग उत्तम मुनि राजोंमे अनक तोफान मय भाय कटे करफ दुःख दतहै, फेर उनाको नबमे तथा दसम तथा इगारमें मुत्तम तथा अनकप्रकारकि सोगनदेक पूछाक आप जिन लिंग धार विधिमहीन सेवन करते हो और इसके जरीय उत्तम मुनीयोंम खटे फरक तकलिफ दतहो एसा पुछनमे बालाग फोरन मुट ॥५४

है, वो लोग क्या जानते है के हमारा कतव्य बवसामी नहीं जानत है वो मनुष्यकि वो क्यामगवूरहे, खरगोसवत्– [द्रष्टांत] जैसाके खरगोस [ससा] केपिछे पारधि पकडनके वास्ते हो जाताहै, तबवो खरगोस दोडने लग जाताहै दौडत दौडते थक जाताहै तब अपने कानसे अपनि आंखे ढांकलेताहै, और अपने दिलमे सोचताहै के अब दुनियामे किसीको नही दिखताहै मगर पारधि उस ससेको फौरन पकड लेताहै इसही वजेसे वो कावलि लोते और काश्मीरी काग विछल विचार ते है के हमारा कतव्य किसीका नही मालुम पडताहै मगर उत्तम मुनि, राजोंसे किंचित मात्रमी छिपानही रहताहै मगर उत्तम मुनि राजोंका फर्ज हैके किसीकोभी तकलिफ नहीदेना, वा कावलि लोते किंवा काश्मीरि काग निंदा करेतो खुष करलेवो आपनेको तो दुलर्ध फायदा है, एसे विचारके साथ उत्तम मुनि संतोष धारण करतेहै, अब कहीये महासमजी कावलि लोतोंका और काश्मीरी कागोंकी उत्तम मुनिराज संगत कैसिकरे और पासमेभी कैसे रख येवातस्वाब करने लायकहै, उत्तर पही आपका फरमान पूर्णसत्यहै, जिनपिंज रावि वाटे शास्त्रोका और कावलि लोतोंका और काश्मीरी कागोंकी काईभी वजेस संग नही करना चाहीये, इनोंका सवासर्वदा काला मुख करते रहेना चाहीये, इनोकासगकरनेसे मुनि निश्चे सय मसे भ्रष्ट होवेंगे इसवास्ते उत्तम मुनिराजोंसे मेरी यही विनंती है के ऐसेनष्ट और दुष्ट पुरुषोंस सवासर्वदा बचके रहेना चाहीये, ऐसी मेरी विनंतीहै, अगर एसे दाखिल पुरुषोंका प्रसंग पाडजावे तो फोरन मकानके बाहेर निकालनेकि कृपाकरते रहेना, मगर कोइभी तरसे मुलायजा रखना नही, येमेरी चर्णरजकी अर्ज ध्यानमें रखना

/

(सवैया)

एकएक मानव ऐसाइहोयके, साधुके स्थानक मायरहे है,
छिद्र आमनिपथ्यो नाहक, काल अकालही आयेकरे है
कोयक छिद्र कान परे जब, पिछइ साधुको नामधरे है
सोच विचार करोनर उत्तम, एक नवोसोदोप हरेहै ॥ १ ॥

देखिये कृपानावर्निथ कलम्य करने वाले बुध और लक्षित पुरुषोका सबकोइ नियम करनेक वास्ते फरमातहै, इस वास्ते मेरीउपरोक्त अर्ज ध्यानमे अवश्य रखक काबलि चोरोंसे और काश्मीरी कागोंसे बचक रहना चाहीये मगर संग नही करना चाहीये

देखिये ! ऐसे एसे श्रावके बनाने वालोको, और सत्यसमझने वालोको और इसरिवीसे वरतने वालोको, भोलेनेक मसाले सिद्धांतीक आधारसे—साधु—या—श्रावक कभी नही कहेजावेंगे, एक पश्चम दुग विचारा कहनापडेगा इत्यादि कारणोंसे ऐसे २ चमत्कारी बनाव बनतेहेके कुछ अकल काम नहीकरतिहे देखो ! जिस बखत हम बराड —या—झाडिकि तर्फवे, तब मतिकेवोने हमारे पुर्व आत्मरक्षकको जिन पिंजर वगैरे सिखाके" उन्होने उनाका पक्षकार करलियाथा फर हमार उपर महामबकर खोटा तोफान पसा का वालाथाके मुनि पदसे भ्रष्टहोवे बसमे तो कुछ तामब नहीहै, मगर महत्व पदसे भ्रष्ट होकरके दुधपार जानेकी बखत आ पहोंचीथी और हमारे आत्म रक्षकके पक्षकार हमारे उपर छोन्नेकेस देनेको तय्यार हुवेथे मगर बंबेल्स हमारे हस्तागत होनेसे गोर (विचार) कियाजावेगा ये बनाव जिन पींजर वगैरेकाहे लेकिन हम फोरन खानदेशमे आके हमने हमार चोतर्फस बचाव करलियाहै इतने परसेही पाठक ग णने गौर करलेना चाहीये विशेष लिखनेसे बहुतेक जीवोंको भ्रम उत्पन्न होवेगा इसवास्ते आपसबर रखना ठीकहे, लेकीन सत्यका

पराजय कदापि नहीहो सक्ता है–मर जाई अमर विमे ग्स ' तुमारे पूर्वा चार्योके कथोसे, तुमारा मूर्तीपुजक वग ब्रह्मचारीपदसे भ्रष्ट ठहरताहे, इसवास्ते सर्वज्ञ तुमने तुमारे घरका पूर्ण सुधारा करके फेर दुसरोकी सफ दृष्टी पोहचाना योग्यथा, एसा करणेस तो कुछ फायदा प्राप्ति होता मगर खैर, श्री जैनके असलि सिद्धांतोंका तो न्याय ऐसा हे–फेर देखो, सिनपिंजर सेवन करने वाले उत्तम मुनि याके दुसमन पूर्ण होते हे

ऐसिये श्री जैनके पर्मोपदेस अनादि प्राचीन असली सिद्धा तोमे लिखाहके, सिलव्रत (ब्रह्मचार्य) का कायम रखनेके वास्ते अपघात [प्राणका त्याग] करके मरजाना मगर ब्रह्मचार्यका भग नही करना, साक्षी, ठाणायगजीके दुसरे ठाणकी, पाठ लिख देता '

(पाठ)

दोठाणाइ अपत्थि मठाइ पनत तजहा बेहानसे, गिदपठ

भावार्थ

दाणिमे 'सिलव्रत [ब्रह्मचार्य कायम रखनेके वास्ते, फासि वगैरे के प्रयोगस प्राणघात करडालना, मगर ब्रह्मचारी पुरुष ने स्त्रीसेवन करना नही देता' असलि शास्त्रोंमे स्त्रीसेवन करनेकी सख्त मनाई हे, मगर मूर्तिपुजकाके पूर्वाचार्य स्त्रीसेवन करनेकी दूधेदूध रजादेते हे, इसवास्ते इनोका मानअपमान करनमे आतेहे, और इन आज्ञाभीयो का वचनभी प्रमाणनहीं करामे आतेहे, और येलोग इनाके लेखाके आधारसेंही कुशिल [स्त्री] सेवन करनेवाले हुवे हुए ठहरते हे दसा'

' श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी वर्ग तो भी जैनक ममनि सिद्धांतोक आधारसे ब्रम्हचय पालनेवाले सिद्ध होवे है, सो सार्थमिनके असमी मुनियोका लिखपाम्नासिद्धहुवा

फरमी देखो' परस्त्री सवन करनेवालोक कैसे कैसे फजिते होते है

— कवित्त —

कापाते कामजात, गांठहुस दामजात नारीहुस नेहजात, रुप जात रगस, उत्तम मयकस जात, कुलक्कमम धर्मजात, गुरू जनम धर्म जान, अपनि मति भगस, रुपरंग दाउजात ज्ञानसे मतीत जात, मधुर्जीम हनेहजात, मनका उमगम, जपतपकी आत्र जात, निचपृर्ष्कोवाम जात, सुपर्णविलाम जात, परनामनिके सगमे ॥ १ ॥

भ्रातगण! परस्त्रीक दुगुण केवल एकही कवित्तम हुब हुब दिखाय दिये, मगर इस विषयका जितना वर्णन करना चाहाता है, इसक निषेधनग सदामवदा लाभदायक होता है.

(लावनी)

मनकरो मीत परनारविष कटारी, है सकल रागकी खान भारा दुःख कारि,

औषधि अनेक है, सर्प डसनेकी भाइ, पर इसके काटेकी नही कोइ दवाइ, ग्रमे लगे बानतो, जीवितफेरहोजाइ, पर इसके नैनके बानसे होयसफाई, येरोमरोम विषभरी क्रोमखपारी ॥ १ ॥ है सक ० यहसन मनधन हरलेय मधुरबोलीमे पशुवोंकाकरे शिकार चमर मोलीमे, करदिये हजारो होंग पोट होलीमे लाखोंका दिल करदी या कैद चोलिमे, गई इस कर्ममे शाखोकी जमीदारी ॥ २ ॥ हैसक० होगये हजारोंक वस्त्रीर्यका छारा, स्यखोंका इसने पंथ नाशकरडारा, पंचगया मेम इश्कने देवखीगारा, भारत गारत होगया इसीका मारा करदिये हजारो इसने चोरजूवारि ॥ ३ ॥ हैसक ० इसपरनारीने मद्यमांस सिखलाया, सतधर्मको इसने धूलमिलाया, और दया क्षमा लज्जाको मार भगाया, ईश्वर भक्तीकामुल नाशकरवाया, हो इसके उपासक (सेवाकरनेवाले) दुर्गतिके अधिकारि ॥ ४ ॥ हैसक ० यह नव जोबनको नैनसेनसे लावे और धनवानोको चट्टगट्ट करजावे, धनहरन करे फिरपिछे राहबताव, करेधीन पांचवा ज्रुतेभी लगवावे, पिन्याकर लावे पुलिस पुकारी ॥ ५ ॥ हैसक ० फिरकिया पुलिसनेखुब अति-सत्कार, होगइ सजागिरफ्तगया मजा इश्ककामारा, जोधुरघाये,वो सज्जन करोविचारा, दोत्याग झूठको सत्यवचन स्वीकारा, भव सजोकर्मपर, अतिनिन्दित दुखकारि ॥ ६ ॥ हैसक ०

॥ सवैया ॥

ज्ञाननमे अरुमानन्सें, धर्मतेजकी हानि सदैवकरदारी, संपति विज धनमन, कुलकीसब उधम भावधि सारी, व्ययसमय अनमोल नमें सत्समाज हमाशनिशा अधियारी कीन्हसो उधम रत्न नसे, नाता इनचलते व्यभिचारी ॥ १ ॥ मसामरडेव धुराहपसे, धुरिन लगे गणिका हर्षमारी, रांदलसा पापिनसदा, रतिहीन — नपर्भ.अधम-

विचारी, रूपसे हरे शुचिता, तनकी, जनरूप हरे रूकरें अपकारी, यार दुलारा मिकारा कर, परवों हूनचेववदे व्यभिचारी ॥ २ ॥

(श्लोक)

दर्शने हरती चित्त, मशने हरतीबलं, सगम हरतिवीर्यं, नारी मत्यमराक्षसा ॥ १ ॥

भावार्थ० देखनसेचित्त (दिल) को खेंचलेतीहै, सुसिदा नसपत्र (ताकद) को खेंचलेतिहै, और समोग [सेवन] करनेसे विय (शरिरका राजा) को खेचलेतिहै, येतिनो पातोका नाश होनेसे मनुष्य किसिकामका नहीं रहेता है, इस वास्ते स्त्रीको राक्षसणी कहिहै इसलिये। इसका अवश्य त्यागकरना चाहीये, फरभी देखिये' सत्पातर, अंगसंयुक्त ममरन करने वाले पुरुषोंको तो ज्ञानि पुरुषोने मांसतुल्य फरमायेहै, मगर इसके बारमे कबिर दासजीभी क्याकहेतेहै सोसुनो तो सही

(दोहा)

मासमें घान्यकरे, मुल्लममजे हेराम, दास कबिरा यडंकहे,य ठगबाजी क काम ॥ १ ॥

— भावार्थ —

देखो! मुगध्यानि पुरुष, जैसा बगला पाणिपर बैठक एक चित्त मच्छीके उपर ध्यानदे, इसहिसावसे बकध्यानि पुरुषमाला हातमे छके

एकध्यान स्त्रीके उपर लगादेतेहै, अमीसाहेब कैसामस्त, मालाहातमे लेके चर्णसे लगाके मस्तकतक ओर मस्तकसे लगाके चर्णतक खेलकरतेहै उनोको पुछो क्यो भाई तुम संमरण करते हो के खेल करते हो, तबवोलोग कहेते हैके अमीसाहेब हमारे शरिरमे खुजली चलतिसो हमखुजातेहै, ऐसेबुवंशी धुर्ताइकेसाथ धुन्गोलतेहै, परतु वो लोग हातमे मालालेके ऐसे महात्मा भक्तबनके बैठतेहै के, इस दुनियामें इनकेसरिख। कोइभी भक्त नही है, मगर वोलोग एकांतमे बुगला भक्तहै जैसी बुगलेकि नजर मच्छीपर रेहतीहै वैसी बुगला भक्तोकि नजरपरस्त्रीयोपे रहतिहै, इसवास्ते उन बुगला भक्तोको मधु भक्तनही कहेना चाहीये, मगर धमठग कहना चाहीये धर्मठग कर ना उक्त लोगोके वास्ते कदापि अयोग्य नही होवेगा,

देखिये ब्रम्हचर्यसे भ्रष्ट पुरुषोंका किमीत हवाल वतन्मक चलेस समाप्त करनेकि रजाछेवाई,

(गाथा)

जन्मचेर मठा, पायपंडति बंमपारीण, तेइुवीर्दुन्नुइ बोही पण दुलहातेसि ॥ १ ॥

(भावार्थ)

दखिये; जो पुरुष ब्रम्हचर्य (शीलव्रत) सभ्रष्टहै, फर वा पुरुष ब्रम्हचारि पुरुषोंके पाससे पाव पडावे तो, परभवम हाथका

दृग और पांचकालुचा (पंगु) और जवानका बुकाछोता है, फर वा उक्त पुरुषको परभवमे धर्मकि किंवा समकितकि माप्ति भवांतरममी मिल्ना मुशकल है,

मूर्त्तीगणों कहांय आप साधोनोंको कैसा कैसा उमदा मजा मिलता है, सुनिये ! धनकि नास्ति, धर्मकि नास्ति, नगरिकि नास्ति, इजतकि नास्ति, मान पानकी नास्ति, बुधि विभवकि नास्ति, लज्या शमकि नास्ति, ज्ञानध्यानकि नास्ती, इत्यादि अनक उत्तमोत्तम गुणो कि नास्ती होती है और ब्याजमे जूतियां पडती है, जेलमा मिलता है और शरीरमें रोगादिककि उत्पत्ति होती है, और मरेक बाद फर दुर्गति मिल्ति है, मायथी दुर्दशा बस्या और परस्तीयोंक प्रेमियोंकी होति है, परन्तोक ! कि मारवरुप, मनादय और रहस मरादय स्वत अपनी आंखोको बंध करके अर्थात मिचके किंवा मुंद करक, इस विषय कुंपम गिरते जाते है, यहा तककि मन्दम मदमद पदविक धारक पितामोंक नामको पका लगाते हुए, इसके जरिये अनक कुम्प मवाकी माप्ति करते हुवे आप बडे घर (कारावास) म विश्राम लेत है, जहपूजे एसे सत्पुरुष एस एस कार्य सेवन करते है तब औरोका बचार कैसा होवे और कौन करे

हाय ! खेदाथपका स्थान है के, जमाने हाम्मम दयको जिन पिंजर वर्मोराक जरिये, विषयविकार सवन करके, हमारा भारत गारत हो गया है परन्तोक ! परन्तोक !! परन्तोक !!! हे प्रभु इस विषय विकार का संहारककि पूर्ण नास्ति होके इस हमार भारत वर्षमे पुन धर्मकि वृद्धि कब होवगी

धर्मकि, जय ! जय !! सदा जय !!!

— : विजय पराजय विषय—

देखिये ! मूर्ति पूजक लोग कहेतेभी है और लिखतेभी हेके साधु मार्गी (ढूंढक) धर्मका कोईभी वखत विजय हुवा नहीं है

और 'कुमक हृदय नेत्रांजन " पृ० १९१ मे मुनि पंपालालजीके
बारेमेभी अमर विजयने लेख दिया है, मगर ऐसे पंडितोसे तोसामना
लेना मुसकल है, देख ! पपालालजी तो बडी भारी बात है, मगर
हमारेसे तुझको सामना लेना मुसकील हो गया है, हम तेरको विक्रम
सवत १९६७ कि सालमे ९ प्रश्न कियेथे उसका उत्तर न देता,
आकोलेके वास्त पिरथीराज बगताबरमलने वकिल वामरे मारफत
नोटीस दिलवायाथा उसके उत्तरमे हमने जबाब दियाथाके, तुमारे
गुरु अमरविजयके समक्ष खुलासा करेंगे मगर तुम और तुमार श्रावक
दोनुभि गुम होगये, मगर पिछा जबाब नदिया, फेर स १९६८ कि
सालमे पोपटे वाले चांदमलजीकोचरने हमारेसे चर्चा करनेके वास्ते
अरे माइ अमरविजय तेरेको और तेरे श्रावकोको रजिष्टर दियाथा
और उसमे तुम पच परमेष्ठीकि सोगनभी डालियी मगर पंच परमेष्ठीकि
सोगनकि नास्ती करकभी जबाब न दिया सोगन और सिरणी खाने
कि हि हालि ह, मगर पच परमेष्ठीकि सामनका पालन तो जैनि ही
करते है; दुसरोंस इसका पालन नही हो सक्ता है नास्ति वगैरकि नकल
निचे दरज करते है

Notice

That you muni Kundanmal

Lay a printed notice to our client Pruthwiraj Bak tavarmal jain Swaitambari Mandir Margi of Akola of the 15 th September 1910 by questions the first 5 of which are clearly defamatory and false published at Akola on the 5 th october 1910 and thus committed an offence under Section 500 of the Indian Penal Code and also under Sec- 153 A of the same code That the manager Babaji printing Press in knowingly publi hing the notice has abeted the offences Both of you are therefore required to explain within a week from receipt of this notice why you should not be prosecuted

for libel and promoting enemity between different classes of His Majesty s Subjects

AKOLA
9 10 10

(Sd) in English
Pleader
for Pruthwiraj Buktavarmal
Vice chairman of the Akola
Jain Swaitambar Sam sthan

तर्जुमा नोटीस अंगरेजीः—

नोटीस

के तुम मुनि कुशलमलने एक छपा हुवा जाहिरात हमारे पक्षकार पृथ्वीराज बखतावरमल जैन श्वेताम्बरी मंदीर मार्गी अकोला वालेका तारीख १५।९।१९१ का सवालोसे भरा हुवा दिया, जिसके पहले पांच सवाल तो बिलकुल बदनामीके लायक और झुटे है जोके आकोलेमे तारीख ५।१०।१९१० को जाहिर हुवे जिस वजेसे ताजीरात हिन्दके दफा ५०० और उसी कोडके दफा १५३ (अलिफ) के जुर्मके तुम मुर्तकिब हुवे और बाबाजा मिन्हाज मसलें जानकर यह जाहिरात छापा है इस वास्ते बहमी यह जुर्मोका अयानतदार है इसवास्ते आप दोना यह नोटिस मिलनेपर एक हफ्तेके अन्दर जवाब देवके आप सरकारके न्यायके मुखालिफ वर्गोमें विरोध निस्वा दुष्मनी बढाने चाहते हो इसलिये आपके उपर क्यों मामला नहीं चलाना चाहिये

आकोला
१९।१०।१

सही (अगरेजी)
वकील

तर्फे पृथ्वीराज बखतावरमल
व्हाइसचेअरमान अकोला जैन श्वेताम्बर संस्थान

जरर दर्थ किये नोटीसका जवाब दिय मथासा निचे मुजब:-

नोटीस

बोदवडहून सासि सही करणार नोटीस देतोकि आकोलेकर मूर्ति पुजक पृथ्वीराज बकतावरमल याने वकिल वावरे तर्फे मजप्राम नोटिस कली ती नोटीस ता० २ । १० । २० ईसवी रोजी मिळाली परंतु जैनचे एकादस अंगादि माधिन असली सिद्धांताचे विरुद्ध ज्या ज्या गोष्टी मूर्ति पुजणाऱ्या लोकानें छपउन जाहिर मसिद्ध कलीआहे मागील गोष्टीने आमच्या सर्व जैन लोकास, मोठा मारीधका पोहोचत आहे याकरिता मूर्ति पुजक लोकांचे मान्यवर आचार्यांचे केलेले शास्त्रांतुन काढून मूर्ति पुजक लोकांचा गुरु अमरविजय याजला आम्ही ता० १५ । ९ । १० ई० रोजी जाहिर नव * प्रश्न केले आहे आमच्या प्रश्नांचे उत्तर न देता आपच्या मश्नास पृथ्वीराज बगतावरमल साटे ठरविल आहे परंतु प्रश्नचेप्रश्न पूर्ण खरे आहे परंतु नोटीस करणाऱ्या समक्ष खुलासा करण्याची अम्हांस कोर्टी जरूर नाहीं नोटीस करणाऱ्याचा गुरु अमरविजयचा समक्ष समेत किंवा कोर्टांत अमचे प्रश्न मूर्ति पुजक लोकांनें मान्यवर आचार्याचे केलेले शास्त्रांने अम्ही सिद्ध करण्यास तयार आहो नोटिस करणार पृथ्वी राज बगतावर मल यांनें वकिल वावरे तर्फे अम्हास खोटी नोटिस देऊन मानदिला आहे या करितां कायदेशिर इलाज कला जाइल ता २५ । १० । २०१

(सही मराठी) मुनिकुंदनमल

मु-ईबीवामा मराठी नोटीसका तरजुमा हिन्दीमे इसमेंहे:—

— नोटीस —

बादरडसे निच सही करणवाला नोटिस देताहै आकोले वाले मूर्तिपूजक पृथ्वीराज बगतावरमल इसने वकिल वावरे मार्फत

हमको नोटिस दिहे बो नाटिस ता २०। १०। १० ई को मिली सो कल जैनके एकादस अगादि प्राचिन मसलि सिद्धांतोके विरुद्ध आ जो वाते मूर्तिपूजक लाकोने छपाके जाहिर मसिद्ध कराई पिछली बातोसे हमारे सर्व जैन लोकोका बडाभारी धक्का पोहोचताहै इसवास्ते मूर्तिपूजक लोकोके मान्यवर आचार्योके बनाये हूवे शास्रोमसे निकालके मूर्तिपूजक लोकोका गुरु अमर विजय इसको हमने ता १५। ९। १० ई को जाहिर नव प्रश्नकरे है हमारे प्रश्नोके उत्तर नहीदेस हमारे प्रश्नोका मयिराज बगताबरमल खोटे ठहराताहे लेकिन हमारे प्रश्नपूर्ण सच्चे है लेकिन नोटिस करणेवालेके समक्ष खुलासा करणेकि हमको कुछ जरुरतनही हे नोटिस करणेवालेका गुरु अमर विजयके समक्ष समाये तथा कोर्टमें हमारे प्रश्नमूर्तिपूजक लोकोके मा न्यवर आचार्योके कर हुव शास्त्रोसे हम सिद्धकरणेको तय्यार है

नोटिस कारनेवाला मयिराज बगतावरमल इसने वकिल सावरे मार्फत हमको खोटा नोटिस दकेत्रास दियाहे इसवास्ते कायदेसर इला ज कियाजावेगा—ता २५। १०। १९१

सही मरेठी (कुशनमल)

माहासयजी' दसो' विजय किसका कहतेहे और मूर्तिपूजकोका लिखना सच्चाहे यास्यात्र इसका पूर्ण विचार ज्ञातापुरुष आपहिकरलेवगे मगर मूर्तिपूजकामे साधु मार्गी (ढूंढक) क्योंकि

फूटनोट—हमन अमरे भी नाटीमका जवाब वकिल सांवरेको दियाथा लपन यह थाके नोटिसके उपर जो अगरजी सहीथी सो बराबर मालूम नही हुइ इसवास्ते

कोई मत्तवमी पराजय हुए नही और होवेगी नही इत्यलम

—— अबाव दावाविषय ——

देखियो पितांबरि वल्लभ विजयने एक " जवाबदावा " नामकि छोटिसि किताब छपवाके जाहीर करीहे मगर जबाब दावा ऐसा नाम देनेका मतलब तो येह मजर आताहेके साधु मार्गी लगसे जबाबलेन मगर जबाबलेना वो दूररहा और जवाब देनेकि मुसिबत उठाणापडा सबब मूर्तिपूजकोके पूर्वाचार्य वगैरे ोने जो निकादिग्रंथ प्रकरण वगैरे बनायेहे उनोमे श्री जैनके एकादस अंगादि माथिन असलि सिद्धांतोंसे जो जो विपरित अधिकार दाखल कियेहे उनविपरित अधिकारोंको साहता मिलनेकेवास्ते कैसा जबरदस्त इलाज कियाहे देखिये' श्रीविर प्रभुके सत्तावीसमे पाठ देवाहि रवमासमाण मांधाप हुवेहे उन महापु रुषोने श्री जैनके एकादस अंगादि माथिन असलि सिद्धांतताडपत्रोमे लिखवायेथे सबब असलि सिद्धांतोमें मिलावित नहीं होना चाहीये मगर उनमेसे कितनेक असलि सिद्धांतोमे मूर्तिपूजकोके पूर्वाचार्य वगैरोने अपने साहताकेवास्ते नविन मनकल्पित पाठ दाखलकरके वो सिद्धांतता पित्ताडपत्रोंमे लिखवाके भंडारोमे दाखलकरदियेहे और हालभी असलि सिद्धांतोमे येलोग नविनपाठ दाखल करतेहे इसकामी इनला गोमे जवाब लेनाचाहतेहे—और श्री जैनके एकादस अंगादि माथिन असलि सिद्धांतोमे जा जो विपरित पाठहे वा सर्व मूर्तिपूजकोके पूर्वाचार्य वगैरोमे दाखल कियेहुवेहे इसबातमे कोइवरत्किंका नहीं समजनाचाहीये इत्यादिकारणोसे उववस जवाबदा दावा मूर्तिपूजकोस हमदी करना चाहतेहे

——स्याद् वाद विषय——

देखीये मूर्तिपूजक लोग स्याद् वादकाआसरा लेतेहे मगर स्याद्वाद हम कहेतेहे के- दोनुबाते सत्यहोना चाहीये जसे स्याद् वाद कहाजा- वेगा, जैसाके श्रीविर प्रभुके मातावो-दो-थी-एक तो देवानंदाजी और दुसरी त्रसलादेविजी, देखो! देवानंदाजी तो मोक्षगयेहे और त्रसलादेवीजी तो देवलोक गयहे—अब जिसजगे मोक्षकी आस्तिहोवे गा व्हांप देवलोककि नास्तिहोवगा, और जिसजगे देवलोककिआ स्तिहोवेगा व्हपि मोक्षकि नास्ति होवेगा फेरभी देखो! जैन मुनियाको चातुर्मासम विहार करणेकि जैनके सबलि सिद्धांतोमे मनाइहे, मगर संयम वगेरेकिरक्षाके वास्ते ठाणायंगजीके पांचवे ठाणेमे पांचकारणसे मुनियोंको चातुर्मासमे विहार करनेके वास्त श्रीविर प्रभूने फरमायाहे जिस जगेविहार नहीं करणेकि आस्तीहोवेगा व्हपि विहार करणेकि नास्ति होवेगा और जहापे विहार करणेकि आस्ति होवेगा व्हांप विहार नहीं करनेकि नास्ति होवेगा इसतरेसे अनेक अधिकार समजा लेना मगर दोनुवातें सत्यहोनाचाहिये मगर एकबातसत्य और एकबा- त भुट होवेगातो व्हापे स्याद्वाद कदापिलागु नहीहोवेगा, जैसाके अठारा पापसावद्यसेवन करने वाले जीवोको दुर्गतिमे जाना चाहे कहाहे मगर अठरा पापसावद्यविसेन वगैरे सेवन फरमेवाले जीवमोक्ष जावेगे ऐसा कदापि सिद्धनही हो सकताहे, जहांपे पाप वगैर कि आस्तिहे, व्हांपे मोक्षकी नास्तिहे और जहापे मोक्षकि आस्तिहे व्हापे पाप वगरेकि नास्तिहे, इसलिये दोनुबाते सत्यहोवे व्हांप स्याद्वाद लागुहोवेगा अन्यथा स्यानपे स्याद्वाद लागुनही होसकता हे

——अमरविजयको सुचना——

देखिये! अमर विजयने टुक्क हृदयनेत्रांजनके प्रथम पृष्ट ३६ मे दोनु कान्फरन्सको सुचना करिहे और भाग दुसरे केपृष्ट ९७ म लिख ताहे " परंतु इस टुक्क भाइको अतरक चक्षुखुले करनेकि और मान-सिकदृष्टछेनेकिमला मगकरके" फेर अगले पृष्ट ३४ । ३५ म हमारा पुकार दाखल कियाहे, इत्यादिकारणोसे हम अमरविजयको विदित करतहेके उपरोक्त तरेसेलखानुसार तुझे कार्य करणेका अमोल अवसर आपहोचाहे, येअमुल्यसमय खोना तुझेठिक नहींहे —सो— श्रीजैनके एकादस अगादि वाइसप्रोमे लिखित प्राचिन सिद्धांतोंके मुख्यपाठसे आम सभाकेमध्यमें हमारे निन्मलिखित लेखानुसार निर्णयहोना चाहीये, तबतो तेरिखुबिहे

——स्वधर्मिको सुचना——

देखिये' महासयजी' श्रीजैन स्वताम्बर स्थानकवासि (साधु मार्गी) अर्थात हमारे स्वधर्मि मुनिवर्ग —व—श्रावक वग—मेसे कितनेक मुनि —व— श्रावक, हमेस, शिक्षामु ज्ञात पुरुष—चर्चावादि मुनियोंको —व— श्रावकोंको, फरमायाकरते हके, येलोग, क्रोधिहे, अभीमानिहे अज्ञानिहै विपाराम द्वेष बढाते हे और अनेरेकि फजुल निंदाके चरिव (निंदाकरके छेद छापकरके टेटोको पर चडाते है और नाहकर्म बांधतेहे दुसरा कोई अपने धर्मके उपर चाहे जैसा हमला करेता करने देवो, मग्र आपुननेतो अपने आत्मध्यानमें मस्तरहेना चाहीये, (इहांप अगर जो कुत्तेने अपनेको काट्यालेक्या! चापिस उसे काटना चाहिये कदापिनही, हालहमारे स्वधर्मी बंधु असल मतलबसे अजाणहे इसवास्ते एसी पागल पनेकि चर्चा जाहिर करतेहे, संताश्रयका स्थानहेके जा

और इनकिसेवा संगी नहीकरना इनके पासजानेसे देवलोकमिलेगा और इनोके पास जानेसे नर्कमिलेगा वास्तेइनकेपास जाना और इनके पास नहीं जाना ये कुबुद्धिके दाताहै, ये सुबुद्धिके दाताहै, इनके पास धर्मध्यान करना इनोके पास धर्मध्यान नहीकरना चाहीये मगर किसीने दशाल्या निकाल्या होवेतो उद्घाप्न स्वामिके पास स्तवन कदापि भी नहीं करना चाहीये वस ये दशाल स्तोरिय है और ये साहूकारहै, इनोको वंदना नमस्कार करना और इनोको वंदना नमस्कार नहीं करना चाहीये, इत्यादि स्वोटि-स्वोटि नियाक अणिये अनेक प्रकारसे आप-सके आपसमें रागद्वेषकि वृद्धि करके स्वधर्मका सत्यानास करदालाहै, एसेनष्ट (खोटे) मनुष्योके मतापसे स्वधर्मका सत्यानास होकरके स्व धर्मके श्रावकलोग इस, हायावोल (आपसका झगडा) केजरिये भ्रमि ष्ठोके, स्वधर्मके उपरसे सरधा उतरके अन्य धर्मका अंगीकार करना चाहते है

भगवानका हालाहै जो मुनि इस पंचम काल्में उत्कृष्ट चारित्रकि पद्वी धारण करके कहेके हम उत्कृष्ट साधुहै, वो मुनि दुसरे माहाव्रतका भागल समजसेना और जो श्रावक रागके वशमें होके कहेके वे मुनि उत्कृष्ट है, वो श्रावके दसरे व्रतका भागल समजसेना और वो दोनु माहामोहनी कर्मकि उपार्जना करने वालेहै, सेमवायंगजी सुत्रमेंस्वा, फेरभी देखिये चौथे आरेमे श्रीवीर प्रभुने घना अणगार सरिखेभी हारस्या पुरुषोका सामान्य चारित्रके पालनेवाले सिद्धांतोमे श्री मुखसे फरमायेहै सो फेर पंचमकालमें उत्कृष्ट चारित्र कहासेआया अगर यमन कल्पित उत्कर्षोने कोइसवेमेसे नविन उत्कृष्ट चारित्र खोदके पैदाकिया होयेगा वो ज्ञानिगम्यहै, मगर अपनि महीमा पूजाकेवास्ते रखता झुट बोलतेहै, और श्रावकोंके पाससे झुट बुलवातेहै, मगर ईर्षा,

बाबा—साहेब सा— क्याबात है आपकि येही आपका वीतरागी-पणा यही आपकी समता —या— क्षमा —या— वत्सल्लतापना येसेही कार्योंमे तुम धम वृधि करोगे रेगहै तुमलोगोंको इसवजेसे हमारे स्वधर्मकि दिनपरदिन हिनता होकर परलपक्षोने हरिखिदना आपहोंचिहै और क्रिस्चानि, उस, मजब बास्म, हमारे मजबके उपर आक्षेप करके व्हडादा जातेहै, मगर एसे निमल और पवित्र और पाकधर्मके उपर ममदुरंहै के कोइ आक्षेप करनेको खडाहोवे मगर तुमारि बदौलतसे हमार स्वधर्मके उपर कुतिया —च— चोटेवारसतहै, बाबाहेब —बा— यही आपका वीतरागी पना और धर्मध्यान है और इससे क्या योसकि माचिहोतिहै कदपि नही और रागद्वेषका फल सब ठिकाण एक सरिखा लगताहै, मगर मथक मथक नही लगताहै, अत एव हमार स्वधर्मके उपर अन्य धमकि तर्फसे जो मिथ्यात्वमक लागु होतेहै, उन मिथ्यात्वकर्मकाकि नास्ति करनेके वास्ते धर्माचार्यादि मुनिमहाराज धापारथ दुनियारहोके मद होते है, सब हमारे स्वधर्मके पोपमहत माहाराज घार जारस माहान पोकर जडातेहै के अरे भाइराग द्वेष बद साहै, धमिधवाद करनेका कारन य है के जो जा हमारे स्वधर्मके बड बड महंत माहात्मापुरुषहै वो लोगतो हमेष अपनि महिमामेही मगन रहतहै, आगे श्रीजिनमार्गका हास चाहेसा क्यों नहो अपनिता महामाहोना चाहाय, महिमाकितोफगी देखो अमुक महाराजके वो मान्य महाराजश्रीके दर्शनार्थ दसहजार आदमि आये, और पंद्रे हजार रुपेय स्वर्च हुये अथात १५ हजारकि धुड उडी और धाम

सफ और हुट इत्यादिदिण बातोसे जन्म नही सुधरताहै, एसा श्री तिर्थकर महाराज स्वामने फरमायाहै,

घुमके साथ खुबमाल ताल खाये, और मजा उडाई, दुसरा अन्यका लोकवास्ते एगाम बडा भारी उपकार करवातेहै पर्युषण पर्वमे कसाई खाना इत्यादि भट्टिया वगैर बंध करवाते है मगर स्वताक वास्ते तो योम, कैसे भन्मा देखो! स्वताकि महिमाकवास्ते श्रावकोकि तर्फे जो पर्युषण पर्वमे भट्टिया चक्कीई और माश आरंभ समारंभ हाक बहमादिछ कायके अनंत जीवोका घमसाण होवाहै, इसबातका बंदकरनेके वास्त असमर्थहै,क्योंकियकाय बंधकरदयेतो उनोकि महीमां पुजाप्रभवा जावे और महत तथा माहात्मा पदविका पक्की पहोसे इस वास्ते वो लोग इस बातको बंदकरणेक लिये रुपाचारे और इन लोगोकपास धर्मकेपैस खानवाले दुनाम्य इमेसे जो इन लोकोंकि महिमा बढाते रहेवेहै, उन लोगोंको येलोग अपने मातबर (भागवान) श्रावकोंके पास नाणादिलवानेको बहमजबुतहै, देखो! पांच आश्रवद्वार सेवन कारतेहै उनोको तोआश्रवद्वार सवन करने के वास्ते नाणे कि मदत दिलवाते है, पद आनंदकेसाथ मगर स्वधर्मका मिथ्या कलंक दुर करनेका जोकोई इलाज करनेके वास्ते स्थापार्थद सहाहोव और महंत महाराजसे अर्ज करेके गरिब नवाजमे महान सामकी ठामहैसो इसमे आपके तर्फेसे पूर्ण मदत मिलना चाहीये, तबमहंत महाराज हुक्म चढाते हैं के अरे भाई येकामतो रागद्वेषका है, इस काममे तो मुनिने मौन साधन करना चा हीये सोचिये! पांच आश्रव द्वारसेवन करकेने वास्ते नाणेकि मदत दिलवानेमे महंत माहाराजको उत्तम गतिमिलेगी और स्वधम चन्य-तिके काममे पूर्ण मदत देनेसे दयामयोगति मिलेगी, कदापि नही, मगर बड बडे मुनि वगमे भकलका पाया और वो महिमा पूजाके

साक्षी और शास्त्रके असलि रहेस अप्रमाण, लेशामर्थका स्थान है क
न्न दसासे हमार स्वधर्मकी उन्नतिकि नास्तिहोके चिरकालम हमारा धम
पयालम उत्तर जावगा एसामान होताहै और इसिही दसासे हमार
स्वधर्मके नास्ति करनेके वास्ते अपना भाइमिमी कमर बांधके खडा हो
जाताहै और इनोके भावक लोगमी स्वधर्मकि उन्नति करनके बारेम
तन, मन और धन आर्पन कदापि नही कर सकते है कारन इन
लोगोके पासमे धर्मका पैसा खाने वाले दलालोको महत पैसा दिखवाव
है तथा अपनि महिमा पूजाके वास्ते पैसा खरचाते है तब धर्म उन्न
तिकि तर्फ पैसा कैसा मिल सकेगा (मिसलन) विनतीके पतिको पूण
सुक नही मिला करता है इसवजेसे समजना मगर हमारे स्वधर्मक
बड बड महत माहात्मा पुरुषोंने महा वीतरागपद धारणकर रखाहै
लाकन किंचत मात्रभी सराग दसाका त्याग मजर नही आताहै, ता
वीतराग दसावो इसकालमें सप्रममी कहाहै, अर अब हम हमारे स्व
धर्मक आम मुनि वर्ग किंवा आम श्रावकवर्गकि सेवामे हमारि विनति
निवेदन करते है के अपने स्वधर्मके उपर जो मिथ्या कलंक लगायाहै
इसकि नास्ति करके अपने स्वधर्मकी उन्नति पूर्णहोवे एसाकार्य करनक
वास्ते पायबंध खडेहो तब तुमारि बाहादुरिहै, आपकि सेवामे आपको जाम-
नेके वास्ते किंचित सिद्धांतोका न्याय दवेहंसा देखो सुत्र श्रीभगवतिजीमे
श्रीवीर प्रभूने गौतम सामको भी मुखसे फरमायाहै क अहो गौतम तुम
चर्चावादिमे समर्थ हो और पाखंडियोके मान मर्दन करनेवाले हो और
श्रीवीर परमात्माके चवदा हजार शिष्योंमे उनमेसे चारसो वादिविजय
अयात हमेस चर्चावाद करनेका ही उन माहानुभाव पुरुषोंको काममा
मगर उन चर्चावादि मुनियोंको श्री वीर प्रभुने रोके नही, के तुमये
क्या काम करतेहो, इससेरोग द्वेष बडताहे, ये कहेना असमर्थोका कामहै

मार्ग रोकना वो दुर रहा परंतु सुत्रमी ज्ञाताजीमे क्या अदभुत अधिकार फरमायाहै के अवलोकन करनेसे अत्यानंद उत्पन्न होताहै किंचित् नेत्राके पडल दूर करके देखो, तो सही देखो ! सुत्रमी ज्ञाताजीमे श्रीविर परमात्माने तिर्थंकर गोत्र बांधनेके विसबोल भी मुखसे फरमाये है, उसके विसमे बोलमे फरमाया हेके, मिथ्यात्वका तथा हिंसाका पूर्ण खंडन करता हुवा और समकितका तथा दयाका तथा जिन मार्गका समय समय उद्यात (महिमा) करता करवाता हुवा उत्कृष्ट रसायण आवे तो वो जिव तिर्थंकर गोत्रबांध कहीये महाशयजी ! ऐसा सर्वोत्तम माहात्मका कायकोन अंगीकार नही करेगा, ऐसा सर्वोत्तम कार्य बुद्धिमानने समय समय स्विकार करना चाहीये फेरमी देखो ! जिस वखत जिन मार्गकि हिणता होनेका समय आपहोंचाथा वस वखत सुदशाण मुनिने अपने ओभापात्रे वगैरे सर्व वस्त्राके सयमका पक्ष पहोंचाके चाहिजनग मे मगर जिनमार्ग कि हाणि नही होने दिधी, पिछा सयमलेके अन्तका सुधारा करलिया मगर जिन मार्गको हिणदसा में कोइमी वखेत नहि होन दिया, सोचो ! अजैनके मताकि सिद्धांताका न्याय तो ऐहे, परंतु जो हमारे स्वमुतबमे जो जा माहान केवली बन बैठेहै उनोका कथम माने, केतीवीर प्रभुका हुक्ममानते सुनो माहब श्रीवीर प्रभुका हुक्म शिरोधारम चढाना, ये आत्मीक कल्याणका कारणहै, अत'एव हमारे स्वमतम [मत] के माम मुनि वर्गको —या— श्रावक वर्ग किसेवा मे निवेदन करतेहै के मिथ्यात्व निर्कंदन भास्कर " ग्रंथ छपके तैयार हुवाहै इस ग्रंथकी पूर्ण वोकसिके साथ आप साहबोने अवलोकन करके ग्रंथ कताको पूर्ण रितिसे न्यायका " सार्टीफिकेट " देना चाहिये ऐसी मेरिविनंति, [आपका सेवक मनमोहनलाल]

(तातपर्य)

दक्षिण[1] मिसवसत, ममसनेरमे हमारि हस्तागत "ढूंढक हृदय नेत्रांजन" हवाया उक्त पुस्तक हमारे हस्तागत होवेकेसाथ, हमने काइ वाय होजु 'कान्फरसको' सुचना करवाइथी मगर नतो सपके बारेमे न था उक्त पुस्तकि बरोबस्तिके बारेमे हमका सतोष कारक जवाब किम रसेभी नही मिला, तत्रापि हमने चिरकालसक सतोष धारण कर रखाया मगर फरमी देखा[1] अमर विजयने पुनेके चातुर्मासमे हमारे वर्गकि छेडछाड फरिवी तोभी हमने संतोस धारण कियाथा, परंतु कोईभी तरेस सुलेह (मप) नहीं हुता देख, तब हमारे स्वधर्मक कितनेक मुनि वर्गकि तर्फसे अति आग्रहके साथ विनति हानेलगी के अपने स्वताके उपर मूर्तिपूजा काकि तफस जो जो मिथ्याहानि कारक कलंक लागुकिये गयेहे उनाकि नगस्ति करके अपने स्वधर्मकि वृद्धिके वास्ते आपन अवस्य कुछ-तोभी विवेचन करना चाहिये हमारे मुनि वर्गकिवा श्रावक वर्गकि तर्फसे विनती हावके साथ हमने उक्त विनती पूर्णमानके साथ शिरोधारम चढाके अती परिश्रमक साथ "मिथ्यात्व निकंदन भास्कर" ग्रंथ बनाके तैयार कियाहै,

(नोट)

यति संवेगी पीताम्बरी वगके, मुनिवर्ग किंवा श्रावक वर्गकी यथिपूर्ण विद्वत्ता भरिहुई, पक्षीताइ हावेतो उन पुरुषोंने हमारे निम्म लिखित लेखानुसार श्री जैनके एकादश अगादि वाइपन्नाम लिखित प्राचिन और असलि सिद्धांतोंकि मुखपाठस आम समाके मध्यम सिद्ध करके दिखलाना चाहीय जब हम उन लोगोको सत्यवादी किंवा असल

यह भय निर्विघ्नतासे समाप्त हुवा इस लिये
— क्षमापन्नाकि चपवसी चोविशी —
कोयलो परवत धु धलोरेलाल पे वेसी पसा ऋषभ देव यद सारेलाल
अजित अजित चित भावहो, भवक जिन, विजा संभव प्रभु निर्मलार
लाल, अभिनंदन चदन मावहो, भवक जिन ॥ १ ॥
करो पक्षी रात मत खामणारेलाल निम्र खेवो पारहो-म -
चौन्याशी लक्ष भिवा जोनसुरेलाल राखो मत्राचार हो-म ।२॥
करो पक्षी रात मत खामणारेलाल।ऐटेरा।
त्रिकम विशुद्ध खमावियेरेला मनवि वूर निवारहो-म
सका कसा रिछोडनेरेला निचे विवहार हियधार हो-म ॥३॥क०॥
सुमत सुमत दातार छेरेला छटा पदम प्रभु देवहो-म
सुपार्श्व सुख कार छेरेला करसावत्ता प्रभुजी सेव हा म-॥४॥क०॥
रायसी देव सीत मानियेलाल कदापि नवि थाय हो-म
आतमने थिर करतेरेलाल तिस्रे पक्षी खमाय हो-म॥५॥क ॥
नवमां सुवधिनाए वदसारेला दसमां सितल नाथ देव हो-म
इग्यारमां श्री हंस नाथ वदसारेला बारमां वास पुज देवहा॥क॥६
॥ कदापि पक्षी नवि खमेरेलाल चौमासि खमाय हो-म
भावन निंदा करो भावसुलाल शत्रुता दुर छिटकायहा-म॥७॥क
तेरमां विमलनाथ वदसारेलाल चवदमा अनंत नाथ देवहो-म
पंदरमा धर्मीनाथ वदसारेलाल शांति शांति दातार हो-म॥८॥क०
कदापि चौमासि नवि खमेरेलाल संवत्सरी शुद्ध खमाय हा-म
संवत्सरी उलपवासरेलाल समकित हाणी मावहो-म ॥९॥क०
सतरमां कुंथीनाथ वदसारेलाल अठारमा अहनाथ देवहो-म
उगणिसमां मल्लिनाथ वदसारेलाल विसमां मुनि सुव्रत दवहो म॥१
धर्म करणि सहु फोकटरेलाल समकित विनाजाण हा-म
समकित निवस मोक्ष नितेलाल ज्ञानि वचन प्रमाणहा-म॥११॥क

इकवीसमां नमी नाथ वंदसारेलाल रिष्ट नेमि गुण धिरहो—भ
पार्सव भंजन पासजीरेलाल सासण पति महावीर हो—भ—॥१२॥क०
समकित रासो निर्मलिरेलाल होवे कारज सिद्धहो—भ—
पवकंहु पंदरे भवेरेलाल. पामो अवचल रिद्ध हो—भ—॥१३॥क०
अनंत सिद्धाजीने वंदसारेलाल. जेवंता जग दिसहो—भ
आचार्य उपाध्याय सर्व साधमीरेलाल नमन करु निसदिसहो भ ॥१४
पुज्य सौभाग सोभा निमोरेलाल मणि गुण परणता सहो भ
तस पर्नाकुज कुंदन नमेरेलाल पुरो हमारी आसहो—भ ॥१५॥क०॥

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

अ नं	विषय.	रकम.
	सिवनी म्सनापुर	
४१	मवारमलजी पन्नालाल —	९
४२	कमीरामजी कल्याणमल —	१
	सन्त्री	
४३	मल्हानजी चंदनमलजी —	१
	डोलभरी	
४४	मीवरामजी गोपालचंदजी —	
	ईंदर गणा	
४५	चुनीलाल कल्याणमल —	५
	मोगर	
४६	सिरमलजी छगनमलजी —	०
४७	मिसरीमलजी लछमनदासजी —	८
	अजन्टी	
४८	सुगनचंदजी गुलाबचंद —	॥
४९	हरकचंद् कस्तरीमल —	१॥
५	मोतीलाल मनराम —	१
	पाथर	
५१	भिवराम हिम्मतमल —	४
	मास्लद	
५२	पुनमचंद् धनराज —	९
	माणिकग्याम	
५३	हमारीमल गुलाबचंद् —	७
५४	धुलचंदजी पन्नाणी —	१
५५	मघरामजी आसतवाल —	२
५६	फौजमलजी रतनचंदजी —	५

पुस्तक मिलनेका पत्ता

पनराजजी मोतीलालजी

मु० पो० वरोरा जि० चांदा सी पी

कस्तुरचंदजी दिपचंदजी

मु० पो० मानकवाडा

(रल्वे स्टेशन—धामनगांव)